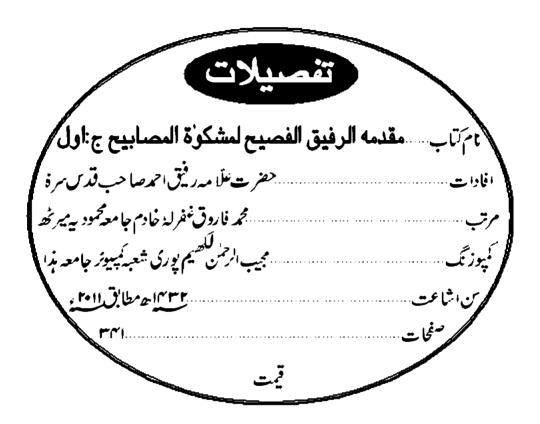


مُقَكُمْنَ الْمُحْدِيجِ الْمُحْدِيجِ الْمُصَابِيحِ الْمُصَابِيحِ الْمُصَابِيحِ الْمُعَلِيمَ الْمُصَابِيحِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَالِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعِلَى الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعِلَّيْنِ الْمُعِلَّالِيلِي الْمُعِلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعِلَّيِّيْنِ الْمُعِلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعَلِيدِ الْمُعِلَّيِّ الْمُعَلِيدِ الْمُعِلَّالِيلِي الْمُعِلَّالِيلِي الْمُعِلَّ الْمُعِلَّالِيلِي الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعِلِي الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعِلَّ الْمُعَلِيدِ الْمُعِلَّ الْمُعِلِيلِي الْمُعِلِي الْمُعِلِيلِي الْمُعِلِيلِيلِي الْمُعِلِيلِي الْمُعِلِي الْ

افادات حضرت علّا مدر فيق احمد صاحب قدس سرهٔ شيخ الحديث مفتاح العلوم جلال آباد

مرت<u>ب</u> **محمد فاروق غفرلهٔ** خادم جامعهٔ محود ریملی پور ماپوژرو دُمیر تھے (یوپی)۲۲۵۲۰۲

بسبم الله الرحين الرحيب



بر خانه هجم و هنگ

جامعهٔمود بیلی پور ماپوڑ روڈ میرٹھ (یو پی)۲۰۶۲۰



نزرتقير

بباركاه رسالتمآب سيدالاولين والآخرين

صلى الله عليه وعلىٰ اله وصحبه وبارك وسلم

گرقبول أفتدز ہے عِزوشرف

زمين وسال سب صلاة وسلام مكين ومكال سب صلاة وسلام

صلاة وسلام اور صلاة وسلام مراجهم وجان سب صلاة وسلام

سلام على رحمة العالمين

سلام على سيد المرسلين

ر هلیسه امت مسلمه کے ان خوش نصیب فرزندوں کی خدمت میں پیش کرنے کی جسارت کی جارہی ہے جن کے لئے كائنات كى سب سے بڑى متجاب الدعوات شخصيت سلى الله تعالى عليه وسلم نے ان الفاظ میں دعاء کی ہے: "نضر الله عبد اسمع مقالتي فحفظها ووعابا وادابا، فرب حامل فقه غير فقيه ورب حامل فقه الى من بو افقه منه" [الله تعالى اس بند ے كور وتازه اور خوش وخرم ر كے جس نے میری بات کو سنا اور س کریا د کرلیا ، پھراس کومحفوظ رکھا اور اس کو آ کے بہنجادیا،ایسے محص کی بیضدمت واقعی قابل قدرہ،اس لئے كه بوسكتان بعض دين كي بات محفوظ ركف والي ايس بول جونود اس کی زیادہ ممبری سمجھ ندر کھتے ہول، اور ہوسکتا ہے کدوہ آ کے کسی شخص کو یہ بات بہنجادے جواس سے زیادہ فتہی بصیرت رکھنے والا كتنے خوش قسمت میں وہ لوگ جو دعا كيں لے رہے میں! كَتِيخ نُوشُ نصيب مِن وه لوگ : ن كويه بنثارت عظمي دي گئي! حق تعالی قدردانی کی تو فیق عطا فرمائے۔آمین

فهرست مقرمه الرقيق الشحبيح لمشكوة المصابيح

اجماني فيرست

| نمبرصغيه | نمبرثار | نمبرثار | نمبرصني | مضامين | نمبرثار |
|-------------|--------------------------------|--------------|-------------|--|---------|
| 441 | امام ابن خزیمهٔ | * | مع | عرض مرتب | 1 |
| ۲۳۳ | امام ابن حباتٌ | ۲۱ | ¥ | علامه دنيق احمدصاحبٌ | ۲ |
| 770 | امام حاکم صاحب متدرک | ** | ۵۸ | شیخ عبدالحق محدث دہلوگ | ٣ |
| ۲۳۸ | امام ضياءالدين المقدئ | ۲۳ | ۸۲ | مقدمه شيخ عبدالحق | ~ |
| 779 | امام ابوعوا نَهُ | *(* | احا | تعريفات | ٥ |
| ri~i | امام ابن انسكن | ۵ | 164 | رساله اصول حديث منظوم | 7 |
| ۳۳۳ | امام ابن الجارو د | * ۲ 4 | ۱۹۲۲ | (تذكرها مُدمحدثين) امام بخاريّ | 4 |
| 700 | الإمام الاعظم ابوصيفه النعمانّ | , 1 2 | 199 | امامسلتم | ٨ |
| 44. | الإمام الويوسف ً | ۲۸ | F +1 | امام الکّ | 9 |
| ۲۲۳ | الا مام محمد بن الحسنّ | 49 | ۲۰۳ | امام ثنانتی | 1• |
| 444 | الامام زقرَّ | ۳. | ۲۰۹ | امام احمدا بن حنبان | 11 |
| AFT | صاحب مصابح | ř | r• 9 | امام ترندی | 11 |
| 121 | صاحب مثكوة | ۳۲ | ۲۱۳ | الممابوداؤة | 11" |
| 1 24 | خطبهوديبا چه | ٣٣ | 717 | قانهان | ۱۴ |
| ** * | حديث انماالا عمال بالنيات | 4 | ** | امام ابن ماجبّه | 0 |
| | | | *** | المام وارئ ٓ | 14 |
| | | | 770 | امام دار قطنیؒ امام بیم بین امام رزینؒ امام رزینؒ | 14 |
| | | | ۲۲۸ | امام بينجل | ΙΛ |
| | | | rr• | امام رزین | 19 |

مصادرومراجع

| مطبع | نام مصنف | نام كتاب | شاره |
|-------------------------|--|----------------|------|
| | علامه على ابن سلطان محمد القارئ | مرقاة المفاتح | 1 |
| ز کریا د ب <u>وب</u> ند | الامام شرف الدين الحسين الطبي | شرح الطيمي | |
| د فخر بیدد یو بند | حضرت موامانا محمدا دريس كاندهلوي | أتعلق الصبح | 1 |
| دارالسالم الرياض | الامام الحافظ احمد بن على بن حجر عسقلاتي | مخ البارى | 4 |
| دارالفكر بيروت | علامه بدرالدين العيني | عمرة القارى | |
| اشر فيه ديوبند | حضرت مواانا فيخ شبيراحمه عثاثي | منح ألم بم | 7 |
| وارالبشائرااإسلامية | شيخ حضرت موا _{لما} خليل احمد سبار نپوريَّ | بذل المجهو د | |
| عباس احمدالبازمكة مكرمه | حضرت موامانا ليجيٰ بن ثرف النوويّ | نووی علی انسلم | ۸ |
| دارالكتبالعلمية بيروت | الامام محمر بن خليفه الوستاني الأبي | شرح الأبي | 9 |
| قاسم المعارف ديوبند | هفرت مولانار بإست على بجنوري زيدمجد بم | اليناح البخاري | 1• |
| حقانيه سورت تجرات | حضرت مولانا مفتى محمر تقى عثانى زيدمجد تم | انعام البارى | 11 |
| دارالكتاب د بوبند | فيخ الحديث مولاناسليم الله خال مرفله العالى | كشف الباري | 11 |
| خلیلیه سهار نپور | حضرت مولانا محمرنا قل صاحب مذخله العلالي | الدرالمنضو و | 18 |
| دارالكتاب د بوبند | حضرت مولانا تبليم القدخال مدخله العالى | نفحات التنقيح | ۲ |
| العارني فيصلآ باد | حضرت موالانا نذيراحمد دامت بركاتبم | اشرف التوضيح | 14 |
| دارالكتاب ديوبند | حفزت موامانامحمدا بوالحنن صاحب | تنظيم الاثتاب | 7 |
| فيصل ديوبند | حضرت مولانا محمد آخق جلال آبادي | درس مشكوة | 14 |

| 7 | | | |
|-----------------------|--|--|-----|
| فيض القرآن ديوبند | حضرت مولانامحمه ناظم صاحب ندوي | اشرف المشكوة | ١٨ |
| فيض القرآن ديوبند | مفتی حارث عبدالرحیم | فيض المشكوة | 19 |
| اداره اسلاميات ديوبند | حضرت مولانا قطب الدين خال دبلوگ | مظا هر حق جدید | r• |
| دارالكتاب د يوبند | حضرت مولانا محمر تقى عثانى مدخله العالى | <i>درس تر</i> ندي | M |
| اشرفی دیوبند | حضرت علامه في محمد يوسف بنوريَّ | معارف السنن | rr |
| فيصل ديو بند | حضرت مولاما اشرف على تعانو گ | بيان القرآن | ۲۳ |
| | حضرت مولانا مفتى مجمر تقى عثاني مدخله افعالي | آ سان ترجمه قرآ ن | ۲۴ |
| ممر | حضرت شاه ولی الله محدث د ہلوگ | حجة الله البالغة | 20 |
| حجاز ديوبند | حضرت مولانامفتي معيد حمد باللبوري مدخله | رحمة اللدالواسعة | 7 |
| العافيه مايورُ | حفرت مولانا مفتى رياست على قاسى | البيان الحقق فى شرح مقدمة الشيخ عبدالحق | ¥ |
| ويوبند | ابوالفشل مولانا عبدالحنيظ بلياويٌ | مصباح اللغات | 1/1 |
| حسينيه ديوبند | حضرت مولانا وحيدالزمال كيرانويً | القاموس الوحيد | 19 |
| حسينيه ديوبند | | المعجم الوسيط | ۳. |
| مكتبه فريد دبلي | حضرت مولانا مفتى عاشق البي بلندشري | انوارالبيان | 11 |
| ز کریا د یوبند | حضرت مولانا فينح محمة عثان غي | نفرالباري | ٣٢ |
| خلیلیه سهار پور | حضرت موامانا فيخ الحديث محمر زكريًا | اوجز المساللك | ٣٣ |
| مجاز د يوبند | حضرت مولانامفتي سعيداحمه بإلنيوري | | |
| جاويد ديوبند | حضرت مولانا ذاكثر ساجدالرحمٰن صد فتي | طريق السالكين | 20 |
| مكتبه فريدويل | مفتی محمود حسن صاحب گنگو بی قدس مره | فآوي محمود بيرجد يد | ٣٦ |

| FY | ~~~~~~~~~~~~~~ | YY |
|-----------------------------|--|---|
| \sim | ^^^^ | \sim |
| $\mathbf{H}^{\mathbf{A}}$ | YYYYYYYYYYYY | $\mathbf{T}^{\mathbf{T}}$ |
| r_{γ} | | \sim |
| \mathbf{H}^{\prime} | ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ | $\mathbf{x}^{\mathbf{x}}$ |
| \sim | | \sim |
| | | $\checkmark \checkmark$ |
| \sim | .~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ | $\wedge_{+} \wedge$ |
| \sim | | $\sqrt{}$ |
| \sim | | $\sim \sim$ |
| \sim | | $\checkmark \checkmark$ |
| \sim | | \sim |
| | | - |
| $\mathcal{N}_{\mathcal{N}}$ | | $\wedge \downarrow \wedge$ |
| | ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ | $oldsymbol{-}oldsymbol{-}oldsymbol{-}$ |
| \sim | | $\wedge \!$ |
| | ح فهرست | $\checkmark \checkmark$ |
| \sim | | W |
| W | | V |
| И | معلمه الرقرة الفصر حاجا مثبكه والمصادح | N |
| Ц | مقدمه الرفيق الفصيح لحل مشكوة المصابيح | |
| и | | N |
| H | | |
| صغيمبر | مضامين | نمبرثار |
| / •~ | - | <u> </u> |
| | • | |
| ~~ | عرض مرتب | ١. |
| ~~ | | ' |
| | | |
| | taran da araba da ar | |
| ٣٦ | علامه رفيق احمد صاحبٌ | ₩ |
| | • | Ì |
| | |] |
| 4 | حسن آغاق | - |
| ' ' | | ' |
| | | |
| ا ۵۰ ا | اصل محرک | ۔ ا |
| <u> </u> | | " |
| | , - | |
| | . E. C. (m. 1) 20 ha | |
| 100 | اس جلد میں مدرجہ ذیل باتو ل کا اہتمام کیا گیا ہے | ٥ |
| | - 2 2 1 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 | _ |
| | | |
| ۵۳ | يتر 7م من ربي ١٠٠٠ إلى الكال الكال م | • |
| "' | شرح میں مندرجہ ذیل ہاتو ل کالحاظ کیا گیا ہے | |
| | | |
| ,, | التيخ ندن لحصر مديدا وتنا | l . |
| 64 | شيخ عبدالحق محدث دبلوگ | 4 |
| | | |
| | الفيخ الربروين |] |
| 44 | شیخ محدث دبلوی کا سفر حجاز | A |
| | | Ī |
| | | |
| 46 | حجاز ہے ہندوستان کووائیسی | 4 |
| '' | ا قار سے ہمرو شمان ووا چن | " |
| | , <u>.</u> | |
| | ا میخ محدث دہلو کئی کے رو حانی پیشوا | l . |
| 10 | ال محدث دابون نے روحان جیموا | 1. |
| | | |
| | اشيخ ، منز ا | Ì |
| " | ا شخ محدث د بلو یٌ کاو صال | 11 |
| | | |
| | <u>/2.</u> | |
| ,, | حضرت شخي محدث د ہلو کي کي تصانيف | 150 |
| " | المعرف فلات دهون في الفيانيف المستسبب |) '° |
| | • | |
| | - 11 | |
| 74 | معاتسرين | 19* |
| | • | |
| | | |
| | | |

| صغيبر | مضامين | نمبرثار |
|-------|-------------------------------------|----------|
| 44 | شیخ محدث دیلوگ کی اوا ا د | I. |
| | مقدمه شخ عبدالحق | |
| 44 | علماصول حديث | 10 |
| " | اصطلاح آخريف | 14 |
| " | موضوع | 14 |
| " | غرض و غايت | IA |
| " | حدیث کے لغوی معنیٰ | 14 |
| " | حديث كي أصطلاحي تعريف | 94 |
| 19 | حديث كاموضوع | M |
| " | حدیث کی غرض و ننایت | ** |
| " | غایت سند کے اعتبار سے حدیث کی تقسیم | ** |
| " | حديث مرفوع | Ma |
| " | حديث موقو ف | 10 |
| " | حدیث مقطوع | ۲۹ |
| ۷٠ | ارخ | % |
| " | حدیث اور اثر کے درمیان فرق | MA |
| " | خبر اورحدیث کے درمیان فرق | 74 |
| 41 | حدیث مرفوع کے اقسام | r. |
| " | حدیث مرفوع سریحی قولی | rı |
| " | حديث مر فوع سريحي فعلى | ** |

| صخيمر | مضامين | نمبرثار |
|-------|-------------------------|------------|
| 44 | حدیث مرفوع سریحی تقریری | ** |
| " | حديث مرفوع عَلَى قولى | ما مو |
| " | حدیث مرفوع حکمی فعلی | ro |
| 44 | چدیٹ مرفوع حکمی تقریری | 77 |
| " | قصل | 72 |
| " | سندکی تعریف | PΛ |
| " | اسناد کی تعریف | |
| " | دوسر معنی | ۴. |
| " | متن کی تعریف | m |
| ۲۳ | اقسام سند | ۴۷ |
| " | حديث متصل | ۳۳ |
| " | حديث منقطع حديث | ۳۳ |
| " | حديث معلق | ۳۵ |
| " | حدیث معلق کانکم | ۲۷ |
| 40 | فانكره: امر | |
| 44 | فانكره:٣٠ر | r'A |
| " | حدیث مرسل س | ~ 9 |
| " | حديث مرسل كانتكم | ۵٠ |
| 44 | اشكال | ۵۱ |
| " | جواب | ۵۲ |

| | | • |
|--------|--|---------|
| صغيمبر | مضامین | نمبرشار |
| ۷۸ | حديث مصل | or |
| " | حديث منقطع | ٥٣ |
| " | فا تده | ۵۵ |
| 49 | قائكره | 67 |
| " | انقطاع سنداورسقو طراوی کی معرفت کاطرایقه | ۵۷ |
| " | فن تاریخ کی ضرورت اورا ہمیت | ۵۸ |
| " | حدیث م ^{رل} س کابیان | ۵4 |
| Α• | حدیث مدلس کی اصطلاحی تعریف | 4+ |
| " | ترکیس کے ارکان مد | 71 |
| " | تدليس كي قشيم | 44 |
| " | تركيس الاسناد | 44 |
| At | تركيس الثيوخ | ٦۴ |
| " | تدليس التسوية | 10 |
| " | تركيس كے اسباب | 77 |
| " | تەلىپ كاتىم مەلىپ كاتىم | 14 |
| Ar | مدلِس كانخيم | MA |
| " | حديث مدنس كانتكم | 14 |
| Ar | مدلس نام رکھنے کی و جہ تشمیرہ | ۷٠ |
| " | حديث مضطرب | 41 |
| " | قائمه | 47 |

| | | _ |
|--------|--|---------|
| صغيمبر | مضامین | تمبرثار |
| ۸۳ | حدیث مدرج | ۷۳ |
| " | مدرج المتن | ٧٣ |
| " | مدرج الاسناد | 40 |
| ۸۵ | ادراج كانحكم | ۷٦ |
| " | فصل: تعميد دوايت بالمعنى واللفظ كانيان | 44 |
| " | روايت باللفظ كأنحكم | ۷۸ |
| A4 | روایت بالمعنیٰ کا تکم | 44 |
| " | قا كره | Λ• |
| Λ4 | حدیث معنعن کابیان | Δŧ |
| " | حديث معن كانحكم | ΔР |
| AA | حدیث مند کابیان | ۸۳ |
| " | مندے معنی | ۸۴ |
| " | حدیث مند کی تعریف | ۸۵ |
| A9 | تميري فصل بر | Α¥ |
| " | حدیث شافی منکراور معلل کابیان | Λ4 |
| " | مغول | ΑΛ |
| " | | Λ4 |
| " | | 4. |
| " | مدیث ش اذ | 41 |
| 9. | فا كده | 47 |

| صغنبر | مضامين | نمبرثار |
|-------|--|---------|
| 9+ | حدیث منکر اور معروف کی تعریف | 98- |
| " | قا تكره | 41" |
| " | اقسام اربعه كانحكم | 40 |
| " | حديث ثان | 44 |
| " | مدین مح فوظ | 42 |
| " | حدیث منکر | 4/ |
| " | حديث معروف | 44 |
| " | حدیث شاذ کی دوسری تعریف | 100 |
| " | ش اذ کی تیسری تعریف سریری | 1+1 |
| 91 | منگری دوسری تعریف منگر که دوسری تعریف | 104 |
| " | مدیث معلل | 101 |
| " | علت | 1+1" |
| " | معلل کو پہچا نے کاطریقہ | 1•4 |
| 97 | معميد | 1+4 |
| " | قا كمه | 1•4 |
| " | متابعت | I•A |
| " | متاج اورمتاح | 1+4 |
| " | متابعت کے درجات | 11+ |
| " | متابعت تامه | #11 |
| 95 | متابعت قاسره | 117 |

| صغيمر | مضامين | نمبرثنار |
|-------|-------------------------------|----------|
| rq | متابعت كافائده | 117 |
| " | متابعت کی شرط | IIM |
| " | مثله ونحوه كافرق | 110 |
| " | شابد | 114 |
| 96 | متابع اور شاہد کی دوسری تعریف | 114 |
| " | منابي <u>د</u> | 9/4 |
| " | اغتبار | 119 |
| " | حدیث کی بنیا دی اقسام | 180 |
| " | منطح لذاته | 171 |
| 90 | و ضاحت ص | 177 |
| " | مصحیح لغیره | 177 |
| " | وجهتميه | 1917 |
| " | حسن لذاته | 170 |
| 97 | حسن فغير و | IFA |
| " | مديث ضعيف | 174 |
| " | قا كده | 19/4 |
| " | تمام اقسام کےمراتب اورا حکام | 174 |
| " | هج لذاته | 19"0 |
| 92 | مختلخيره | 11"1 |
| " | حسن لذاته | ٦٩٦٢ |

| صغخبر | مضامين | نمبرشار |
|-------|--|---------|
| 94 | حسن فغيره | IFF |
| " | حديث ضعيف كاحكم | الماسوا |
| " | عدالت اور ضبط كانيان | ira |
| " | عرالت | 177 |
| 94 | تقوی | 157 |
| " | مروت | IPA |
| " | فا تده | 184 |
| " | ضبط | 11~+ |
| 99 | اقتام ضبط | اسما |
| " | • | 164 |
| " | • | ۳۳ |
| " | عدالت ہے متعلق اسپاب طعن کانیان | ١٣٣ |
| " | كنب | 160 |
| 100 | حديث موضوع | 16. A |
| " | کذب راوی اور صدیث کے موضوع ہونے کے قرائن | 162 |
| 1+1 | قصدا حدیث رسول میں کذب بیانی کا تکم | ICA |
| " | حديث كے موضوع ہونے كافيصلة كس طرح ہوگا | 164 |
| 1-1 | اتهام بالكذب | 10. |
| 101 | صيڠمتروک | 101 |
| " | متهم بالكذب كاتكم | 101 |

| صغخبر | مضامین | نمبرشار |
|-------|--|---------|
| 101 | گا ہے گا ہے جھوٹ بو لنے والے کا حکم | 100 |
| " | فتق | ۱۵۴ |
| " | فتق في العمل | 100 |
| " | فتق في الاعتقاد | 101 |
| " | التعبيد | 104 |
| 1.4 | فا تده | 160 |
| " | جبالت راوی | 104 |
| " | اسباب جبالت | |
| " | عدم شمیه کی و جدہے جہالت | |
| " | غیر مشمقی راوی کی حدیث کا حکم | |
| 1-4 | قائكره | 171 |
| " | اببام کرنے والے کی تعدیل کا تکم | ארו |
| " | غیرمعروف نام لینے کیو جہ ہے جہالت | |
| 104 | غیر معروف اکتسمیه راوی کی حدیث کا حکم | 177 |
| " | قلیل الحدیث ہونے کی وجہ ہے جہالت حا | 174 |
| " | قليل الحديث مجهول رواق كاقسام | MA |
| " | فانكره | 174 |
| 1•4 | مجهول العين | 14. |
| " | مجيول العين راوى كى روايت كالحكم | 141 |
| " | مجيول الحال | 144 |

| صخيمبر | مضامین | تنبرثار |
|--------|---|---------|
| 1-4 | برعت | 145 |
| 1•A | برعت کے اقسام | 141 |
| " | بدعت مكفره | 140 |
| " | بدعت مفیقہ | 147 |
| " | برق کی حدیث کا حکم | 144 |
| 1+9 | خلاسنه كلام | IΔΛ |
| 11- | صاحب جامع الاصول ابن جزري محدث كاكلام | 144 |
| " | صاحب جامع الاصول فرمات مين | ιΛ• |
| 111 | ضبط ہے تعلق اسباب طعن کا بیان منبط ہے تعلق اسباب طعن کا بیان | IAI |
| " | فر ط غفلت | |
| " | كثرت غلط | IAP |
| " | فانكره: امر | ΙΛΓ |
| " | فانكره: ۲۲ ر | IAA |
| " | عالفت ثقات | IAT |
| 117 | مخالفت ثقات كوضبط مے متعلق اسباب لمعن میں ثار کرنے کی وجہ | IAZ |
| 119- | وټم | IAA |
| " | وہم کی شناخت | 1/4 |
| 110 | سوء حنظ | 19 • |
| " | سوء حفظ کی اقسام | 191 |
| " | سوء حنظ لازم | 197 |

| صخيمر | مضامين | نمبرثنار |
|-------|--------------------------------------|--------------|
| 114 | سوء حنظ طاري | 198 |
| " | ئ الحفظ كاتحم | 191 |
| " | مختلط راوی کی صدیث کاتکم | 190 |
| 110 | قا تكره | 197 |
| " | هديث صحيح کي اقسام | 194 |
| " | صري غ يب | 19.0 |
| " | مدیث برز | 144 |
| " | حديث مشهور | P0 0 |
| " | حدیث مشهور کی دومری تعریف مدین | Y +1 |
| רוו | حديث مستفيض | 707 |
| " | دو سری تعریف - | 16 P |
| " | دونوں تعربینوں کے ما بین نسبت م | 401, |
| " | وحدثميه | 700 |
| " | حدیث متواتر | 4.4 |
| " | شرا نطاقواتر | ** |
| " | منعبير | res |
| 114 | متواتر کافائده | 709 |
| " | منعبير | * I • |
| " | تواتر کی تعداد | FII |
| " | حدیث غریب کادوسرانا م اورا سکے انسام | PIF |

| صغخبر | مضامین | نمبرثنار |
|-------|--|-------------|
| 114 | فرد مطلق | PIP |
| " | منابيد | 4الر |
| " | فروتبی | 710 |
| 1114 | منوبيد | PIT |
| " | غریب او رفر دمین فرق | 71 4 |
| " | غرابت کاصحت کے ساتھ اجتماع ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ | МΑ |
| 119 | غريب أورشاذ كااستعال | #14 |
| " | ضعیف اور شیح کے درجات کا بیان | PP6 |
| " | حديث ضعيف كي تعريف | **1 |
| 11% | حدیث صحیح وحدیث حسن کے مراتب اور در جات - | *** |
| 171 | المنح الأسانيد | *** |
| 177 | السح الاسانيد كے بارے ميں ائمه محدثين كے اقوال | MAL |
| IFF | سمن خاص قید کے ساتھ اسٹے الا سانید کا فیصلہ | 776 |
| " | فصل: امام ترندی کی عادت شریفه کابیان | PP 7 |
| 170 | غرابت اورحسن كااجتماع | 446 |
| 184 | فعل: احادیث سیحداورا حادیث حسن اور حدیث ضعیف سے استدال اوراحجاج کابیان | PPA |
| " | حديث ضعيف سے استدامال كائكم | 779 |
| IPA | منوبير | PP*• |
| " | منعبيه | **1 |
| " | كياتعد وطرق مص مطلقاً حديث ضعيف كاضعف دور موجائيًا | *** |

| صغيبر | مضامين | نمبرشار |
|---------|--|-------------|
| 179 | فعل : صحیح بخاری کی فوقیت او را حادیث صحیحہ کے درجات کا بیان | *** |
| 18% | صیح بخاری کی صحیح مسلم پرتر جیح کی و جوہات | 4414 |
| 19-1 | صحیح مسلم تصحیح بخاری برتر جیم کا مسئله اوراسکی تو جیه | *** |
| " | مثفق عليه کي تعريف | ** 4 |
| " | متفق عليها حاديث كي تعداد | 447 |
| 188 | احادیث تعجی کے در جات | PPA |
| " | کیا کتب صحاح مجر دہ میں کسی حدیث کا آناصحت کے لئے کافی ہے | ppq |
| 19-9- | شرط بخاری دمسلم کی مراد | 91°• |
| الماسوا | وضاحت | P(*') |
| " | ا يك اشكال أوراس كاجواب | bl., b |
| 150 | روا قرحدیث کے طبقات | M. h. |
| 124 | محاس النكات | ۳۲۴ |
| " | كيااحاديث سحيحة معيمين مين منحصرين | ۵۲۲ |
| " | احادیث سیحد کے معیمین میں منحصر ندہونے کی دلیل | M. A |
| 184 | عائم کی تعری <u>ف</u> | M.7 |
| " | حجت کے کہتے ہیں؟ | PMA |
| " | حافظ کی تعریف | mrq |
| IPA | مبتدعین کا اعتر اض اورا سکا جواب | 10 · |
| " | صحیحین کی ا حادیث کی تعدا د | P 01 |
| 150 | صحاح سته میں ترشیب | 767 |

| صغيمبر | مضامين | نمبرثثار |
|--------|-------------------------------------|-------------|
| 119 | هذه الكتب الاربعة | mr |
| 16. | علاقی کے کہتے ہیں | 401 |
| " | امام بغوی کی اصطلاح اوراس پراعتر اض | 100 |
| | (تعریفات) | 101 |
| 161 | مريث | 704 |
| " | مدیث مرفوع | |
| " | موقوف | ЮЛ |
| " | مقطوع | 109 |
| " | ارڅ | 77 • |
| " | محدث | PYI |
| " | اخباری | P7P |
| " | سند | ۳۲۳ |
| " | متن | ٦٢٢ |
| " | متصل | 440 |
| " | منقطع:ار | PYY |
| 164 | منقطع:۲ر | 772 |
| " | معلق | РЧЛ |
| " | مرسل | 774 |
| " | هم مرسل | 16. |
| " | معصل | 121 |

| صغيبر | مضامين | نمبرثار |
|-------|--|---------------------|
| سوساا | مرکس | 121 |
| " | مفنطرب | 12 F |
| " | مرح | 17 1~ |
| " | عنع | 740 |
| " | مععن | <u>12</u> 1 |
| " | مند | 722 |
| " | شاذ:ار | 7 <u>4</u> A |
| " | شاذ:۲؍ | 164 |
| " | شاذ:۳۲/ | # \ • |
| " | مردود | PAI |
| " | محفوظ | PAP |
| " | منگر:ار منگر:ار | 7 /17 |
| " | | PA1" |
| " | معروفمعل ِ معلل ِ | MAG |
| ורר | ······································ | MA |
| " | | 9 /_ |
| " | شلېر | WA |
| " | اعماد | P/19 |
| " | ريخ محمد | 79. |
| " | مح لذاته | 791 |

| صغخبر | مضامین | نمبرثار |
|-------|---------------------|--------------|
| " | هيچلغيره | 797 |
| " | حسن لذاته | pap |
| " | حسن فيره | 491 |
| " | ضعیف | 740 |
| " | عرالت | 797 |
| " | تقوی | 194 |
| " | | P 4A |
| " | ضط | 799 |
| 100 | ضبطال <i>صدر</i> | ** * |
| " | ضطالكتاب | P*+1 |
| " | جرح عوالت | *• * |
| " | كزب | 4.4 |
| " | موضوع | 4. •L |
| " | متر وک | r•0 |
| " | اتهام بالكذب م | Pot |
| " | مريم من سي | r•2 |
| " | مبهم كانحكم | r.a |
| " | برعت | r. 4 |
| " | مبتدع کی حدیث کانکم | 71. |
| " | 27 منبط | PI |

| <u> </u> | | |
|----------|--------------------------------|----------------|
| صغخبر | مضامین | نمبرثثار |
| ורץ | سوء حنظ | *1* |
| " | خلط | FIF |
| " | غريب | mr |
| " | | 710 |
| " | مشیور | 717 |
| " | موّار | |
| " | فردسبی | |
| " | فرد مطلق صریب | 7 19 |
| " | صحیح حدیثوں کی سات متمین میں | ** • |
| 162 | المستد رك | P P I |
| " | سحاح سته | *** |
| " | حمان | *** |
| | ﴿رساله اصول حديث منظوم | |
| //1009 | حمر وصلوق | 446 |
| " | تعريف حديث | r10 |
| 101 | اقسام صديث | PPY |
| 100 | "غنیم حدیث با نتبا رسند | r12 |
| " | اقسام منقطع | PPA |
| 164 | عکم مرسل | P P P Q |
| 100 | توشيح | rr • |

| صغيمبر | مضامین | نمبرثأر |
|--------|--|-------------|
| 161 | مرسل کا حکم محد ثین وفقهاء کے نز دیک | rri |
| " | معطيل | *** |
| 104 | منقطع | rrr |
| " | مدلس | ساسم |
| " | منقطع کے اقسام میں مدلس بھی ہیں | rro |
| " | مند ومتصل | PPY |
| 100 | بيان مضطرب وغيره | r72 |
| 109 | بدرج | PPA |
| " | معنن | rrq |
| " | فائده | P"("+ |
| 170 | هم دیگهر در بیان شنه و دوغیره | ۱۳۳۱ |
| 144 | فائده | ۳۳۲ |
| " | يان معنی متا بعت ونحوه ومثله | ٣٣٣ |
| 145 | مثله | ساماط |
| " | | 200 |
| " | شرطمتابع | 4 ملط |
| " | شوام بــــــــــــــــــــــــــــــــــــ | r12 |
| " | معلل | rea |
| " | بيان حسن صحيح وضعيف | 7 74 |
| 144 | صحیح | 70. |

| | | • |
|--------|------------------------------------|-------------|
| صغيمبر | مضامین | نمبرثأر |
| וארי | صحح لذاته | 701 |
| " | صحیح فغیر ہ | pop |
| 170 | حسن لذاته | ror |
| " | حسن فغير ه | ror |
| רדו | يان ضبط وعدالت | roo |
| 14. | بيان طعن درضبط | |
| 141 | يان عزيز وغريب كهازا قسام صحيح اند | 70 2 |
| 140 | اقسام غريب يعنی فرد | POA |
| 127 | بيان اصطلاح ديًّه رور معنی غريب | 70 4 |
| 144 | فائده | 74. |
| " | يان اقسام ضعيف | |
| 149 | بان حکم عمل برآ ل اقسام | 444 |
| 1/4 | فائده | 717 |
| IAP | صحاح سته | ماد ه |
| IAP | اصطلاح ديمًه ربقول شيخ مرويٌ | P10 |
| IAT | بيان طبقات روات | 777 |
| IAA | فاكده | P74 |
| 191 | وعاء | PYA |
| 191" | مدایت | 7 44 |

| صغنمبر | مضامين | نمبرثار |
|--------|---------------------------------|--------------|
| 7.2 | | 767. |
| | ﴿ تَذَكُره المُدَرِيدِ شَيْنَ ﴾ | |
| | (امام بخاریؒ) | |
| 19(* | نام ونب | 74. |
| " | والات | 741 |
| " | والده کی مشجاب دنیا | 724 |
| " | تعلیم و تربیت | 74° |
| 190 | حنظ و ذم انت | ٣٤٣ |
| " | اساتذه | 760 |
| " | علانده | 7 27 |
| " | حنظ و ذم انت كاايك عجيب واقعه | 744 |
| 197 | وفات | 74 1 |
| " | قبر ہے مثک کی خوشبو کا آنا | 7 29 |
| " | خواب بعداز وفات | 7 /1- |
| 194 | تاریخی جمله | PAI |
| " | صدق حميد نور | PAP |
| " | تصانیف | PAP |
| " | صحیح بخاری | ምለሮ |
| 19/ | و جهتاليف | TAO |
| " | طريت الف | PAY |

| صغخبر | مضامين | نمبرثار |
|-------|-----------------------------------|--------------|
| | (امام سکتم) | |
| 199 | نام ونب | 7 1/2 |
| " | والادت بإسعادت | PAA |
| " | العاع حديث كيليخ السفار كي ابتداء | P A4 |
| " | شيوخ | r 4• |
| *** | - الماغرة | 1 91 |
| " | اخلاق، نادات، زمد، تقوى، | 797 |
| " | فضل وَمال كااعتراف | rar |
| " | شغف علم كااك عجيب واقعه | ۳۹۳ |
| " | وفات | 790 |
| " | تقنيفات | 797 |
| | (امام ما لکٹ) | |
| *1 | نام ونب | 194 |
| " | والات | 79 / |
| " | عل _{يه} مبارك | 7 99 |
| " | طاب علم | ۴۰۰ |
| ** | فضائل ومناقب | l*+1 |
| " | علما وكااعتر اف | r•+ |
| " | تصانیف | 1°• 1" |
| 11 | وقات | W•W |

| صغنمبر | مضامين | نمبرثار |
|-----------|---------------------------------|-------------|
| | (امامثانعیؓ) | |
| RF | نام ونب | ۲•۵ |
| " | واارت ، | F•4 |
| " | علمی المفار | ۲۰۷ |
| ** | اساتذه | r*A |
| " | علانده | r•4 |
| " | فصاحت وبلاغت اورعلماء كااعتر اف | 14. |
| " | اخلاق | ۱۱ ۲ |
| P0 | وفات | ۱۳۱۳ |
| | (امام احمد بن طنبل) | |
| F1 | نام ونب | ۳۱۳ |
| " | واادت باسعادت | ۳۱۳ |
| " | تعلیم ورتبیت | ma |
| " | اساتذه | ۲۱۲ |
| " | تلاغده | 114 |
| P=4 | جمعصرعلاء كااعتراف | MIA |
| " | زېږوورع | r19 |
| " | فقه واجتهاد | 1740 |
| " | وفات | والأكا |
| " | أيك عجيب اتفاق | ۱۳۶۳ |

| صخيبر | مضامين | تمبرشار |
|-------|------------------|---------------|
| ►A | ابتلاء وآ زمائش | [* * * |
| " | علمی تار | L. M.L. |
| | (امام ترزيّ) | |
| F-9 | نام ونب | ۵۴۵ |
| " | تاريخ بيدأش | ٢٩٦ |
| " | مولدومسكن | 77 <u>4</u> |
| " | مخصيل علم | /°#\ |
| " | اساتذه | r44 |
| P1~ | لطيغه | 14. |
| " | تلاغده | اسم |
| " | قوة حافظه | ۲۳۲ |
| " | واقعه | ۴۳۲ |
| 171 | وفات | ۳۳۲ |
| " | تصانف | ٥٢٥ |
| | (المم اليوداؤدٌ) | |
| rim | نام ونب | ۲۳٦ |
| " | سجتان | 447 |
| " | والات | rpa |
| " | تخصيل علم | rra |
| nr | اساتذه | 1 ″1″• |

| صغخبر | مضامين | نمبرثار |
|-------|----------------------------|------------|
| nr | - تلاغده | اس |
| " | قدردانی اسان | ۴٦٦ |
| 110 | آپ کے فضل وَ مال کااعتر اف | ۳۳۳ |
| " | وفات | ررر |
| " | تصانفي | ۵۳۳ |
| " | سنن ابو داؤ د کامقام | ሆኖ ነ |
| | (نابنائی) | |
| ทฯ | نام ونب | ۲۳۷ |
| " | مولد | rra |
| " | تخصيل علم | ۳۳۹ |
| " | مصر میں مستعقل، قامت | ۲۵۰ |
| " | اساتذه | 101 |
| nz | عام حالات زنمرگ | ۲۵۲ |
| " | زېدوتقو کي | rop |
| " | معاسرين كااعتراف | ۳۵۳ |
| PIA | تلافه ه | ۲۵۵ |
| " | امام نسائی اور شیع | ۲۵٦ |
| " | وفات | 607 |
| " | تاليفات وتقنيفات | ۲۵۸ |
| 719 | وجهتا ليف | ۴۵۹ |

| صغنبر | مضامين | تمبرثار |
|-------|-----------------------|---------|
| | (امام ابن ماجةً) | |
| ** | نام ونب | ۴۲۰ |
| " | ما حبہ | الايما |
| " | واارت | ٩٢٦ |
| 771 | ۱ - فار | ۳۲۳ |
| " | اساتذه | 14 A |
| " | علافه ه | ۵۲۳ |
| " | علما وكاحسن اعتر اف | ۲۲۲ |
| " | نقابت | 447 |
| *** | وفات | ሾሃለ |
| " | تصانیف | r44 |
| " | سنن ابن ما جه کامقام | 12. |
| " | تعدا دروایت آبن ما جه | 141 |
| | (المام وارئ) | |
| m | نام ونب | 14 |
| " | والات | 12 r |
| " | ا-م فا ر | 74 M |
| " | • | ۳۷۵ |
| " | علما وكالحسن اعتر اف | 127 |
| *** | اساتذه | ٣44 |

| صغخبر | مضامين | تمبرثار |
|-------|-------------------------------|--------------|
| **(~ | - تلاغم و | 64A |
| " | وفات | 174 9 |
| " | تسانف | 64 • |
| | (امام دارهنی) | |
| 770 | تاريخ پيد أش | rai |
| " | علمی رحلت | CAP |
| " | مختلف علوم وفنون میں مہارت | rap |
| " | علما ء كاحسن اعتر اف | የ ለሮ |
| PPY | آپ کی ذہانت کا ایک عجیب واقعہ | ۳۸۵ |
| " | اسا تذه | (VA) |
| 774 | تلاغه | 647 |
| " | وفات | CAA |
| " | تصانیف | 17/19 |
| | (الم | |
| *** | نام ونب | ۴4. |
| " | مولدومسكن | r'41 |
| " | حسول تعليم اورا فار | ۲۹۲ |
| " | علما وكاحسن اعتر اف | ۳۹۳ |
| 179 | اساتذه | ۳۹۳ |
| " | حلانده | ۵۹۳ |

| صغخبر | مضامین | تمبرثأر |
|-------|---------------------|-------------|
| " | وفات | ۲۹۶ |
| " | تصانیف | 79 <u>4</u> |
| | (امام رزینّ) | |
| rr. | نام ونب | r4A |
| " | عِائِ بِيدِائش | r44 |
| " | مجاورت مكه فكرمه | ۵۰۰ |
| " | اسا تذه | ۵۰۱ |
| " | تلاغره | ۵۰۲ |
| " | تَصْنِيفَ | 0.5 |
| " | وفات | ۵۰۴ |
| | (امام این فزیمه ٌ) | |
| PP1 | نام ونب | ۵۰۵ |
| " | جائے پیدائش | 4.4 |
| " | ويهعت علم | ۵۰۷ |
| " | اسفار | ۵۰۸ |
| " | علما وكاحسن اعتر أف | ۵+4 |
| " | ابوعلى الحافظ | ۵۱۰ |
| " | اساتذه | ٥١١ |
| *** | -لاغده | ۵۱۲ |
| " | وفات | ٥١٢ |

| صغنبر | مضامین | نمبرثار |
|-------|--------------------------------|-------------|
| " | تصانف | ۵۱۳ |
| " | تعارف صحیح ابن خزیمیهٔ | ۵۱۵ |
| | (الم ابن حباتٌ) | |
| *** | نام ونب | 217 |
| " | مولد | ۵۱ <i>۲</i> |
| " | اوصاف حميده | ΔΙΛ |
| " | آسفار | 214 |
| " | عبدهٔ قضاء | ۵۳۰ |
| " | اعتر اف علم وبضل | ١٩٥ |
| 444 | اسا تذه | ۵۲۲ |
| " | تلاغره | ٥٢٢ |
| " | وفات | ٥٣٢ |
| " | تصان ف صح | ۵۳۵ |
| " | تعارف صحیح ابن حبان سر رویه | ۲۲۵ |
| | (ایام حاکم صاحب منددک") | |
| 770 | نام ونب | ۵۳ |
| " | والات | ۵۳۸ |
| " | اسفار | 644 |
| " | عبدهٔ قضاء | or. |
| " | حديث داني | ori |

| صغخبر | مضامين | تمبرثأر |
|-------|-------------------------------------|---------|
| 100 | علماء كاحسن اعتراف | ort |
| 754 | اسا تذه | ٥٣٢ |
| " | سلافره | opp |
| " | وفات | ٥٢٥ |
| " | تصانفي | ort |
| 1114 | تعارف صحِح الحاكم المعروف بالمستدرك | 07L |
| | (امام ضيا والدين المقديّ) | |
| PPA | نام ونب | OFA |
| " | والات | 079 |
| " | اسفار | ۵۳۰ |
| " | وفات | ۱۳۵ |
| " | تعارف الحقاره | ۵۳۲ |
| | (امام ایکوانهٌ) | |
| rrq | نام ونب | ٥٢٢ |
| " | اسفار | ٥٣٣ |
| " | مستقل أقامت | ٥٣٥ |
| " | علماء كاحسن اعتر أف | ۲۵۵ |
| " | اساتذه | ۵۳۷ |
| " | حلافه و | ۵۳۸ |
| 414. | وفات | ۵۳۹ |

| صغنبر | مضامين | تمبرثار |
|---------------|--|---------|
| * (**• | تَصَنِيف | ۵۵۰ |
| " | تعارف صحيح الوعوانه. | ١٥٥ |
| | (اماماينالسكنٌ) | |
| P (") | نام ونب | ۲۵۵ |
| " | تاريخ والارت | ٥٥٢ |
| " | بيد ارمغز مصنف | ۵۵۴ |
| " | پیشه | ۵۵۵ |
| " | ۱-فار | 100 |
| " | اعتر اف علم وبضل | ۵۵۷ |
| " | اساتذه | ۵۵۸ |
| 71"7 | تلافده | 004 |
| " | وفات | 61. |
| " | تاليفات ص | DTI |
| " | تغارف صحيح ابن السكنَّ | 077 |
| | (امام ابن الجارور اوران كى كماب المنتقى) | |
| 46.4 | عم ونبعام ونب | 916 |
| " | تاریخ ولادت بریخ و الادت | ۳۲۵ |
| " | اعتر اف علم وفضل | 010 |
| " | اساقذه | 440 |
| " | حلافه والمستعلقة والمستعلق والمستعلقة والمستعلق والمستعلقة والمستعلق والمستعلم والمستعدد والمس | 274 |

| صخيمر | مضامین | نمبرثار |
|-------|---|---------|
| *("(" | تاريخ وفات | ۸۲۵ |
| " | تاليف | 014 |
| | (الامام الاعظم ابوحنيفة النعمان عليه الرحمة والرضوان) | ٠. |
| 700 | فضائل امام ابوحنيفةً | ۱۵۵ |
| 7174 | شرف تابعیت | ٥٢٢ |
| " | اسا تذهٔ كرام | 04r |
| " | تلافره | ۵۲۳ |
| PCA | مرتبا في علم الحديث | ٥٤٥ |
| 71"9 | فقه میں امام اعظم کامر تبه | 027 |
| 10. | عقل و ذ كاوت | ٥٢٢ |
| 701 | عبادت | 04 A |
| " | خوف وخشيت | ٥٤٩ |
| 101 | زېدوورغېر بيز گاري | ۵۸۰ |
| " | امامت وجلالت | ۵۸۱ |
| m | محدثین او رطلبا عِلم پر انفاق و سخاوت | ۵۸۲ |
| 701 | وفات و سانخهٔ ارتحال | |
| 100 | امير المؤمنين في الحديث عبدالله بن مبارك كالذكره وتبصره | ۵۸۴ |
| 707 | ابو حنیفهٔ تمام حسنات اورتمام صفات محمودہ کے جامع تھے | ۵۸۵ |
| " | ابو حنیفهٔ سے محر وی ہے | |
| 104 | مرقدامام ابو حنیفهٔ پراین مبارک کازارزار رونا | ٥٨٤ |

| صغيمبر | مضامين | نمبرشار |
|-------------|--|------------|
| POA | نواب صدیق حسن خال کی حقیقت پیندی | ۵۸۸ |
| " | حضرت مجد دالف ثاني كاار شاد | 0/14 |
| " | حضرت شاه و لی الله صاحب کاار شاد | ۵۹۰ |
| 77. | (الامام ابويوسف الانصاري) | 241 |
| 775 | (الامام محمد بن الحسن بن فرقد الشيبانيّ) | 095 |
| 777 | (الامام زفر بن الهذيلُّ) | 09F |
| PYA | (صاحب مصابيح) | ٥٩٣ |
| P 79 | آ پ کے بحر علمی کی شہاد تیں | ۵۹۵ |
| 14. | تصانف | ۲۹۵ |
| 121 | (صاحب مشكوة) | ۵۹۷ |
| " | تعد ادا حاديث مشكوة مصابح | ۸۹۵ |
| 14.7 | شروح مشكو ; شريف | Δ44 |
| 12.4 | خطبة وديباچه | |
| 74A | خطبة الكتاب | 7 |
| MA | ضرورت تدوین احادیث مبارکه | 401 |
| " | مصابیح کواختیارکرنے کی وجہ | 4.4 |
| 1/19 | اشخاره | 400 |
| 79. | اشخاره كام قصد | 4.64 |
| " | ایک نلط نمبی کااز اله ش | 1+0 |
| 791 | شيخين | 4.4 |

| صغخبر | مضامين | نمبرثنار |
|------------|---|-------------|
| 191 | اشكال مع جواب | 1. 4 |
| 191 | نقل حديث | 7•A |
| 190 | فوائد خطبه | 4.4 |
| " | آغاز کتاب مقدس | 410 |
| 192 | تسميدا ورحمه مين رتب | 411 |
| 794 | دونوں جملوں میں فرق | 717 |
| " | دو <u>جملے</u> ذکر کرنے میں ^{حکام} تیں | 419- |
| 199 | صیغهٔ جمع لانے میں حکت | 416 |
| F-1 | فائده | 710 |
| mı | فوائددياچه | 414 |
| " | خلا ىسەدىبا چە | 714 |
| ra | وجوه الفرق بين المشكوة والمصابيح | ΥIA |
| r1. | ذي كر صحابي كيفوائد | 719 |
| P17 | تعيين مخرج كغوائد | 44. |
| " | قواعد وفو ائد بمز ١٥ بن | 441 |
| 710 | لفظ ماجيه كالمتحقيق | 444 |
| 114 | الجمع بين الصحيحين للحميدي كاتزكره | 775 |
| " | ولا دت | 746 |
| MA | وفات | 770 |
| " | كرامت | 777 |
| " | مفيداشعار | 41% |

| صغخبر | مضامین | نمبرثنار |
|------------|--|----------|
| 119 | جامع الاصول كاتذ كره | YMA |
| ** | انما الاعمال بالنيات | 779 |
| الإس | نسخر کیمیا | 45. |
| | حديث انما | |
| *** | حدیث نمبر ﴿ الله اعمال کا دارومد ارست پر ہے۔ | 771 |
| FF7 | لطيغه | 755 |
| F74 | شان ورود | 4PP |
| FFA | حقیقت اخلاص | 426 |
| " | عمل مشوب كاحكم | 110 |
| 779 | تينول قسمول كأحكم | |
| rr. | ا يک غلطي کاا زاله | 774 |
| rm | فائده | YPA |
| rrr | وضومين نيت كاحكم | 759 |
| rro | اشكال مع جواب | 46. |
| " | اشكال دوم مع جواب | ایمه |
| PPY | ہجرت کومثال میں ذکر کرنے کی وجہ | 474 |
| " | خلا سہ | 474 |
| rr2 | اقسام بجرت | |
| rra | فو ائدومسائل | 460 |
| " | فوائكر | ٢٦٢ |
| | تسمست وبسائه ضل عسمست | |

عرض مرتب

جس میں استاذمحتر م حضرت علامه رفیق احمد صاحب قدس سرۂ کامختصر تعارف، شرح کامخرک شرح کی نوعیت و کیفیت کوبیان کیا گیا ہے۔

70

وسم الله الدرحمن الدرحيم

عرض مرتنب ﴿علامة رفيق احمدصاحبؓ﴾

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم اما بعد۔ استاذمحتر م محدث جلیل حضرت علامہ رفیق احمد صاحب قدس سر ہ بھیسانی اسلام پور ضلع نظفر نگر یو پی کے رہنے والے تھے۔ یہ ستی تھاند بھون کے قریب ہے۔ اس بستی ہے تھیم الامت حضرت تھانوی قدس سرۂ کا خاص تعلق تھا اور اس بستی کو اپنی

حضرت علامة صاحب كى بسسم الله حضرت تقانوى قدس مر الله خضرت تقانوى قدس مراه في كرانى اورابتدائى العليم الي بستى مين حاصل كى راور خانقاه المدادية تقانه بعون مين حضرت تقانوى كى زير مربي تق قرآن ياك حفظ كيا-

نستی فرمایا کرتے تھے۔

اورخانقاہ میں نابائے بچوں کے قیام کی اجازت ندہونے کی وجہ سے صاحب اعلاء اسنن حضرت موالا نا علامہ ظفر احمد تھانوی قدس سرہ کے مکان پر قیام رہتا تھا۔ اورموصوف پوری پوری نگر انی فرمات سے حضرت کی مرانی فرمات سے حضرت کی خدمت میں کوئی سامان بان وغیرہ بیجانے کی خدمت بھی گاہے گاہے انجام دیتے تھے۔

حضرت علامہ ظفر احمد صاحب قدس مرہ کا ڈھا کہ یو نیورٹی میں جانا تجویز ہوگیا اس لئے موصوف نے حضرت موانا نامیج اللہ نوراللہ مرقدہ کے نام خط لکھ کردیا کہ اب مولویت کی تعلیم مقاح العلوم جلال آباد حاصل کرواس خط کود کھ کر حضرت جی نوراللہ مرقدہ نے وا خلہ کرلیا اور ابتدائی فارتی عربی کی کتابیں شروع کرادیں تعلیم کے ساتھ حضرت جی نوراللہ مرقدہ کی خدمت کی سعادت میسررہی۔

کنز الدقائق، شرح جامی وغیرہ کتابوں کی تعلیم حاصل کر کے وارالعلوم و بوبند السلام میں واضاد کی تعلیم حاصل کر کے وارالعلوم و بوبند السلام میں واضاد کی تمام کتابیں وارالعلوم و بوبند میں بڑھیں۔اور ۲۳۱۱ حمطابق کے 190 میں وارالعلوم و بوبند میں۔اور ۲۳۱۱ حمطابق کے 190 میں وارالعلوم و بوبند میں:

شیخ الاسلام حضرت مواما نا سید حسین احمد مدنی قدس سر ه شیخ الا دب حضرت مواما نا اعز ازعلی صاحب قدس سرهٔ تکیم الاسلام حضرت مواما نا قاری محمد طیب صاحب قدس سرهٔ

حضرت موامانا فخر الحن صاحبٌ، حضرت موامانا عبداله حد صاحبٌ، حضرت موامانا عبدالسمع صاحب نورالله مرقد بم مخصوص اساتذه تھے۔

حضرت مواما ناسلیم الله خال صاحب لوہاروی ثم پا کستانی شیخ الحدیث دارالعلوم فاروقیہ کرا جی وصدرو فاق المدارس پا کستان مخصوص رفیق درس تھے۔ جن سے دوستانہ تعلق تھا۔

فراغت کے بعد ہی مفتاح العلوم جلال آباد میں تقرر ہوگیا،اور شروع ہی میں شرح جامی، مختصر المعانی،مقامات حریری وغیرہ کتابیں سپر دہوئیں۔اس وقت یہی آخری کتابیں تھیں۔

عدام مين تقريباً دوره صديث شريف كا آغاز بوا اور حفرت موال نامفتى سعيداحمد صاحب المحنوي مجاز بالصحب از حضرت حكيم الامت اور مجاز بالبيعت حضرت مسيح الامت شيخ

الحدیث کو تجویز کیا گیا۔ گرموصوف ایک سال کے بعد ہی وصال فرما گئے اور بخاری شریف کھماں، تر ندی شریف کماں، تر فرف محارب قدس سرہ کے سپر دہوئیں۔ صرف بخاری شریف کتاب اعلم تک حضرت جی نوراللہ مرقدہ پڑھاتے تھے۔

اس طرح مفتاح العلوم كاخير قيام <u>٣٩٩ ا</u>ه تك آب اس منصب شيخ الحديث برفائز رئيداور كما حقداس كاحق ادا فرمات رئيد

مفتاح العلوم سے علیحد گی کے بعد مصباح العلوم بھیمانی اسلام پور میں بھی دری صدیث دیا۔ اور دارالعلوم وقف دیو بند میں آپ کوشن الحدیث تجویز کیا گیا۔ گرآ ب اپ مشاغل کی وجہ سے اس کو نباہ نہ سکے اور پھر مظاہر علوم کی تقسیم کے بعد حضر ت مواا نامفتی ظفر حسین صاحب قدس سر ہ کے حکم اور اصرار پر مظاہر علوم وقف میں آ پ کوشن الحدیث تجویز کیا گیا۔ اور اخیر حیات تک وہاں اس منصب پر فائز رہے۔

۱۱رئی الاول اسماھ مطابق ۲را کتوبر <u>۱۹۹۰ء بروز شنبہ تقریباً ۱۲رب</u>ے شب وصال ہوا۔مصباح العلوم بھیسانی اسلام پور کے احاطہ میں حافظ عبدالرزاق بھیسانوی کے بہلو میں تدفین ہوئی۔انا للہ و انا الیہ و اجعون .

بخاری شریف، ترفدی شریف کے ساتھ ساتھ مفکوۃ شریف کا درس حضرت علامہ صاحب کا خاص درس تھا۔ اور سیر حاصل بحث فرمایا کرتے تھے۔ اور سیر حاصل بحث فرمایا کرتے تھے۔

بندہ کوحفرت علاَمہ رفیق احمر صاحب قدس سراہ ہے مشکو ہ شریف پڑھے اور درس کے ساتھ ہی درس کی تقریر لکھنے کی سعادت بھی میسر آئی اس وقت ٹیب ریکارڈ کا سلسلہ زیادہ شروع نہیں ہوا تھا اس لئے ہاتھ سے ہی لکھنا ہوتا تھا۔ حق تعالیٰ شانہ کا ایکھا کھا حسان ہے کہ اس نے کمل مشکو ہ شریف کی درس تقریر لکھنے کی سعادت بخشی جو بچا سوں کا بیوں میں بھیلی

ہوئی تھی۔ میں الامت حضرت مواہ نامجر میں اللہ خال صاحب نور اللہ مرقد ، بند ، کے جلال آباد میں قیام کے زمانہ میں بند ، کے کمر ، میں تشریف الائے اور ان کاپیوں کو ملاحظہ فرما کرار شاد فرمایا ، اکوچھپوا نا بیا ہے۔ بند ، خاموش ہوگیا اس لئے کہ بند ، کے تصور و خیال میں بھی نہیں تھا کہ اس تقریر کی بھی اشاعت کی نوبت آئیگی ، مگر کیا معلوم تھا کہ مع گفتہ میں قائد رہ ج گویہ دید ، گویہ

حسن اتفاق

نقیدا المت حضرت اقدی سیدی وم شدی مفتی محود حسن گنگوبی قدی سره کے یہاں جامع العلوم کا نیور قیام کے دوران بخاری شریف مسلم شریف اور دیگر کتب حدیث کے دری کے ساتھ ساتھ مشکوۃ شریف کا دری بھی بہت اہتمام کے ساتھ ہوتا تھا اور دری مشکوۃ کو خاص ابھیت حاصل تھی یہاں تک کہ بعض بڑے مداری سے طلباء دری مشکوۃ کی شرکت کے لئے حاضر ہوتے تھے حضرت والا دری مشکوۃ کے لئے متعدد شروح حدیث کا مطالعہ فرماتے تھے اور اپنی کتاب مشکوۃ شریف پر بعض اشارے اور حوالجات تحریر فرماتے تھے، مگر وہ حوالجات صرف کتاب کا نام صفی نمبر جلد نمبر ہوتا تھا۔ اور ایک ایک صفی پر اسطرح متعدد حواثی ہوتے تھے اور بعض صفحات پر بیبوں شروح حدیث کے حوالجات ہوتے تھے۔ حوالجات زیادہ تر بذل اور بعض صفحات پر بیبوں شروح حدیث کے حوالجات ہوتے تھے۔ حوالجات زیادہ تر بذل اور بعض صفحات پر بیبوں شروح حدیث کے حوالجات ہوتے تھے۔ حوالجات زیادہ تر بذل اور بعض صفحات پر بیبوں شروح حدیث کے حوالجات ہوتے تھے۔ حوالجات زیادہ تر بذل الور بارہ ایامی الدراری ، فتح المہم کے ہوتے تھے۔

یہ دوائی صرف مفکوۃ شریف کا مطالعہ کر نیوا لے کیلئے تو زیادہ مفید نہیں ،کیکن مفکوۃ شریف پرشرح وغیرہ کا کام کرنیوا لے کیلئے بے حدمفید ہیں، کہان حوالجات سے ان کتب سے مراجعت بہت مہا اورآ سان ہوجاتی ہے کے فلال جلد اور فلال صفحہ زیا اواور متعلقہ مسئلہ و بحث دیکے او۔

حضرت اقدس فقیدا ایمت قدس مره کے یہاں تقیم کتب کابہت زور تھا کہ اپنے متعلقین اور شاگر دول کو کٹرت سے کتب تقیم فرمایا کرتے تھے، اور خاص طور ہے جس کوامل دیکھتے اسکو کرئی فراخد کی سے خرید کر کتب عنایت فرمایا کرتے ، اورا خیرزمانہ میں کثر ت امراض اور ضعف بھر کے بعد اپنا یورا کتب خانہ ہی تقیم فرما دیا تھا، جس کا کڑا حصد اس ناکارہ کوعنایت فرمایا۔

مشکوة شریف جوحفرت والاقدس مره کے زیر درس رہتی تھی اور جس پرحوالجات درت تصاب پر ایک بڑے دو الاقدس مره نے اپنے قلم سے تحریر تصاب پر ایک بڑے عالم اور مفتی صاحب کانا م حضرت والاقدس مره نے اپنے قلم سے تحریر فرمایا تھا اس نا کارہ کوعنایت فرمائی اور ارشا دفر مایا: اس کو میں نے فلال کے لئے رکھا تھا اور ان کو دیتا ہول اور سماتھ یہ بھی ارشا دفر مایا: کہ یہ محض مطالعہ کے لئے تو زیادہ مفید نہیں مگرمشکو قریر کام کرنے والے کیلئے بہت مفید ہے۔

اس ناکارہ کے وہم و گمان میں بھی نہ تھا کہ اس ظلوم وہول کو بھی مشکوۃ شریف جیسی اہم کتاب پر اس طرح کا کام کرنے کی نوبت آئیگی، بینا کارہ اس کوسوٹی بھی نہیں سکتا تھا، رحمت دوعالم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کا ارشادعالی کتنابر حق ہے: "اتبقو افر اسة المؤمن فانه بنظر بنور الله" [مومن کی فراست سے ڈروپس بیشک وہ اللہ تعالی کے نورہ و کچتاہے۔] حضرت والاقدس سر ہ نے اپنورفراست سے کتنی دورکی چیز کود کھے لیا تھا، اور فر مایا تھا کہ مشکوۃ شریف پر کام کرنے والے کیلئے یہ بہت مفید ہے۔
حضرت والاقدس سر ہ کا بیارشاد حرف بح ف کتنا بچ تکا ا۔

حضرت واااقدس سرؤ نے جن شروح حدیث کے حوالجات نقل فرمائے ہیں اس شرح میں علمة ان بی کتابوں سے زیادہ مددلی گئی ہے، اور اس کام میں بھی یقیناً حضرت فقیدالامت قدس سرؤ کی دعاؤں تو جہات عالیہ کازیادہ دخل ہے، ورندا پنا حال تو وہ ہے کہ من من دانم

کار زلف تست مشک افشانی اما عاشقال مصلحت را تهمت بر آ ہوئے چین بستہ آند اصل محرک

استاد محترم میں المت حضرت موا نامجم میں اللہ نور اللہ مرقدہ خلیفہ اجل حضرت کیم المت تھا نوگ قدس سر اہ اور سیدی ومرشدی فقیہ المت حضرت مفتی محمود حسن گنگوبی نور اللہ مرقدہ خلیفہ اجل شیخ الحدیث حضرت موا نا ذکر یا مہاجر مدنی نور اللہ مرقدہ بردو حضرات کی دعا وقو جہات عالیہ کا حال تو معلوم ہو چکا کہ شرح مشکو قاتی کا شرہ ہے۔ یہ تو باطنی محرکات تھے۔
فلا بری اصل محرک یہ ہوا کہ جول جول عول عمر گذررہی ہے اپنی تمی وامنی کا احساس بھی خطا بری اصل محرک یہ ہوا کہ جول جول عمر گذررہی ہے اپنی تمی وامنی کا احساس بھی بڑھتا جارہا ہے، اب جب کے عمر ساٹھ برس سے تجاوز کرگئی اس احساس میں مزید ترقی ہوتی جارہی ہے اس لئے شدت سے تقاضا ہوا کہ عمر کا جتنا حصہ باقی ہوہ صدیث پاک کی خدمت و مشغولی بذات خود بہت بردی دولت اور نقذ فقع ہے میں گذر جائے کہ حدیث پاک کی خدمت و مشغولی بذات خود بہت بردی دولت اور نقذ فقع ہے اور اس کی برکت اور محض اپنے فضل و کرم میں درخین ورحیم کی کریم ذات سے کیا بعید ہے کہ وہ اس کی برکت اور محض اپنے فضل و کرم سے حدیث پاک کے خدمت گذاروں میں حشر فرما دیں۔ و ما ذلک علی اللہ بعزیز .

کسی شاعر نے کیا خوب کبا ہے۔
تصور میں سرابائے حبیب حق بسائیں گے
دل ودید ، کی محفل ان کے جلوؤں سے جائیں گے
نگا، نامراد دید کی حسرت نکالیں گے
کسی صورت دل مبجور کو اپنے سنجالیں گے
تمناؤں کا اک طوفان اللہ آیا ہے سینے میں
مجلق ہو سے کل رنگ جیے آ بگینے میں

مرے دل کوغم عشق نبی اے میرے باری دے

رئی دے سوز دے دردوالم دے بیقراری دے

نہ تھی چیم نم میری نہ ہوتا اشک کم میرا

اتی شغل مبارک میں نکلتا کاش دم میرا

کسی صاحب دل نے کیا خوب کبا ہے۔

یہ دعائے دل ہے خدا کرے

تو آتش عشق میں جلا کرے

نہ نصیب ہو تجھے بیٹھنا

تیرے دل میں درد اٹھا کرے

تیرے دل میں درد اٹھا کرے

تقریباً ۱۳۹۹ هاور و ۱۳۹ میں بنده نے مشکوة شریف پرجی جس کو بیا لیس برس کا زمانہ گذرگیا اور وہ کا پیال بھی بوسیده ہو گئیں اس خیال سے کہ بیقر بر محفوظ ہوجائے اس کو دیکھا، دوسری کاپیول میں نقل کرانا شروع کیا۔ اکثر حصہ نقل ہوجائے پر بنده نے اس کو دیکھا، باوجود یکہ مشکلو قشر یف پر بہت کام ہو چکا ہا اور غربی، اردو، میں اسکی شرصیں کافی موجود ہیں اور بعض دری تقریبی بھی آ چکی ہیں گراس کو دیکھنے کے بعد اسکی اشاعت کا تقاضہ ہوا (اصل اور بعض دری تقریبی بھی آ چکی ہیں گراس کو دیکھنے کے بعد اسکی اشاعت کا تقاضہ ہوا (اصل کید اسلی تو کلا علی اللہ اشاعت کا ادارہ کرلیا اور اس پرنظر ثانی اور جوالجات کا انتظام کیا۔ اسلی تو کلا علی اللہ اشاعت کا ارادہ کرلیا اور اس پرنظر ثانی اور جوالجات کا انتظام کیا۔ اول اس کی نقل کا مسئلہ ہی بہت اہم تھا کہ ذمانہ طلب علمی میں دوران درس تکھا ہوا اور تی مدت کے بعد جب کہ اور اق بھی انتہائی ہوسیدہ ہوجاتے ہیں، بہت تی با تیں تکھنے سے دہ بھی جاتی ہیں، گرعزیز محر م موالنا ابرار احمد ساکن کھوائی فاضل دارالعلوم دیو بند نے اس خدمت کو بہت خوش اسلو بی سے انجام دیا، جہاں سمجھ میں نہ یا یا مشکلو قرشر یف اور اس کی شروح مدیث کی مدد سے اس کو درست کیا۔ جہاں لکھنارہ مرقاۃ المفاقے، العلیق السیم ، اور دیگر شروح حدیث کی مدد سے اس کو درست کیا۔ جہاں لکھنارہ مرقاۃ المفاقے، العلیق السیم ، اور دیگر شروح حدیث کی مدد سے اس کو درست کیا۔ جہاں لکھنارہ مرقاۃ المفاقے ، العلیق السیم ، اور دیگر شروح حدیث کی مدد سے اس کو درست کیا۔ جہاں لکھنارہ مرقاۃ المفاقے ، العلیق السیم ، اور دیگر شروح حدیث کی مدد سے اس کو درست کیا۔ جہاں لکھنارہ مرقاۃ المفاقے ، العلیق السیم ، اور دیگر شروح حدیث کی مدد سے اس کو درست کیا۔ جہاں لکھور کیا کہ درست کیا۔ جہاں کو درست کیا۔ جہاں لکھور کیا کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا۔ جہاں لکھور کیا کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا۔ جہاں کو دو بند کیا کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا۔ جہاں کو درست کیا کو دیا کو درست کیا کو درست کیا کو درست کیا کو درست کیا۔ کو درست کیا کو درست کیا کو درست کیا کو در

گیا تھااس کی پیمسل کی پیمراس پرنظر ٹانی اور حواثی کے لئے:

مواہ نامختی تو حید عالم چر اوی فاضل افقاء شاہی مراد آباد
مواہ نامفتی تو حید عالم چر اوی فاضل افقاء شاہی مراد آباد
مواہ نامفتی ابوالقاسم صاحب اوروی فاضل افقاء شاہی مراد آباد
مواہ نامفتی کو کب عالم صاحب استاذ حدیث جامعہ هذا
مواہ نامفتی محرات الدین صاحب استاذ حدیث جامعہ هذا
مواہ نامفتی محرر ضوائ موانوی صاحب استاذ مظاہر علوم سہار نبور
مواہ نامفتی محمد رضوائ موانوی صاحب استاذ مظاہر علوم سہار نبور
خرسب موقع و فرصت خدمات انجام دیں ۔ فجز الهم الله خیر المجز اء
اس کے بعد بندہ نے از اول تا آخر دیکھا اور حسب ضرورت حذف واضافہ کیا اور
دیگر شروح حدیث کی مدد سے اس کی تیمیل کی ، اور اس کانام ''السر فیسق الفصیح لحل
مشکو اقد المصابیح '' تجویز کیا۔ جسکی پہلی جلد آپ کے ہاتھوں میں ہے۔ حق تعالی شانہ
مشکو اقد المصابیح '' تجویز کیا۔ جسکی پہلی جلد آپ کے ہاتھوں میں ہے۔ حق تعالی شانہ
مشکو اقد المصابیح بین حکیل کی تو فتی عطافر مائے۔ آئین

اس جلد میں مندرجہ ذیل باتوں کا اجتمام کیا گیا ہے۔

(۱)دخرت علّا مه صاحب مشکوة شریف شروع کرنے ہے پہلے مقدمہ اشیخ عبدالحق محدث دہلوگ پڑ ھایا کرتے تھے۔ اس لئے اولا اس کی تشریح پیش کی گئی ہے۔ (۲)مقدمہ کی شریح ہے بلی عبدالحق محدث دہلوگ کا تذکرہ بھی پیش کیا گیا ہے۔ (۳) صاحب مشکوة نے جن حضرات محدثین ہے حدیثیں کی ہیں مقدمہ ہیں ان کا اجمالاً تذکرہ ہے ، ان حضرات کا تذکرہ قدر نے نصیل ہے کر دیا گیا ہے۔ (۳)مقدمہ ہیں چونکہ انتمہ اربعہ رحمہم اللہ تعالی کا تذکرہ ہے اس لئے مناسب خیال کیا کہ حضرت امام اعظم ابو صنیف امام ابو یوسف ، امام محرد ، امام اعظم ابو صنیف ، امام ابو یوسف ، امام محرد ، امام زفر کا تذکرہ بھی شامل کر دیا

جائے اس لئے ان حضرات ائمہ ملا ٹیکا تذکرہ بھی اخیر میں شامل کر دیا گیا۔ (۵).....صاحب مشکو ق، صاحب مصابح کا بھی مختصراً تذکرہ کر دیا گیا۔

شرح میں مندرجہ ذیل باتوں کالحاظ کیا گیا ہے۔

- (1)اولاً حديث شريف كمل ذكركي كي ي-
- (٢)..... حدیث کاحواله نقل کیا گیا ہے مثلاً بیر حدیث بخاری شریف میں یا مسلم شریف میں یا دیگر اور باب وغیر ، بھی ذکر کیا گیا ہے۔ دیگر کا سام کیا گیا ہے۔
 - (٣)حديث شريف مي بيان كرده الفاظ كي ضروري لغات كابيان كيا كيا ي-
 - (٣)حديث شريف كاآسان اورسليس ترجمه كيا كياب-
 - (۵)اس کے بعد صدیث شریف کی تشریح کی گئی ہے۔
 - (٢)حديث شريف مصنبط فقهى احكام ومسائل كاذكركيا كيا بـ
- (۷).....مسائل واحکام میں اختلاف ائمہ کے دائل بیان کئے گئے ہیں مگراس طرح کہ کئی امام کی تنقیص ایا زم نہ آئے بلکہ ہرا یک کا پورااحتر ام اور پوری عظمت قائم رہے۔
- (۸)فتهی احکام ومسائل کے علاوہ دیگر فوائد جو حدیث شریف سے نگلتے ہیں فوائد حدیث کا عنوان دیگر ان کوبھی ذکر کیا گیا ہے۔ان میں وہ فوائد بھی ہیں جن کو دیگر شراح حدیث نے بیان کیاہے،اوربعض وہ ہیں جوخود بندہ کے ذہن میں آئے۔
 - (٩)حديث كراوى كاتعارف ألرتشر يح منهيس آيا بوط شيه مين ذكر كيا كياب-
- (۱۱)حدیث کے طالب علم کوجن چیزوں کی تاش ہوتی ہے ان سب کی طرف رہنمائی کی بوری کوشش کی گئی ہے۔
- (۱۲) بضرورت طویل ابحاث سے احتر از کیا گیا ہے۔ اور حتی الامکان اختصار کی کوشش کی گئی ہے۔

غرض کہ اب بیتقریر صرف دری تقریر ہی نہیں رہی بلکہ با قاعدہ شرح ہوگئ ہے جو حدیث کے طالب علم کی تفتی کی سیر ابی کے لئے کافی اوروا فی ہوگی ان شاءاللہ العزیز۔ قار مین کرام ہے گذارش ہے کہ جو کوتا ہیاں نظر آئیں براہ کرم ان سے مطلع فرمائیں تا کہ آئندہ طباعت میں تھیج کردی جائے۔

حق تعالی شانہ اس کاوش و پیش کش کو شروح مشکوۃ میں ایک مفید اضافہ اور طلباء حدیث کے لئے نافع و مفید فرمائے۔ آمین حدیث کے لئے نافع و مفید فرمائے۔ آمین میں بے حدقیول فرمائے۔ آمین میں اشک مراحس قبول سے میوانی کہ دبی اشک مراحس قبول اے کہ در ساختہ ای قطرۂ بارانی را

حق تعالی شانہ کا بے انتہا کرم اور الا کھ الا کھ شکر واحسان ہے کہ اس نے اس کم سواد ونا چیز و نا تو اس کواس عظیم ومبارک خدمت کی تو فیق مرحمت فر مائی۔

فله الحمد والشكر والمنة

اللهم لا احصى ثناء عليك انت كما اثنيت على نفسك
ربنا تقبل منا انك انت السميع العليم وتب علينا
انك انت التواب الرحيم بحرمة حبيبك
سيد المرسلين صلى الله تعالىٰ عليه
وعلىٰ اله واصحابه اجمعين
الى يوم الدين.

محمد فا روق غفرله ۱۷۱۸ مارار ۱۳۳۰

جامعهٔ مودیه کی پور ہاپوڑروڈ میرٹھ (یوپی)

مُتَكَلِّمَةُ الرَّفِيقُ الشَّصِيخِ لَمُسْكُولُةُ المصابيح

جس میں شیخ عبدالحق محدث دہلوگ کا تذکرہ۔

شرح مقدمه في عبد الحق محدث د بلوگ

- جس میں حدیث کی تعریف
 - 🗢 حدیث کے اقسام
 - ♦ حدیث کے مصطلحات
- ♦ اقسام صدیث کے احکام کابیان
- - چوبین جلیل القدر انمه محدثین کا تذکره
 - ♦ صاحب مصابيح اورصاحب مشكوة المصابيح كالمنتصر تعارف
 - دونوں کتابوں میں فرق
- 🕻 دونوں کتابوں میں احا دیث مبارکہ کی تعد ادوغیر ہ کاؤ کر ہے۔

بعمر الله الرحدن الرحيير

شيخ عبدالحق محدّث دہلوی رحمہ (اللّٰم) محلبہ

بیدائش ماہ محرم ۱۹۵۸ و فات ۱۵ اور گئے عبد الحق محدث دہلوی نے اپنے مختمر حالات، اخبارا الفیار، میں تحریر فرمائے ہیں، اس کی تلخیص پیش کرتا ہوں ، ملا حظر فرمائیں:

والد ماجد اپنی بیری اور کمزوری کے زمانے میں میری طرف اکثر متوجہ رہتے تھے،
جوانی ختم ہوجانے اور دوستوں کے انتقال کی وجہ سے وہ ایک مرتبہ خت بیار ہوئے ، اس زمانے میں میری عمر تقریباً پارسال کی تھی، اس وقت میں آپ کی خدمت اور دلد بی کیا کرتا تھا، آپ میں میری عمر تقریباً پارسال کی تھی، اس وقت میں آپ کی خدمت اور دلد بی کیا کرتا تھا، آپ مہدوت مجھ پر شفقت وعنایت فرمایا کرتے ، انہی دنوں جبکہ میں بچہ تھا، صوفیوں کے اقوال سے اور اس میں بچہ تا ور میں بھی فطری طور پر سات اور میں بھی فطری طور پر ساتے اور شفقت وعنایت فرمایا کرتے ، اور میری باطنی تر بیت کرتے اور میں بھی فطری طور پر ان باتوں کے سننے کا متوالا تھا، وہ با تیں کرتے کرتے، خاموش ہوکر بالکل از خود رفتہ ہوجاتے۔

جس زمانہ میں میری عمر ڈھائی سال کی ہوگی، اس وقت کی اکثر باتیں اب تک مجھے
یا دہیں، اور بیوہ باتیں ہیں جود انشمندوں کی آگائی کے لئے با نتباضر وری اور مفید ہیں۔
ایک مرتبہ جبکہ میں کافیہ وغیر ، پڑھا کرتا تھا، ہمارے ساتھی طالب علم آپس میں ایک

دومرے سے پوچھ رہے تھے، حصول علم کے بعد کیا کروگے؟ بعض نے ظاہری طور پر کہدیا کہ بمارا متصد معرفت اللی ہے، بعض نے اپنی سادگ سے کبا، بمارا متصد حصول دنیا ہے، پھر مجھ سے بوچھا، بتاؤیم کیا کروگے؟ میں نے کبا مجھے بالکل نہیں معلوم کے خصیل علم کے بعد معرفت اللی میں مشغول رہوں گایا دنیا طبی میں، البتہ فی الحال اتنا معلوم ہے کہ پہلے زمانے کے محقلندوں اور عالموں نے کیا کبا ہے اور کشف حقیقت اور معلوم مسائل میں کون سے موتی پروئے ہیں، اس کے بعد جو حالت پیش ہوگی، دیکھا جائیگا، کہ بیش وعشرت دنیاوی کی طرف متوجہ ہوں گایا مجبت اللی اور طالب آخرت کے راستہ پرگا عزن ہوں گا۔

بچین بی سے مجھے معلوم نہیں کہ تھیل کود کیا ہوتا ہے، اور خواب وراحت مصاحبت ودوتی اور سیر وتفریح کیا چیز ہے۔

شعر

شب خواب چه وسکول کدام است خود خواب بعاشقال حرام است

شوق علم و مل میں بھی وقت پر نہ کھایا اور ہروقت آبائی میں نہ سویا، موسم مرماک مخت مخت مخت مخت میں کھر سے روز اند دومر تبد مدر سرجاتا تھا، دو ببر کو گھر آ کرایک دونوالے بقائے حیات کی خاطر کھالیتا، عرصہ دراز تک قبل از وقت مدر سرجا کرایک دونوالے بقائے حیات کی خاطر کھالیتا، عرصہ دراز تک قبل از وقت مدر سرجا کرایک دوبارے جراغ کی روشنی میں تااوت کرتا، اور اس پرطر، بید کہ گھر پر جتناوقت ملکاس میں کوئی کھے بیکار نہ بیٹھتا بلکہ مطالعہ کتب، بحث و تکرار میں لگار بتا، رات دن پڑ ھتانیز رات کے کسی حصہ میں خوشخطی بھی لکھتا۔

میر سے والدین ہمیشہ فرماتے کہ کسی وقت تو محلّہ کے بچوں کے ساتھ تھیل کودکر دل خوش کرلیا کرواوررات کو آرام سے سویا کرو،لیکن میں عرض کرتا کہ تھیل کود سے جب دل خوش كرناتهراتو ميںاس سے خوش ہوتا ہوں كەلكھتار متارہوں۔

عام طور پر لوگ اپنے بچوں کو مدرسہ جانے اور بڑھنے کی تاکید کرتے ہیں ، اس کے برعکس جھے کھیل کو دکی جانب متوجہ کیا جاتا تھا۔

پڑھتے پڑھتے جب رات کے ہارہ نکے جاتے تو والد ماجد فرماتے ، بابا کیا کررہے ہو؟ تو میں فورا بی لیٹ جاتا تا کہ جموٹ نہ ہوجائے ، اور پھر عرض کرتا جی میں سورہا ہوں ، فرما یخ کیا تکم ہے؟ اس کے بعد پھر بڑھنے لگتا ، اکثر ایسا ہوتا کہ جرائے کی لوسے میرے صافے اور سرکے بالول میں آگ لگ گئی ، اور مجھے اس وقت پتہ چاا جب حرارت میرے دماغ پر بہنی ۔

اشعار

چہ دودہائے چراغ کہ در دماغ نہ رفت کدام بادہ محنت کہ در ایاغ نہ رفت

کدام خواب وچه آسائش وکجا آرام چه خار خار که در بستر فراغ نه رفت

بحیرتم زدل خود که عمر رفت و لے زیخ غم کدہ ہر گز بھی باغ نه رفت

تخصیل علم کے شوق اور محنت کے باوجود نماز وظیفی، شب بیداری ، مناجات وغیر ، میں فطری طور پر بچپن بی ہے اتنامشنول تھا کہ لوگ جیرت کرتے تھے، اب بھی اللہ کے فضل میں فطری طور پر بچپن بی سے اتنامشنول تھا کہ لوگ جیرت کرتے تھے، اب بھی اللہ کے فضل وکرم سے شب خیزی کا شوق ہے، اور مجھے اس راہ سے کافی نعمتیں ملی ہیں ، اور اس وقت پہلے سے بھی زیادہ محنت وریاضات اور تعلیم وافادہ میں مشغول ہوں ، تعلیم وافادہ نہیں کہنا ہا ہے،

بلکہ تعلیم واستفادہ کہنا اچھاہے، گوشہ تنہائی میں بڑا ہوں دنیا کے نیک وبدسے جھےکوئی واسطہ نہیں ہے، نیز لوگوں کی دویق ورشنی ہے میر اول خالی ہے، اورنحوی جملوں زید وعمر کےقصوں سے نلیحد ، ہول۔

رياعی

صد شکر کہ باتی کم کارے نیت واز من بدل بینگس آزارے نیت گر ہر ول وشمنان من بارے نیت برفاطر دوستانِ من بارے نیت

پروردگار عالم نے جس کی فعقوں کا شکر ہی ادا کرنامیر ہے۔ میں نہیں، اس نے مجھ فریب کواپنے ذوق وشوق کی اس حالت سے خصوص اور ماالا مال کیا ہے کہ میر ادل اور میر اتمام وقت صرف اس کے حضور میں مشغول رہتا ہے، اور لوگوں کے میل جول وغیر ، ہے الگ ہول میں اپنے خیال میں گمن ہوں ، اگر چہوہ را زہائے سر بستہ کا سراہی ہویا مالیخو لیا، لیکن ریہ مقطعہ میر سے حالات کا آنمینہ دار ہے۔ سه

حقی کجا وصحبت کس کز خیال دوست دارم بخود چو مردم دیوانه عالمے بحکم والد ماجد که' ملائے خشک وناہموارنہ بننا'' میں بچین ہی سے ہمیشہ عشق ومحبت کا دم بحر تا ہول ،اورغم خواری ودردمندی کی راہ چلتا ہول۔

شعر

بیدرد نه ایم هر گز از عشق دائم دل درد ناک داریم مجھ فقیر حقیر کو حضرت خبیر وبشیر ونذیر صلی الله علیه وسلم کے انعامات واکرامات سے جو کچھ ابٹارت مل ہے، وہ بیان سے باہر ہے، اور یقین ہے کہ بیآ ٹاروا نوار نیک اوگوں کے لئے انثاءاللہ ضامن وکفیل ہو گئے۔

اگر چرمیں اپنی کمزور بول کی وجہ ہے اس قابل نہیں ہول کہ اپنا مطلب حاصل کر سکول کیکن امید قوی ہے اور بائے یقین مغبوط ہے، کہ شتی نوح میں جیھا ہوا ہول ،اور انثاء اللہ ساحل نجات پر پہنی جاؤل گا، اور وہال پہنی کر جمال الہی ہے مسر ور ہول گا، اور جو کوئی دنیاوی کشتی میں بیٹھ کر سرکتیاں اور غرور کر ہے قو وہ اس کا بھی یقین کر لے کہ آتش دوز خ دنیاوی کشتی میں بیٹھ کر سرکتیاں اور غرور کر ہے قو وہ اس کا بھی یقین کر لے کہ آتش دوز خ کے طوفان سے اس کو ہر گز نجات نہیں مل سکے گی، علاوہ ازیں ایک اور سعادت اور عظیم ترین نعمت حاصل ہوئی۔ مج

کیکن از شو**ق** حکایت بزماِں می آید

سنے! جب سعادت ازلی نے مجھے یہ نعمت ابدی سر فراز فرمائی ، تو میں ہمیشدای اشتیاق میں رہا کہ میر مقصود کی مجھے بٹارت مل جائے ، تا کتبلی واطمینان کے ساتھ راہ سلوک میں تیزی ہے آگے قدم بر حاول ، اورا گر طلب فرقت کی سوزش ہے ، تو معلوم ہوجائے گا ، کہ یہ کتنی بڑی آرزو ہے ، اور مقصد کتنا عظیم الشان ہے۔ سے

من ووصال تو ہیمات بس عجب ہوس است ہمیں کہنام تو ام ہر زباں رود نہ بس است

جیشه ای خیال میں رات دن کاٹ رہاتھا، کھی راتوں کواس کئے بیدار رہتا کہ ہارقہ جمال نظر آئے اوردن کو یہ جبتو رہتی کہ خواب وخیال میں اس کے وصال کی نشانی مل جائے۔ اگر تو وعدہ وصلم دہی بہ بیداری حرام باد سر خود اگر بخواب آرم وگر بخواب نمائی جمال خود یکدم بروز حشر نخواہم کہ سر زخواب آرم اور بیحالت اس وقت تک رہی جب کے عقل کا پر دہ اورطاب کی خواہش درمیان سے اٹھ گئی ،اوراللہ کے نظل وکرم نے اپنا کام کردکھایا، مجھ غریب کو براہ راست اپنی چو کھٹ پر پہنچا دیا اوران بیداریوں کے نتیجہ میں وہ خواب دیکھا جو ہزار بیداریوں سے بہتر وبرتر ہے۔

شعر

بخیالے رتو راضی و بخواب خوشنود حاصل از وصل تو خواب وخیالے دارم ریاس واقعہ کا جمالی ذکر ہے جس کوزبان وقلم سے ادا بی نہیں کیا جا سکتا۔ شععہ

> حقا بیان شوق بیا یال نمی رسد کوتاه ساز قصه دور دراز را

شيخ محدث دہلوی کا سفر حیاز

حضرت شیخ ارتمی سال کی عمر میں ۱۹۹ میر میں جانے کی طرف روا ندہوئے ،اور رمضان کے کانی عرصہ پہلے آپ مکہ معظمہ بی گئے ، چنانچہ رمضان ۱۹۹ میر تک انہوں نے وہاں کے محد ثین سے میں بخاری وسلم کا درس لے لیا تھا،اور پھر شیخ عبدالوہاب متی کی خدمت میں حاضر ہوئے ، وہاں انہوں نے علم کی پخیل کرائی اور علم طریقت وسلوک ہے آشنا کیا، شیخ علیہ الرحمہ کی خوش میں تھی گئے آپ کو ایسا رنبر کامل مل گیا، غرض شیخ عبدالوہاب متی سے پوراپوراا کتساب علم کیا،اوران سے حددرجہ متاثر ہوئے ،انہی کے ساتھ رمضان گزارااور فریضہ جج بھی ساتھ بی

ادا کیا، بعد ازاں آپ اپنے شیخ کے تکم سے ان کے زیر نگرانی حرم کے ایک ججرہ میں عبادت وریا ضت کرتے رہے۔

حضرت رسول اکرم معلی الله علیه وسلم سے شیخ کوعشق تھا جب دیارمجوب میں پہو نچتے تو بر بہند یا ہوجائے میار بارزیارت رسول اکرم صلی الله علیہ وسلم سے مشرف ہوئے اور حجاز میں تین سال قیام فرمایا۔

حجاز ہے ہندوستان کوواپسی

علم وکمل کی تمام وادیوں سے گزار نے کے بعد شیخ عبدالوہاب متقی نے شیخ عبدالحق علیہ الرحمہ کو ہندوستان واپس جانے کا تھم فرمایا ، کین حضرت شیخ ہندوستان کے طالات سے ایسے دل پر داشتہ سے کے طبیعت واپس ہونے کوئیس ہا ہی تھی ، لیکن شیخ کے تھم سے مجبور ہوگئے ، اور یہ ارادہ کیا کہ بغدا دکے راستہ سے حضرت شیخ عبدالقا در جیلائی کے مزار کی زیارت کرکے ہندوستان واپس ہوؤں ، لیکن شیخ نے اس کی بھی بعض وجوہات کی بناء پر اجازت نہیں دی ، آخر شوال والے ہیں آئھوں میں آنسواور دل میں حسرت لئے ہوئے اس مقدس سرز مین سے رخصت ہوئے۔

شعر

دیف در چثم زدن صحبت بار آخر شد روئے گل سیر ندیدیم وبہار آخر شد

شخ محدث من اچے میں ہندوستان تشریف اے، یہاں آ کردیکھا تو اکبر کے ندہبی افکاردین البی کی شکل اختیار کر چکے تھے، اسلامی شعار کی تفحیک کی جاربی تھی، ایسے روح فرسا حالات میں شیخ عبدالحق نے ایک دارالعلوم کی بنیا دو الی اور قرآن وحدیث کے درس وقد ریس

میں مشغول ہو گئے ،اور بیساسلہ زندگی کے آخری کھات تک جاری رہا۔

شخ محدث دہلویؓ کے روحانی پیشوا

شی نے ابتداء میں اپنے والد ماجد موانا سیف الدین سے روحانی تعلیم وربیت حاصل کی ،حضر تسید موی گیاا تی جوسلسلۂ قادر یہ کے مشہور ہزرگ ہیں ، ان سے شیخ محدث رہلوی کو بہت محبت تھی ، چنا نچہ لا رشوال ۱۹۸۵ ہے میں سید موی سے وابسۃ ہوئے ، اور انہوں نے اپنی خلافت سے نوازا شیخ عبد الوہاب متقی سے مکہ معظمہ میں تعلیم حاصل کی جن سے شیخ کی ملاقات کا ذکر اوپر گزر دیکا ،حضر ت خواجہ باقی باللہ مشہور ترین ہزرگ ہیں ،جن کی پوری زندگی احیاء سنت وامات بدعت میں گذری ، شیخ محدث نے آپ کے دست حق پرست پر بھی بیعت کی اور فیضیاب ہوئے۔

يشخ محدث دہلوی کاوصال

المرزی الاول اه واج کوی آقاب علم جس نے چورانوے سال کے فضائے ہند کومنور رکھاغروب ہوگیا،ان اللہ و انسا الیہ و اجعون آپ کی وصیت کے مطابق دوش مشمی کے کنارے بربیر دفاک کیا گیا،اور شیخ نورالحق نے نماز جناز، برخ حائی ''آپ کی تاریخ والادت ''شیخ اولیا''اورتاریخ رصلت' 'فخر عالم است' ہے۔

حضرت شيخ محدث دہلویؓ کی تصانیف

شیخ محدث دہلوگ کی چورانوے سال کی عمر ہوئی، اور اس عمر کا بیشتر حصہ تصنیف وتا لیف میں بسر ہوا، ہر علم وفن پر آپ نے کتابیں لکھی ہیں، جن کی تعداد ۲۰ رہے، اگر مکا تیب

الرفیق الفصیع ۱۰۰۰۰۰ مقدم مالات زندگی صاحب مقدم معدر الفیق الفصیع ۱۰۰۰۰۰۰ مقدم ورسائل کو بھی شامل کرلیا جائے ، تو یہ تعداد ۱۱۱ رسک پنچتی ہے ، ان میں سے مشہور مطبوعہ کتابیں ورج ویل ہیں:۔

| كيفيت | زبان | موضوع | نام تاب | نمبرثنار |
|-----------------------------------|-----------|------------|-------------------------------------|----------|
| مطبوعة اردور جمدمولانا فاضل صاحب | فارى | ميروتذ كير | اخبارالاخيار في احوال الابرار | , |
| رراردور جمه نواب قطب الدين دبلوي | " | أخلاق | آ داب الصالحين | ۲ |
| مطبوعه اردوتر جمه | " | " | آ داب اللباس | ۳ |
| مطيون | " | حديث | اشعة اللمعات في شرح مشكوة | ٣ |
| مطبون | " | ير | ترجمه زبدة فآتا رمنتخب بجهة الاسرار | ٥ |
| مطبوعه (ار دوتر جمه بھی شاکئ ہوا) | " | عقا ئد | متحيل الايمان وتتوية الايمان | 4 |
| مطبوعه (ار دوتر جمه بھی شائع ہوا) | | تصوف | توصيل المريد الى المراد | 4 |
| مطبوعه (ار دوتر جمه بھی شائع ہوا) | " | تاريخ | مذب القلوب الى ديا رامحو ب | ٨ |
| مطبون | " | | شرح سغرالسعادة | ٩ |
| مطبون | " | تصوف | بشرح فتوح الغيب | 1+ |
| مطبون | فارت عربي | ذاتی | فبرس التواليف | # |
| مطبوعه (ار دوتر جمه بھی شائع ہوا) | فارى | مكا تىپ | كتاب المكاتب والرسائل | 11" |
| مطبون | عربي | حديث | ما خبت بالسند في ايام السنه | 18" |
| مطبوعه (ار دوتر جمه بھی شائع ہوا) | فاری | ير | بدارج النبوة | سماء |
| مطبوعه (ار دوتر جمه بھی شائع ہوا) | " | تصوف | مرح البحرين نكات الحق والحقيقت | 10 |
| مطبون | " | " | نكات الحق والحقيقت | 17 |

معاصرين

حضرت شیخ محدث وہلوی علیہ الرحمہ کے معاصرین میں حضرت شیخ احمد سر ہندی مجدو الف ثانی علیہ الرحمہ اور حضرت شاہ ابو المعالی علیہ الرحمہ زیا دہ شہور ہیں۔

شخ محدث دہلویؓ کی اولا د

شیخ محدث کے تین فرزند ہوئے ، سب سے ہڑے فرزندش نورالحق مشرقی ہیں جو
اپ والدمحتر م کی طرح صاحب علم وضل ہوئے ، خود حضرت شیخ محدث آپ سے بیحد خوش سے ، اورا پناوجود ٹانی کہتے سے ، شیخ نورالحق نے بہت کی کتابیں تصنیف فرما کیں جن ہیں ہیں ہیں ہیں ہیا القاری ''کے نام سے چھ جلدوں میں بخاری شریف کی شرح بھی شامل ہے، آپ نے اپ والد کی حیات میں بی شاجیمال کے عہد میں اکبر آباد کی تضا کا عہد ، قبول کرلیا تھا، اور جب شیخ محدث کا انقال ہوا تو شیخ نورالحق نے اپ باپ کی مند ارشاد کو سنجال لیا، شیخ عبد الحق کے دوسر نے فرزند شیخ علی محد جید عالم اور ہزرگ سے ، آپ نے بھی متعدد کتابیں تصنیف فرمائی محدث کی مند است رکھتے سے ، محمد ہیں منا سبت رکھتے سے ، محمد ہاشم کے نوراند شیخ محدث کو بہت محبت تھی ، محدث کو بہت محبت تھی ۔ محدث کو بہت محبت تھی ۔



بسر الله الرسد الرسير مقدمه شخ عبدالحق

ا صبطلاحی قعریف: ایسے اصول وقواعد کاجا نناجن کے ذراجہ سندومتن کے احوال با عتبار ردوقبول معلوم ہول۔

موضوع: اصول حدیث کاموضوع سنداورمتن ہے مقبول اورمر دورہونے کے اعتبارے۔

غسر ض و غسایت: اقوال غیر سے حدیث کی حفاظت اور با عتبار تعحت وضعف در**جات حدیث کومعلوم کرنا۔**

حدیث کی لغوی معنی: حدیث قدیم کی ضدیے، خبر، ذکر، بات، بیان وغیرہ کے معنی میں استعال ہوتا ہے۔

حدیث کی اصطلاحی قعریف: جمهورمحدثین کی اصطلاحی میں حدیث کونی کریم صلی الله علیه وسلم کے قول مخل اور تقریر پر بواا جاتا ہے۔

تقریر کا مطلب بیہ ہے کہ جناب رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم کی موجودگی میں کوئی کام کیا اللہ علیہ وسلم کی موجودگی میں کوئی کام کیا اللہ علیہ وسلم نے اس پر نکیر نہیں فر مائی ، بلکہ سکوت اختیا رفر مایا ۔ بعض محدثین کے نزویک صحابی کے قول وقعل اور تقریر پر بھی حدیث کا اطلاق ہوتا ہے۔ اس طرح تا بعی کے قول وقعل پر بھی حدیث کا اطلاق ہوتا ہے۔

حدیث کا موضوع: علم صدیث کاموضوع نبی اکرمسلی الله علیه وسلم اور صحابه وتا بعین کے اقوال وافعال وتقریرات ہیں۔

حدیث کی غرض وغایت: اتصال وانقطاع کے انتبارے احادیث کی سندے اقسام اور روایت کے احکام وآ داب معلوم کرنا۔

عایت سند کے اعتبار سے حدیث کی تقیم

منتبائے سند کے اعتبار سے حدیث کی تین قسمیں ہیں، مرفوع ہو توف، مقطوع حدیث کی تین قسمیں ہیں، مرفوع ہو توف، مقطوع حدیث ہو جس کی اسناد نبی کریم سلی اللہ علیہ وسلم کل ہوئی ہوئی ہوئی اسناد سے خاص آنحضور سلی اللہ علیہ وسلم کا کوئی ارشادیا عمل یا تقریر نقل کی گئی ہو۔
حدیث موقوف: وہ حدیث ہے جس کی اسناد کسی سحانی کا کوئی قول یا عمل یا تقریر نقل کی گئی ہو۔
سند ہے کسی صحانی کا کوئی قول یا عمل یا تقریر نقل کی گئی ہوئے۔

حدیث مقطوع: وہ صدیث ہے جس کی اسنادکس تا بھی تک یا تا بھی کے بعد کے کسی عالم تک بہنچی ہو یعنی اس اسناد ہے کسی تا بھی کا یا تع تا بھی کا یا سے نیچے کے کسی عالم کا کوئی قول نقل کیا گیا ہو۔ (تحفة الدرر بھ ٢٣)

المطلق مرفوع كا استعال بوتو، بعيشه يجى مراو بوتا بخواد الى كى اسنا وتصل بويام تقطع ، اور مسقين (خواد من أرمطلق مرفوع كا استعال بوتو، بعيشه يجى مراو بوتا بخواد الله كالم يحد مرفوع كى كرم وشي الميال من المسال من المسال الله على الله على السال كى شرط بين بها الله كالم مسلم مسلم تقطع اور علق اور معصل تمام الله بين واقل بوجا كي سرط بين المسال ارشاو: ١/١٥٤)

ع البت الرغير صحابي كے لئے بعض مرج استعال كرتے ہيں، تومقيد كرتے ہيں، مثلاً كہتے ہيں: وقف فلان على عطاء، وقف فلان على عطاء، وقف فلان على عبد العزيز . (ارثادطاب الحقائق: ١/١٥٨)

سع جمبور محدثین کی اصطلاح یمی ہے، مرامام ثانعی اورامام طبر انی کے تکام میں منقطع بربھی مقطوع کا اطلاق ہوا ہے، مرامام ثانعی اورامام طبر ان کے تکام میں منقطع بربھی مقطوع کا اطلاق ہوا ہے، مرود وضع اصطلاح سے بہلے کی بات ہے۔ (ارثادم العلیقات: ١/١٦٦)

اشد: عام طورے حدیث موقوف اور حدیث مقطوع کوار کہتے ہیں ہکین بعض محدثین نے حدیث کی فدکورہ تینوں قسمول پراٹر کا اطلاق کیا ہے۔ چنانچہ نبی کریم سلی اللہ علیہ وسلم سے منقول دعاؤں کو ادعیہ ما تورہ کہا جاتا ہے۔ جسیا کہ امام طحاوی نے اپنی کتاب کا نام (جس میں احادیث بوید اور آٹار سحا بہموجود ہیں) شرح معانی لاآٹار کھا ہے نیز امام طبر کی کی کتاب کا نام مبدی احادیث مرفوعہ ہیں احادیث موقوفہ کتاب کا نام مبدی ہو اور ہے الانکہ اس میں اصالیۃ احادیث مرفوعہ ہیں احادیث موقوفہ کہیں کہیں کہیں کہیں کہیں کہیں کہیں ہیں۔

مدیث اوراثر کے درمیان فرق

(۱)''حدیث''مرفوع اور موقوف کے ساتھ ضاص ہے اور''ارژ''حدیث مقطوع کو کہا جاتا ہے۔

(۲) محدثین کا مختار قول مد بے کہ اثر اور صدیث دونوں متر ادف الفاظ ہیں ، اثر کا اطاق مرفوع ، موقوف ، مقطوع دونوں پر ہوتا ہے۔

(۳) فقہاء خراسان کی رائے ہیہ ہے کہ مرفوع کو حدیث اور موقوف ومقطوع کو اثر کہتے ہیں۔(عون المغیث جس۳۳–۵۳)

خراور مدیث کے درمیان فرق

(۱) مشہورا صطااح کے مطابق خبر اور حدیث دونوں متر ادف ہیں، ایک دوسرے براطابق ہوتار ہتا ہے، مختقین علاءاصول حدیث کی یہی رائے ہے۔

(۲) حدیث اورخبر دونوں میں تباین ہے،حضور سلی اللہ علیہ وسلم ہے منقول ہاتوں کو حدیث اور دوسر سے صفرات ہے منقول ہاتوں کوخبر کہا جاتا ہے۔

ا اصل آب میں ان للطبوانی ننو کظی ہے، بلدوہ طری ہے، اس لئے کان کی آب کام تبذیب الآ اور ہے، نک کام طراقی کی آب کام میں اس لئے اور طبری لکھا گیا ہے۔

(۳) بعض حفرات کے نزد کی خبر اور صدیث کے درمیان تباین کلی ہے، رسول اللہ سلی اللہ علیہ وتا بعین ہے منقول باتوں کو صدیث کباجا تا ہے، اور ان کے علاوہ گذشتہ زمانہ کے تاریخی واقعات اور بادشاہوں کی باتوں کو خبر کباجا تا ہے، اس وجہ سے صدیث اور سنت سنت استخال رکھنے والے محف کو اخباری ہے اور تاریخ سے ممارست رکھنے والے محف کو اخباری (مؤرخ) کباجا تا ہے۔

(۳) بعض حضرات کے زویکے خبراور صدیث کے درمیان عام خاص مطلق کی نسبت ہے، آنخضرت سلی اللہ علیہ وسلم کے اقوال وا فعال کو صدیث کبا جاتا ہے، گویا خبر عام اور صدیث خاص ہے۔ (یہ تیسر افرق مقدمہ میں مذکور نہیں ہے)

مديث مرفوع كاتسام

حدیث مرفوع کی اولا دوقسیں ہیں: صریحی، حکمی۔ پھر برایک کی تین قسمیں ہیں: قولی فعلی ، تقریری۔اس طرح حدیث مرفوع کی کل چھ قسمیں ہوئیں: (۱) مرفوع صریح قولی، (۲) مرفوع صریح فعلی، (۳) مرفوع صریح تقریری، (۴) مرفوع قولی حکمی، (۵) مرفوع فعلی حکمی، (۱) مرفوع تقریری حکمی۔

حديث مرفوع صريحى فتولى: وه حديث به بس كا الله الله عليه والم كا كونَ صريح ارشاوت كيا الله الله عليه وسلم يقول كذاء الله عليه وسلم يقول كذاء الله عليه وسلم يقول كذاء الله عد ثنا رسول الله عليه وسلم يقول كذاء (٢) حدثنا رسول الله عليه وسلم بكذا يا راوى (صحائي يغير صحائي) كيء (٣) قال رسول الله صلى الله عليه وسلم كذا (٣) ياعن رسول الله صلى الله عليه وسلم كذا (٣) ياعن رسول الله صلى الله عليه وسلم كذا (٢)

حديث مرفوع صريحي فعلى: وه حديث م جس كى اسادرسول الله

صلی الله علیه وسلم تک پینچی ہواوراس سے آنخضور صلی الله علیه وسلم کاکوئی عمل صراحة نقل کیا گیا ہوجیے صحابی کے رأیت رسول الله صلی الله علیه وسلم فعل کذا یاراوی (صحابی یا غیر صحابی) کے کان رسول الله صلی الله علیه وسلم یفعل کذا.

حدیث مرفوع صریحی تقریری: وه صدیث به بسی اسادرسول الله سلی الله علیه و سریک به سادرسول الله علیه و سلی الله علیه به مرار که ناصر احد نقل کیا گیا بوء جیسے حالی کے فعلت به حضرة النبی صلی الله علیه وسلم کذا پھر آنخضور سلی الله علیه وسلم کاس برا زکار بیان نه کرے۔

حدیث صرفوع حکمی قولی: وہ حدیث ہے، جس کی اسنادکسی ایسے سحائی گئی ہوئی کوئی ایسے سحائی است کی پہنچی ہو جو اسر نیلیات نہ بیان کرتے ہوں ،اوراس سے اس سحائی کی فرمائی ہوئی کوئی ایسی بات نقل کی گئی ہوجس کا اجتباد سے تعلق نہ ہو ۔ نہ وہ کسی لفظ کے معنی ہوں اور نہ وہ کسی الستعال لفظ کی تشریح ہوتو اسے حکماً حدیث مرفوع کا درجہ دیا جائے گا، کیوں کہ ظاہر یہی ہے کہ اس سحائی نے وہ بات حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے سن کر ہی بیان کی ہوگی اس لئے کہ صحابہ کرام کے علوم آنحضور سلی اللہ علیہ وسلم ہی سے مستفاد سے، مثلاً ابتدائے آفرینش عالم کے ساملہ کی کوئی بات یا انہیا ء کرام کے حالات یا ملاح کے فتن یا احوال قیامت کے سلسلے کی کوئی بات یا ساملہ کی کوئی بات یا ملاح کے بیان کی موٹی اس کے علوم آخرینش کا کوئی خصوص ثواب وعقاب کا بیان ۔

حدیث مر فنوع حکمی فعلی: وہ صدیث ہے جس کی اسنادکسی صحافی تک پہنچی ہواوراس صحافی کا کوئی ایسا کا مفل کیا گیا ہوجس میں اجتہاد کی گنجائش نہ ہوتو صحافی کے اس عمل کو حکماً حدیث مرفوع کا درجہ دیا جائے گا اور یہ سمجھا جائے گا کہ صحافی نے یہ عمل حضوراقدس سلی اللہ علیہ وسلم کی ہدایت کے مطابق کیا ہوگا۔

ل ملاحم: جنگیں، لاائیل، نسادات، جنگز عبازیاں، خلفشاریاں۔

حدیث مو فوع حکمی ققویوی: وه صدیث به جس کی اسنادکی صحابی الله علیه و کاید الله علیه و کاید الله علیه و کاید اطلاع دینانقل کیا گیا ہو کہ اوگ تخضور سلی الله علیه و کا درجہ کے مبارک دور میں فلال کام کرتے تھے لیس اس اطلاع کو بھی حکماً صدیث مرفوع تقریری کا درجہ دیا جائے گا، کیول کہ فلاس کی مرکام کو آنحضور سلی الله علیه و سلم کو اوگول کے اس عمل کی اطلاع ہوئی ہوگی اسلئے کہ دسی الله علیہ و سلم سے بوچھ کر بی کرت تھے، نیز زمانہ بھی مزول و حی کا زمانہ تھا اسلئے اگر صحابہ کرام رضی الله عنبه مکا و همک ناجائز ہوتا تو شریعت ضروراس سلسله میں کوئی ہوایت دیتی یا صحابہ کرام رضی الله عنبه مکمیں مسن السسنة کلا الشریع سنت مراد ہے، اگر چیعض حضر السسنة سی سنت مراد ہے، اگر چیعض حضر الت سنت مراد ہے، اگر چیعض حضر الت سنت مراد ہے، اگر چیعض حضر الت سنت صحابہ اور خلفائے راشدین بر بھی سنت کا اطلاق کرتے ہیں۔

فصل

سند كى تعريف: متن صديث تك يخيخ كارات يعنى وه رجال جومتن صديث كوروايت كريل_

اسناد کی تعریف: سندے ہم منی لفظ ہے۔

دوسر می معنی: متن حدیث کے طریق کوفتل کرنا اسنادکہا اتا ہے لیعن معنی مصدری میں استعال ہوتا ہے۔ سندکور جال حدیث ، سند حدیث اور اسناد کے لفظ سے تعبیر کیا جاتا ہے۔

متن کسی تعریف: وہ کلام جس پر سندآ کررک جائے۔ باہو ہول و محلام جس پر سندآ کررک جائے۔ باہد وہ تول و محل و قطرت نبی اکرم سلی اللہ علیہ وسلم تک بہونج جائے، جس پر بہونج کر ختم ہوجائے وہی متن ہے۔

اقسام سند

پھرسند کے اعتبار سے صدیث کی کئی تشمیں ہیں ان میں سے نمبر (۱) متصل ہے۔
حدیث مقصل: وہ حدیث ہے جس کی سند سلسل ہوکوئی راوی سلسلہ سند کے درمیان سے ساقط نہ ہواس عدم سقو طراوی کانا م اتصال ہے۔

حدیث منقطع: وہ حدیث ہے جس کے اندر سند سے ایک راوی یا ایک سے زیادہ راوی ساقط ہوجائے اور اس سقوط کا نام انقطاع ہے، حدیث منقطع کا دوسرا نام غیر متصل ہے۔

بچر حدیث منقطع بمعنی حدیث غیر متصل کی میا رقتمیں ہیں۔معلق ،مرسل ،معصل ، ورمنقطع ۔

حدیث معلق: وہ صدیث ہے جس کی سند کا ابتدائی حصہ صدف کردیا گیا ہو یعنی کسی مصنف نے بالقصد ابتدائے سند ہے ایک یا چنر راویوں کو صدف کردیا ہو خواہ تمام سند حذف کردی ہواور قبال رسول اللہ صلبی اللہ علیہ وسلم کہہ کر صدیث بیان کی ہویا صحابی کے علاوہ باقی سند حذف کردی ہویا صحابی اور تا بھی کے علاوہ باقی سند حذف کردی ہویا صحابی اور تا بھی کے علاوہ باقی سند حذف کردی ہویا مصنف نے اپنی جانب سے ابتدائے سند سے صرف ایک یا چندر راویوں کو صدف کردیا ہو سب کو علق کہا جا تا ہے۔ اور اس احقاط کانا م تعلیق ہے۔

 ضروری ہوگی اور جومحد ثین صحیح اور غیر صحیح ہر طرح کی صدیث بیان کرتے ہیں ان کی تعلیقات مقبول نہیں ہیں۔ (تخفۃ الدرر:ص۸۲)

فائده (۱): امام بخاری کی "السجامع الصحیح" میں ترجمۃ الباب کے ذیل میں تعلیقات بکٹرت آئی ہیں جو حدیث متصل کے تکم میں ہیں، کیول کہ امام بخاری نے اپنی کتاب میں صرف احادیث صححہ درت کرنے کا اہتمام کیا ہے لیکن ان تعلیقات کا مرتبہ امام بخاری کی مند روایات ہے کمتر ہے البتہ اگر امام بخاری کی حدیث کو ایک جگم معلق اور دوسری جگہ مند ذکر کریں تو یہ مند اور معلق دونول مساوی درجہ کی ہول گی۔

امام بخاری کی تعلیقات میں کچھ لوگوں نے بیفرق بیان کیا ہے کہ امام بخاری جس حدیث کوصیغ بمعروف سے ذکر کریں وہ حدیث امام بخاری کے نزد یک قطعی طور سے جسی ہے اور جس معلق روایت کوصیغ بجہول کے ساتھ ذکر کریں تو اس کی صحت میں امام بمام کے نزد یک کلام ہے، گراس حدیث کا'الجامع الصحیح" میں آناس بات کا نمازے کہ اس حدیث کی کوئی اصل ضرور ہے، محدثین کرام اسی وجہ سے امام بخاری کی تعلیقات کو تیج قرار دیتے ہیں۔ اس حجہ علاء کامقولہ ہے :تعلیقات البخاری متصلة صحیحة.

مام نودی کی رائے یہ ہے کہ سیح مسلم کی تعلیقات صرف باردیں اوران میں سے گیارد کو خود امام مسلم نے او لاحت صلا روایت کیا ہے چراس کے بعد تعلیق کرتے ہوئے فرمایا ہے: قسد دواہ فسلان ۔ البت صرف ابواہم کی روایت کو حصلان تا نہیں کیاصرف وی بالکل معلق ہے۔ جو مسلم شریف: ۱۲۱/ اربر باب کیم میں ہے۔ فائده (؟) : مفكوة شريف ميں جمله احاديث با سندذكري كئى بيں، مگران كو اصطارح بيں تعلق نبيں كم اجائے گا، كيول كه صاحب مفكوة في بيا حاديث ابنى سند به روايت نبيس كى بيں، بلكه دوسرى كتابول سے نقل كى بيں اور ان حديثوں كى سنديں اصل كتابول ميں موجود بيں، لبندا احاديث مفكوة كو معلق نبيں كباجائے گا، بلكه اصطارح ميں ان كو مجرد كباجائے گا، اور اس عملى كانام تجريد ہے۔ (تخة الدرر: ص٢٣)

حدیث موسل: حدیث کی سندگا اول محدث کی طرف ہوتا ہے، اور آخر حضور ارم سلی الله علیہ وسلم کی طرف، اگر سقوط آخر کی طرف سے ہوتا ہی کے بعد تو وہ مرسل ہے، یعنی اس میں صحابی کا ذکر اور واسطہ نہ ہولہذا صدیث مرسل کی تعریف ہوئی، کہ مرسل وہ حدیث ہے، جس کی سندگا آخری حصہ نہ بیان کیا گیا ہو صرف تا بعی قبال دسول الله صلی الله علیه وسلم کہ کر صدیث بیان کرتا ہوا ورسحا بی کے ذکر ساقط کرنے کو ارسال کہتے ہیں، خواج تا بعی اعلی مرتبہ کا ہو ہو کہ مرسل مطلق انقطاع کے معنی میں بھی استعمال ہوتا ہے۔ اعلی مرتبہ کا ہو یا معمولی مرتبہ کا ہو ہو کہ مرسل اخص مطلق اور منقطع اعم مطلق ہے۔ کہ مرسل اخص مطلق اور منقطع اعم مطلق ہے۔

حدیث موسل کا حکم: اگرارسال کرنے والاتا بی تقداور غیر تقددونوں فتم کے راویوں سے ارسال کرتا ہے تو اس صدیث مرسل کے بارے میں بالاتفاق تو قف کیا جائے گا، اور اگر اس ارسال کرنے والے تا بھی کی عادت معلوم ہے کہ وہ صرف تقدراوی بی سے ارسال کرتے ہیں تو اس مرسل کے تکم میں محد ثین کا ختا ف ہے۔

ا علامد ابن جر طافظ مراقی اور وزیر صنعانی وغیر و نے مرسل اور مقطع کے درمیان تعربف کے اختبار ہے بالکل امتیاز کردیا ہے، اور ان کے قول کا خلا صدیہ ہے کہ مقطع وہ ہے جس کی سند ہے ایک یا ایک ہے زائد راوی ساتھ بوجا کیں، اس شرط کے ساتھ کہ ساتھ ہونے والوں میں کوئی صحابی نہ ہواور سقوط ہے در ہے نہ ہواس تعربا ایف کا فائدہ یہ ہواکوئی صحابی نہ ہو، کی قید ہے مرسل ہے احر از ہوگیا، اور استوط ہے در ہے نہ ہوا کی قید ہے مصل ہے اختیاز ہوگیا۔ (حلیقات ارشاد: ۱/۱۸۲)

(۱) جمہورعلاء کے زویکاس کا حکم تو قف ہے (یعنی اس مدیث کے مقبول یا غیر مقبول یا غیر مقبول یا جائے گا۔اس مدیث مقبول ہونے کے بارے میں تو قف کیا جائے گا،اورکوئی حکم نیں لگایا جائے گا۔اس مدیث ہے کوئی مسئلہ اورکوئی حکم اس وقت تک ٹابت نہیں کر سکتے، جب تک معلوم نہ ہوکہ موسل کون ہے، تقد یا غیر تقدید

ا شکال: مرسل وہ حدیث ہے جس میں صحابی کاوا سطہ نہ ہوا ور سحابہ سب تو عدول و ثقات بی میں قوقف کی کیا وجہ ہے۔

جسواب: مجمی تا بعی تا بعی سے روایت کردیتے ہیں اور تا بعین میں تقد غیر تقد دونوں ہیں اس لئے تو تف ضروری ہوا۔

(۲) امام اعظم ابوحنینه امام ما لک کنز دیک مسر سل مطلقاً مقبول ہے کیوں کہ مسر سل نے صدیت کی صحت پر کمال وثوق اور کمال اعتادی بنیا دیر بی صدیت کو مسر سلا بیان کیا ہے، اگر مرسل کنز دیک رہ صدیت صحیح نہ ہوتی تو وہ قال دسول الله صلی الله علیه وسلم نہ کہتا۔

(۳) امام شافعی کنز دیک اگر حدیث موسل کوکسی دوسری حدیث موسل بامسند

ا اوراس کی دیگیل حافظ این تجر نے امام غزائی سے نقل کر تے ہوئے یہ تھی ہے کہ خلاء کا اس بات پر اتفاق ہے کہ راوی ماول ہونا چاہئے، نیز اگر سند میں اقطاع ہوتو اس میں تو تف کیا جاتا ہے۔ اور جب مرسل میں راوی محذ وف ہواتو ممکن ہے کہ وہ تا بعی ہو، اس لئے کہ یہ ضروری نہیں کہ مرسل صرف صحابہ ہے ہی روایت کرتا ہواور جب وہ تا بعی ہواتو ممکن ہے کہ وہ تا بعی ہوال لئے کہ یہ محی ضروری نہیں کہ اس کی روایت صرف تھا ت بی ہو بہ وہ تا بعی ہواتو ممکن ہے، کہ ضعیف ہوال لئے کہ یہ محی ضروری نہیں کہ اس کی روایت صرف تھا ت بی ہوا گا ہور اگر وہ تقد ہوت بھی اجمال ہے کہ وہ تا بعی تھہ ہی تا مجی بی ہوا ہو گئی ہے۔ لبذا تھہ روایت کرتا ہو کیونکہ ایک تا بعی کی روایت بعض مرتبہ کے بعد دیگر سے تھ سات تک بائی جا بچی ہے۔ لبذا تھ سات واسطوں تک یہ احتمال بلے گا ، اور وہ تمام ایسے ہیں جن کا نام معلوم نہیں اور نہ ان کا کچھ حال معلوم ہو اور اصل یہ ہے کہ مجبول الحال کی روایت معتم نہیں تو پھر مجبول احمین والحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھی ہے۔ اصل یہ ہے کہ مجبول الحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھی ہے۔ اسل یہ ہے کہ مجبول الحال کی روایت معتم نہیں تو پھر مجبول احمین والحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھی ہے۔ اسل یہ ہے کہ مجبول الحال کی روایت معتم نہیں تو پھر مجبول احمین والحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھی ہو ہیں تا کہ کیا تھی الحق کی روایت کیونکر معتم ہو تھی ہو تا ہو تھیں والحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھیں تو تھی ہو تا ہوں والحق ہو تھی ہو تھیں والحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھیں تو تھی ہو تھیں والحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھیں والحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھیں والحال کی روایت کیونکر معتم ہو تھیں۔

ے تائیداور توت حاصل ہوجائے آگر چہ یہ مسند یامسر سل ضعیف بی کیوں نہ ہوتو وہ مرسل مقبول ہے کیوں نہ ہوتو وہ مرسل مقبول ہے ورن قبول نہ ہوگی۔

(۳) امام احمر عن السلسله میں دوقول بین ایک بیہ ہے کہ موسل غیر مقبول اور ضعیف ہے اور دوسر اقول حیات کہ مدیث میں مسلسلے کے مدیث میں دوسر اقول حنابلہ کے یہاں رائے ہے۔
حدیث معضل: وہ حدیث ہے جس کی سند کے درمیان سے دویا زیادہ راوی مسلسل حذف ہو گئے ہوں۔

حدیث منقطع: وه حدیث ہے جس کی سند کے درمیان سے صرف ایک راوی حذف ہوا ہو یا چند راوی حذف ہوئ عول مگر مسلسل نہ ہوئے ہوں بلکہ الگ الگ جگہوں سے حذف ہوئے ہول۔

فائدہ: سابق میں گذر چکائے کہ منقطع غیر منصل کے معنی میں بھی آتی ہے جومقسم ہواری تعربی این میں بھی آتی ہے جومقسم ہواری کا معنی میں انتہاری ہے۔ مسقسم یعنی غیر منصل السند میں صرف راوی کا سقوط پیش نظر ہے اور تم میں درمیان ہے۔ مسقسم یعنی غیر منصل السند میں صرف راوی کا سقوط پیش نظر ہے اور تم میں درمیان

یور بعض علاء نے یہ تنصیل ذکر کی ہے کہ صحابہ کی مرسل روایت توبالا تفاق مقبول ہے، اور امام شافعی کے زو کی قرن تانی اور قالت کے راوی کی روایت فدکور وشر انظ کے ساتھ معتبر ہے اور امام مالک اور احناف کے زو کی قرن تانی اور قالت کے راوی کی روایت بھی مطلقاً مقبول ہے۔ (ققو الانز: ۲۷)

یا حضرت عام ثنافعی کے زویک قبولیت مرسل کے لئے چیشر انطابیں۔

⁽۱) ال روایت کوکسی حافظ حدیث نے مندانقل کیا ہو۔

⁽٢) اگر مندأ کس حافظ حدیث سے نہ آئی ہوتو کس حافظ حدیث نے مرسلای اس کونٹل کیا ہو۔

⁽۳) مرسل روایت بعض صحابه کے اقو ال کے موافق ہو۔

⁽س) الل ملم كا نتوى اس معنى كرمو انق مور

⁽٥) أرمرس ساقد كام كالحقيل كاجائة مجول إفيرمعتركوابنا استاذنه بتائ المكرثة مكام وكركرب

⁽۲) مرسل اگر حفاظ حدیث کے ساتھ کسی روایت میں شریک ہوتو ان کی مخالفت ندکرتا ہواورا گر مخالفت کریے تو اس کی روایت حفاظ کی روایت کے مقابلہ میں باقص ہو۔ (تعلیقات مع آمتی:۲ کا/۱)

سندے ایک راوی یا ایک سے زائد راوی کاستوط بشرط عدم اتصال محوظ ہے۔

فسائدہ: احادیث کے راوی تقریباً پانچ الکھ ہیں،ان کے حااات،ا ساء،والدین کے حااات،ا ساء،والدین کے حاایات،ا ساء،والدین کے حاایات،اورواقعات کویا وکریں پھر کہیں محدث کہاائیں گے۔

انقطاع سنداور ستوط راوي كامعر فت كاطريقه

داوی کاسندے سقوطراوی اور میروی عنه کے درمیان ملاقات نہ ہونے ہے معلوم ہوگایا تواس وجہ سے کہ دونول میں معاصرت نہیں ہے، بلکہ دونول کا زمانہ الگ الگ ہے ، یا دونول میں معاصرت تو ہے گر راوی اور میروی عنه کا اجتماع نہ ہورکا اور راوی کوشنی کے دوالہ سے روایت بیان کرنے کی اجازت نہیں ہے۔

فن قاریخ کی ضرورت اور اهمیت: کیول کروات میں معاصرت وطلاقات کا جانتا نہایت ضروری ہے کیول کہ کی بھی حدیث کے بارے میں کوئی فیصلہ ای وقت کیا جاسکتا ہے جب لقاء یاعدم لقاء کاعلم ہوجائے اور یہ بات فن تا ریخ یعنی فن اساء الرجال ہی ہے معلوم ہوگی، جس میں راویان حدیث کی تا ریخ والادت، تا ریخ وفات، طلب علم کا زمانہ اور خصیل علم کے لئے اسفار کے اوقات کی تفصیلات ہوتی ہیں۔ اسی وجہ سے فن اساء الرجال ایک بنیادی اور قابل اعتاد فن ہوگیا ہے۔

مديث مرس كابيان

ترلیس کے لغوی معنی میں عیب چھپانا دَلَّسَ البانع سامان مجع کاعیب جھپانا ،رات کی تاریکی اور شدت کو بھی ترلیس کہتے ہیں۔

ا کین فی زمانتاتهام کویا دکرماضروری نبیس ب، بلکدان کتب کانکم ضروری بن بین میں ان کے حالات مدون بیس اس طور پر ک اگر نام کسی راوی کے حالات وغیر و کی حقیق کرما جا بین ، توفی الغور ان کتب سے امغذ کر سکیں جن میں ان کے حالات مرتب ہیں۔
کے حالات مرتب ہیں۔

حديث مدلس كي اصطلاحي تعريف: مديث مدلس ومعديث

بہ جس میں سقط خفی ہولین راوی اپنے استاذ کو (جس سے بیصدیث ن ہے) حذف کرکے مافوق سے (جس سے اتقاء تو ہو گراس سے بیصدیث نہ تی ہو)اس طرح روایت کرے کہ استاذ کا محذ وف ہونا معلوم نہ ہو، بلکہ یہ محسوس ہو کہ مافوق ہی سے سنا ہے مثلًا "عن فلاں" یا "فسال فلاں" کہے۔ اگر اس صورت میں راوی صراحنا مافوق سے اپنا ساع بیان کرے مثلًا "سمعت" یا "حدثنی" وغیر ، کلمات سے روایت کرے تو یہ کذب ہوگا اوراس معل سے اس کی روایت ساقط ہو جائے گی۔

تركيس كامكان

جس حدیث میں تدلیس کی جائے وہ''مُسدَ اَسسُ" ہے اور اس معلی کانا م تدلیس ہے اور اس محل کانا م تدلیس ہے اور اس کے فاعل کو''مُدَلِسُ " کہتے ہیں۔

تدليس كتنتيم

تدلیس کی مشہور قسمیں تین ہیں: تدلیس الاسناد، تدلیس النیوخ ،تدلیس العمویہ۔

قدلیس کی مشہور قسمیا ہے: یہ ہے کہ محدث کی حدیث کوالیے شیخ ہے روایت کرے جو
اس کا ہم عصر ہے مگر اس سے ملاقات نہیں ہوئی یا ملاقات تو ہوئی ہے مگر اس سے کوئی حدیث نہیں سی ہے یا صدیث تو سی ہے مگر جو بیان کر رہا ہے وہ نہیں سی بلکہ یہ حدیث محدث نے اس

ا حافظ ابن جُرِّ نے تدلیس اور مرسل وغیر دکا اتبیاز بیان کیا ہے ان کی رائے ہے کہ اگر راوی اور مر وی عند کے درمیان ملا قات نہیں تو روایت منقطع ہے، اور اگر ملاقات ہے گر اجازت نہیں تو تدلیس ہے، اور اگر سرف معاصرت ہے ملا قات نہیں تو اس کانا م ارسال خفی ہے، اور دیگر نانا ء کنز دیک اگر معاصرت ہے گراتا نہیں تو وو مجھی تدلیس ہے، حافظ ابن جُرِّ کی دلیل ہے کہ اگر معاصرت تدلیس کے لئے کافی بموتی تو او مثان نبدی قیس بن ابن حازم وغیر دفخشر مین کی روایات کومرسل قر اردیا گیا ابن حازم وغیر دفخشر مین کی روایات کومرسل قر اردیا گیا ہے۔ (تعلیقات ارشاد: ۱/۴۰)

شیخ کے کسی ضعیف یا معمولی شاگرد سے سی ہاس وا مطہ کوحذف کر کے اس طرح روایت کرتا ہے کہ کا کا وہم ہوتا ہے، جیسے بقیة بن الولید اورولید بن مسلم کی تدلیس ۔ تدلیس کی ہے تم فدموم اور نا جائز ہے۔

تدایس المشیوخ: یہ بے کہ محدث اپنے شی کاذکر غیر معروف نام یا غیر معروف کنیت یا غیر معروف نسبت یا غیر معروف صفت ہے کرے تا کہ اوگ اس کو پہچان نہ سکیں کیوں کہ وہ ضعیف یا معمولی درجہ کا راوی ہے۔ تدلیس کی بیصورت بھی نا مناسب ہے مگر ناجا زبنیں ہے۔

تدلیس التسویة: یہ بے کہ محدث اپنے شیخ کوتو حذف نہ کرے البتہ صدیث کو عدد ف نہ کرے البتہ صدیث کو عدد ف نہ کرے البتہ صدیث کا عدہ بنانے کے لئے اوپر کے کسی ضعیف یا معمولی راوی کو حذف کردے اور وہاں ایسالفظ الائے جس میں ساع کا احتمال ہوتہ لیس کی ہے تم برترین تم ہے اور حرام ہے۔

تذليس كے اسپاب

تدلیس کی دووجوہات ہیں: اول غرض فاسد کی وجہ سے مثلاً کسی محدث کا استاذ معمولی درجہ کا ہے اور استاذ کا استاذ عالی رتبہ ہے محدث کواس معمولی استاذ سے روایت کرنے ہیں کسر شان محسوس ہوتی ہے اس لئے وہ استاذ کو حذف کر کے استاذ الاستاذ سے علوشان کے لئے روایت کرتا ہے اس مقصد سے تدلیس حرام ہے اور دوسری وجہ یہ ہے کہ محدث اختصار کے لئے استاذ کو حذف کر کے مافوق سے روایت کرتا ہے جیسا کہ بعض اکا برمحد ثین سفیان بن عیمینہ وغیرہ نے ایہا کیا ہے۔

تدليسكاتكم

ائنہ حدیث کے فرد کی مدلیس حرام ہے، امام وکیج فرماتے ہیں کہ جب کیڑا فروخت کرنے میں مدیث مرام ہوگ ۔ کرنے میں مدرجہ اولی حرام ہوگ۔

اور شعبہ نے تومداسس کی ندمت میں مبالغہ سے کام لیا ہے، یہاں تک کہ اس کوزنا ہے بھی سخت اور کذب کے مرادف قرار دیا ہے۔

مدتسكاتكم

جس راوی کے بارے میں تدلیس ثابت ہوجائے اسکی روایت مقبول نہیں ہے،البتہ ارتحدیث کی صراحت کرے مثلاً حدثنی اور مسمعت وغیر ، نے قال کرے قاتال قبول ہوگ۔ مدیث مُدکس کا تھم

صدیت مدلس کے بول اور عدم قبول کے بارے میں محدثین کے اقوال مختلف ہیں:

(۱) محدثین اور فقہاء کرام کی ایک جماعت کا ند بہب یہ ہے کہ تدلیس ایک تتم کی
جرح ہے اگر کسی راوی کے بارے میں معلوم ہوجائے کہ وہ تدلیس کرتا ہے تو اس کی روایت
قبول نہیں کی جائے گی، یعنی جس طرح دیگر عیوب کی وجہ ہے بحروح کی روایات رد کردی جاتی
ہیں ای طرح اس کی روایت بھی رد کردی جائے گی۔

(۲) بعض محد ثین مذلیس کو بالکل مفنر نہیں تبجھتے اور ان کے نز دیک مسد لہے۔ روایت علی الاطلاق مقبول ہے۔

(۳) جمہور فقہاء کرام اور محدثین عظام کی رائے یہ بیکہ جس راوی کے بارے میں تحقیق ہوجائے کہ وہ صرف فقہ سے تدلیس کرتا ہے جیسے تفیان ابن عیدنہ وغیر ہتو اسکی روایت مقبول ہے اور جوراوی ضعیف روا ق سے تدلیس کرتا ہے تو جب تک صرح طور سے ماع کو بیان نہرے اسکی روایت قابل قبول نہیں ہے ہیں آخری قول متاخرین کے زدیے قابل عمل ہے کے نہرے اسکی روایت قابل قبول نہیں ہے ہیں آخری قول متاخرین کے زدیکے قابل عمل ہے۔

ا کل ہو ال اس میں بائی بین تین تو اوپر بیان کئے جا بھے: (۴) یہ ہے کہ اگر تدلیس کا ہو گرراوی سے اور ہے، تو اس کی روایت مقبول ہے ورندم روو۔ (۵) یہ ہے کہ مدلس روایت مرسل روایت کی طرح ہے۔ (تعلیقات ارثاد:۱/۱۰)

مُدَلِّسُ نام ركعي كاوج تسميه

مدلس اصطلاحی اور مدلس نغوی دونوں میں خفاءاور پوشیدگی ہوتی ہے یعنی جس طرح تاریکی سے اشیا مخفی ہوجاتی ہیں، ای طرح تدلیس سے سقوط راوی مخفی ہوجاتا ہے اس وجہ سے اس حدیث کانام مدلس رکھا گیا ہے۔

حدیث مضطوب: وہ حدیث بے جس کی سندیا متن میں متعددراویوں یا ایک بی راوی کے بیان میں اختلاف ہوجائے خواہ بیا ختلاف تقدیم وتا خیر کا ہویا زیا دتی وکی میں، یا ایک راوی کی جگہ دوسر سے راوی کے بدل دینے یا ایک متن کو دوسر سے متن سے بدل دینے میں ہو یا سند کے اساء اور متن کے اجزاء میں تھیف ہوجائے سے یا اختصار وحذف وغیرہ سے اختلاف ہوجائے۔ اگر ان مختلف فیدروایات میں جمع وظیق ممکن ہوتو بہتر ہے ورنہ اس سے استدال کی موقوف رہے گا۔

فائدہ: ثبوت اضطراب کے لئے ضروری ہے کہ مختلف روایات درجہ میں مساوی ہوں اور کوئی قریدہ میں مساوی ہوں اور کوئی قریدہ میں مہر جی نہ ہو کیونکہ قوی اور ضعیف کے درمیان اختلاف معتبر ہی نہیں ہے اس طرح قرید مرجحہ کی صورت میں بھی مرجوح شاذ ، یا منکر ہوکر ساقط الاعتبار ہوجائے گی اور اضطراب مفرنہ ہوگا۔

⁽۱) وصل اور ارسال كاتعارض (بعض مرسل روايت كرية بول اوربعض موصول)

⁽٢) وتف ور نع كاتعارض (بعض موقوف روايت كريتے بول بعض مرنوع)

⁽ س) اتعمال واقطاع كاتعارض (بعض متصل روايت كريت بول بعض منقطع)

⁽۴) مثلاً ایک جماعت عن رجل عن تا بعی عن صحابة نقل کرے اور کوئی عن رجل عن تا بعی آثر عن صحابة بعید نقل کرے۔

⁽۵) كسى سند من ايك آدھ راوى كا اضافه بوجائے۔

⁽٢)راوى كنب من اختاف بوجائد (تعليقات ارثاد: ١/٢٥٠)

حدیث مدرج: ادراج بابافعال ہے ہادخال الشی فی الشی کی میں آتا ہے۔ اس باب سے مسدر ج صیغة اسم مفعول ہے جس کے معنی ہیں '' واضل کیا ہوا''۔

محدثین کی اصطارح میں مدرج کی دوئتمیں ہیں :مدرج المتن، مدرج الاسناد.

مدرج السفن: حدیث کے متن میں کسی راوی (صحابی یا تابعی) کا کلام اس طرح داخل کردینا کے بطا ہر خیال ہو کہ یہ بھی کلام رسول الله سلی الله علیه وسلم ہے اور بظاہر متن اور مدرت میں کوئی اخیاز باقی ندر ہے۔ (خواہ کلام داخل کرنے کی غرض بیان لغت ہو یا تغییر معنی ہویا تقیید مطلق ہو) یہ احد اج عام طور ہے آخر حدیث میں ہوتا ہے اور بھی ابتداء حدیث اور درمیان حدیث میں ہوتا ہے۔

مدرج الاستاد: ال كي بارتمين بن:

- (۱) متعدداساتذہ سے مختلف سندوں سے ایک صدیث سی مگریان کے وقت برایک استاذی سندعلیجد ، بیان نہی بلکہ سب کی سندول کو طلا کرایک سندکر دی ۔
- (۲) شخ نے حدیث کسی سند ہے روایت کی اوراس کا پھھ حصہ دوسری سند ہے بیان کیاراوی نے پوری حدیث کہا ہی سند ہے روایت کردی یا ایک حدیث ایک شخ ہے تی اور اس کا پھھ حصہ اس شخ کے کسی شاگر دسے سنا پھر پوری شخ کی سند ہے روایت کردی اوراس شاگر دکاواسط حذف کردیا۔
- (۳) کسی راوی کے پاس دوحدیثیں مختلف سندوں سے تھیں گربیان کے وقت ایک بی سندھے دونوں کو روایت کر دوسری بی سندھے بیان کیا گر دوسری حدیث کا کوئی حصراس میں شامل کر دیا۔
- (س) شیخ نے کسی حدیث کی سند بیان کی پھراس کامتن بیان کرنے سے پہلے کوئی

کلام کیا شاگرد نے غلط ہی ہے اس کلام کواس سند کامتن سمجھا اور اس سے روایت کردیا۔

ادراج كاتكم

عدادراج کی حرمت برمحدثین کا تفاق ہے کیوں کہ اس سے کلام رسول میں کلام غیررسول کا دخال ان آتا ہے۔ بعض محدثین بالقصد ادر اج کرنے والے کو ساقسط المعدالت کہتے ہیں، البتہ جوادرات لغوی معنی کے بیان یا معنی صدیث کی تغییر وتو ضیح کے لئے ہواس سے چشم پوشی کی جائے گی لیکن اس صورت میں مناسب یمی ہے کہ اپنے کلام کو کلام رسول سے متاز کر کے بیان کرے۔

اورا گر ادر اج بالقصد نہیں بلکہ خطاء سے واقع ہوجائے تو اس میں کوئی مضا کقہ نہیں ہے کہ خطاء اورنسیان سے بری ہونا انسان کے لئے ممکن نہیں ہے، لیکن یہ خطاء اورنسیان سے بری ہونا انسان کے لئے ممکن نہیں ہے، لیکن یہ خطاء اگر کشر ہوجائے تو ضبط وا تقان کی حیثیت سے وہ راوی مجروح ہوگا۔

منصل منبيه: روايت بالمعنى واللفظ كابيان

تنبید ایسے امر پر ہوتی ہے، جوبدیمی ہونے کے ساتھ معرض خفا بھی ہو۔ حدیث کواس کے اصل الفاظ کے بجائے دوسرے ہم معنی الفاظ میں نقل کرنا روایت المعنیٰ کہااتا ہے اور حدیث کواس کے اصل الفاظ میں بلاکسی تصرف کے نقل کرنا روایت باللفظ کہااتا ہے۔

روايت باللفظ كانتكم

 ہے۔اللہ تعالیٰ تر وتازہ اور خوش وخرم رکھے اس مخص کوجس نے میری بات سی پھرا سے محفوظ کیا اور جن الفاظ میں الفاظ میں الفاظ میں اوا کردیا۔اس حدیث میں دو ایست باللفظ کے بارے میں آتاء نامدار علیہ الصلو ہوا اسام نے بٹارت اور خوشخری پیش فرمائی ہے اس لئے دو ایت باللفظ اولی اور بہتر ہے۔

روايت بالمعنى كاحكم

روایت بالمعنیٰ کے جوازاورعدم جواز کے سلسلہ میں علاء کے مختلف اقوال ہیں:

(۱) اکثر علاء حدیث کا مسلک ہے کہ جو شخص علوم عربیہ کا عالم، اسلوب کلام میں ماہر، ترکیب کے خواص اور خطاب کے مفہوم سے واقف ہواس کے لئے روایت بالسمعنیٰ جائز ہے۔ کیوں کہ فدکورہ امور میں ماہر خض روایت بالسمعنیٰ کے وقت حدیث میں کی وبیش کی غلطی نہیں کرے گا۔

خلاصہ بیہ ہے کہ صرف ،نحو، لغت، اختقاق اور فنون بلاغت میں ما برخص کے لئے روایت بالمعنی جائز ہے اس کے علاوہ کے لئے جائز نہیں ہے۔

(۲) الفاظ مفردہ میں روایت بالمعنیٰ کے ذرایے تغیر جائز ہے مرکبات میں جائز نہیں جائز نہیں جائز نہیں جائز نہیں ہے۔ نہیں ہے۔

(۳) جس خض کوالفاظ صدیث یا دہوں اس کے لئے روایت بالمعنی جائز ہتا کہ دہ ان الفاظ صدیث میں ان کے متر ادف الفاظ کے ذریعی تغیر و تبدل پر قادر ہو۔

(س) جس شخص کو حدیث کامفہوم یا دہواور الفاظ بھول گیا ہوتو اس کے لئے احکام حاصل کرنے کی ضرورت سے رو ایت بالسمعنی جائز ہے اور جس کوالفاظ حدیث یا دہوں اس کے لئے روایت بالمعنیٰ نا جائز ہے۔

فائده: روایت بالمعنی صحاح سترمین بکثرت موجود بیر_

حديث مععن كابيان

ال جگر بارلفظ بین:عنعند، مُعَنُعَنُ، مُعَنُعِنُ، مُعَنُعَنُ عَنُهُ.

عَنُعَنَة: بروزن فعللة (بَعُثَرَةٌ) مصر رجعلی ہے حمد له اور بسمله کے ماند،
اصطابات میں عن فلان عن فلان سے لفظ حدیث نقل کرنا عنعند کہا تا ہے۔
حدیث مُعَنُعَنُ: وہ حدیث ہے جو عنعند کے طریق سے روایت کی گئی ہو۔
مُعَدُنُعِنُ: صِیعَةُ اسم فاعل ہے وہ راوی جو عن فیلان عن فلان سے روایت کی جائے وہ مُعَنُعَنُ عَنُهُ ہے۔
سُرے۔ اور جس راوی سے حدیث معنعن روایت کی جائے وہ مُعَنُعَنُ عَنُهُ ہے۔
معد مرجع

مديث مععن كاحكم

مدلس راوی کاعنعنه با ایتفاق مقبول نہیں ہے اور راوی غیر مدلس کے عنعنه کے قبول اور عدر مقبل کے عنعنه کے قبول اور مقبل کے حکم میں ہے یا نہیں علاء حدیث کے اقوال مختلف ہیں:

(۱) حدیث معنعن مطلقاً قائل استدا النہیں کیوں احتمال انقطاع موجود ہے کیکن ہے قول با ایجماع رد ہے۔

قول با ایا جماع رد ہے۔

(۲)امام سلم کی رائے یہ ہے کہ حدیث معنعن متصل کے تکم میں ہے بشر طیکہ داوی اور مووی عند کے درمیان معاصر ت اورا مکان لقاء ہو۔ یہ قول علاء کاا جماعی ہے۔

(۳) علی بن المدین اورامام بخاری کے نزدیک معاصرت کے ساتھ ساتھ داوی اور مروی عند کے درمیان ایک مرتباط قات بھی ثابت ہو۔ اگر صرف معاصرت ہاور ملاقات نہیں ہے، تو امام بخاری کے نزدیک سے صدیث مصل السندند ہوگ ،امام سلم نے مقدمہ مسلم میں اس قول پر شدید کیر فرمائی ہے۔

") ابوالمنظفر سمعائی نے راوی اور مروی عنہ کے درمیان طول صحبت کی شرط بھی لگائی ہے۔ (۵) امام ابوعمرودانی المقریؒ نے بیکی شرط لگائی ہے کہ اس داوی کا اپنمسروی علی عند سے اخذ حدیث اور و ایت حدیث معروف اور شہور ہو۔ (مقدمه النووی علی شرح صحیح مسلم)

مديث مُشنَدُ كابيان

مُسُنَدُ کے معنی: مُسُنُدُ می فاص اصطااح بہاجاتا ہے: هذا حدیث مُسُنَدُ اس کی جی مسانید ہے۔ اسندہ فی الجبل کے معنی ہیں پیاڑ پر جُ حانا۔ مُسُنَدُ (اسم مفعول) کے معنی ہیں جُ حایا ہوا۔ اور اصطااحی معنی ہیں وہ بات جس کی سند قائل تک پنچائی گئی ہوا ور مُسُنِدُ (بصیغی اسم فاعل) کے معنی ہیں جُ حانے والے اور اصطااحی معنی ہیں جُ حانے والے اور اصطااحی معنی ہیں باسند کرنے والا یعنی مدار سند جیسے حضرت شاہ ولی اللہ محدث وہلوگ "مند البند" کہائے ہیں کیوں کہ آ ب محدثین ہند کی سند کامدار ہیں کی محدث کی سند آپ کے واسطے کے بغیر نہیں جاتی مُسُنَدُ کے نام سے با قاعدہ کتا ہیں تصنیف کی تی ہیں، جیسے منداا مام احمد بن ضبل اور مسانیدا ایا ما العظم وغیرہ ۔ بعض لوگ مَسُنَدُ (میم کے فتح کے مندا ایا مام حمد بن ضبل اور مسانیدا ایا ما العظم وغیرہ ۔ بعض لوگ مَسُنَدُ (میم کے فتح کے مناتھ) بولے ہیں یہ غلط تلفظ ہے اس لفظ کے معنی ہیں نیک لگانے کی جگد۔

حدیث مسند کی تعریف: مسند وه صدیث ہے جوکی سحابی نے مرفوناً بیان کی ہواورائی سند سے مروی ہو جو بظاہر مصل ہولہذا جس حدیث میں القطاع خفی ہووہ بھی حدیث مُسْنَدُ کہا اے گی۔مندکی یہ تعریف مشہور ومعمد ہے۔

حاصل یہ ہے کہ مند ہونے کیلئے مرفوع اور متصل ہونا ضروری ہےان دونوں قیدوں کے بغیر حدیث مند نہ ہوگی۔

حافظ خطیب بغدادیؑ برمتصل السند کومسند کہتے ہیں خواہ وہ موقوف اور مقطوع ہی ہو حافظا بن عبدالبرُصرف مرفوع کومسند کہتے ہیں ،اگر چروہ مرسل معصل اور منقطع ہی کیوں نہو۔

ا حاكم وغير دنالاء في مند ، اورمرنو ك ورميان بهترين فرق بيان كياب ، وديه (باقي الكل مغير)

تيسرى فصل

حديث شاذ منكراور معلل كابيان

راویوں کے حالات کے اعتبارے آخبارا حاد کی دوسمیں ہیں : مقبول اور مودود.

مقبول: وہ خبر واحد ہے جس کے سب راوی تقداور معتبر ہوں۔
مودود: وہ خبر واحد ہے جس کا کوئی راوی غیر معتبر اور ضعیف ہو۔
مدید شریف فی نفسہ مردود نہیں ہوتی صرف راوی کے غیر معتبر ہونے کی وجہ سے مردود کہا تی ہے۔

چرحدیث غیر مقبول کی قسمول میں شاذ، منکر اور معلل بھی ہے۔

حدیث شاف اسم فاعل ہے، جیے ذاب سندو ذمصدر ہے نکان شاف نکلنے والالیکن اول وضع کے اعتبار سے شاف وہ محص ہے جو جماعت سے نلیحد ، اور خارت ہوجائے اور اصطایاح محدثین میں شافوہ صدیث ہے کہ تقدراوی اولق اور ارج کے خلاف روایت کرے اور اس خالفت کانام شذو فر ہے ۔ ثقدراوی عام ہے خوا ، صدیث حسن کاراوی ہویا صدیث میں ارج کی ارجیت بھی عام ہے خوا ، صبط کی زیادتی کی وجہ سے ہویا تعداد کی کثر سے کی وجہ سے ہویا تعداد کی کثر سے کی وجہ سے ہویا تعداد کی کثر سے کی وجہ سے ہویا کسی اور وجہ سے راج ہواور مخالفت ایسی ہو کہ اس روایت کے لینے کی صور سے میں ارج کی کسی اور وجہ سے راج ہواور مخالفت ایسی ہو کہ اس روایت کے لینے کی صور سے میں ارج کی

(ماشیم فی گذشته) ب کرمر نوع مین صرف متن کودیکها جاتا ہے۔ اگر متن کی نبت حضور اقدی ملی مقد علیه و کلم کی طرف درست ہے تو وہ مر نوع ہے خواہ اس کی سند مصل ہویا نہ ہو۔ اور اس کے بالمقابل مصل ہے کہ اس میں صرف سندکودیکھا جاتا ہے، کہ وہ مصل ہے یا منقطع وغیر ہے خواہ مر نوع ہویا موقوف۔

اور مند میں سند اور متن دونوں چیز وں کو دیکھا جاتا ہے کویا مند میں اتصال اور رفع دونوں شرطیں ضروری ہیں لبذ ا مند اور متصل جرنوٹ کے درمیان عموم خصوص من وجہ کی نسبت ہے، پس ہر مند تصل بھی ہوتی ہے، اور مرنوٹ بھی ہے، لیکن ہر متصل کایا ہر مرنوٹ کا مند ہونا ضروری ہیں ہے۔ (الکت: ۱/۳۰۰)، بحولہ تعلیقات ارشاد: ۱/۵۵) روایت کاردکرنا ازم ندآئے ۔ران کی کانام حدیث محفوظ ہے اور مرجو سے کانام شاؤہے۔

عنائدہ: اگر مخالف راوی تقدنہ ہوتو اس کی روایت حدیث مو دود ہے۔

حدیث منکر اور معروف کی قعریف: منکر وہ حدیث ہے جس کو اضعف (کمزور ترین) راوی ضعیف کے مخالف روایت کرے اس کے مقابل کو معروف کہتے ہیں۔

کہتے ہیں۔

فائدہ: شاذ اور محفوظ دونوں کے راوی تقد ہوت ہیں البتہ محفوظ کاراوی تقابت میں راج اور شاذ کا راوی تقابت میں اپنے مقابل کے لحاظ سے کمز ور اور مرجوح ہوتا ہے اور معروف اور منکر دونوں روایتوں کے راوی ضعیف ہیں صرف عف کی شدت اور عدم شدت کا فرق ہے معروف کاراوی ضعیف اور منکر کا اضعف ہوتا ہے۔

اقسام ادبعهاتكم

حدیث شاذ: مردود اورغیرمقول ہے۔

حدیث محفوظ: مقبول ہے۔

حدیث منکر: مردود ہے۔

حدیث معروف: مقبول ہے۔

حدیث شاذ کی حوسری تعریف: امام ابوعبداللہ حاکم صاحب متدرک نے حدیث شاذ کی تعریف بیان کی ہے کہ شاذ وہ حدیث ہے جس کوروایت کرنے میں اُقتہ راوی منفر دبواوراس کی تائیدوموافقت میں کوئی اصل نہ ہواس تعریف میں امام حاکم نے شاذ کے اندر مخالفت کا کیا ظریس کیا ہے، اور اس تعریف میں حدیث سیح غریب بھی شاذ میں واخل ہے، ابندا شاذ کی ریت بھی شاذ میں واخل ہے، ابندا شاذ کی ریت بھی شاذ میں واخل

شاد کی تیسری تعریف: حافظ ابویعلی فلیل فی شاذی اس طرح تعریف

کی ہے کہ شاذ وہ حدیث ہے جو صرف ایک سند سے مردی ہوخواہ وہ راوی تقد ہو یا غیر تقد دوسر سے رادی کی مخالفت یائی جائے یانہ یائی جائے۔

منکر کی دوسری تعریف: منگروہ صدیث ہے جوراوی کے تس یا کثرت غفلت یا زیادتی غلط سے مطعون ہو خواہ اس کی روایت تقد کی روایت کے خلاف ہویا نہو۔ میجد اجدا اصطلاحات ہیں،ان میں بالہمی کوئی مناقشہ اور جھگر انہیں ہے۔

حدیث معلل: معلل: بفتح اللام مصدرتعلیل اسم مفعول ہے جمعنی علت اور خرائی وائی حدیث اور اصطااح میں وہ حدیث ہے جس میں کوئی پوشیدہ باریک اور دقیق علت علت وسب ہو جو حدیث کی صحت کو عیب دار بنادے، جس کو ماہرین حدیث خورد بین سے پیچان سکتے ہیں۔

عسات: علاء حدیث کی اصطاح میں علت ہم ادو بخفی، غامض اور دقیق سبب بے جوراوی کے وہم کی وجہ سے شروط صحت کی جامع حدیث میں خلل انداز ہوتا ہے۔ بیسب قادح اکثر اسناد میں واقع ہوتا ہے، اور بھی متن میں ہوتا ہے، اور بھی سنداور متن دونوں میں پایا جاتا ہے۔ یشن محدث دہلوگ نے معلل کی تعریف میں است ادفی قیداس کثرت کے اعتبارے لگائی ہے یہ قید احتر ازی نہیں بلکہ قیدا کثری ہے۔

معلل كو بهجاننے كا طريقه: جمشخص كوذبن اقب، حفظ كامل، معرفت تامه اور علوم حديث ميں كامل مهارت عطا ہوئى ہو، رواة كمراتب كوجانا ہواور اسانيدومتون كى بچپان كاخاص ملكه حاصل ہووہ حديث معلل ميں علت قادحه كو بچپان سكتا ہے، جيسے موصول سند كومرسل اور مرفوع كوموقوف بنا دينا في اور بسااوقات معلل (بكسر اللام بمعنى

ا جس عدیث میں ایس بیاریاں ہوں ان کو اسانید معللہ کبا جاتا ہے اور اس عدیث کومعلل کبا جاتا ہے، بعض مرتب ایک ایک عدیث کے سات سوطریق ہوجائے ہیں، مثال بخاری کی انسا الاعمال بالثیات امام بخاری نے سات سواسا تذہ سے ن ہے۔

علت قادحہ کو بیان کرنے والا) اپنے دعویٰ پردلیل قائم نہیں کریا تا کیوں کہ یہ ذوقی چیز ہے اور ذوق امور پردلیل قائم کرنا دشوار ہوتا ہے جیسے صراف دراہم و دنانیر کود کیھتے ہی اپنے ذوق سے کھر ہے، کھوٹے کو پہچان لیتا ہے گراس کی دلیل بیان کرنے سے قاصر رہتا ہے۔

تنبیہ: حدیث معلل کوحدیث معلول بھی کہتے ہیں مگرا بن الصلاح اورا مام نووی اس کو درست نہیں سمجھتے کے

فسائده: فن على حديث مين متعدد كتب تصنيف بوئى بين جيها ما ابوحاتم كى تصنيف علل الحديث اورحافظ دار قطنى كى العلل الوارده فى الاحاديث النبويه وغيره انتهائى جامع كتابين بين امام ترفري كى كتاب العلل بحى النفن كى ابم كتاب ب-امام نسائى احاديث معلله كو بتلات بين اور بخاري محيح حديثون كواورا مام سلم ذراكى كراته كدوه بتلائي عدائل كاين مسائل كلين -

متابعت: کی راوی کا دوہر براوی کے ساتھا سنادھدیث میں موافقت کرنا۔
متابع اور متابع: جوراوی دوہر براوی کی موافقت کررہا ہے وہمتابع ہے
(بکسرالباء) اورجس کی موافقت کی جاربی ہے وہمتابع ہے (نفتح الباء) محدثین کا قول تابعه فلان اورامام بخاری کا قول و له متابعات اس معنی و مفہوم میں مستعمل ہے۔

متابعت کے درجات

متابعت قامه: الرراوي كي في مي موافقت موتووه متابعت تامه إونكه

ا بعض نحاة نے ال کومعلل قرارد یے برکام کیا ہے کہ بیاب انعال سے باعل اعلال سے اخوذ ہے، اور سرف ای صورت میں بغوی اور اصطلاحی معنی کے درمیان مناسبت ہو عتی ہے، مگر بعض علاء نے ال کو باب تعدیل سے قرار دیا ہے اور ال صورت میں بظاہر معنی میں مناسبت نہیں ہے، کیلن وہ خاص طریقہ سے مناسبت بیدا کر ۔ تے ہیں کا تعلیل کے معنی میں غالل کرما مشغول کرما کیونکہ علمت اس روایت کو عاق کردیتی ہے اور مشغول کردیتی ہے، کسی وجہ سے ال کرما مشغول کرما کیونکہ علمت ہیں۔ (تعلیقات ارشاد: ۱/۲۳۳۷)

اول اسناد میں زیا دہ کمزوریاں ہوتی ہیں۔

متابعت متابعت الماميرة: اوراً كرراوي كي شخ الشيخ مين موافقت بوتو وه متابعت قاصره هي-

مقابعت کا هائدہ: متابعت ہے تقویت وتا ئیدکا فائدہ حاصل ہوتا ہے۔ متابع کے لئے اصل کے ہم رتبہ ہونا ضروری نہیں ہے بلکہ اصل ہے کم درجہ کی حدیث بھی متابعت کی صلاحیت رکھتی ہے۔

مقابعت كى شرط: متالى اوراصل دونول صديثول كالك صحابى مروى موا متابعت كى كر طب-

مثلة اورنحوة كافرق

اً رمتانی حدیث اصل صدیث سے لفظ اور معنی میں موافق ہوتو اس کو مذل کہ تے جیر کیا جاتا ہے۔ جاتا ہے اور اگر صرف معنی میں موافقت ہولفظ میں نہ ہوتو اس کو نحو کہ تے جیر کیا جاتا ہے۔ مصافعت وہ متن صدیث ہے موافق ہوئو اہلفظ اور معنی دونوں میں موافق ہو یا صرف معنی میں موافق ہو اور دونوں متن دو صحابہ سے مروک ہوں۔ محد ثین اس صورت کو لد شاھد من ابی ھریر ق، لد شو اھد ویشھد بد حدیث فلان کے الفاظ ہے جیر کرتے ہیں۔

الم العنى متابعت كيك يضر ورئيم ك متابع اصل كورجها ثقد يوبلك اگراس كم ورجه بونو بحى متابعت ورست بيتى متابعت في متابعت ورست بيتى ك صلى پر اختاد بوتا بي متابع پر اختاد بين اور امام عنون كي متابعت بين كري بين ورست بي اس لئے كه اصل پر اختاد بوتا بي متابع پر اختاد بين اور امام عنوقيت متاوي في وونوں بي (اصل ومتابع) تابل اختاد بين بو يتح مگر دونوں كے اجتائ ستو يتقويت بيد ابوجائى بي البت و الله بين بين الله بين ا

متابع اورشامدكي دوسرى تعريف

بعض محدثین متابع اس حدیث کو کہتے ہیں جواصل حدیث سے لفظ اور معنی دونوں میں موافق ہوخواہ ایک صحالی سے مروی ہویا دوصحابہ سے۔

اور شابراس کو کہتے ہیں کہ جواصل سے صرف معنی میں موافقت رکھے۔

گویاان حضرات کی اصطااح میں لفظ ومعنی میں موافقت اور عدم موافقت کا اعتبار ہے سے ابی کے ایک یا دوہونے کا اعتبار ہیں ہے۔

تنبیه: متابع برشابدادرشابد برمتابع كاطلاق بكثرت بوتا ب_

اعتباد: متائع اور شام کی تاش وجبخو کرنے کے لئے صدیث کی سندوں کوجمع کرنا

اعتبارکہااتا ہے۔

حدیث کی بنیا دی اقسام

صدیث کی بنیا دی اقسام تین بین جی ،حسن،ضعیف کے صحیح اعلی،حسن متوسط اورضعیف ادنی ہے ۔ پھر صدیث صحیح اور حسن کی دودوقتمیں بین :صحیح کذات، صحیح لغیر ، حسن لذاته، حسن لغیر ہ.

صحیح لذاته: وه صدیت ب جس کے تمام راوی تقداور معتبر مول محدیث

ے علامہ ابن تیمیہ نے اپنے فقا وکی میں اس بات پر اہما ٹافقل کیا ہے، کہ امام تر مُدی سے قبل علاء حدیث کی صرف دو فتمین کرتے تھے، سیحے ضعیف۔

پرضعیف کی دوشمیں ہوئی تھیں، ایک وہ جس پر عمل کیاجا سکے، جو حسن کے قریب ہوئی، دومری وہ جو قابل عمل نہیں، پھر بعد کے علاء نے حدیث کی تین اقسام کردی، اور اب کبی اصطلاح بن گئ ہے، اور حدیث کی تمام اقسام أنبیں تین میں شامل ہوجاتی ہے۔ (فاوی این تیمید:۱۸/۲۳) شریف کوسند کے ساتھ خوب اچھی طرح محفوظ کرنے والے ہوں یعنی تام الضبط ہوں۔اس کی سندمتصل ہوا سناد میں کوئی علت خفیہ نہ ہواوروہ روایت شاذیعی نہو۔

وضاحت: اس تعریف ہے معلوم ہوا کہ بعت حدیث کے لئے پانچ شرطیں ہیں: راوی کاعادل ہونا، تام الضبط ہونا، سند کامتصل ہونا، علت قادحہ ہے بری ہونا، شذوذ ہے بری ہونا۔ پہلے کی تین شرطیں: عدل، ضبط، اتصال، وجودی ہیں۔ اور بعد کی دوشرطیں: شذوذ، علت، ہے بری ہوناعدی ہیں۔

عدالت کی قید ہے کا ذب اور فائن کی روایت خارت ہوگئی، تام الضبط ہے کیر المغلط اور کیر الغلط اور کیر الغلط کی روایت خارت ہوگئی، اتصال سند کی قید ہے قطع، معضل وغیرہ روایات خارت ہو گئیں جن میں راوی کے وہم کی وجہ خارت ہو گئیں جن میں راوی کے وہم کی وجہ ہو کئی مفرعیب مثلاً موصول کا ارسال اور موقوف کا مرفوع ہونا وغیرہ پیدا ہو گیا اور عدم شذو ذ کی قید سے وہ روایات خارت ہو گئیں جس میں تقدراوی نے اپنے ہواؤت کی مخالفت کی ہو۔

محدیج لفید و، حدیث ہے جس میں صفات کی کچھکی ہواور کھر تاطر ق سے یہ کی دور ہوگئی ہو۔ کو یا ذکورہ تمام صفات علی وجہ الکمال ہوں تو اس کو سے لذاتہ کہیں گے، اور اگر ان صفات میں کوئی قصور ہولیکن اس کا تد ارک کرنے والی کوئی چیز موجود ہوتو اس کو سے کے اور اگر ان صفات میں کوئی قصور ہولیکن اس کا تد ارک کرنے والی کوئی چیز موجود ہوتو اس کو سے گئیر ، کہیں گے۔

وجه قسمیه: چونکه بیرصدیث درجهٔ سحت میں امر فارجی یعنی کشرت سند کے فرریع پہنچی ہے اس کے اسے صحیح افیر و کہتے ہیں گویا غیر کی وجہ ہے اس کو کہتے ہیں۔ بخلاف صحیح لذاتہ کے کہاس کی صحت لذاتہ ہے۔

حسن لخاقه: وه حدیث ہے جس کا کوئی راوی خفیف الضبط ہولیعنی اس کی یاد داشت ناقص ہواور سیح لذاتہ کی باقی تمام شرطیں اس میں موجود ہوں لیعنی رواق کی عدالت

ا تصال سند، اسناد کا علت خفید سے پاک ہونا اور روایت کا شاؤنہ ہونا اور بیکی کثر تطرق سے زائل نہ ہوئی ہو۔

حسن لغیرہ: وہ صدیث ہے جس کے کسی راوی میں ثقابت کی تمام صفات یا بعض صفات نہ پائی جاتی ہوں گر تعدد طرق سے نقصان کی تا افی ہو گئی ہو مثلاً کسی حدیث کا راوی مستورالحال ضعف حافظہ کی وجہ سے ضعیف ہو گر تعدد طرق کی وجہ سے قبولیت راجج ہوگئی ہوتواس کو حسن لغیر ہ کہتے ہیں۔

حدیث ضعیف: وه حدیث ہے جس میں صحیح کی کل یا بعض شرطیں مفتو دہوں۔ فائدہ: حسن نغیر ه کی میار صور تیں میں:

(۱) وہ حدیث جس کے کسی راوی کی یا دواشت خراب ہے جب اس کا کوئی معتبر متابع مل جائے تو وہ حدیث حسن لغیر ہ بن جاتی ہے، خواہ وہ متابع اصل راوی سے اعلی درجہ کا ہو یا مساوی درجہ کا۔ البتدا اً کر کمتر ہوتو اس کی متابعت کا اعتبار نہ ہوگا۔

(۲) وہ حدیث جس کا کوئی راوی مستور یعنی مجبول الحال ہے جب اس کا کوئی متابع مل جائے تو وہ بھی حسن لغیر ہ بن جائے گی۔

(۳)وہ حدیث جس کی اسنادمرسل ہے جب اس کا کوئی معتبر متابع مل جائے تو وہ بھی حسن فتیر ہبن جائے گی۔

(س) وہ حدیث جس کی اسناد میں تدلیس کی گئی ہواور محد وف راوی کا پیتہ نہیں چل رہا ہے جب اس کا کوئی معتبر متابع مل جائے تو وہ بھی حسن لغیر ہ بن جائے گی۔

تمام اقسام كيمراتب اوراحكام

صحیع لذاقه: بالاتفاق تمام محدثین کے نزد کی اعلیٰ رتبہ کی حدیث ہے اور اس سے استدالال اور اس بر عمل واجب ہے۔ صحیح لغیرہ: میر کے اور سے کم مرتبہ ہے اور سن لذاتہ سے اعلی مرتبہ ہر ہے۔ شرعاً واجب العمل اور الائق استدال ہے۔

حسن الناقة: بدرتبه میں صحیح ہے کم رّ ہے ، کیکن شری جت ہونے میں صحیح کے مانندے۔

حسن الغيره: يدسن لذاته هم رتبه باورضعيف ساعلى مرتبه كى ب، مقبول، قابل عمل اوراائق حجت ب-

حدیث ضعیف کا حکم: معتد قول کے مطابق اعمال نا بتہ کے فضائل میں، پندوموعظت میں اور منا قب رجال میں صدیث ضعیف برعمل جائز ہے، بشر طیکہ ضعف شدید نہ ہویادہ حدیث کی معمول براصل کے تحت آتی ہو۔

عدالت اورضبط كابيان

صدیث کی بنیادی اقسام کی تعریفات اور ضروری امور پر تنبیہ کے بعد صدیث صبح کی تعریف میں ۔ تعریف میں واقع دوالفاظ عد الت اور ضبط کی تشریح کررہے ہیں ۔

عدالت: اس کیفیت را سخ نفسانیه کانام ہے جوانسان کوتقوی اور مروت کے التزام برآ مادہ کردیے

ا عدل افت کے اعتبار ہے ہور میں میاندروی افتیار کرنے والے کو کباجاتا ہے کہ افراط بِقفر یط نہ کرتا ہو، قرآن پاک میں ہے:و کہذلک جعلت اکم امة وسطاً، وسط اورعدل دونوں ی ایک معنی میں ہیں۔ (تعلیقات ارٹیاد:۱/۲۷۳))

اورعادل ہونے کا مطلب یہ ہے کہ: مسلمان ہو، بالغ ہو، عاتل ہو، اسباب نسق اور مروت کے خلاف کاموں سے احتیاط کرتا ہو۔ لبند اکافر کی روایت معتبر نہیں، لیکن بیٹر طاوا ہے اگر ال نے حالت کفر میں روایت کو سنا ہواور حالت اسلام میں اس کو بیان کر بے تومعتبر ہے، ای طرح بچے کی روایت بھی معتبر نہیں مگر یہ بھی شرط اوا ہے، شرط خس خلاس میں اس کو بیان کر بے تومعتبر نہیں، البتہ بیشرط خس اور اواوونوں واقعات میں ضروری ہے۔ (تعلیقات ارشاو: ۱/۴۷))

تقوی: تقوی ہے مرادا عمال سینہ لیمی شرک بنتی اور بدعت ہے پہیز کرنا ہے۔ قول مخار کے مطابق صغیرہ گنا ہوں ہے اجتناب تقوی کے اواز مات میں ہے نہیں ہے، کیوں کے صغیرہ سے کلی طور ہے اجتناب طاقت بشری ہے خارت ہے اور انسان کواس کا مکلف نہیں بنایا گیا ہے، البتہ صغیرہ پراصرار تقوی کے منافی ہے کیوں کہ صغیرہ پراصرار کبیرہ ہے۔ تقوی دراصل وقوی تھا چونکہ واؤاور تا قریب مخرت ہیں اسی وجہ سے واؤکوتا ہے بدل کر تقوی بنایا تا کہ بدشگونی نہ ہوکہ شروع ہی کلمہ میں واؤ علت ہے۔

مروت ہے مراد خسیس اور گھٹیا کاموں ہے بچنا ہے جوعز موہمت کے متحق کے خلاف ہوں آگر چرمباح ہی ہوں جیسے بازار میں چلتے بھرتے کھانا چینا اور راستہ میں بینا برنا ۔سگریٹ بینا خود کمینہ بن ہے الیکن بینا بینا کمینہ بن ہے سگریٹ بینا خود کمینہ بن ہے الیکن اگرید سے سگریٹ بینا خود کمینہ بن ہے الیکن اگرید سے سگریٹ بینا خود کمینہ بن ہے الیکن اگرید سے سگریٹ بینا خود کمینہ بن ہے الیکن آگرید سے سال میں وافل ہے ہاں الیکن ال

منامدہ: عدل فی الروایۃ اورعدل فی الشہادۃ میں عام وخاص من وجہ کی نسبت ہے۔ شاہد کی عدالت آزاد، غلام دونوں کو شاہد کی عدالت آزاد، غلام دونوں کو شاہر کی عدالت آزاد، غلام بھی ہوسکتا ہے۔ شامل ہے یعنی راوی عادل غلام بھی ہوسکتا ہے۔

ضبط: ضبط ہے مرادشی ہوئی احادیث کواجھی طرح محفوظ کرنا اور انجھی طرح سے یا دکرنا کہان کے بیان وفقل پر پوری قدرت رہے۔

الم علامہ ابن الاثیر نے مقدمہ جامع الاصول میں تحریر کیا ہے کہ ضبط نام ہے، باب تلم میں احتیاط کا، اور اس کی دولر نیس ہیں۔(۱) سننے کے وقت بھنا۔(۲) سمجھنے کے بعد اوائیگی تک محفوظ رکھنا، اگر سنا اور سمجھانییں تواس کو صبط نہیں گئیں گئے تھے ہیں نہ آئے ۔بن کر سمجھانیین اپنی یاد دیس کہیں گئے ہیں نہ آئے ۔بن کر سمجھانیین اپنی یاد داشت میں بکھ شک ہوگیا تو اس کو بھی صبط نیس کہیں گئیں گے ۔ پھر ضبط کی دوشمین انتہا ظاہر، ضبط بالحمن۔
حصوط خلاجہ: روایت کے معنی کے اعتبار سے محفوظ کرنا ۔

ضبط باطن: روایت کے عن حکم شرق کے اس سے تعلق کے انتہار سے (باقی المطے مغیر)

اقتسام ضبط: ضبط كى دوتشمين بين: ضبط الصدرا ورضبط الكتابة -ضبط الصدر: خوب الجيم طرح يا در كهنا كه جب بيائ باتكلف بيان كريك كيم ركاوث نديو-

ضبط الكتابة: خوب الحيى طرح لكهنا، لكهيهوئ كالتحيح كرنا، مشتبه كلمات بر اعراب لكانا اور ساع كوفت سے اداكے وقت تك محفوظ ركھنا۔

عدالت ہے متعلق اسباب طعن کابیان

صیح لذاته کی تعریف میں راوی کا عادل ہونا اورتام الضبط ہونا دواوصاف کا بطور خاص لحاظ رکھا گیا تھااب ان اوصاف میں اسہاب طعن کو بیان کرر ہے ہیں جن میں کمی کی وجہ ہے روایت تعجت کے مرتبہ ہے گر جاتی ہے۔

عدالت ہے متعلق اسہاب طعن پانچ ہیں یعنی عدالت پر جو چیز اثر انداز ہوتی ہیں وہ پانچ ہیں: کذب،اتہام کذب،نسق،جہالت،بدعت۔

(۱) کذب راوی سے مرادیہ ہے کے رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم کی حدیث میں راوی کا کو دیث میں راوی کا کو دیث میں راوی کا کا ذب ہونا خود واضع کے اقر اربا دیگر قرائن کی وجہ سے ثابت ہو چکا ہو۔ ایسے راوی کی حدیث کانام موضوع ہے۔

(عاشيه منج كذشته)

..... محفوظ کرنا جس کا نام فقد ہے، اور راوی حدیث ہیں جس منبط کی شرط ہے وہ منبط ظاہر ہے، عام علاء کا یجی مُدبب ہے۔ (مقدمہ جامع الاصول:۱/۳۵)

اورشرے الطین میں ہے کہ منبط سے کہ منبقظ ہوجا فظ ہو مخفل ندہونہ تعلکو ہواورنہ ہوقت فحمی اوا شک میں مبتا ہواگر حفظ سے بیان کرے تو الک میں مبتا ہواگر حفظ سے بیان کرے تو کتاب کی حفاظت کرنے والا ہوا جا ہے ، اگر روایت بالمعنی کرے تو میں معلوم ہونا جا ہے کہ کس چیز سے معنی بدل جا کیں گے۔ (شرح الطین : 1/41)

حدیث موضوع: وہ صدیث ہے جس کارادی مطعون بالکذب ہو یعنی جس راوی کے بارے میں آنخضرت سلی اللہ علیہ وہم پر کذب ثابت ہوجائے اس کی ساری روایات موضوع قراردی جا کیں گی۔بطور خاص کسی صدیث کے بارے میں راوی کا کاذب ہونا صدیث کے موضوع ہونے کے لئے ضروری نہیں ہے۔

كذب راوى اور حديث كے موضوع ہونے كے قرائن

(1) واضع حدیث نے از خود موضوع ہونے کا اقرار کیا ہو۔

(۲) ایما قرینہ جواقر ارکے درجہ میں ہومثلاً کوئی حدیث ایسے شنے سے بیان کی جائے جوصرف اس شنے کے پاس ہو پھر اس شنے کی والادت کے بارے میں سوال کیا جائے تو جواب میں ایس تاریخ بیان کرے کہ اس سے پہلے ہی شنے کی وفات ہو چکی ہو۔

(۳) مجھی راوی کے اندر قراین سے حدیث کاموضوع ہونا پہچانا جاتا ہے۔ مثلاً راوی رافضی ہواور حدیث الل بیت کے مناقب میں ہو۔

(س) مجھی مروی کے اندر قراین سے حدیث کا موضوع ہونا بیجانا جاتا ہے مثلاً عدیث رکیک ہو تقل سلیم اس کا کلام رسول ہونے کا انکار کرے۔

(۵) نص قرآنی، سنت متواترہ صححہ یا اجماع قطعی کے خلاف ہواور کسی بھی قتم کی تاویل ممکن نہ ہو۔

(۲) حدیث معمولی گناه کارتکاب پرشدید وعید پرمشتمل ہویا معمولی ملل پر بہت پڑے وعده پرمشتمل ہویا معمولی ملل پر بہت پڑے وعده پرمشتمل ہے مثلًا بیرحدیث کے جو خص باشت کی اتنی رکعات پڑھے و اس کوسر انبیاء علیم السام کے برابر تواب دیا جائے گا۔ (الدر ر الشمینه فی مصطلح السنة بحو اله عون المغیث: ص۲۲)

قصداً عديث رسول صلى الله عليه وسلم ميس كذب بياني كاحكم

جس شخص کے بارے میں حدیث بوی صلی اللہ علیہ وسلم میں کذب بیانی ثابت ہوجائے اگر چربید دروغ گوئی ایک بی بارثابت ہوتو تو بہ کے باو جوداس کی روایت بالکل قبول نہیں کی جائے گی، البتہ جموٹے گواہول کی گواہی تو بہ کے بعد قبول ہے۔

لیکن امام نووی شرح مقدمه سلم میں فرماتے ہیں کہ جو مخص صدیث نبوی سلی اللہ علیہ وسلم میں عدم مسلم میں فرماتے ہیں کہ جو مخص صدیث نبوی سلی اللہ علیہ وسلم میں عدم اللہ کرے وہ فاسق ہے اور قبل ازتو باس کی ساری مرویات مردوداور غیر مقبول ہیں ان سے احتجاب واستدال باطل ہے لیکن تو بہ کے بعد اس کی روایت کے قبول ہونے یا نہ ہونے میں متقد میں اور متاخرین کا ختلاف ہے۔

متقد مین کی ایک جماعت جس میں امام احمد بن طبل، شیخ ابو برحمیدی استاذ امام بخاری اورابو برحیر فی وغیر، شامل بیں ان کی رائے ہے ہے کی قبول روایت کے سلسلہ میں اس کی تو بہ کا اثر نہیں ہوگا اور بہیشہ کے لئے اس کی روایت ردکر دی جائے گی۔ اورامام نووگ اس پر تبعر، کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ ان حضرات کا بی قول ضعیف اور قواعد شرعیہ کے خلاف ہے اور متاخرین کا قول مختار ہیہ کہ دوشت صدیت ہے بھی تو بہ تینی طور ہے جمجے ہو جائے مشاؤ کی روایت قبول کی جائے گی، بشر طیکہ اس کی تو بہ عمر وف شرطوں کے مطابق صبح ہو جائے مشاؤ مصمے موغیر، ۔ (شرح مصمے موغیر، ۔ (شرح مصمے موغیر، ۔ (شرح مصمے مالی کی مقدمہ سلم جس ۱/۸)

محدث دہلوی نے اس مسئلہ میں علاء متقد مین کا قول اختیار کیا ہے۔

صدیث کے موضوع ہونے کا فیصلہ کس طرح ہوگا

جس راوی کے بارے میں بیمعلوم ہوجائے کو وحضرت نبی کر میصلی الله علیه وسلم کی

جانب منسوب کر کے غلط احادیث بیان کرتا ہےتو اس کی روایت کردہ ہر حدیث کے بارے میں یقین طورے بینیں کہا جا سکتا کہ بیموضوع ہے کیوں کہ بیا حمال موجود ہے کہاس کے كاذب اورمفترى مونے كے باوجوداس حديث كےمنسوبكرنے ميں وہ سيا موكيول كم حجموثا آ دمی بھی بھی بچے بولتا ہے اس طرح اگراس نے کسی حدیث کے بارے میں بیاعتر اف کرلیا کہ بيموضوع بتب بھي اس كويقيني طور سے موضوع نہيں كہد سكتے كيوں كديدا حمّال موجود بكد اس اعتر اف واقر ارمیں وہ حموثا ہو بلکہ اس کا فیصلہ طن غالب ہے ہوگا، کیوں کہ ان احتمالات کے باوجود کہوہ راوی وضع حدیث کا ارتکاب کرتا ہے تو اس کی مرویات کے بارے میں ظن غالب يبى ہے كدو ، موضوع بول كى اس كئے ما برمحدث اسى ظن غالب برموضوع ہونے كا حكم لگاتا ہے۔اً گراس ظن غالب کاا عتبار نہ کیا جائے تو قتل کے معتر ف اور زنا کے مقریر قصاص اور حد کی سزا جاری نہیں ہوسکتی تھی کیوں کہاس اعتراف وا قرار میں بھی اس احمال کی گنجائش ہے کہ وہ ان جرائم کا اعتراف غلط کر رہے ہول لیکن خود اینے خلاف اعتراف اور اقرار ہے صداقت برطن غالب حاصل ہوجاتا ہے،اورشر بعت ظن غالب ہی بر فیصلہ کرتی ہے۔ (٢) اقهام بالكذب: طعن كادومراسب باتمام بالكذب: اسكى صورت يين کے عوام الناس کے ساتھ با ہمی گفتگو میں دروغ گوئی اور جھوٹ بو لنے میں راوی معروف ومشہور ہواور حدیث بوی میں اس کا کذب ثابت نہ ہوا ہوتو ایباراوی محدثین کی اصطلاح میں مجم بالكذب باس طرح جوراوي قواعد معلومه ضروريه في الشرع كے مخالف حديث روايت كرے

ہواور حدیث بوی میں اس کا کذب ثابت نہ ہوا ہوتو ایباراوی محدثین کی اصطااح میں مہم ہم بالکذب ہے ای طرح جوراوی قواعد معلومہ ضروریہ فی اشرع کے خالف حدیث روایت کرے لیے فرین اسلام کے وہ بنیا دی مسائل جواپی شہرت وعمومیت کے لیا ظرے وائر ،عوام میں واخل ہوگئے ہیں،اور علمۃ الناس کومعلوم ہے کہ یہ دین اسلام کے مسائل واحکام ہیں جیے وحدانیت، رسالت، ختم نبوت، بعث وجزاء، نماز وزکوۃ کی فرضیت، شراب کی حرمت وغیرہ ۔کوئی راوی ان شرع عمومی مسائل کے خلاف حدیث نقل کر سنے وہ بھی مہم بالکذب کے تھم میں ہے۔

حديث مقروك : مجم بالكذب راوى كى حديث كواصطااح محدثين ميس متروك كيت بين جيب بواا جاتا ہے، حديثه متروك، فلان متروك الحديث.

گاہے گاہے جھوٹ بولنے والے کا حکم

جوفض کلام رسول سلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے علاوہ اپنی باجمی گفتگو میں بھی بھی جموث بول دیتا بوتو اس کا قلیل الوجود جموٹ اس کی صدیث کے موضوع یامتر وک نام رکھنے میں موثر نہیں ہے اگر چہ رہے جموث بھی گناہ ہے اوراس سے بچناضروری ہے۔

(۳) مسق: طعن کاتیسراسب راوی کافات ہونا ہے، نسق کے معنی حدے تجاوز رنامرادگناہ کبیرہ کاارتکاب کرنا فیق کی دوقتمیں ہیں:

هنست هنب المعهل: جيسے آنا حق، زنا، چوري ، شراب نوشي ، چغل خوري حجمو ئي شبادت وغير ٩ -

فنسق فنم الاعتقاد: جيهاعترال رافضي مونا، خارجي مونا، حضوراقدس سلى الله عليه وسلم كوعالم الغيب يا حاضروناظر جانناوغيره -

یہال فسق عملی مراد ہے کیول کہ تقادی بدعت پر بواا جاتا ہے۔ (تخفۃ الدرر:۳۱)

قندید : حدیث بوی میں دروغ گوئی بھی اگر چنس میں داخل ہے، کیان محد ثین نے اس کونلیحدہ اسباب طعن میں ذکر کیا ہے، کیول کہ فن حدیث میں کذب کی جرح نہایت فتیج ہے اور بہت سخت ہے۔ ااکھاتو بہ کر ہے جنید وقت بن جائے لیکن محد ثین اس کونہیں مانے،

صوفياء مين واعز از ہوگا۔

محدثین کہتے ہیں کہ بعض شخص جس کے متعلق ہم سجھتے ہیں کہ ہم سے پہلے یہ جنت میں ہزاروں برس پہلے خیمے گاڑ لینگے،لیکن ہم ان کو د جال و فاسق کے بغیر نہیں رہتے ،حفاظت دین کی وجہ ہے۔

فائدہ: جوراوی نسق کے ساتھ مطعون ہوتا ہے اس کی روایت مظرکہا اتی ہے۔ (۳) جھالت راوی: اسہاب طعن میں سے چوتھا سبب جہالت ہے بعنی راوی کا غیر معروف ہونا۔

اسباب جهالت: جهالت کے تین اسباب ہیں: ()عدم شمید یعنی نام ندلیا، (۲)غیرمعروف التسمید یعنی نام معروف ومشہور ندہونا، (۳) قلیل الروایة ہونا۔

عدم تسمیه کی وجه سے جهالت: مجھی راوی اس لئے مجبول ہوتا ب کے اساد صدیث میں اس کانام نہیں لیا جاتا بلکہ شیخ ، ثقة ، صاحب لنا وغیر ، جہم کلمات سے ذکر کیا جاتا ہے ایسے غیر سٹی رواۃ مجم کہائے ہیں اور ان کے تعارف کے لئے محد ثین نے مہمات مای کتابیں کھی ہیں جن سے ان کی تعین ہوتی ہے۔

غيرستى راوى كي حديث كاحكم

مجہول ااہم راوی کی صدیث قابل قبول نہیں ہے کیوں کہ جب اس کا نام ہی معلوم نہیں تو اس کا عادل یا غیر عادل ہونا کیے معلوم ہوگا البتہ اگر مہم صحابی ہوتو اس کی وجہ ہے صدیث متاکر نہیں ہوگی، کیوں کہ صحابہ سب عادل اور ثقہ ہیں۔جیہا کہ حضورا قدس سلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے:"اصحابی کا لنجوم فبایھم اقتدیتم اهتدیتم" کرمرے تمام ہی صحابہ شل نجوم ہیں،جس کی بھی اقتدا کرلوگے ہدایت یا جاؤگے۔

فسائدہ: بی ول محدثین کے یہاں ہی ہے کہا ہے والدین پر بھی جرح کرتے تھے، علی ابن مدین سے بھا کہ تمہارے ہا ہے۔ علی ابن مدین سے بع جھا کہ تمہارے ہا ہے ہیں او فرمایا کہ ضعیف ہیں۔

ابہام کرنے والے کی تعدیل کا حکم

اً رسند میں جہم راوی لفظ تعدیل کے ساتھ آجائے مثلاً احبونی عدل یاحدثنی ثقة جیسالفظ ہوا اجائے واسے قول اور عدم قبول میں اختلاف ہے، حافظ ابن مجر فیشر ح نخبہ میں تین قول بیان کئے ہیں:

(۱) اصح مدہب ہے ہے کہ ہم کی تعدیل قابل قبول نہیں کیوں کے ممکن ہے کہ وہ قائل کے خیال میں عادل ہو گروا قعد عادل نہ ہو، کیکن اگر نے والا ما برفن اثمہ نقاد حدیث میں سے ہے قو وہ تعدیل معتبر ہے۔

(۲) مبهم کی تعدیل مطلقاً قبول ہے۔

(۳) مبہم کی تعدیل کرنے والا عالم اور مجتبد ہے تو اس کی تقلید کرنے والوں کے حق میں تعدیل کافی ہے۔

(۳) حافظ ابن جحر کے ذکر کردہ تین اقوال کے علاوہ اس مسلم میں چوتھا قول ہے ہے کہ اخبر نبی ثقة کہنے والاراوی اگر صرف ثقدراو پول سے روایت کرتا ہے تو اس کی بہتعدیل قبول ہوگی اوروہ حدیث معتبر ہوگی۔

غیر معروف نام لینے کی وجه سے جهالت: کمی راوی اسلے مجبول موت معروف نام لینے کی وجه سے جهالت: کمی راوی اسلے مجبول موتا ہے کہ سند حدیث میں اسکا غیر معروف نام لیاجا تا ہے یعنی راوی کیلئے علم ،کنیت، لقب،صفت، پیشر نبست اور عہد ہوغیر ،متعدد الفاظ ہو لے جاتے ہیں اور وہ انمیں سے کی ایک لفظ سے مشہورہوتا ہے لہذا جب اسکوکسی غیر معروف نام سے یا دکیا جاتا ہے قو وہ پہچانا نہیں جاتا مثلاً صدیق اکبر گا

تذكر ،عبدالله بن عثان سے كيا جائے ياحضرت ابو جرير أكا تذكر ،عبدالرحمٰن بن صحر سے كياجائے تو بہت كم اوگ بہجان كيل مضحات مى كتابيں بہت كم اوگ بہجان كيل مضحات مى كتابيں كاس من جن سے بية چل جاتا ہے كو ،كون ساراوى ہے اور كس ورجه كائے۔

غيرمعروف التسميه راوي كي حديث كاحكم

وضاحت کے بعد اگر معلوم ہوجائے کہ وہ راوی ثقد ہے تو اس کی حدیث معتبر ہے اور یہ ہے ہو اس کی حدیث معتبر ہے اور یہ پہتہ چلے کہ وہ راوی ضعیف ہے تو اس کی حدیث غیر معتبر ہے تی اس کی حدیث غیر معتبر ہوگی۔ پہتہ نہ چلے تو وہ حدیث غیر معتبر ہوگی۔

قلیل الحدیث ہونے کی وجہسے جہالت

تبھی رادی اس لئے مجبول ہوتا ہے کہ اس سے بہت کم روایات مردی ہوتی ہیں اس وجہ سے اس سے اخذ واستفادہ کرنے والے تافدہ بہت کم ہوتے ہیں اور اس سے عام واقفیت نہیں ہوتی ایسے رادی کا اگر چہنام لیا جائے تا ہم وہ پہچا نانہیں جائے گا ایسے مبہم رواة کو بہچا نے کے لئے محد ثین نے ''و حسدان'' نام کیا ہیں گاھی ہیں (وحدان کے معنی ہیں ایک شاگر دوالے یا ایک حدیث والے رواة) جن سے ایسے رواة کا حال معلوم ہوتا ہے۔

قليل الحديث مجهول رواة كےاقسام

پھرا یسے مجبول رواۃ (جو کیل الروایۃ ہیں) کی دو شمیں ہیں: (۱) مجبول العین، (۲) مجبول الحال _ **عنامنہ:** مجبول الحال کے لئے عام طور ہے مستور کالفظ استعال کیا جاتا ہے اور مجبول

العین کے لئے مجبول کالفظ ہو ایاجا تا ہے۔

(۱) **مجھول السعین**: وہ^{ای}ل الحدیث راوی ہے جس سے نام لے *کر صر*ف ایک بی راوی نے روایت کی ہو۔

مجہول العین راوی کی روایت کا حکم

مجبول العین راوی کی حدیث قابل قبول نہیں ہے لیکن اگر ائمہ جرح وتعدیل میں سے کسی نے اس کی توثیق کی موتو پھروہ قابل قبول ہوگی یا اس سے روایت کرنے والا ثقہ ہواوروہ بہیشہ ثقہ بی سے روایت کرتا ہوتو وہ حدیث مقبول ہوگی۔

(۲) مجھول الحال: وہ قلیل الحدیث راوی ہے جس سے نام لے کرایک سے زائدراویوں نے روایت کی ہوگر کسی امام نے اس کی توثیق نہ کی ہو۔ مجبول الحال یعنی مستور کی حدیث کا تکم

امام ابو حنیفہ ابن حبان ، جماد بن الی سفیان کے زور کے مستوری روایت معتبر ہے ، ان حضرات کا ارشاد ہے کہ ہم اپنی ناوا قفیت کی وجہ سے مجبول الحال کی حدیث کو رنبیں کریں گے مگر یہ کہ ہم کو اس کا نقص معلوم ہوجائے اور جمہور محدثین کی رائے یہ ہے کہ مجبول الحال استور) کی حدیث مقبول نہیں ہے وہ اسی وقت قبول کرتے ہیں جب راوی کا ثقہ ہونا متحقق ہوجائے اور مستور کا حال مخفی ہے لہذا اس کی روایت مقبول نہ ہوگی۔ (تحفۃ الدرر: ص مدے ۱۳۰)

(۵) بدعت: عدالت مے متعلق اسہاب طعن میں سے پانچوال سبب بدعت ہے۔ بدعت میں او بدعقید گی، گراہ کن خیالات اور فرق ضالہ کے عقائد کا حامل ہونا ہے بعنی دین میں معروف اور سول خداصلی اللہ علیہ وسلم اور صحابہ کرام رضی اللہ عنہم سے منقول عقائد

ے خلاف کی نئی چیز کوعقیدہ اور نظریہ بنالیا جود ایل میں کسی طرح کے شبہ یا نا مناسب تا ویل سے عناداورا نکار کی راہ سے نہ ہو کیول کہ شریعت کا انکار کفر ہے۔

بدعت کےاقسام

بدعت کی دونشمیں ہیں: (۱) بدعت مکفر ہ(۲) بدعت مفیقہ

(۱) بدعت مكفوه: اليى بدعت جس كى بنابر بورى امت قواعد شرع كے لاظ مے كاظ مے كاظ مے كاظ مے كائے اللہ على مائلہ و جبدى ذات سے متعلق طول كاعقيده ركھنا يا قيامت كے بعد دوبارہ آنے كاعقيده ركھنا يا قرآن كريم ميں تحريف كا قائل ہونا، يا قاديا نوں كاختم بوت كانكاركرنا وغيره اس نوع كى بدعت كوبدعت كبرى كہتے ہيں۔

(۲) بدعت مفسقه: اليى بدعت جس كى وجه سے بدعت فاس قرار ديا جائے جسے عام عقائد بدعيداور خيالات فاسده مثلاً خوارت معتز لدوغيره كنظريات وخيالات، اس نوع كى بدعت كو بدعت صغرى كہتے ہيں۔

بدعتى كي حديث كاحكم

بدعت مکفر ہ لینی بدعت کبریٰ کے حامل شخص کی روایت مقبول نہیں ہے۔اور بدعت مفسقہ لینی بدعت صغریٰ کے حامل شخص کی روایت کے قبول ہونے نہ ہونے میں محدثین وفقہاء کے میارا قوال ہیں:

(۱) جمہورمحدثین وفقہاء کے نزدیک بوئی کی صدیث مطلقاً غیر مقبول ہے ہے جمہ بن سیرین،امام مالکاوران کے تنبعین، قاضی ابو بکر باقلانی وغیر ،حضرات کا یہی ندہب ہے۔ (۲) بعض فقہاء ومحدثین کے نزدیک اگر مبتدع صادق القول ہو کذب وافتراء ے زبان کو محفوظ رکھنے واا ہوتو اس کی روایت مقبول ہے ورنے مقبول نہیں ہے۔

(۳) بعض محد ثین و فقہاء کرام کی رائے یہ ہے کہ اگر بدی شخص ایسے امر شرع کا منکر ہے جوتو اتر سے ثابت ہے اوراس کا دین سے ہونا بالبداہت معلوم ہے اوروہ اس درجہ شائع اور ذائع ہے کہ اس کا علم دائر ، عوام تک بھیل گیا ہے تو اس کی روایت مر دود ہے ، کیول کہ ایسا بدعتی تمام الل اسلام کے زویک کا فر ہے اور کا فرکی روایت مقبول نہیں ہے اورا گروہ راوی اس طرح کے امور کا منکر نہیں ہے اور ساتھ بی حفظ وضبط ، ورع وتقو کی وغیر ہ صفات سے متصف ہے تو اس کی روایت مقبول کہا ہے مبتدع کی تکفیر ہے تو اس کی روایت مقبول ہے اگر چرخالفین نے اس کی تکفیر کی ہوکیول کہا ہے مبتدع کی تکفیر جمہورا مت کے قاعد ہ کے لیا ظے ورست نہیں ہے لبذا اس کا اعتبار نہ ہوگا۔

(س) مخارقول یہ ہے کہ اگر بدعت اپنی بدعت کامرون اور دومروں کو بھی اس کی دعوت دیتا ہے تو اس کی روایت ویتا ہے تو اس کی روایت بھول نہیں کی جائے گی اور اگر وہ واعی نہیں ہے اور نہ اس کی روایت سے بظاہر اس کے فد بہب کی تائید وتقویت ہور ہی ہے تو صدق وعد الت کے ساتھ متصف ہونے کی صورت میں اس کی روایت مقبول ہوگی۔

خلاصة كلام

خلاصۂ کلام یہ ہے کہ بدئی کی حدیث درت ذیل شرطوں کے ساتھ قبول کی جاسکتی ہے:

(۱) جوامر شرعی متواتر طریق سے ثابت ہے اور امور دید مضر ورید میں شامل ہے جسے نمازروزہ وغیرہ بدئی عملاً یا اعتقاداً اس کا مکر نہ ہو۔

(۲) بدعتی شخص گمراہ عقائد کا حامل ہونے کے علاوہ ٹقاہت کے تمام صفات اس میں موجود ہوں۔

(٣) اینے غلط فد بہب کی تقویت کے لئے قرآن وحدیث میں تحریف نہ کرتا ہو۔

(۴) مجموث کو جائز نه مجمتا ہو۔

(۵) اس کی روایت کر دہ حدیث ہے اس کی غلط نظریات کی تا سکی نہ ہوتی ہو۔

صاحب جامع الاصول ابن جزرى محدث كاكلام

شیخ محدث وہلوگ بطورخلاصہ ایک بات بیان کر کے ابن اثیر جزری کے کلام پر بات ممال کررہے ہیں فرماتے ہیں:

خلاصہ بیہ ہے کہ الل بدعت اور گمراہ کن فرقول سے اخذ صدیث کے سلسلہ میں ائمہ صدیث کا اختاا ف رہائے۔ صدیث کا اختاا ف رہائے۔

صاحب جامع الاصول فرماتے ہیں

کے حدثین کی ایک جماعت نے خوارت، اہل تشیع، قدریہ اور روافض اور دیرالل برعت سے احادیث نقل فرمائی ہیں لیکن احادیث نقل کرنے سے پہلے خوب جانج پڑتال اور تحقیق کی ہاں کا مقصد ہے کہ احادیث نبویہ تمام کی تمام مدون ہوجا کیں اورضائع ہونے سے محفوظ ہوجا کیں ان حضرات نے حدیث رسول کی تحصیل واشاعت کی مصلحت کو پیش نظر رکھا اور بااشبہ یہ محمود نیت ہے اور محدثین کی دوسری جماعت نے مذکورہ فرقہ کے لوگول کی حدیث کو قبول کرنے سے برہیز کیا ہے ان کی دوسری جماعت نے مذکورہ فرقہ کے لوگول کی حدیث کو قبول کرنے سے برہیز کیا ہے ان کی پیش نظر برعتی کی تو قیر اور عزت افز ائی سے بچنا ہے اور غایت احتیاط ان لوگول کی احادیث قبول نہ کرنے میں ہے کیول کہ یہ بات پایہ تحقیق رائے ہیہ کہ کہ احدیث احادیث گوٹول کرنے میں ہے کیول کہ یہ بات پایہ تحقیق کو بیش تھے اور تو بدور جوع کے بعد انہول نے اس کا قرار بھی کیا ہے۔

ضبط سيمتعلق اسباب طعن كابيان

ضبط ہے متعلق اسہاب طعن پانچ ہیں۔مطلب یہ ہے کہ جیسے عدالت پانچ وجوہ ہے خراب ہوجاتی ہے، اس کی بیاری کی بھی خراب ہوجاتی ہے، اس کی بیاری کی بھی یا نچ وجہیں ہیں:

(۱) فرط خفلت، (۲) کثرت غلط، (۳) مخالفت ثقات، (۳) وہم، (۵) سوء حفظ
(۱) فنوط غضلت: بہت زیادہ خفلت، پیطعن اس راوی پرلگتا ہے جوحد بث
کے اتقال یعنی خوب اچھی طرح محفوظ کرنے سے اکثر غفلت برتنا ہو، جس راوی میں بی عیب
ہوتا ہے اسے کثیر الغفلت کہتے ہیں۔

(۲) کشرت غلط: لین انهاطی بہتات، بیطعن اس راوی پر لگتا ہے جس کی خطط: این صحت بیانی سے زیادہ ہو۔ جس راوی میں بیر عیب ہوتا ہے اسے کثیر الغلط کہتے ہیں۔ فاط بیانی صحت بیانی سے زیادہ ہو۔ جس رافی میں الغلط دونوں سم کے رواق کی روایات اصطااح محد ثین میں منکر کہا تی ہے۔

فسائده (؟): ان دونول میں اعتباری فرق بین که کشرت غفلت کاشکار انسان صدیث کے سننے کے وقت ہوتا ہے۔ صدیث کے سننے کے وقت ہوتا ہے۔ صدیث کے سننے کے وقت ہوتا ہے۔ (٣) محالفت ثقات: صبط سے متعلق اسباب طعن میں سے تیسر اسبب مخالفت ثقات ہے۔

مخالفت ثقات سے مرادکسی راوی کی روایت کا اپنے سے اولی اور ارجے کی روایت کا اپنے سے اولی اور ارجے کی روایت کے خلاف منقول ہونا ہے یہ عموماً سند میں ہوتا ہے اور بھی متن میں بھی واقع ہوتا ہے۔ یہ اختلاف بھی سنداور متن دونوں میں قدح اور عیب بیدا کرتا ہے اور بھی سندکوعیب دار بناتا ہے

متن براس کا کوئی اثر نہیں ہوتا ہے۔ پھراس اختلاف کی متعددا قسام ہیں:

(۱) الرساق سند كے بدل جانيكى وجد اختلاف موتو اسكانام مدرت الاسناد بـ

(۲) اگر حدیث موقوف کومرفوع میں داخل کرنے کی وجہ سے ہوتو اس کانام مدرت امعن ہے۔

(٣) الرتقديم وتاخير كى وجهد اختلاف موتواس كانام قلوب بـ

(4) كى راوى كے ير هجانے كى وجہ سے ہوتواسكانام مزيد في متصل الاسانيد ہے۔

(۵) کسی راوی کے بدل جانے کی وجہ سے اختلاف ہوا ورکوئی وجہ ترجی نہ ہوتو اس کا امضطرب ہے۔

(۱) اگرسیاق سند باقی رہتے ہوئے حروف بدل جانے کی وجہ سے انتقاف ہوتو اس کانام مصحف اور گڑف ہے۔

(2) اگر اختلاف کی صورت میہ ہو کہ کوئی ثقہ راوی اپنے سے اوثق کی مخالفت کر رہا ہے تو ثقہ کی روایت شا ذاور اوثق کی روایت محفوظ ہے۔

(۸) اگر ضعیف راوی ثفتہ کے خلاف روایت کری تو ضعیف کی روایت منکر اوراس کے مخالف روایت کانا م معروف ہے۔

مخالفت ثقات كوضبط متعلق اسباطعن ميس شاركرنے كيوجه

کالفت ثقات کوضبط ہے متعلق اسباب طعن میں ایک سبب قرار دینے کی وجہ یہ ہے کہ رادی کی جانب سے ثقات کی مخالفت حفظ وضبط کی کمی اور تغیر وتبدل سے محفوظ ندر ہے کی وجہ سے ہے۔

(س) وهم: ضبط سے معلق اسباب میں چوتھاسب وہم ہے۔

جس وہم ونسیان کی وجہ سے راوی نے غلطی کی اور وہم کے طریقہ سے صدیث بیان کردی تو راوی کواس غلطی پرایسے قرائن سے جووجو علل اوراسہاب قادح پر داالت کرتے ہیں اطااع ہوجائے تواس راوی کی حدیث کانا م معلل ہے۔

وهم کی معرفت علوم صدیث کا نہایت دقیق اور عامض فرنت علوم صدیث کا نہایت دقیق اور غامض فن ہاس کی شناخت کا کام وہی کرسکتا ہے جس کورسیع علم وقیم ذبن تا قب، حفظ کامل اور معرفت تامہ عطا ہوئی ہو، رواۃ کے مراتب اور اسانید ومتون کی پیچان کا خاص ملکہ اے حاصل ہو جسے متقد میں علاء میں وہ اوگ جواس فن کے ماہر سے حتی کہ یہ سالما مام وارقطنی پرختم ہوگیا ۔ مشہور ہے کھل صدیث میں امام وارقطنی کا ہم یا بیان کے بعد بیدانہیں ہوا۔

(۵) سوء حفظ: ضبط سے متعلق اسہاب طعن میں سے یانچوال سبب سوء حفظ ہے۔ سوء حفظ کے معنی ہیں یا و داشت کی خرابی ، پیطعن اس راوی برلگتا ہے جس کی غلط بیانی حافظ کی خرابی کی وجہ سے صحت بیان سے زائد یا برابر ہو، سوء حفظ کی مذکور ہتم یف سے می الحفظ راوی کثیر الغفلت راوی کے بظاہر مساوی ہو جاتا ہے کیوں کہ بعینہ یہی تعریف فرط غفلت اور کثیر الغلط کی بھی ہے، حال نکه فرط غفلت اور کثیر الغلط کا طعن سی الحفظ کے طعن سے انتہائی یخت اور شدید بے لیکن محدث دہلوی نے ان تینوں اصطلاحات میں بکسانیت کے باوجو دفرق ا عتباری ثابت کیا ہے اس طریقہ پر کہ فرط غفلت کا تعلق یٹنے سے صدیث کے اخذ وساع سے ب يعنى ساع مين تسائل اورسسى كى وجه ساغاطكى كثرت بوكى ورنداس كا حافظ قوى تحااور کثرت غلط صدیث کے نقل و بیان ہے متعلق ہے لیمنی تسامل یاضعف حافظہ کی وجہ ہے کثر ت ے غلطیاں کرتا ہے اورسوء حفظ ان دونوں سے عام ہے یعنی غفلت یا قصور صبط کی بناء برسی الحفظ راوی ہے جو غلطیاں وجود پذیر ہوتی ہےوہ الگ الگ تو اس کی اصابت اور صحت بیان ہے کم بیں گردونوں قتم کی مجموعی غلطیاں اس کی اصابت سے زائد یا مساوی ہیں۔

سوءحفظ كى اقسام

سوء حفظ کی دونتمیں ہیں: سوء حفظ الازم اور سوء حفظ طاری

سو، حفظ الازم: وه ب جو بهیشه اور برحال میں رہتا ہوا یسے راوی کی حدیث کو (ایک قول کے مطابق) شاذ کباجا تا ہے تو گویا شاذ حدیث سی الحفظ کی روایت ہوئی اور منکر حدیث کثیر الغلط اور فاسق کی روایت ہوئی۔

سو، حفظ طاری: وہ ہے جوہ اپ وغیرہ کی وجہ ہے بیش آگیا ہومثاؤوہ کتابیں جن سے راوی روایت کرتا تھا تلف ہو گئیں یا راوی نا بینا ہو گیا جس کی وجہ سے کتابیں نبیں و کھ سکتا یا قد رتی عوامل کی وجہ سے یا دواشت میں کمی آگئی تو ایسے راوی کا نام مخلِط (بمسر الملام) ہے اورا یسے راوی کی حدیث کانام مخلَط (نفتح اللام) ہے۔

ستى الحفظ كاحكم

اً لرپوری عمر کے تمام اوقات میں سوء حفظ کسی راوی کے ساتھ اازم ہے تو ایسے شخص کی حدیث معتبر ندہوگی۔

فتلط راوي كي حديث كاحكم

اختاطواختال ہے بل اس راوی نے جوروایتی بیان کی ہیں اگروہ اختا طے بعد بیان کردہ روایات مقبول ہوں گی اور بیان کردہ روایات مقبول ہوں گی اور اختاط کے بعد کی روایات مقبول نہوں گی۔اورا گردونوں زمانے کی روایات ہیں اخیا زئیں بختو ان کے قبول اور عدم قبول میں آو تف کیا جائے گا، حصول علم کے بعد ہی فیصلہ کیا جائے گا،

اسی طرح جس راوی کے اختلاط اور عدم اختلاط میں اشعباء بیدا ہوگیا تو اس کی احادیث میں تو قف کیا جائے گا۔

فائدہ: اگرس الحفظ راوی کے متابعات اور شواہل جائیں تواس کی روایت درجہ رو وتو قف سے ترقی کرکے درجہ قبول ورجان میں پہنی جائے گی یہی تکم صدیث مستور، صدیث مراس اور صدیث مرسل کا بھی ہے کہ ان کے متابعات اور شواہد حاصل ہوجائے کی صورت میں مقبول ہوں گی۔

حديث صحيح كىاتسام

حدیث سیم کی میار قشمیں ہیں بخریب ،عزیز مشہور،متواتر

حدیث غریب: وه حدیث به جس کی صرف ایک سند ہولین اس حدیث کا راوی صرف ایک ہوخواہ ہر طبقہ میں ایک ہویا کسی طبقہ میں ایک سے زائد بھی ہوگیا ہو۔

حدیث عسزین: وہ صدیث ہے جس کے راوی دو ہول نمواہ ہر طبقہ میں دو ہی دو ہوں یا کسی طبقہ میں دوسے زائد بھی ہوگئے ہول مگر کسی طبقہ میں دوسے کم نہ ہول۔

حدیث مشهور: وه حدیث به جس کرادی برطبقه میں دو سے زائد ہول گرتو اترکی تعدا دسے کم ہول یاس سے علم بینی بدیمی حاصل نہ ہو۔

حديث مشهور كى دوسرى تعريف: عرف عام مل عديث مشهور وه حديث مشهور وه حديث به ويابالكل بسند بواس كى سندغريب بويابالكل بسند بواس موضوع برامام خاوى كى تباب "المقاصد الحسنة فى كثير من الاحاديث الدائرة على الالسنة" اورعلام تجلونى كى "كشف الخفاء" و" مزيل الالباس" عده كتابيل بيل -

حدیث مستفیض: حدیث مشہور ہی کادوسرانا م حدیث مستفیض ہے۔ دوسسری قسعریف: بعض حضرات نے اتی قید کا اضافہ کیا ہے کہ برطقہ میں

ورویوں کی تعداد مکساں ہوکسی طبقہ میں کم یازائد نہ ہومثلاً سند کی ابتداء میں راویوں کی تعداد میار سندی ابتداء میں راویوں کی تعداد میار سندی آخر تک برطبقه میں میار ہی رہی ہو کم وہیش نہ ہوئی ہو۔

دونول تعرافول کے مامین نسبت

کیلی رائے کے اعتبارے حدیث مشہور اور مستفیض کے درمیان تساوی کی نسبت ہے اور دوسری تعریف کے اعتبار سے دونوں میں عام خاص مطلق کی نسبت ہے مشہور عام اور مستفیض خاص ہے۔

وجه قسمیه: مشهور بمعنی شهرت یا فته ، شهر یشهر شهرة (ف) ہے شتق بے چول کے ملاء صدیث کے فرد کیاس فوع کی صدیث ثنا نع اورواضح ہوتی ہے اس لئے اس کو مشہور کہتے ہیں اور ستفیض استفاضہ ہے مشتق ہے جس کے معنی بہنے اور رہیلنے کے ہیں مشہوراور مستفیض میں معنوی مناسبت ظاہر ہے۔

حدیث متواقر: وہ حدیث ہے جس کی سندیں بکٹرت ہول اور کٹرت کے لئے کوئی تعداد متعین ہیں ہے۔

منسرا منط متواقی: تواتر کے لئے پانچ شرطیں ہیں: (۱) سندول کی کثرت، (۲)
رواق کی تعداداتی ہو کہ ان سب کا جموٹ پر اتفاق کر لیما یا اتفاقاً ان ہے جموٹ کا صادر ہونا
محال ہو، (۳) سند کی ابتداء ہے انتہاء تک ہر طبقہ میں رواق کی بیہ کثرت باقی ربی ہو، (۳)
روایت کا منتبی کوئی امرحسی ہو یعنی آخری راوی کسی بات کا سننا یا کسی کام کا دیکھنا بیان کرے،
(۵) ان رواق کی خبر ہے کیا مع کوئلم یقین حاصل ہوا ہو۔

نوت: ال آخرى شرط كوبعض لوگول في متواتر كافائده كبائد.

متواتو کا فائدہ: جباتو اترکی تمام شرطیں پائی جا کیں گی تو اس صدیث متو اتر کے علم یقینی بدیبی کا فائدہ حاصل ہوگا، نیز حدیث متواتر کا منکر کا فر ہے البتہ مشہور، عزیز، غریب طنی الثبوت ہیں ان سے علم طنی حاصل ہوتا ہے البتہ خبر مشہورا فاد، علم میں عزیز اور غریب سے فائق ہے۔

قنبیہ: اگرتوار کی تمام شرا نظ کے پائے جانے کے باوجود کسی خاص مانع ہے کلم یقیٰ بدیمی حاصل نہ ہوتو وہ حدیث متوار نہیں ہے بلکہ اس کوشہور کہیں گے۔

حدیث غریب کا دوسرانام اوراس کے اقسام

حدیث غریب کادوسرانام حدیث فرد ہے پھر حدیث فرد کی دوشمیں ہیں: فرد طلق، فرزسبی۔

فسود مطلق: وه حدیث ہے جس کی سند کے شروع میں لیعنی طبقہ تا بعین میں غرابت ہواس طرح سے کہ ایک ہی تا بعی اس حدیث کوروایت کرتے ہوں اور پھر آگے جاکر راوی متعدد ہوگئے ہوں یا آخر تک اس حدیث کاراوی ایک ہی رہا ہو۔

قسنبیسه: صحابی کاتفردمفرنہیں ہے آگر کسی حدیث کے راوی ایک سحابی ہول تو وہ فریب نہیں کہا اے گی۔

فسود نسبس: وه حديث ب جس كى سند ك شروع مي أو غرابت نه والبته وسط

سندیا آخرسند میں غرابت ہو پیغرابت کسی خاص صفت کے اعتبار سے ہوتی ہے مثالاً کسی استاذ سے کسی حدیث کے متعد دراوی ہیں گران میں سے تقد صرف ایک ہی ہے یا کسی خاص محدث سے روایت کرنے والا ایک ہی راوی ہے تو پیراوی کی ثقابت کے اعتبار سے اور معین استاذ سے روایت کرنے کے اعتبار سے غرابت ہے اس لئے اس کوفر دنسی کبا جاتا ہے۔
مدوایت کرنے کے اعتبار سے غرابت ہے اس لئے اس کوفر دنسی کبا جاتا ہے۔
متنبید: نسبی میں یانسبتی ہے یعنی اس کا تفر وبالنسبة الی شی آخر ہے۔

غريب اور فردمين فرق

لغت کے اعتبار سے تو غریب اور فرد دونوں لفظ متر ادف ہیں گر عام طور سے فرد کالفظ '' فرد مطلق'' کے لئے استعال کرتے ہیں فرد سبی کے لئے فرد کالفظ بہت کم استعال کرتے ہیں البت غریب کالفظ زیادہ تر فرد سبی کے لئے استعال کرتے ہیں۔

یفرق صرف لفظ فرداورلفظ غریب کے استعال میں ہان کے مشتقات کے استعال میں ہوئی فرق نہیں ہے۔ دونوں ہی کے لئے تفرد به فلان اور اغرب به فلان استعال کرتے ہیں۔

غرابت کاصحت کے ساتھ اجتماع

غرابت کا تعت کے ساتھ اجھاع ہوسکتا ہے یا نہیں یعنی حدیث کے میمی ہونے کے لئے عزیز ہونا ضروری ہے یا حدیث غریب بھی صبح ہوسکتی ہے اس سلسلہ میں علاء حدیث کا اختلاف ہے۔

امام حاکم صاحب متدرک اور معتزله میں سے ابونلی جبائی کی رائے یہ ہے کہ حدیث کے لئے عزیز ہونا ضروری ہے یعنی اس کی سند میں ہر طبقہ میں کم از کم دوراوی ہونا حدیث کے

تصیح ہونے کے لئے ضروری ہے۔ لیکن ریول ضعیف ہے۔

جمہور محدثین کی رائے یہ ہے حدیث کے سیم ہونے کے لئے عزیز ہونا شرطنہیں ہے بلکہ حدیث غریب بھی سیم ہو کتی ہے، جب اس کے اندر صحت کے شرا نظیائے جائیں، کیول کہ حدیث سیم میں تعدد رواق کی شرطنہیں ہے، محدث دہلوی اس مسئلہ میں جمہور کے ساتھ بیں، اس وجہ سے دوسر سے ند مہب کی تر دید فرمانی ہے۔

غريب اورشا ذ كااستعال

غریب بھی شاذ کے معنی میں استعال ہوتا ہے بینی وہ حدیث جس کوراوی ثقہ کے مخالف نقل کر سے صاحب مصابح النہ امام بغوی کتاب مصابح النہ میں جب بطور طعن کسی حدیث کے بار سے میں ہذا حدیث غریب کہیں تو اس کا بہی مطلب ہوتا ہے کہ بیحدیث شاذ ہے اور ثقہ کی روایت کے خلاف ہے۔ اس طرح شاذ بھی غریب کے معنی میں استعال ہوتا ہے اس صورت میں شاذ کے معنی ہوں گے جس کا راوی متفر دہو ثقات کی مخالفت کا اس میں لحاظ نہیں ہوتا اس تغییر کے اعتبار سے حدیث شاذ صحت کے منافی نہیں ہوگا۔

ضعیف اور سی کے در جات کابیان

حدیث ضعیف کی تعریف: حدیث ضعیف و مدیث ہے جس میں حدیث سے جس میں حدیث سے حس میں حدیث سے جس میں حدیث سے حسن میں اعتبار کردہ بعض یا کل شرا نظام غقو د ہوں اور اس کا راوی شذوذ، نکارت اور علت کے ساتھ مطعون ہو۔

تیسری فصل کے اندر حدیث صحیح لذاتہ ، حدیث صحیح انیر ، حدیث حسن لذاتہ ، حسن الخیر ، اور حدیث حسن لذاتہ ، حسن الغیر ، اور حدیث ضعیف کی تعریفات بیان کرنامقصود

نہیں ہے۔ یہاں صدیم ضعیف کی تعریف ضمی طور سے بیان ہوئی ہے، چونکہ صدیم ضعیف میں ضعف کی علت اس کا شروط صحت اور حسن سے بعد اور دوری ہے لہذا ہے بعد جس قد رزیادہ ہوگا، اس قد رضعف میں زیادتی ہوگی مشلا کسی صدیم میں صحت کی ایک شرط منقو و ہے تو اس میں ایک درجہ ضعف ہوگا اور اگر بیک وقت دو شرطیں منقو د ہوں تو دو درجہ ضعف ہوگا ای طرح جس میں تین یا بیار شرائط منقو د ہوں تو اس صدیم میں تین یا بیار درجہ ضعف ہوگا لہذا ایک شرط جس میں تین یا بیار درجہ ضعف ہوگا لہذا ایک شرط یا بیک وقت متعدد شرائط کے نقد ان کے اعتبار سے صدیم ضعیف کی متعدد اقسام ہوجا کیں گی۔ بعض کے اور اس تفاوت درجات کے لحاظ سے صدیم ضعیف کی متعدد اقسام ہوجا کیں گی۔ بعض محد ثین نے امکان عقل کے طور سے ایک سواکیس اور امکان وجودی کے اعتبار سے اکیا تی صحیص بیان فرمائی ہیں۔

تنصیل کے لئے مطواات تد ریب الراوی وغیرہ کا مطالعہ کیا جائے۔

حدیث سیجے وحدیث ^{حسن} کے مراتب اور در جات

جس طرح حدیث ضعیف میں صفات صحت کے انفرادی اوراجما کی فقد ان کے اعتبار سے مراتب ضعف میں تفاوت ہوجاتا ہے، اس طرح حدیث صحیح وحدیث حسن کی صفات عدالت وضبط وغیرہ کی قوت میں تفاوت کی وجہ سے حدیث صحیح کے مراتب بھی متفاوت ہوجا کی وجہ سے حدیث صحیح کے مراتب بھی متفاوت ہوجا کیں گے۔

جن روا ق میں صفت عدالت اور صفت صبط اعلی درجہ کی ہوگی اس کی حدیث اعلی قرار دی جائے گرار دی جائے گرار دی جائے گی اوراگر اوصاف کچھ کم تر ہیں تو اس کا رتبہ کم ہوگا اگر چرصحت وحسن میں دونوں مشترک ہول گی۔

حضرات محدثین نے ان مراتب ودرجات کو متعین اور محفوظ کیا ہے اور سندول سے

ان كى امثله پيش فر مائى ہيں۔

اصح الاسانيد

سی معین اورخاص سند براسی الاسانید (صیح ترین سند) کا تکم لگایا جا سکتا ہے یا یں؟

محدثین کا رائج اورمخار قول یمی ہے کہ کسی خاص سند کو مطلقاً اصح الاسانید قرار دینا درست نہیں کہے البتہ صحت کا اعلی درجہ ہے اس میں متعدد اسانید داخل ہیں اور اصح الاسانید قرار دینے کی دوو جوہات ہیں۔

(۱) مراتب صحت میں تفاوت اور کی بیٹی کا مدار سند میں شروط صحت اور صفات قبول کے پائے جانے پر ہے اور دیگر تمام اسانید کے مقابلہ میں کسی خاص سند کے ہر ہر فرد میں صفات قبول کا اعلیٰ درجہ میں یا یا جانا دشوار اور مشکل ہے۔

(۲) اصحالاساند کے فیصلہ کے لئے اکناف عالم میں شرقا وغر با بھیلے ہوئے برزمانہ کے تمام رواۃ کے احوال کی معرفت میلی شکل سے بھی زیادہ مشکل ہے۔ بھی زیادہ مشکل ہے۔

۔ بے نلاء کی اس سلسلہ میں تمین جماعت ہیں کاسی سند کے بارے میں اسمح الاسانید کہنا ورست ہے پانہیں۔

⁽۱) مطلقا جائز ہے۔ ابن معین بلی ابن المدینی، اسحاق بن را ہو یہ حمد بن منبل، بخاری وغیر دائی کے آگل ہیں، اور حافظ ابن جرؓ نے الکت میں اس کو اختیار کیا ہے، کیونکہ رواۃ کی چھان کیٹک کی جا چکی ہے، اوران کے احوال کو کتب میں مدون کردیا گیا ہے۔ لہذ اان میں ترجیح کا معاملہ ممکن ہے۔

⁽۲) مطاقانا جائز ہے۔ اس کے قائل ابن الصلاح وغیرہ ہیں اسلنے کہ ہر راوی کے ضبط عد الت کا اس کے زمانہ کے تمام رواۃ سے موازنہ کرنامشکل ہے۔

⁽۳) اُگرمقید کر مے مثلاً کسی صحابی کی کسی شہر کی کسی مسئلہ کی اصح الا سانید استعال کیا جائے تو یہ جائز ہے، ورنہ بیں۔ اس کے قائل ہیں حاکم اورصاحب مقدمہ وغیرہ نے ای کواختیا رکیا ہے۔ (تعلیقات ارثیاد:۱/۱۱۳)

اصح الاسانيد كے بارے ميں ائمہ محدثين كے اقوال

حضرات محدثین نے مشکل کے باوجودا صح الاسانید کی تلاش وجنجو کا کام شروع کیا مگر وہ کوئی متفقہ فیصلہ نہ کر سکے اور ہرا یک نے اپنے اپنے ذوق تحقیق کے مطابق کسی ایک سند کوا صح الاسانید قرار دیا ہے، جس کی تنصیل ہیہے۔

(۱) امام اسحاق بن رابويداورامام احمد بن ضبل كي نظر ميس السح الاستانيد زهرى عن مسالم عن ابن عمر عن ابيه رضى الله عنه.

(۲) على بن المدين اور عمروبن على الفلاس كى نظر مين السي المانيد مسحد بن سيرين عن عبيدة بن عمرو السلماني عن على بن ابى طالب رضى الله عنه.

(٣) المام نُسانى اوركى بن عين كى نظر مين: ابسراهيم النسخعى عن علقمة عن قيس عن عبد الله بن مسعود رضى الله عنه.

(سم) ابو بكر بن الى شيبه اورعبد الرزاق بن بهام كى نگاه ميس: زهسوى عسن زيسن العابدين على بن الحسين عن ابيه عن جده على رضى الله عنه.

- (۵) المام بخاري كي نظريس: مالك عن نافع عن ابن عمر رضى الله عنه.
- (۲) سلیمان بن داو دالشا و کوئی کی نظر میں: یعحییٰ بن ابی کثیر عن ابی سلمة عن ابی هریرة رضی الله عنه.
- (2) امام وكيع كي نظر مين: شعبة عن عمرو بن مرة عن مرة عن ابي موسى الأشعرى رضى الله عنه.
- (۸) امام عبدالله بن المهارك اورجل كى نظريس: سفيان النودى عن منصود عن ابر اهيم عن علقمة عن ابن مسعود رضى الله عنه.

محدثین کے اس کے علاوہ اور بھی اقوال ہیں تنصیل کے لئے مطوالت کی طرف مراجعت فرمائیں۔

كسى خاص قيد كے ساتھ اصح الا سانيد كا فيصله

اطاق وعموم كے بجائے كى خاص قيد كے ساتھ اسى الاسانيد كا فيصل درست ہے۔ مثل اصح الاسانيد فى الباب الفلائى يااصح مثل اصح الاسانيد فى الباب الفلائى يااصح الاسانيد فى المسئلة الفلائية فلال شهريا فلال بابيا فلال مسئله من المسئلة الفلائية فلال شهريا فلال بابيا فلال مسئله من المسئلة الفلائية فلال شهريا فلال بابيا فلال مسئله من المسئلة الفلائية فلال شهريا فلال بابيا فلال مسئله من المسئلة الفلائية فلال شهريا فلال بابيا فلال مسئله من المسئلة الفلائية فلال شهريا فلال بابيا فلال مسئله من المسئلة الفلائية فلال شهريا فلال بابيا فلال مسئلة الفلائية فلائل شهريا فلائل بابيا فلائل مسئلة الفلائل المسئلة الفلائل المسئلة الفلائل المسئلة الفلائل المسئلة الفلائل المسئلة الفلائل المسئلة الفلائلة فلائل المسئلة الفلائلة الفلائلة فلائل المسئلة الفلائلة الفلائلة فلائل المسئلة الفلائلة فلائل المسئلة الفلائلة الفلائلة فلائل المسئلة الفلائلة المسئلة الفلائلة المسئلة الفلائلة الفلائلة الفلائلة الفلائلة الفلائلة الفلائلة المسئلة الفلائلة الف

فصل: امام ترمذي كي عادت شريفه كابيان

صحاح ستہ کے مصنفین میں سے صرف امام ترفدی کی بیعادت اورا تمیازی وصف ہے کہ برحدیث کا درجہ متعین فرماتے ہیں اور مختلف طریقوں سے ہرحدیث پر اپنی کتاب الجامع السنن میں فیصلہ فرماتے ہیں۔ امام ترفدی کی عبارات کا خلاصہ درت ذیل ہے:

- (۱) هذا حديث صحيح.
 - (٢) هذا حديث حسن.
 - (٣) هذا حديث غريب.
- (٣) هذا حديث حسن صحيح
- (۵) هذا حديث حسن غريب.
- (Y) هذا حديث صحيح غريب.
- (٤) هذا حديث حسن صحيح غريب.

اول الذكر تين صورتوں ميں صرف ايك وصف كا ذكر ہے ظاہر ہے كداس كے جواز ميں كوئى كلام نہيں ہے، كيول كدان ميں صرف ايك وصف كا تذكر ، ہے اس كے معارض دوسرا كوئى وصف نہيں ہے۔

ای طرح چیشی صورت جہال صحیح غریب کہد کر تبحت وغرابت کا اجتماع ہے اس میں بھی کوئی اشکال نہیں ہے کیوں کہ یہ بات جائز ہے کہ ایک حدیث کے تمام رواۃ عادل اور صاحب ضبط واتقان ہوں اور اس حدیث کی صرف ایک ہی سند ہوتو اس طرح صحت وغرابت کا اجماع ممکن ہے۔ نیز چوتھی صورت کے اندر صحت اور حسن کے اجماع میں بھی کوئی شبہ اوراشکال نبیں ہے۔ کیوں کہ بیہ ہات ممکن ہے کہ ایک حدیث سیج لغیر ہ اور حسن لذاتہ ہو کیوں کہ حسن لذاته تعدد طرق کی وجہ سے محیح لغیر و کے مقام تک پہنتا جاتی ہے، کیکن یہ جواب ان احادیث میں جن کی صرف ایک ہی سند ہوجاری نہ ہوگا جا النکہ اس کے بارے میں بھی ھندا حدیث حسن صحیع کہا گیاہے۔اس لئے بہتر جواب وہ ہے جس کی امام اُعصر علامہ انورشاہ تشميري في تصويب فرماني باورابن دقيق العيد في ايني كتاب الاقتسراح في اصول التحديث ميناس كوبيان فرمايا بجس كاخلاصه يدب كدمفات قبول مثلاً صدق، حفظ، عدالت وغیرہ اس کے مختلف درجات ہیں بعض بعض سے فائق اور برتر ہیں پس ادنی یعنی صدق اورعدم تبمت کا وجوداعلی یعی صدق اور حفظ کے وجود کے منافی نہیں ہے ابدا جب اونی وصف کسی حدیث میں یایا جائے تو بیاعلی کے وجود کے منافی نہیں ہے، لہذاممکن ہے کہ ایک حدیث وصف ادنیٰ کے اعتبار ہے حسن اور وصف اعلیٰ کے اعتبار سے میجے ہواس طرح صبیح اور حسن کا جماع ایک صدیث کے ساتھ ہوسکتا ہے۔علامہ ابن جمر نے اس جواب کوا قوی الاجوب قرار دیا ہے۔ (معارف اسنن: ١/٣٣٠) اس اشكال كے اور بھى متعدد جوابات دئے گئے ہیں، تنصیل کے لئے مقدمہ فتح الملیم شرح مسلم مولفہ علامہ شبیراحمہ عثانی کا مطالعہ کیا جائے۔

غرابت اورحسن كااجتاع

غرابت اور حسن کے اجتماع پر محد ثین نے اشکال کیا ہے خلاصہ اعتر اض واشکال ہے ہے کہ حسن کی تعریف امام ترفدی کی صراحت کے مطابق ہے ہے جس کی اسمانید متعدد ہوں اور صدیث غریب کہتے ہیں جس کی صرف ایک سند ہوتو ایک صدیث کے بارے ہیں ھذا حدیث حسن غریب کہنا بطا ہراجتما غ تقیصین ہے اور دومتعارض چیز وں کوایک ساتھ جمت کرنا ہے۔

اس اعتراض کے محدث دہلوی اور دوسر سے حضرات نے متعدد جوابات دیئے ہیں۔
(۱) امام ترفدی کا کسی حدیث کے بارے ہیں حدیث حسن کہنا دوسم پر ہے ایک قتم ہیے ہے کہ حدیث پر صرف حسن ہونے کا حکم لگایا ہواور دوسر اکوئی حکم نہ لگایا ہواور دوسری قسم ہیے ہے کہ حسن ہونے کے ساتھ دوسر اوصف بھی ذکر کیا ہو۔ امام ترفدی جس حدیث حسن ہیں تعدد طرق کا لحاظ کرتے ہیں تو وہ قسم اول ہے اور جس حدیث ہیں حسن کے ساتھ خریب کا اجتماع ہے وہاں حدیث حسن میں تعدد طرق کا لحاظ نہیں ہے اور اس حدیث حسن کے ساتھ غرابت کا اجتماع درست ہے۔ امام ترفدی نے کتاب العلل الصغیر میں اس جانب رہنمائی فرمائی ہے۔ حافظ ابن ججر ہے نشرح نخیۃ میں بھی اس جواب کو بیان فرمایا ہے۔

(۲) دوسرا جواب یہ ہے کہ وہ حدیث متعدد اسانید سے مروی ہے اور کسی خاص سند میں ایک شم کی غرابت ہے تو گویا بعض اسانید کے اعتبار سے وہ حدیث حسن ہے اور بعض اسانید کے اعتبار سے وہ حدیث غریب ہے گویا دو وصفوں کا اجتماع تعدد طرق کی طرف اشارہ ہے۔

(٣) تيراجواب يب كمامام ترندي كقول "هذا حديث حسن غريب" كي

تقدر عبارت سن وغریب ہاورواؤ جمعنی اُو ہاورواؤ کومقدر مانے اوراوکومقدر نہ مانے کی وجہ بیہ کہ کلام عرب میں واؤ کاحذف درست ہے،اوکاحذف درست نہیں ہے۔خلاصہ بیہ ہے کہ امام ترفدگ کے نزد کی حدیث معتبر ہے لیکن وہ کسی حتی فیصلہ تک نہ بی سکے ہیں اس لئے بطریق شک اور تر در حسن غریب کہتے ہیں لیکن بیہ جواب بیحد کمزوراورضعیف ہے کیوں کہ اس قتم کا تر دوامام ترفدی جیسے محدث کی جانب سے بعید از عقل وقیاس ہے۔ بھراس تم کی بات کسی ایک جگر مکن ہے جاورتمام کی بات میں ایک جاورتمام کی بات میں ایک جاورتمام کی بات میں ایک جگر مکن ہے والے میں ایک جاورتمام کی بات میں ایک کی بات میں ایک کے مار دواور بھی زیادہ بعید ہے۔

(۳) اس جگه امام ترفدی کے کلام میں حسن سے مراد معنی اصطلاحی نہیں ہے بلکہ معنی افعی مراد ہیں یعنی جس کی طرف طبیعت کا میلا ن ہو۔اور حسن بالمعنی اللغوی اور صدیث غریب میں کوئی منافات نہیں ہے دونول کا ایک ساتھ اجتماع درست ہے کیول کہ صدیث اگر چغریب ہوگر کلام نبوی ہونے کہ وجہ سے طبیعت کا میلا ان اور رغبت تو اس کی جانب ہوتی ہی ہے لیکن یہ جواب متعدد وجو ہے ضعیف اور کمزور ہے۔

(۱) کمزورہونے کی پہل وجہ یہ ہے کہ حسن محد ثین کی ایک خاص اصطااح ہے اور ابغیر ضرورت شدید ، کے ترک اصطااح پر مداومت طبیعت سلیمہ کے خلاف ہے۔

۲) دوسری وجہ رہے کہ کلام رسول کامعنی لغوی کے اعتبار سے حسن ہونا ہر ہو شمند کو معلوم ہے پھراس کے حسن ہونے کا کوئی فائد ہمیں ہے۔

(٣) تیسری کمزوری یہ ہے کہ معنی لغوی کے اعتبار سے حسن کا اطلاق موضوع، ضعیف، منکر پر بھی ممکن ہے۔ حالانکہ حدیث موضوع اور منکر کوکوئی بھی حسن کہنے کا روا دار نبیس ہے۔

فصل: احادیث صححه، احادیث حسن اور

حدیث ضعیف سے استدلال واحتجاج کابیان

صدیت صحیح لذاته مجیح النیر و مسن لذاته مسن النیر و سے مسائل علت وحرمت مفات باری تعالی اور دیگراء تقادی احکام میں استدال واحتجات ورست ہے تمام محدثین وفقها عکرام کااس پر اتفاق اوراجماع ہے۔

مديث ضعيف ساستدال كاحكم

حال وحرام اوراء تقادی مسائل میں احادیث ضعیفہ سے استدال جائز نہیں ہے جمہور علاء کا مسلک یمی ہے، کیکن فضائل اعمال ، استحباب ، مناقب اور ترغیب وتر ہیب کے ابواب میں ضعیف حدیث سے استدال واحتجات میں علاء محدثین کے تین قول ہیں:

(۱) امام بخاری، امام سلم، یجی بن معین، ابن العربی، ابن حزم وغیره کاقول بیہ بے
کے طعیف احادیث سے مطلقاً استدابال جائز نہیں ہے ندا دکام میں ندفضائل و مناقب میں۔
(۲) صحیح اور حسن احادیث کی غیر موجود گی میں ضعیف روایات سے استدابال با اکسی
شرط کے درست ہے امام احمد بن ضبل اورا مام ابوداؤڈکا یہی مذہب ہے۔

(۳) فضائل اعمال، مناقب اورترغیب وتر بهیب وغیرہ میں تین شرطوں کے ساتھ ضعیف روایات سے استدابال درست ہے: (۱) اس کا ضعف قوی نہ ہو یعنی کذاب، مہم بالکذب اورکشیر الغلط راوی کی متفر داورغریب حدیث نہ ہو (۲) اس حدیث کامدلول ومفہوم کسی قواعد شرعیہ کے عموم میں داخل ہو۔ (۳) اس پرعمل کرتے وقت اس کے ثبوت کا اعتقاد نہ رکھے بلکہ احتیاط کا اعتقاد رکھے تا کہ حضرت نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی جانب ایسی بات کا

انتساب اازم ندآئ جوآب نے ندفرمائی ہو۔

تعنید: کیلی شرط پر حافظ صلاح الدین علائی نے اتفاق نقل کیا ہے اور آخر الذکر دونوں شرطوں کو شیخ عز الدین بن عبد السلام اور ابن دقیق العید نے بیان کیا ہے۔

تنبیہ: جس صدیث ضعیف کا تعدد طرق سے ضعف دور ہوجائے وہ حسب تقریح ائمہ صدیث حسن افیر و کے درجہ میں پہنی جاتی ہے اور اس سے مطلقاً استدابال درست ہے۔ یہاں صدیث ضعیف سے مراد صدیث فرد ہے جس کی صرف ایک سند ہواور اس کا ضعف تعدد طرق سے دور نہ ہوا ہو۔

کیا تعد دطرق سےمطلقاً حدیث ضعیف کاضعف دور ہوجائے گا

تعددطرق سے مطلقا برتم کا ضعف دورنہیں ہوتا ہے بلکہ جوراوی سوء حفظ کی وجہ سے ضعیف ہو یا راوی بیس صدق ودیا نت کے باوجو دید لیس اورا ختااط کامرض ہواوراس کی وجہ سے راوی کمز ور ہوتو ایباضعف تعددطرق سے دور ہوجائے گا اور وہ درجہضعف سے ترقی کر کے درجہ حسن تک پنی جائے گی اوراس سے استدابال فضائل وا حکام وغیرہ برجگہ درست ہے۔ لیکن آگر روایت کے اندر راوی کے کذب، اتہام بالکذب، شذوذ اور فخش فلط کی راہ سے شذوذ آلی تعدد طرق سے منقول ہونے کیوجہ سے فضائل اعمال میں اس سے استدابال درست ہے اور وہ صدیمے علی طابہ ضعیف ہی رہے گی حضرات محد ثین کے قول ''ان لحوق الضعیف بالضعیف الا یفید قوق ''کا بی مطلب حضرات محد ثین کے قول ''ان لحوق الضعیف بالضعیف الا یفید قوق ''کا بی مطلب ہے لینی یہ قول مطلق نہیں ہے بلکہ جوا حادیث شریفہ متر وک ومنکر ہیں وہ کثر سے طرق سے دائر، ضعیف سے فارج نہیں ہوں گی۔

دائر، ضعیف سے فارج نہیں ہوں گی۔

فصل

سيح بخاري كى فوقيت اوراحا ديث صححه كے درجات كابيان

صیح بخاری اور تیجمسلم میں ہے کون فائق ہے؟

اس سلسله مين محدث وبلوي في شرح سفرالسعادة مين ساراقوال لكه بين:

(۱) بخاری شریف کی ترجیح مسلم شریف پر

(۲) مسلم شریف کی ترجیح بخاری شریف بر

(۳) دونوں کتابوں میں مساوات و بکسانیت

(م) تو تف

لیکن محدث دہلوگ نے مقدمہ مشکوۃ میں صرف اول الذکر دوا قوال ذکر کرئرنے کے بعد پہلے قول کورجے دی ہے اور دوسر سے قول کی صبح تو جیہ و تاویل پیش کی ہے۔

(ماشیم فی کدشته) یا علامہ ابن تجر فے صیف روایت کے ضعف کوئتم کرنے کے سلسله میں ایک ضابط فرکر کیا ہے، ابن المسلاح وغیر دنے اس کو ذکر نہیں کیا ہے، کہ متابع اور شاہد سے حدیث ضعف ای وقت منتم بوگا، جب یا تو متابع مقبول ہو یا تبول اور دو دونوں جانب ای میں برابر بول لین اگر متابع میں جانب رو غالب ہوتو اس کے ذرمیر ضعیف کاضعف خم نہیں ہو سکتا۔ (تعلیقات ارشاد: ۱/۱۲۸۱) ما فظ سخاوی نے ذکر کیا ہے کہ متابع اور شاہد کے لئے نیز اصل کے لئے تقداور ہم پلہ بونای ضروی نہیں ہے، بلکہ بعض حافظ سخاوی نے ذکر کیا ہے کہ متابع ہوتا ہے، لیکن دونوں کے ملئے سے پھی توت بیدا بوجاتی ہے۔ نیز کمی مرجوضعیف بھی متابع ہوتا ہے، لیکن دونوں کے ملئے سے پھی توت بیدا بوجاتی ہے۔ نیز کمی مرجوضعیف بھی متابع ہوتا ہے، لیکن دونوں کے ملئے سے پھی توت بیدا بوجاتی ہے۔ نیز کمی مالیلہ میں اس کی روایت ایک راوی کے سلسلہ میں اس کی روایت مؤید ہوجاتی ہے۔ (تعلیقات ارشاد: ۱/۲۳۲۷)

صحیح بخاری کی محیح مسلم برتر جیح کی وجو ہات

(۱) امام بخاریؒ نے اپنی کتاب "المجامع الصحیح" میں اس بات کا اہتمام کیا ہے کہ جن رواۃ ہے وہ صدیث نقل کرتے ہیں ان میں راوی اور مروی عنہ کے درمیان ملاقات کی شرط لگاتے ہیں جب کہ امام سلم کے نزد کی صرف معاصرت کا فی ہے۔ ملاقات شرط ہیں ہے قو گویا ازروئے اتصال سند کے امام بخاری کی شرط بخت ہے۔

لا) امام بخاری کا درجہ فن حدیث میں امام مسلم سے فائق ہے۔ اور اس پر تمام محد ثین کا تفاق ہے۔ اور اس پر تمام محد ثین کا تفاق ہے۔ نیز امام مسلم امام بخاری کے ثما گرداور فیض یا فتہ ہیں۔

(۳) صحیح بخاری اور صحیح مسلم کی جن احادیث پر ائمہ جرح وتعدیل نے نقد اور اختر اض کیا ہے ان کی مجموعی تعداد دوسو دس (۲۱۰) ہے جن میں سے صرف بتیس (۳۲) احادیث وہ بیں جن میں دونول ائمہ حدیث متفق بیں اور صرف بخاری شریف کی تقید شدہ احادیث (۷۸) بیں اور مسلم شریف کی تقید شدہ احادیث کی تعدادا کی سوئے گویا کہ امام مسلم کی احادیث تقید شدہ زیا دہ بیں اور بخاری شریف کی میں۔

(س) تنہاامام بخاری نے جن رواۃ سے صدیث کی تخ تیج کی ہے ان کی تعداد بیار سو چونتیس ہے جن میں سے متعلم فیدرواۃ صرف اس (۸۰) ہیں اور تنہا امام سلم نے جن رواۃ سے احادیث کی تخ تیج کی ہے ان کی تعداد چھ سوجیں (۲۲۰) ہے ، ان میں سے متعلم فیدرواۃ ایک سوساٹھ ہیں گویامسلم شریف کے متعلم فیدرواۃ زیادہ ہیں۔

(۵) امام بخاری کے متکلم فیدروا قاکثرامام بخاری کے بلاواسطه اساتذه ہیں جن کے کے حدا فی نخبة الفکر هذا بعد اتفاق العلماء علی ان البخاری کان اجل من مسلم فی العلوم واعرف من بضاعة الحدیث وان مسلما تلمیذه وخریجه. ص:۳۰.

حالات اوران سے روایت کردہ احادیث کی حیثیت سے وہ خوب واقف ہیں لیکن امام مسلمً کے متکلم فیدروا ۃ ا نکے بلاوا سطہا ساتذ ہوشیوخ نہیں ہیں بلکہ ا نکے اوپر کے درجہ کے شیوخ ہیں جن کے حالات اور مقام سے امام مسلم کی اس درجہ کی واقفیت نہیں ہے اور ظاہر ہے کے محدث کی وہ روایات جن کی حیثیت کووہ بیجا نتاہو دوسری ا حادیث سے مقدم ہونگی اسوجہ ہے امام بخاری کی تیم بخاری کوتیم مسلم رفو قیت حاصل ہے۔ (شرح نخبہ: ۳۰ مقدمہ فتح الملیم: ۹۷)

صحيحمسكم كوسي بخارى برترجيح كامسكهاوراس كي توجيه

بعض علاء مغرب (علاء اندلس والبين وغيره) كبتيه بين كه محيح مسلم كوسيح بخارى يرتفوق اور برتری حاصل ہے۔

جمہورمحد ثینٌاس کا جواب بیددیتے ہیں کصیح مسلم کی صحیح بخاری برفو قیت اور فضیلت بیان اورتر تبیب کی عمر گی اور اسانید میں وقیق اشارات اورعمرہ نکات کی رعایت کے اعتبار ہے ے حاا انکہ زیر بحث بیمسکہ بیں ہے لیکن سحت وقوت کے اعتبار سے سیح بخاری کو سیح مسلم پر فوقيت اورفضيات حاصل بايكر في شاعر كبتاب:

تَنَازَعَ قَوُمٌ فِي الْبُخَارِيُ وَمُسُلِم لَدَيَّ فَقَالُوُ ا أَيُّ ذَيْن يُقَدَّمُ فَقُلُتُ لَقَدُ فَاقَ الْبُخَارِى صِحَّةً كَمَا فَاقَ فِي حُسُنِ الصَّنَاعَةِ مُسُلِّمٌ

متفق عليه كى تعريف: منفق عليه وه حديث كبااتى ب كه جس كي تخ يجرير امام بخاری اورامام مسلم دونول متفق ہول بشرطیکہ و ۱ یک ہی سحانی ہے مروی ہو۔

متفق علیه احادیث کی تعداد: محدث دہلوی کی تحقیق کے مطابق متفق علیہ احادیث کی تعداد دو ہزار تین سوچھبیں ہے لیکن بعض حضرات نے متفق علیہ احادیث کی تعدادایک بزارنوسوچے(۱۹۰۲)بیان فرمائی ہے،اوراس کوول محقق قراردیا ہے،واللہ اعلم۔

ا حادیث صحیحہ کے در جات

- (۱) متفق عليه احاديث كادرجسب عيمقدم بـ
 - (۲) پھر صیح بخاری کی منفر دروایات کا درجہ ہے۔
 - (٣) پھر صحیح مسلم کی منفر دروایات کا درجہ ہے۔
- (م) پھران احادیث کا درجہ ہے جو بخاری ومسلم کی شرط پر ہوں۔
 - (۵) پھروہ روایات جوصرف بخاری کی شرط بہوں۔
 - (٢) پھروه روايات جوصرف مسلم کي شرط بر ہول۔
- (2) پھر وہ روایات ہیں جنہیں بخاری ومسلم کے علاوہ بعحت کا التزام کرنے والے

دیگرائمہ حدیث نے روایت کیا ہوا وران کی صحت کی صراحت کی ہو۔

اس ترتیب کے اعتبار سے احادیث صححہ کی سات قسمیں ہو کیں۔

منائدہ: امام بخاری وسلم کے علاوہ دیگر ائمہ حدیث مثلاً ابن خزیمہ، بن جبان، امام حاکم، ابن جارود، ضیاء الدین مقدی وغیرہ نے بھی صحت کی شرط والتزام کے ساتھ صحیح احادیث کو اپنی اپنی کتابوں میں جمع کیا ہے اور اپنے علم ودانست کے مطابق صحیح احادیث نقل کی ہیں۔ ایس کتابوں کو صحاح مجردہ کہا جاتا ہے اور باعتبار صحت میں طبقہ اونی کی کتابیں ہیں۔

کیا کتب صحاح مجردہ میں کسی حدیث کا آنا صحت کے لئے کافی ہے اسلیلہ میں دو قول ہیں: (۱) حافظ ابن صلاح کی رائے ہے: متدرک حاکم کے علاوہ کتب صحاح مجردہ میں کسی حدیث کی تخریج ہی صحت کی تصریح میں صحت کی تحریث کی جانب سے صحت کی تصریح ضروری نہیں ہے جبکہ دوسر سے طبقہ کی کتابوں کے بارے میں بی قید ہے کہ حدیث کے صبح مونے کے لئے ان کے مصنفین کی جانب سے صحت کی صراحت ضروری ہے صرف ان کتب میں حدیث کا آ جانا صحت کے لئے کافی نہیں ہے۔

(۲) محدث دہلوی کی رائے یہ ہے کہ صحاح مجردہ میں کسی حدیث کا آ ناسحت کے لئے کافی نہیں ہے بلکہ صاحب کتاب کی جانب سے تصحیح کی صراحت ضروری ہے چونکہ صحیحین کے علاوہ دیگر صحاح مجردہ کم ومیش ضعیف احادیث سے خالی نہیں ہیں اس لئے محدث دہلوی کے قول میں بمقابلہ ابن صلاح کے احتیاط کا پہلوزیادہ ہے۔

شرط بخارى ومسلم كى مراد

شرط بخاری ومسلم کی مراداورمصداق کے بارے میں دوقول ہیں:

(۱) بعض محدثین کی رائے یہ ہے کہ اس سے مراد وہ صفات ہیں جن کوان دونوں حضرات نے خاص کیفیت کے ساتھ اسناد کے رجال میں ملحوظ رکھااوران کا التزام کیا ہے جیسے کمال صبط وعد الت، عدم شذوذ و نکارت وغیرہ۔

پس جوحدیث بخاری ومسلم دونوں کی سند کے مانند سحت میں ہوگ اسے سیم علی شرط الشیخین اور جوحدیث میں ہوگ اسے سیم علی شرط الشیخین اور جوحدیث صرف بخاری کی سند کے مانند صحت میں ہوگ اسے سیم علی شرط سلم کی سند کے مانند صحت میں ہوگ اسے سیم علی شرط مسلم کیا جائے گا۔ جوحدیث صرف مسلم کی سند کے مانند صحت میں ہوگ اسے تھے علی شرط مسلم کیا جائے گا۔ (۲) حافظ سخاوی نے امام نووی محقق ابن دقیق العید وغیرہ کے حوالہ سے لکھا ہے کہ

شرط بخاری و مسلم سے مرادان کی صحیحین کی اسانید کے رجال ہیں تو جس حدیث کی سند میں صحیحین کے سند میں صحیحین کی اسانید کے رجال ہیں تاریک سندان میں ہے کسی ایک رجال پر شمتال ہوگی اسے صحیح علی شرط ابخاری یاضچے علی شرط مسلم کہا جائے گا۔

وضاحت: شرط بخاری و مسلم کے بید دوسرے منی سب سے پہلے حافظ ابن صلاح نے اپنی کتاب علوم الحدیث کے میں بیان کئے ہیں پھر بعد کے علاء نے انہی کی بیروی کی ہے۔ حافظ ابن جحر نے شرح نخبہ میں اور حافظ سخاوی نے فتح المغیث شرح الفیہ میں یبی معنی مراد لئے ہیں۔ نیز امام حاکم صاحب متدرک نے بھی یبی معنی مراد لئے ہیں چنانچہ وہ اس حدیث کے بارے میں (جوجی بخاری و مسلم یاان میں سے کسی ایک کے رواۃ پر شمتال ہوتی ہے۔ جسی علی شرط ہمایا علی شرط احد ہمافر ماتے ہیں اور اگر کسی کی کمل سند میں یا سند کے کسی طبقہ میں صحیح بخاری یا شعیر مسلم کے رواۃ نہیں ہوتے تو اس وقت صحیح الاسناد کہتے ہیں۔

ایک اشکال اوراس کا جواب

شرط بخاری و مسلم کے دوسر مے معنی کے لحاظ سے بیاشکال ہوتا ہے کہ سیحیین کے علاوہ دیر کتب حدیث کی جوروایت سیح علی شرط این میں ہووہ امام بخاری وامام سلم کی تنہا تنہا روایت کردہ احادیث بلکہ متنفق علیہ روایت سے درجہ میں کم نہ ہو کیوں کہ جب خاص انہی رجال سے مروی ہے تو درجہ میں انہی کی حدیث کے مانند ہوگی۔البتہ اگر شرط بخاری و مسلم میں ان کے رجال کی صفات کا لحاظ کیا جائے تو اس صورت میں اس حدیث کا درجہ بخاری و مسلم کی احادیث سے کم مانا جا سکتا ہے کیوں کہ دیگر انکہ حدیث کی تحقیق تو تمیر حضرات شیخین کی تحقیق کے جم پیہ نہیں ہو سے آس لئے ممکن ہے کہ ان کو اشعباہ ہوگیا ہواور کم درجہ کی صفات کو شیخین کی لحاظ کردہ

صفات کے مساوی سمجھ لیا ہولیکن جب سند میں بعینہ صحیحین کے روا ق ہول تو پھر دونول متم کی احادیث میں تفاوت غیر معقول اور بے معنی ہے۔

حافظ تخاوی نے اس کا جواب دیا ہے کہ سیخین کی روایات کوعلاء کی تلقی بالقبول حاصل ہے اس وجہ سے ان کی روایات کا درجہ انہی رجال سے مروی دیگر احادیث سے رائح اور فائق موگا یعنی دوسری کتابوں کی احادیث اگر چربعینہ بخاری وسلم کے رجال مرشمتل ہوں کیکن تلقی بالقبول نہ ہونے کی وجہ سے صیحین کے ہم رتبہ نہیں ہو کتی ۔

اس پر اشکال یہ ہے کہ تلقی بالقبول صحیحین کے مجموعہ کو حاصل ہے الگ الگ ہر ہر صدیث کو یہ تلقی حاصل ہے الگ الگ ہر ہر صدیث کو یہ تلقی حاصل نہیں ہے اس لئے اشکال اول علی حالہ قائم ہے۔ اس وجہ سے شرط بخاری وسلم سے پہلے معنی مرادلیا ہی افضال ہے۔

رواة حديث كےطبقات

- (1) كثير الضبط والاتقان وكثير الملازمة جيسامام مالك اور سفيان بن عيينه
 - (٢) كثيرالضبط والاتقان وليل الملازمة جيسے ليث اورابن الى ذئب_
 - (٣) قليل الضبط وكثير الملازمة جيسے مفيان بن حسين _
 - (٤٧) قليل الضبط قليل الملازمة -
 - (۵) ضعفاءاور مجبول رواة_

بخاری شریف میں اصالہ طبقہ اولی کی روایات ہیں اور گاہے گاہے دوسر ے طبقہ کی روایات ہیں اور گاہے گاہے دوسر ے طبقہ کی روایات ہیں روایات ہیں اصالہ طبقہ اولی اور ٹانیہ کی روایات ہیں اور امام ابو داؤد طبقہ اولی ، اور شمنی طور سے احیانا تیسر سے طبقہ کی روایات بھی لی ہیں امام نسانی اور امام ابو داؤد طبقہ اولی ،

ٹانیہ، ٹالشہ، کی روایات قبول کرتے ہیں۔ امام ترندی طبقہ رابعہ کی بھی روایات قبول کرتے ہیں اس وجہ سے صحاح ستہ میں اول بخاری شریف پھر مسلم شریف، پھرنسائی شریف، ابوداؤدشریف پھرترندی شریف کا درجہ ہے اور آخر میں ابن ماجہ کا درجہ ہے۔

محاسن المنكات: صحيح مسلم شريف كوا گرخورو خوش سے پڑھا جائے تو نكات عجيبہ كاا كمشاف ہوگا مثلاً كوئى سندخراسانى ہے اس كے سار بے رواۃ علا بخراسان ہيں كوئى سند كوئى سندخراسانى ہے اس كے سار بے رواۃ كوئى سندخراسانى ہے تعلق ركھتے ہيں۔ائ طرح كسى حديث كوتا بحى تا بحى تا بحى سے روایت كرتا ہے اور سے بمشرت ہے اوركسى حدیث ميں تين تا بحى اوركسى ميں بيارتا بحى ہيں اور بعض بعض سے روایت كرتے ہيں۔

كياا حاديث صحيحه يحين ميرمنحصرين

ا حادیث صححه کا نصار میں بیں ہے اور صحیحین کے مصنف امام بخاری وامام سلم نے تمام احادیث صححه کا استیعاب نہیں کیا ہے امام بخاری وامام سلم کے نزویک جواحادیث صححه تھیں یا ان کی شرط کے مطابق تھیں ان کو بھی ان حضرات نے کمل بیان نہیں کیا ہے دوسر سے انم محدیث کے نزویک حصح احادیث کواپئی کتاب میں ذکر کرنا تو دور کی بات ہے۔ البتداتی بات محقق اور طے ہے کہ صحیحین میں جواحادیث ہیں وہ سب صحیح ہیں۔

ا حا دیث صحیحہ کے صحیحین میں منحصر نہ ہونے کی دلیل

ا پنے اس وعوی پرمحدث دہلوی نے تین دااکل بیان فرمائے ہیں: (1) امام بخاریؓ فرماتے ہیں کہ میں نے اپنی کتاب الجامع استح میں صرف صحیح احادیث بیان کی بیل اور بہت سی سیح احادیث کو میں نے جھوڑ دیا ہے، کتاب کے طویل ہونے اور دوسری وجوہ کی بناء پر۔

(۲) امام مسلم فرمات میں کہ میں نے اپنی کتاب صحیح مسلم میں جوروایات بیان کی میں وہ سب جمع میں جوروایات بیان کی میں وہ سب سبح میں اور میر اید دعویٰ نہیں کہ جوروایات میں نے چھوڑی میں وہ ضعیف میں بلکہ صحیح احادیث کا بہت بڑا فرخیرہ میں نے چھوڑ دیا ہے۔

(۳) امام حاکم ابوعبد الله نیشا پوری نے ایک کتاب تالیف فرمائی ہے جس کا نام مستدرک علی الصحیحین ہے اس کتاب میں وہ احادیث جمع فرمائی ہیں جو بخاری مسلم یاان میں ہے کسی ایک شرط کے مطابق صحیح ہیں لیکن بخاری وسلم میں وہ احادیث موجود نہیں ہیں اور فرماتے ہیں کہ امام بخاری ومسلم نے یہ فیصلہ نہیں فرمایا ہے کہ صحیحین کی روایات کے علاوہ روایا تصحیحہ کا وجو دئیس ہے۔

امام بخاری وامام مسلم کا اعتر اف اور امام حاکم کا سیم احادیث کوجمع کرنا اس بات کا واشح ثبوت ہے کہا حادیث صحیحہ سیمین میں منحصر نہیں ہے۔

حاكم: ال كوكت بي جے مديث كالكول الكظرق محفوظ بول -

حجة: اے كبيں كے جے تين الا كاطرق معلوم ہول۔

حافظ: اے کہتے ہیں جے صدیث کے ایک اا کھ طرق یا دہوں ^{ہے}۔

اِین الحسلاح نے فر مایا ہے بخاری کی اس قول سے مرادم قاصد الکتاب و موضعه و متون الاہواب دون التواجم و غیر ہا ہے۔ (تعلیمات ارشاد: ۱/۱۳۰۰)

ع حافظ، جمت، حاکم، کی اس طرح کی تعریفات زنبة انظر صفی اس برحاشینمبر : ۱۲ می شرح الشرح کے حوال سے منقول میں۔ منقول میں۔

حافظ: جس كانكم ايك لا كهاحاديث كوميط مو-

حجت: جس كاللم تمن لا كدا حاديث كوميط بو-

حاكم: جس كاللم تمام احاديث مرويكوميط مورمتنا اسنا دانيرها وتعديلا اورتاريخار (باقى حاشيه كلم مغير)

مبتدعين كااعتراض اوراس كاجواب

الل بدعت كابداعتراض ب كدا حاديث صحيحه كى تعدادوس بزار سے زائد نبيں ب جو ايک برئی خامی ہے۔ اور بہوں اللہ برئی خامی ہے۔ ليکن امام حاكم كى متدرك سے بداعتراض دور ہوگيا اور انہوں نے بد بتا ديا كداس اعتراض كى بنيا دہى غلط ب كدا حاويث صحيحة من فسط محمد من بيل بكا مستحمد من الله مستحمد بين الله مستحمد بين ۔ كے علاوہ دوسرى كتابول ميں بھى احاديث صحيحہ بين ۔

امام بخاریؓ فرماتے ہیں کہ مجھے ایک الکھ صحیح احادیث اور دوایا کھ غیر صحیح احادیث یا د ہیں اور ظاہر ہے کہ صحیح حدیث ہے امام بخاری کی مرادوہ صحیح احادیث ہیں جوامام بخاری کی شرط کے مطابق صحیح ہوں۔

صحيحين كي احاديث كي تعداد

محدث دہلوی نے حافظ ابن صلاح کی اتباع میں صحیح بخاری کی جملہ مرویات کی تعداد

(ماشیم می گذشته) لیکن اولا تو حاکم کایت کم خصوصاً متقدین اور متافرین بی ہے کسی پر لگنیس سکتار کیونکہ ایسا شخص بظاہر معدوم الوجود ہے، نیز محققین علاء نے اس سلسلہ میں مختلف آراء ذکر کی بیں جن کو مقدمہ قدریب الراوی میں تنصیل ہے بیان کیا گیا ہے، اور خلا سہ یہ ہے کہ حافظ وغیر دے القاب زمانہ وغیر دے تغیر ہے جہ لتے ہیں اور مختلف از مند میں مختلف صفاح کے ساتھ متصف اشخاص کو حافظ ہے جبیر کیا جاتا ہے۔

نیز جمارے دیا رکے ملا عموماً (حافظ ابوعبد اللہ محد بن عبد اللہ صاحب متدرک کوجو حاکم کبا جاتا ہے) سیجھتے ہیں ک کوتمام احادیث مع سند ومتن ترح وتعدیل اور تا ریخ کے یا دھیں اس لئے ان کو حاکم کبا گیا۔

حالا كديها تخلاف واقعه بي كونكه ان كراسا تذويل بهي ايك ابواحمد حاكم بين ان كوكوني ال ورجه كأنيس كبتا، اور اصل بات يه به كران كوحاكم كباجا تا ب، بنايري كران كوقاضى بنايا كيا ب، يبى ذكر كياب، ملامد ابن خلكان في وفيات الاعيان: ١٩٨٠ مربقوله و انعا عرف بالحاكم لتقلده القضاء رحمة الله عليه.

نیز کسی نے بھی محققین میں ہے ہم نے نہیں پایا کران کو حاکم ذکور دقعریف کی بناء پر کباجاتا ہے۔

مع کرار سات بزار دوسو پھر (۷۲۷۵) اور بحذف کرار بیا رہزار (۴۰۰۰) بتلائی ہے۔

لیکن علامہ ابن جحر نے کمل تحقیق تفتیش کے بعد تیج بخاری کی جملہ مرویات کی تعداد موقو فات اور مقطو عات کے علاوہ معلقات ومتابعات کوملا کرمع کرار نو بزار بیاتی (۹۰۸۲) اور بحذف کرار دو بزار سات سوا کسٹھ (۲۲۷) شار کی ہاوراس تعداد پراعتا دکیا جاتا ہے اور صحیح مسلم کی کل احادیث مع کرار دس بزار کے قریب بیں اور بحذف کرار تین بزار تمیں یا تین بزار تی

صحاح ستدمين ترتب

کتبستہ جومشہور ہیں اسلام میں مانی ہوئی ہیں۔انہیں صحاح ستہ کباجا تا ہے۔ مراتب کے اعتبار سے صحاح ستہ میں ترتیب اس طرح ہے: صحیح بخاری صحیح مسلم ،سنن نیائی ،سنن ابوداؤ د ،سنن ترفدی ،سنن ابن ماجہ۔

ھذہ الكتب الا وجعة: ليخى سنن ابو داؤد سنن تر ذكى ، سنن نائى ، سنن ابن ماجہ میں صحاح ، حیان ، ضعاف برقتم كى احادیث ذكور بیں اس پر سوال یہ ہے كہ پھر ان كتب كا صحاح سته نام ركھنا كس طرح سيح بوگا؟ تو اس كا جواب یہ دیا ہے كہ تعلیما صحاح سته نام ركھا گیا ہے ہيئى صحاح كو غیر صحاح پر غلبہ دے كر بیاروں كتابوں كا نام صحاح ركھا گیا ہے ۔ جیسے ابوین دالدین كے لئے قمرین خمس قمر كے لئے عمرین ابو بكر وعمر كے لئے بو المجا تا ہے ۔ اور بعض كن دركيا بن ماجه كى جگہ موطا ہے ، صاحب جامع الصول علامہ ابن الما شير نے بھى صحاح ست میں موطا بی كوشا مل كیا ہے ، بعضوں نے كہا ہے كتاب دارى زیادہ الماق ہے كہ اس كوچسشى میں موطا بی كوشا مل كیا ہے ، بعضوں نے كہا ہے كتاب دارى دیا دہ الماق ہے كہ اس كوچسشى میں موطا بی كوشا مل كیا ہے ، ابن ماجہ اورموطا ہے چونكہ كتاب دارى بیں بین عالی سندیں ہیں ، ادراس بیں بخارى ہے بھی زیادہ شلا ثیات ہیں ، نیز اس کے رجال بہت كم ضعف والے اور اوراس بیں بخارى ہے بھی زیادہ شلا ثیات ہیں ، نیز اس کے رجال بہت كم ضعف والے اور

احادیث منکره اورشا ذاس میں نا درالوجود ہیں۔

شلاشس: وہ حدیث ہے جس میں حضرت نبی اکرم سلی اللہ علیہ وسلم تک سند میں تین واسطے ہوں۔

امام بغوی کی اصطلاح اوراس پراعتر اض

محی السنة امام بغوی نے اپنی مشہور کتاب مصابح السنة میں ہرباب کے تحت صحیحین اور سنن اربعہ کی اصادیث ورج فرمائی ہیں اور صحیحین کی روایات کو صحاح اور غیر صحیحین کی روایات کو حسان سے تعبیر کرتے ہیں ظاہر ہے کہ حسان کی تعبیر اصطلاحی نہیں ہے کیوں کے صحیحین کے علاوہ دیم کر کتب کی تمام احادیث حسن نہیں ہیں بلکہ ان میں ہر شم کی احادیث ہیں اب سوال یہ ہے کہ امام بغوی کی مراد کیا ہے؟ یک خود شدہ لوگ نے اس کے تین جوابات دینے ہیں:

(۱) پہا جواب هو قسریب من هذا الوجه سے دیا ہے، یعنی غیر صحیحین کی روایات کا حیان نام رکھنا تعلیب کے طور بر ہے چونکہ سنن اربعہ اور اس درجہ سے قریب کتب میں حسن درجہ کی روایت کثیر تعداد میں بائی جاتی ہیں اس لئے اس کوغلبہ دے کر مطلقاً تمام بی روایات کو حسن کہددیا ہے گویا یہ تسمیہ الجزء باسم الکل کے قبیل سے ہے۔ احتمال کی حد تک یہ جواب درست ہے۔

(۲) دوسراجواب قسریب من المعنی اللغوی سے دیائے۔ لینی تمام روایات کا مطاقاً حمال نام رکھنامعنی لغوی کے اعتبار سے ہے۔ لیکن یہ جواب غلط ہے اس لئے کہ محد ثین رجال سند کی صفات کے اعتبار سے کسی حدیث کوچے ،حسن وغیرہ کہتے ہیں الفاظ حدیث کے حسن اور خوبصورتی کے لحاظ سے بیکم نہیں لگاتے ہیں خودمحدث دہلوی امام ترفدی کے قول ھذا

حدیث حسن کی بحث میں بعید جدا کہدکراس جواب کوردکر کیے ہیں۔

(٣) تيراجواباو هو اصطلاح جديد منه عديا بيعن الم بغوى كى يه جديد منه عديا بيعن الم بغوى كى يه جديدا صطارح بي تيراجواب محمد الامناقشة في الاصطلاح.

تعريفات

ویل میں جمالی نقشہ درت کیا جارہا ہے۔جوبسہولت یا دکیا جا سکتا ہے۔

حدیث: حضرت نبی کریم سلی الله علیه وسلم کے قول و تقریر کانام حدیث ہے۔ اور اس طرح سحابہ کرام رضی الله عنبی الجمعین کے قول و فعل و تقریر کانام اس طرح تا بعی کے قول و فعل و تقریر کانام حدیث ہے۔

حدیث مر هنوع: وه حدیث ہے جس کی سند حضرت نبی کریم سلی الله علیه وسلم تک بہو چیتی ہو۔

موقوف: وه حديث ب جس كى سند صحابه كرام رضى الله عنهم الجمعين تك بهو مجتى مو

مقطوع: وه حديث ب جس كي سندتا العي تك بهونچي مو

افي: حديث مقطوع كانام الرب، اوراثر بهي مرفوعات وموقوفات بربوا اجاتاب-

محدث: جو خص سنت واحادیث کے ساتھ مشغول ہو۔

ا خبلای: جوتواریخ وغیره کی خبراورتواریخ میں مشغول ہو۔

مسند: طریق حدیث، یعنی وه رجال جواس حدیث کوروایت کریں۔

متن: جہال جا کراسناوٹتم ہوجائے وہی متن ہے۔

مقصل: وه حديث جس كى سنديس سے كوئى راوى ندراہو۔

منقطع (۱):جس کی سندمیں ہے کوئی راوی گر گیا ہو۔

منقطع (۲): جس صدیث کی اثناء سند سے ایک راوی یا چند جگہ سے چندراوی گر گئے ہول۔

معلق: جس صديث كي اول سندے كوئى راوى لر كيا ہو۔

مسر سل: جس حدیث میں آخر سندے تا بھی کے بعد کوئی راوی گر جائے یعنی سالی کے نام کاذکر نہ ہو۔ سحانی کے نام کاذکر نہ ہو۔

حکم صر سل: جمہور کے زدیک قضے، چونکہ اس بات کا حمال ہے کہ ساقط ہونے والاراوی غیر تقد ہو، چونکہ بعض تا بعی تا بعی سے روایت کردیتے ہیں، صحابہ میں قو غیر تقد کا حمال ہی نہیں کی تقد کا حمال ہی نہیں کی تقد کا حمال ہی نہیں کی تا بعین میں آق تقد اور غیر تقد دونوں ہیں۔

امام اعظم ابوحنیفه اورامام ما لک کے نز دیک مطلق مقبول ہے۔

امام شافعیؓ کے مزد کی اگر مرسل کی دوسری روایتوں سے تا ئید ہوتو مقبول ہے،ورنہ غیر مقبول ہے۔

امام احمد کی دوروایتیں ہیں: (۱) مرسل ضعیف ہے، (۲) مرسل صحیح ہے، اور یہی راجح ہے۔ معضل: وہ حدیث جس کی سند ہے ایک ہی جگہ سے دوراوی ساقط ہوجا کیں۔

> ۔۔۔۔۔ اِ امام بخاریؓ نے فر مایا کہ مرسل کے پچھیر اتب ہیں۔

(۱) سب سے اللی مرتبہ: ال صحابی کی مرسل روایت ہے جس کا سائ حضور اقد س صلی اللہ علیہ وہلم سے نا بت ہو۔

(٢) ال كيعد: ال صحاني كي مرسل روايت جس كي المرف رؤيت البت بوسائ البت ند بو-

(٣) ال كے بعد بحضر من كى مرسل روايت

(۱۲) اس كے بعد بمتقن حضرات مثلاً سعيد ابن المسيب وغير وكى مرسل روايت -

(۵) ال کے بعد: متقن حضرات کے قریب قریب ان علاء کی روایات میں جو اپنے اساتذ و کی بہت چھال مین کر کے روایت کرتے میں جیسے شعبہ بمجاہد۔

(۱) اس کے بعد: ان لوکوں کی مراسل کا درجہ ہے جو کسی ہے بھی روایت کر لیتے ہیں، جیسے حسن بصری۔ (تعلیقات ارشاد: ۹ کا ارا مدلس: جس صديث ميس راوي في مروى عند كانام وكرند كيابو-

منطوب: وه صدیت جس کی سندیامتن میں راویوں کا ختااف ہو۔ تقدیم وتا خیریا دوسری وجوہ ندکوره کی وجہ ہے۔

مدرج: جس حدیث کے متن واساد میں راوی نے اپنے کلام کویا کسی سحانی یا تا بعی کے کلام کویا کسی سحانی یا تا بعی کے کلام کوکسی غرض کی وجہ سے داخل کیا ہو۔

عنعنه: حديث كومن عن الكربيان كرنا ـ

معنعن: جس مديث كوعن عن سے بيان كيا كيا مو-

مسند: اصح قول برحديث مرفوع متصل كانام ب_

شاذ: (۱) جس حدیث کاراوی تقد بواور مخالفت کرے اپنے سے زیادہ تقد لوگول کی۔ شسساذ: (۲) جس حدیث کا راوی تقد بواور اس حدیث کی اصل اور موافق کوئی

مديث نيهو ـ

شاذ: (٣) جس حديث كاراوي كوني ايك ره كيابو _

مر دود: وه حديث جس كاراوي غير أفقه موكر أفقه لو گول كي مخالفت كر __

محفوظ: وه حديث جس كاراوي ثقابت مين اس يرد حابوجوا كي مخالفت كرب

منكو: (١)و وحديث جسكاراوي ضعيف بونيك باوجود ضعيف كى مخالفت كر ــــ

منکو: (۲)وہ حدیث جس کے راوی کونس یا فرطِ غفلت ، یا کثر تے غلط کا طعنہ

اگایا ہو۔

معروف: وه حدیث جس کاراوی ضعیف ہواوراضعف اس کی مخالفت کرے۔

ا مدلس اور معلق کے درمیان فرق مد ہے کہ اگر صراحانا یا ستقر او وتتع کے بعد بیٹا بت ہوجائے کہ استاذ کو ساتھ کرنے والا مدلس ہے تو اس روایت کو مدلس قر اردیا جائے گا۔ اور اگر اس راوی کی قرلیس ٹا بت نہ ہو سکے تو اس کی روایت کو ملتی قر اردیا جائے گا۔ (قالمه الحافظ ابن حجز ، تعلیقات ارشاد: ۱/۱۹۸)

معلى: وه حديث جس يس كونى يمارى بويا ايباسب عامض بوجس كومابر فن حديث بى سجوسكان بد

مقامع: وه حدیث جس کی موافقت دومری حدیث کرے اور ان دونول حدیثول کا مروی عندایک ہو۔

شاهد: وه حدیث جس کی موافقت دوسری حدیث کرتی ہواور دونوں کامروی عنه ایک ندہو۔

اعتباد: متانی وشامدیجانے کے لئے جبتی تاش کرنا حدیث کی اسانید کی۔ صحیع: جس کے تمام راوی عاول ہوں، تام الضبط، ہوں، وہ حدیث متصل ہو، شاذنہ ہو، منکر نہ ہو۔

صحیح لذاقہ: جس حدیث میں شرا نظاخمسائی وجدالکمال پائے جائیں۔ صحیح لغیوہ: جس حدیث میں شرا نظاخمسہ پائے جائیں ،کیکن کچھ نقصان ہو۔ اورنقصان کو دورکرنے والی شی مجمی اس میں موجود ہو۔

حسن لنداند: جس حدیث میں شرا نظاخمسہ ہوں اور پکھ نقصان بھی ہو (یعنی راو**ی تا** م الضبط نہو)اور نقصان کو پورا کرنے والی شئ موجود نہ ہو۔

حسن لغيره: وه حديث ضعيف جومتعدوطرق ع آجاءً-

ضعيف: جن حديث مين يورے شرا نظاخمسه يا بعض مفقو د ہول۔

عدالت: وہ قوت ِرا سخه فی الذہن جوانسان کو تقوی ومروت کی طرف مجبور کرے۔

تقوی: کبار ے اجتناب کرنا۔

مروة: ان كميني باتول سے احتر ازكرنا جوانسا نيت كے خلاف ہول ـ

ضبط: سى مونى باتو ل كامخفوظ ركهناكه جب بيا باس كاستحضار كرسكي

ضبط الصدر: دل مين سي بات كوياد كرايدا اور محفوظ ركهنا

ضبط الكتاب: كتاب لكه كرمحفوظ كرلينا، يهال تك كه دوس اله محفوظ كرلينا. يهال تك كه دوس اله محفوظ كرلين -

جرح عدالت: كذب، اتبام بالكذب، اتبام بالفسق ، اتبام بالبدعة ، اتبام بالجبالة -

کسذب: ہے مرا دصدیث میں کذب ثابت ہو گیا ہویا تو واضع کے اقرارے یا دوسر مے قرائن ہے۔

موضوع: جس کے راوی کاکسی حدیث میں گذب ثابت ہو۔

مقسووک : جس کاراوی متہم بالکذب ہو، یا وہ حدیث قواعد معلومہ ضروری فی الشرع کے مخالف ہو۔

اقسام بالكذب: بين كراس كاراوى آليس ميس جمونامشهور بوء حديث ميساس كذب ثابت نديو-

مبهم: جس كاراوي مجبول بو_

مبھ کا حکم: حدیث جہم غیر مقبول ہے، اً کر مجبول سحانی ہے قو مقبول ہے، یا کوئی امام حاذق کیے: ''اخبر نبی عدل'' وغیر ہتو مقبول ہے۔

جدعت: کسی ایس نی کا عقاد جوطرین نبی وصحابی کے مخالف ہواور یہ اعتقاد کسی شبہ یا کسی تا ویل کی وجہ ہے ہو۔

مبتدع كى حديث كاحكم: جمهوركيز ديكم دود،السح قول براً رداى الى البدعة اور بدعت كے لئے مروح ہو،تو مر دودور نہ مقبول۔

جرح ضبط: فرطِ غفلت ، كثرت غلط ، مخالفة ثقات ، وجم ، سوءِ حفظ

سو، حفظ: یہ ہے کہ اسے اپنی مسموعات میں اکثریا دنہ آتی ہوں۔ مختلط: جس کے راوی میں سوء حفظ پیدا ہو گیا ہو، اختااط حافظ کی وجہ ہے۔ قبل الاختااط کی حدیث مقبول، اور بعد الاختااط کی حدیث مردود ہے، اگر شبہ ہے تو تو قف ہوگا، اگر دوسری حدیث اس کی متابعت کرے یا شہادت دے تو مقبول ہے، ورنہ مردود ہے۔

غریب: جس کی سند میں ایک راوی رہ گیا ہو۔ عزیز: جس کی سند میں کہیں صرف دوراوی رہ گئے ہوں۔ مشہور: جس کی سند میں ہر جگہ دو سے اکثر راوی ہوں۔ مقواقر: جس کی سند میں استقدر راوی ہول کے قتل ایکے اتفاق علی الکذب کو محال سمجھے۔ فرد مصلق: جس صدیث کی سند میں کسی ایک جگہ ایک راوی رہ گیا ہو۔ فرد مصلق: جس کی سند میں ہر جگہ ایک بی راوی ہو۔

صحيح مديثول كاسات فتميس بي

(۱) شیخین نے اس کو بیان کیاہو۔

(۲) صرف امام بخارگ نے بیان کیا ہو۔

(٣) صرف امام سلمٌ في بيان كيابو-

(4) شیخین کی شرطوں کے مطابق ہو۔

(۵) صرف امام بخاری کی شروط کے مطابق ہو۔

(۲) صرف امام مسلّم کی شروط کے مطابق ہو۔

(2) ان دونوں کے علاوہ ان لوگوں کی حدیث جنہوں نے صحیح حدیث المنے کا

التزام كيابو-

المستدر ک : حاکم ابوعبدالله نیما بوری کی تصنیف شده کاب جس میس انہوں نے ان صحیح حدیثوں کو ذکر کیا ہے، جن کو بخاری و مسلم نے چھوڑ دیا ہے۔

صحاح سقه: صحیح بخاری ، سی مسلم ، جامع اکثر فدی ، سنن ابی داؤد ، نسائی ، سنن ابد ، ابن ماجه کی جگہ بعضول نے مؤطا کو کہا ہے۔

حسان: صحیحین کے علاوہ بیار کتا ہیں: جامع اکثر فدی ، سنن ابی داؤد ، نسائی ، ابن ماجه ، بیامام بغوی کی اصطلاح ہے۔

ا البت بعض وه احادیث بھی اس میں آگئی ہیں جو سین احد الشیخین نے روایت کی ہیں۔
(تعلیقات ارشاد: ۱/۱۲۳)

لیمن حاکم تھی کے سلسلہ میں شاہل ہیں۔ (ضعیف روایت کی بھی تھی کردیتے ہیں) لبند اابن الصلاح ، نووی و فیروکی رائے یہ ہے کہ رائے یہ ہے کہ اس کو سیح قر ارٹیمن و بیگے ، جب تک دوسر معتبر خلاء ہے اس کی تھی ہمیں تقل جائے ، اگر کسی روایت کے بارے ہمی ہمیں تھی ہمیں نظی ہائے ، اگر کسی روایت کے بارے ہمی ہمیں تھی ہے تھے تھے نہ لے تو ہم اس کو حسن ورجہ کی قر ارد بینگے ، لبتہ اگر کوئی خلسہ ہوئی تو اس کو ضعیف قر ارد بینگے ۔ (ار شاد طلاب الحقائق: ۱/۱۴۲) لیمین اب خلاء کے کام کو تا اش کریں تو بہت اچھا ہے ورند جا فظ ذہبی نے "التلخیص" میں اب خلاء کے کام کو تا اس کی روایت کا درجہ تعین کیا ہے ، جو مطبوعہ مشدرک کے حاشیہ ہیں ہے ، جس سے اس روایت کا درجہ تعین کیا آ سان ہے ۔

احبول حابث

المسمى به

منظومنافع

حضرت مولا نامفتی الہی بخش کا ندھلوی ؓ

از بیاض

حضرت اقدس فقيه الامضى محمودت كنگوبى نوراللدمر قده

ترجمه وتشريح

محمد فاروق غفرله

خادم جامعهمود بيلي پور ماپور رو د مير ته (يو پي) ۲۰۵۲۰

بِسُمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰذِ الرَّدِيْمِ

حروصلوة

پس از حمد بروردگار قدیم تحیات وصلوت رب رحیم بروردگارقدیم (حق تعالی شانه کی) کی حمد کے بعد،رب رحیم کی رحمتیں نوازشیں ۔ برآں احمد وسید پاک باد برآل وہر اصحاب یوم التناد آنخضرت احمد وسید پاک (سلی اللہ علیہ وسلم) پر،اورآ پ کے آل واصحاب بر ہوں قیامت کے دن (یا قیامت کے دن تک)۔

تعريف صديث

چوشوق حدیث بود اے عزیز
کمن اصطاعات آزا تمیز
جب جھکو حدیث کاشوق ہوائے بیارے تواس کی اصطاعات کویاد کر۔
بزد محدث حدیث آل بود
کہ گوید نبی یا کہ فعلے کند
محدث کے نزدیک حدیث وہ ہے ، کہ نبی ہے یا کوئی فعل کرے۔
سویم آنچہ او دید وتقریر کرد
حدیث است در عرف ما نیک مرد
تیسر سوہ کہ کی چیز کود کھے کرتقریر (سکوت) کیا ہو، ہمارے عرف میں حدیث ہے

ایک نیک مرد۔

(پُر مدیث کی تین قسمیں ہو گئیں۔ (۱) قول نبی (۲) فعل نبی (۳) تقریر نبی اللہ اصول مدیث است مختص بقول رسول مدیث است مختص بقول رسول کین اٹل اصول کین اٹل اصول کے زویک مدیث قول رسول سلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ مخصوص ہے۔

گر سنت است عام ایں جملہ رائے بزو فریقین بدال مصطفیٰ بزو فریقین بدال مصطفیٰ مکرسنت ان تمام کو عام ہے ، فریقین (محد ثین اور اہل اصول) کے نزویک اس کو حان لے اے مصطفیٰ برگذیدہ۔

یعیٰ حدیث کے اندرتو محد ثین اور اہل اصول کا اختلاف ہے، کہ محد ثین کے زدیک حدیث، (۱) قول نبی، (۲) فعل نبی، (۳) تقریر نبی، تینوں کو کہتے ہیں اور اہل اصول کے بزدیک حدیث صرف قول نبی کے ساتھ مخصوص ہے کہ اہل اصول صرف قول نبی کو حدیث کہتے ہیں، گر لفظ سنت میں فریقین کا ہیں باقی دونوں (۱) فعل نبی (۲) تقریر نبی کو حدیث نبیں کہتے ہیں، گر لفظ سنت میں فریقین کا کوئی اختلاف نبیں کہ فیل نبی، تقریر نبی، تینوں کو کہا جاتا ہے۔ کوئی اختلاف نبیں کہ فیل نبی، تقریر نبی، تینوں کو کہا جاتا ہے۔ میں سر سر از صحب وزتا بعان

مدیث است پر قول بعضے بدال

سحابہ رضی الله عنهم اور تابعین رحم مالله علیه کی بیتیوں چیزیں بھی ، بعض کے قول کے

مطابق مديث بوان كـ

ا ایک نسخه میں مذکورہ شعر کے بجائے بیشعر ہے۔ محر عام شد سنت ایں جملہ را بزد فریقین اے باوفا محرسنت ان تمام کو عام ہے، فریقین کے زدیک اے اوفا۔ ولے بعضے ایں را اثر گفتہ اند
اورلیکن بعض نے اس کوائر کہاہے،اس اصطار تربھی اوگ گئے ہیں۔
اورلیکن بعض نے اس کوائر کہاہے،اس اصطار تربھی اوگ گئے ہیں۔
پس اقسام نوشد احادیث را
پس احادیث کی نوشمیں ہو گئیں،اس دوسر نےول کے مطابق جو میں نے تچھ ہے کہا۔
لیمن احادیث کی نوشمیں ہو گئیں،اس دوسر نےول کے مطابق جو میں نے تچھ ہے کہا۔
لیعنی اہل اصول کے زدیک تو حدیث صرف قول نبی کے ساتھ خاص ہے۔
اور محد ثین کے زدیک بعض کے زدیک، نبی کے قول، محل تقریر کو محدیث کہتے
ہیں۔ اور بعض کے زدیک صحابی، تا بھی، کے قول، محل تقریر کو بھی حدیث کہتے ہیں۔ اس دوسر نے قول کے مطابق حدیث کی نوشمیں ہو گئیں۔ (۱) قول نبی، (۲) محل نبی، (۳)
تقریر نبی، (۳) قول صحابی، (۵) محل صحابی، (۲) تقریر صحابی، (۵) قول تا بھی، (۸) محل
تا بھی، (۹) تقریر تا بھی۔

انسام حدیث مرفوع دموقو ف وغیره باعتبا رابصال حدیث به پیغیر صلی الله علیه وسلم

حدیث کو پیغمبرسلی الله علیہ وسلم تک پہنچانے کے اعتبار سے حدیث کی مرفوع وموقوف وغیرہ کی شمیں۔

بدال ہر چہ شد منتبی تانبی بود نام مرفوعش اے مبتدی جان لے جوصدیث نبی تک پیچی ہوئی ہو،اس کانام مرفوع ہے اے مبتدی اُ۔ یہ مبتدی شروع کرنے ولا۔

بود رفع رو نتم اے برخرد صریح دگر آنچه امازم شود رفع کی دوشمیں ہں اعظمند، (ا)صریح، (۲) دوسر سوہ کہ جوامازم ہو۔ اً ر فعل وتقرير يا قول را رساند اوتانی الوری اً رفعل یا تقریر یا قول کو،اس نے نبی الوری (صلی اللہ علیہ وسلم) تک پہنچایا ہے۔ ورا نام مرفوع گفتن توال وَّلُر تَا صَحَالَى است موقوف خوال اس كانا ممرفوع كبديكت بين، اورا كرصحاني تك (ببنيايا) إس كوموقوف كبد رسانید اگر او بر تابعی بود نام مقطوعش اگر نوبشنوی اً رَمَا بَعِي تِكُ اسْ نِي بِهِ بِيايا ہے،اس كانا م مقطوع ہے اً كرتو ہے۔ الحاصل قول، فعل، تقرير، كي نسبت اً لرحضرت نبي ا كرم سلى الله عليه وسلم تك ہواس كو مرفوع كہتے ہيں،اورا كرصحاني تك نسبت ہواس كوموقوف كہتے جيں اورا كرتا جي تك نسبت ہو اس كومقطوع كهتي بس

ققو میو: حضرت نبی اکرم ملی الله علیه وسلم کے سامنے کسی نے کوئی بات کبی ہویا کسی نے کوئی بات کبی ہویا کسی نے کوئی کام کیا ہوا ورآ تخضرت ملی الله علیه وسلم نے اس پر سکوت فرمایا ہوا نکارنہ فرمایا ہواس کو تقریر کہتے ہیں چونکہ نبی خلاف شرع چیز پر سکوت نہیں کرسکتا۔

تقيم حديث باعتبارسند

(حدیث کی تقلیم سند کے اعتبارے)

سند شد عبارت زجملہ روات بکن یاد ایں راتو اے خوش صفات

سندعبارت ہے جملہ روات ہے، اے نوش صفات تو اس کو یا دکر لے۔

نه کرده چو حذف از سند او کیے بود نام او متصل بیشکے

جب اس نے سند ہے کسی ایک کوحذف نہ کیا ہو، بیشک اس کانا م مصل ہے۔

وًّر حذف شد راوۓ منقطع بود نزد الل حدیث استمع

اور کوئی راوی صفرف ہو گیا ہو، الل صدیث کے نزد یک اسکو مقطع کہتے ہیں س لے۔ سسفد: حدیث کے روایت کرنے والول کانا مسند ہے (جن راویول کے واسطے

، ننگ ہوتی ہوئی حدیث ہم تک بہونچی ہےان کو سند کہتے ہیں۔)

متصل: الرسند كردميان يكونى راوى حذف نهواس كومتصل كهتري بير م منقطع كهتري بير منقطع كهتري بير -

اقسامنقطع

پس از منقطع گشت اتسام چند معلق و مرسل شنو ارجمند بسمنقطع کی چنداقسام ہوگئیں، (۱) معلق (۲) مرسل، سن اے تقلند۔

معلق بود منقطع راویش رود یک دو راوی ویا زائدش معلق وہ ہے کہ اسکاراوی منقطع ہو، اسکاایک یا دویا اس سے زائدراوی جا تارہے۔ وَّر مرسل آل منقطع آمده که از آخرش حذف راوی شده دوس مرسل، ومنقطع ہے، کماس کے آخر سے راوی حذف ہوگیا ہو۔ تحكم مرسل بزد محدث به پیش فقیه توقف ہود تھم او اے وجیہ محدث كنزديك فقيدك سامني اس كالحكم توقف باسوجيد که احوال ساقط چو معلوم نیست بحكمش توقف نماؤ بايت اس کئے کہ ماقط کے احوال جب معلوم نہیں ،اس کے تکم برتو قف کر اور تفرجا۔ گر آنکه ساقط سحالی بود وما مرسل از الل تقوی بود گروہ کے باقط صحالی ہو، اور یامرسل اہل تقوی ہے ہو۔ ولے بوطنیفہ ومالک امام نمایند مقبول مرسل مدام اورلیکن امام ابو حنیفه رحمته الله علیه اور امام ما لک رحمته الله علیه، مرسل کو جمیشه مقبول مانتے ہیں۔ کہ رادی ہرواعمادے چول داشت

بریں وجہ اونام ویرا گذاشت

کے رادی نے اس پراعمادی وجہ ہے ہی اس کے نام کوچھوڑا ہے۔

زاحمہ دریں باب دو قول ہست

قبول وتو تف دو قول آمدہ است

امام احمد رحمة الله علیہ ہے اس باب میں دوقول ہیں قبول وتو تف دوقول آئے ہیں۔

برشافعی چونکہ مرسل شود

معاضد ہے دیگر قبولش بود

معاضد ہے دیگر قبولش بود

امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ کے زدیک جب کوئی حدیث مرسل ہو، وہ اگر دومری حدیث

توضح

مرسل: سندے آخرے کوئی رہ گیا ہواس کومسل کہتے ہیں۔

مرسل کا حکم محدثین دفقهاء کے نزد یک۔

محدثین وفقہاء کے نز دیک مرسل کا تھم تو قف ہے۔

دلیل: جوراوی رہ گیا ہے جب اس کاعلم نہیں تو اس کے احوال کا بھی علم نہیں اس لئے اس برتو قف کرنا بیا بیئے۔

البتہ اگر ساقط (جو راوی سند ہے رہ گیا ہے) صحابی ہوتو اس صورت میں وہ مقبول ہوگی چونکہ صحابہ کرام رضوان اللہ علیم اجمعین تمام کے تمام عادل ہیں ای طرح مرسل (ارسال کرنے والاجس نے راوی کوڑک کردیا ہے) اہل تقوی میں ہے ہو (اس کی عدالت وتقوی مشہورہو) اس صورت میں بھی وہ حدیث مقبول ہوگی کہ کی ضیح غرض کی بنایر ہی اس نے راوی

کورک کیا ہوگا اور اس کے نز دیک وہ ترک شدہ راوی غیر معتبر ہوتا تو اس کورک بی نہ کرتا یا

اس حدیث کوبی بیان نہ کرتا چونکہ بیعد الت وتقوی کے خلاف ہے۔
امام ابو حنیفہ اور امام ما لک رحمتہ اللہ علیہ کے نز دیک مرسل ہمیشہ مقبول ہوتی ہے۔

دلیل: بیدونوں حضرات فرماتے ہیں کہ راوی کواس پراعتا دخااس اعتا دی وجہ سے
بی اس نے اس کورک کیا ہے اگر اس پراعتا دنہ ہوتا تو وہ اس کورک ہی نہ کرتا۔
امام احمد رحمتہ اللہ علیہ کے دوقول ہیں قبول نو قف۔
امام شافعی رحمتہ اللہ علیہ کے نز دیک اگر حدیث مرسل کی تا ئید وموافقت کی دومری

امام شافعی رحمته الله علیه کے نز دیک اگر حدیث مرسل کی تا ئیدوموا فقت کسی دوسری حدیث سے ہوتی ہوتو اس کوتبول کرینگے ورنہیں۔

معصل

چوساقط بود چند کس پے ہم بدال نام او معطل اے خوش رقم اً رچندراوی پے در پے ساقط ہوجا کیں ،اس کانام معصل ہے اے خوش رقم۔ منقطع

ور چند راویت از چند جائے گو منقطع نام ایضا ورا اً رچندراوی چند جگہوں سے ساقط ہوجا کیں،اس کانام بھی منقطع کہو۔ پس ایں منقطع قتم از اول است عموم وخصوص اندریں ہردوہست پس بی منقطع اول منقطع ہی کی ایک قتم ہے،اس میں عموم وخصوص دونوں ہیں۔ بین بین منقطع عام یمی ہے جوان تمام فدکور واقسام کو شامل ہے اور خاص طور براس قتم کو

بھی منقطع کہتے ہیں۔

يتس

درال منقطع شد مدلس بدال که راوی کند ترک استاذ ازال

بطور بکه وجم بود شمع را ناستان استان اه اهااً

اس طور پر کدسننے والے کو وہم ہو، کہوہ استاد کے استاد اول سے بیان کرر ماہے۔

بود پیشه ندموم تدلیس دوست گر چونکه غرضے صحح اندر واست

تدلیس برا پیشہ ہےا۔ دوست ، مگر جب کماس میں کوئی صحیح غرض ہو۔

منقطع کے اقسام میں مرس بھی ہے

مداسس: وہ حدیث ہے کداوی استاد کے بجائے استاد کے استاد ہے بیان کرے اسلاح کہ سننے والے کو ہم ہو کہ وہی اسکا استاد ہے اور اس استاد کے استاد کے سنا ہے۔ اس حدیث کو مدنس کہتے ہیں، اور ایسا کرنے والے کو مدنس ، کہتے ہیں اور اس عمل کو تہ لیس، کہتے ہیں۔

حکم: تدلیس، ندموم بے البته اگر کسی می خوض کی وجہ سے ایما کر نے درست ہے۔ (مندومتعل)

حدیثے کہ مرنوع شد باسند گرآل تا پیمبر رسانیدہ شود جوحدیث سند کے ساتھ مرنوع ہے ،اگراس کو پیمبر صلی اللہ علیہ وسلم تک پہنچایا گیا ہو۔

ورانام شد مند ومتصل بقول جماہیراے الل دل اس کانا م مندومتصل ہے، جمہور کے قول کے مطابق اے ایل دل۔ بقول ديّر متصل مطلقا ہود مندش نام نے اختفا دوسر نے قول کے مطابق مطلقامتصل کانا م مند ہے اس میں کوئی یوشید گئ نہیں۔ <u>مىسىنىد</u>: وەحدىپ مر**نوع ج**س كى سندنېي (صلى اللەعلىيە ت^{ىل}م) تك بېيونچى بيونى ہو۔اس کوجمہور کے مزد کے مندومتصل کہتے ہیں۔ دوس بقول کے مطابق مطلقا حدیث متصل کومند، کہتے ہیں۔ بمان مضطرب وغيره به متن حدیثے ویا در سند زراوی خلل دربیال می فتد سی حدیث کے متن یا سند میں، راوی کی طرف سے بیان میں کوئی خلل واقع ہوجائے۔ بتقديم وتاخيرے ازراويال در الفاظ متن حدیث اے جوال راویوں کی طرف ہے کسی قتم کی تقذیم وتا خیر متن حدیث کے الفاظ میں (وا تع ہو) ا ہےجوان _ یعنی کوئی راوی متن حدیث کے الفاظ میں ہے کسی لفظ کو مقدم نقل کرتا ہے کوئی مؤخر۔ بودمضطرب آل حدیث اے عزیز بميل حكم متن است واسناد نيز

وہ حدیث مضطرب ہوتی ہے اعزیز، یہی حکم متن کا ہے اور سند کا حکم بھی یہی ہے۔

یعنی الفاظ صدیث میں راویوں کی طرف سے تقدیم وتا خیر ہویا سند کے اندر تقدیم وتا خیر ہویا سند کے اندر تقدیم وتا خیر ہواس کو صطرب کہتے ہیں۔

مدرج

وَّر لفظ از رادی آمد مزید بود مدرجش نام یار سعید اوراً کرکونی لفظ راوی ہے آئے زائد،اس کانام مدرج ہے اے یار سعید۔ لینی اصل حدیث میں تو وہ لفظ نہیں کسی راوی نے کوئی لفظ کسی لفظ کی وضاحت وغیرہ کی وجہ سے زائد کر دیا تو اس کو مدرج کہیں گے۔

مععن

حدیث معنون بر عالمال

بود آنکه عن عن بگوئی درال

حدیث معنون علاء کے زدی، دہ ہے جس میں قوعن عن کیے۔

یعنی حدیث کی سند میں عن فلال عن فلال ہواس کو حدیث معنون کہتے ہیں۔

ولے عنونہ از مدلس خفیف

بود زائکہ شبہ است دروے ضعیف

لیکن عنونہ مدلس خفیف ہے۔

لیکن عنونہ مدلس خفیف ہے۔

فائده

روایت بلفظ وبمعنی اگر زعاول وثقه ست شد معتر روایت بلفظ بمعنی اگر، عادل وثقه سے ہے تو معتر ہے۔ ولیکن روایت بمعنی فقط زماہر ومتفن بود ایں نمط اورلیکن روایت بمعنی فقط، ماہر ومتقن شخص سے ہوتو بیطر یقد معتبر ہے۔ بعنی روایت بلفظ و بمعنی عاول وثقنہ راوی سے اگر ہوتو معتبر ہے اور روایت بمعنی فقط حدیث میں ماہرو پختہ راوی کی درست ہے غیر ماہر کی درست نہیں۔

تقتيم ديكر دربيان شذوذ وغيره

اً ر راوئ بر خلاف ثقات روایت کندشاذ دال نیک ذات

اً سرکوئی راوی تقدراو بول کے خلاف ،روایت کرے اسکو شاؤ جان اے نیک وات۔ وریس راوئے شاف بود تقته

یں آل ہت مردود نزدہمہ

اوراً رشاذ روایت کرنے والا تقدنہ ہو ہو وہ شاذ سب کے نز دیک مر دود ہے۔

بحفظ ونضبط وبكثرت روات زرجي يابني ديّر جهات

حفظ وضبط اور کشرت روات کے ذریعہ ہر جیے ہویا (ترجیح کی) دوسرے جہات تو دیکھے۔ مسمی است راج یہ محفوظ دال

بمر جوح خاص است شاذ اے جوان

را بچ کا نام محفوظ جان ،مرجوح کے ساتھ شاذ خاص ہے اے جوان۔ یعنی راج کانام محفوظ اور مرجوح کانام شاذہے۔ اخص است این شاذ از اولین کمین کمین کمین فرق وز ہوشیاری ببیں بین فرق وز ہوشیاری ببیل بین فرق کردونوں میں)فرق کراورہوشیاری ہے دیھے۔
ویر ہر دو راوی ضعیف اندلیک کے اضعف ودیگرے زواست نیک اوراً کر ہر دوراوی ضعیف بین کیک اوراً کر ہر دوراوی ضعیف ہیں کیکن،ایک زیادہ ضعیف ہے ایک اس سے بہتر ہے یعنی دوسرا کم ضعیف ہے۔

برآل که ضعیف است محفوظ خوال

خالف که اضعف بود منکرآن

جوضعیف ہے اس کومحفوظ، جواس کا مخالف لیعنی اضعف ہے وہ منگر ہے۔

لیعنی ضعیف کومحفوظ اور اس کے مقابل جواضعف ہے اس کومنگر کہتے ہیں۔

ضعیف اند ہر دوولے ہیش و کم

چومنگر زمخفوظ شد ست ہم

دونوں ضعیف ہیں کیکن کم زیادہ، جیسے منگر محفوظ سے ست بھی ہے۔

لیعنی محفوظ و منگر دونوں میں ضعف ہے البتہ محفوظ میں ضعف کم ہے منگر میں ضعف

زیادہ ہے۔

مقابل بمنکر تو معروف خوال بضعف اند موصوف بردو بدال بضعف اند موصوف بردو بدال منکر کے مقابل کو قومعر وف کہہ بضعف کے ساتھ دونوں موصوف ہیں جال لے۔ ولیکن بمنکر بود ضعف بیش بیش بمعروف ضعف است اندک چونیش بمعروف میں ضعف کم ہوتا ہے شکل ڈ تک کے۔ لیکن منکر میں ضعف زیادہ ہوتا ہے معروف میں ضعف کم ہوتا ہے شکل ڈ تک کے۔

فائده

بود ہر کہ مطعون بفسق وغلط وماساده دل غافل است این نمط جو خص فسق وغلط کے ساتھ مطعون ہو،اور ما سادہ دل اورا**س طریقہ سے غافل ہو۔** حدیثش بود نیز منکر بنام شد این اصطارح دویم ال کلام اس مدیث کانا م بھی منکر ہے، بیددوسری اصطارح بوگئ ااکلام۔ برائے بال مصطلح کروہ اند برآنچه سند آمدش گفته اند بیان کے لئے اصطارح مقرری ہے، جو کھاس کی سندھ آیاس کو بیان کیائے۔ بيان معنى متابعت ونحوه ومثله حدیثے کہ راوی روایت کند موافق ورا دیگرے آورد جوحدیث کے راوی روایت کرے، دوسرا راوی اس کےموافق بیان کرے۔ متابع بدال آل روایت مدام بگوئی ورا تابعہ اے مہام اس روایت کومتابع جان ہمیشہ،اسکوتابعہ (اس نے اسکی موافقت کی) کہا ہے مقتدا۔ چوں در لفظ ومعنی موافق بود ورا مثله گفتن می سزد الرلفظ ومعنى مين موافق موءاس كومثله كهنالائق ___

تحوه

جمعنی لفظ نحوہ گفتہ اند بریں اصطلاح اہل دل رفتہ اند صرف معنی میں موافق ہواسکونحوہ کہاہے ،اس اصطلاح کواہل دل نے اختیار کیا ہے۔

شرطمتالع

ولے درمتابع بود شرط آں زیک کس صحافی بیارند شاں لیکن متابع میں میشرط ہے، کہا یک ہی صحافی سے وہ اس کو بیان کریں۔

شوابد

وًر در صحابی بود اختااف بدال از شوامد ورا بیگزاف اوراً رصحابی میں اختلاف ہو، اس کوشوامد سے جان بے شبہ۔ معلل

معلل بود آل حدیث اے سعید دروعلت وقدح باشد بدید معلل وہ حدیث ہےا ہے نیک بخت، کہاس میں علت و بیاری ظاہر ہو۔

بيان حسن وسيحيح وضعيف

بوبہ اگر قسمعش کردہ اند صحیح وحسن رائلو گفتہ اند وجہ کے ساتھ اگر حدیث کی تقسیم انہوں نے کی ہے، سیجے وحسن کو انہوں نے انجھا کہا ہے۔ ضعیف است ادنی ازیں ہردو دال
توسط حسن رابود اے جوان
ضعیف ان دونول سے ادنی ہے جان لے ،حسن متوسط ہے اے جوان ۔
لیمنی 'صبح' 'حسن' ضعیف ان متیول میں صبح سب سے اعلی ضعیف سب سے ادنی اور
حسن متیول میں متوسط ہے۔

صحيح

صحیح آئہ از عدل وضابطہ تمام سند متصل باشدش الا کلام صحیح وہ ہے کہ کامل عدل وضبط والے راوی اس کو بیان کریں ،اوراس کی سند متصل ہو، اہ کلام۔

صحجلذاته

اگر ایں جملہ اوصاف شد ہر کمال صحیح لذاتہ بخوال خوش خصال اللہ بخوال خوش خصال اللہ بخوال خوش خصال اللہ باریہ ملکا میں اللہ بخوال میں میں اللہ باریہ میں اللہ باریہ باریہ باریہ باریہ باریہ باریم لہ اوصاف (عدل وضبط امانت دیانت وغیرہ) کامل طریقہ بر ہوں تواس کو میں گے۔

صحح لغير ه

بنوع اگر راہ یابد قصور بکٹرت طرق منجمر گشت ودور کسی درجہ میں اگر اس میں قصور بایا جائے ، جوکٹر ت طرق سے منجمر ہوجائے اوروہ قصور دور ہوجائے۔ پس آں شد صحیح لغیر، بعن اگر منجم نیست دانش حسن پسوه، صحیح لغیرہ ہے، اگر (کثرت طرق سے) منجم ہوتو اس کوحسن جان۔ بعنی کثرت طرق ہے اگر اس کی تا افی ہوجائے توضیح لغیرہ ہے اور اگر تا افی نہ ہوتو اس کوحسن کہتے ہیں۔

حسنلذاته

ہمیں را تو حسن لذاقہ بگو نہ نقصان برا وی است جز ضبط او اسکونو حسن لذاتہ کہہ، جبکہاس کے راوی میں ضبط کے علاوہ کوئی اور نقصان نہ ہو۔

حسن تغيره

وَّر شد حدیث زعلت ضعیف کمثرت طرق ضعف اوشد خفیف اوراً رکونی حدیث کسی علت کی وجہ سے ضعیف ہو، کثرت طرق سے اس کا ضعف ہلکا ہوجاتا ہے۔

یعی ضعیف صدیث جب کشر ت طرق سے ثابت ہوتو اس کاضعف ختم ہوجاتا ہے۔

پس آل حسن لغیرہ می شود
اگر چہ تصور از وجوہش بود
پس وہ حسن لغیر ہہ ہوجاتی ہے، اگر چہاس کا قصور چندو جوہ ہے ہو۔
بہ اندر ضعیفے کہ نقصان میں
باکش وجوہ آ مش قبح میش
ضعیف روایت کے اندر جب نقصان زیادہ تھا، اکش وجوہ سے اس میں برائی بھی

زیاده ہوگئی۔

بکٹرت طرق اند کے حسن یافت کہ چوں شخصے از حسن غیرے بتافت کٹرت طرق ہے اس نے تھوڑا ساحسن پالیا، جس طرح کوئی شخص دوسر سے کے حسن سے چمک حاصل کرے۔

لینی ضعیف روایت باوجود میکه خودضعیف ہے مگر کٹر تطرق کی وجہ سے اس کے اندر ایک درجہ کاحسن پیدا ہوگیا اس لئے اس کوحسن فغیر ہ کہا جاتا ہے۔

بيان ضبط وعدالت

کے موقوف علیہ حسن وصحت وغیرہ است

ضبط وعد الت کا بیان جو کہ حسن وصحت کا موقوف علیہ ہے۔

تو ضبط وعد الت شنو اولاً

کہ آگہ شوی جملہ اقسام را

تو ضبط وعد الت کو تمام اقسام سے آگاہ ہوجائے۔

عد الت کہ در فقہ شد مسطر

بود در حدیث اند کے عام تر

عد الت فقہ میں جو شہور ہے، حدیث میں اس سے تھوڑی عام ہے۔

کہ شامل بود عبد را نزد شاں

باحرار مختص نبا شد بدال

کہ ان (محدثین) کے نزد کی غلام کو بھی شامل ہوتی ہے، احرار کے ساتھ بی مخصوص

یعنی عد الت فقہاء کے نز دیک احرار کے ساتھ مخصوص ہے محد ثین کے نز دیک احرار کے ساتھ مخصوص نہیں بلکہ غلاموں کو بھی شامل ہے۔ عدالت شود وناقص از پنج چز زفسق عمل جبل راويست نيز عدالت یانج چیزوں ہے ناقص ہوجاتی ہے، (۱) فسق عمل ہے(۲) نیز جہل راوی ہے۔ چو مجبول شد نام شخ ترا تو تقوی وعداش بدانی کا جب جھے کو پینے کانام ہی جمہول ہو گیا ،تو اس کے تقوی وعدل کو کہاں جان سکتا ہے۔ شود گر جهالت زراوی عمال نبرده که استاد رانام آل جہالت اگر راوی سے ظاہر ہو، کہاس نے استاد کے نام کو بیان نہیں کیا۔ بود نام آل مبهم اے دوستال محمرود گهه مقبول در خبر دان اس کانا مبهم ہے اے دوستو عقلندوں کے نز دیک جو بھی مقبول نہیں۔ مر کال سحانی بود شد قبول که ستند اصحاب جمله عدول البته أكروه (مجبول راوي) صحابي ہوتو وه مقبول ہوگی، اس لئے كه تمام صحابه كرام رضوان التُدعليهم الجمعين عادل ہيں۔ سيوم كذب راوي بنقل حديث

سیوم کذب راوی بنقل حدیث که مقبول بر گز نشد زال خبیث تیسر نیل حدیث میں راوی کا کذب (جموث بولنا) که اس خبیث سے برگز

قبول نەببوگى _

یعنی اگر راوی کانتل صدیث میں کذب ثابت ہوجائے تو اس کی کوئی صدیث بھی قبول نہ ہوگی۔

اًر چ که تائب ومحن شود خلاف شاہد که تائب شود

اً رچہ وہ تائب و محسن ہوجائے، شاہر (گواہ) کے برخلاف جبکہ وہ تائب ہوجائے۔ لینی جس راوی کانقل حدیث میں کذب ثابت ہوجائے اس کی کوئی حدیث بھی قبول نبیں ہوگی اگرچہ وہ اس سے تو بہ کرکے نیکو کاربن جائے۔

برخلاف گواہ کے کہوہ جب تو بہ کرلے تو اس کی گواہی معتبر مانی جاتی ہے، یعنی جس فخص کا گواہی میں کذب ہے تو بہ گواہی معتبر نہیں البتہ اگروہ کذب ہے تو بہ کرلے تو بھراس کی گواہی معتبر ہوگی۔

روایت از آئس تو موضوع دال

اگر چه نشد علم وضع اندرال

الشخص کی روایت کوقو موضوع جان، اگر چه وضع کاعلم اس کے اندر نه ہو۔

یعنی جس راوی کانقل حدیث میں کذب ثابت ہوجائے اس کی روایت کردہ حدیث موضوع ہونے کاعلم نہ ہو۔

موضوع ہجمی جائے گی اگر چہ اس حدیث کے موضوع ہونے کاعلم نہ ہو۔

کی قطع حاصل یوضعش شود

کجا قطع حاصل بوصفش شود گر تنکم نکنی در آنجا دود

ا سکے موضوع ہونے کا قطعی علم کبال حاصل ہوسکتا ہے، گر تھم ظنی ہی اسمیں دوڑتا ہے۔ یعنی موضوع ہونے کا قطعی علم دشوار ہوتا ہے ظن سے ہی اس کا تھم لگایا جاتا ہے۔ چہارم عدالت رود زاتہام کہ مشہور باشد بکاذب کلام چوتھےعدالت اتہام ہے نتم ہوجاتی ہے، کہ (راوی) جموٹے کلام کے ساتھ شہورہو۔ لینی اً کرکسی پر کذب کی تہمت ہومثلا وہ کذب کلام کے ساتھ شہورہوتو اس کی عدالت نتم ہوجائے گی۔

حدیثے کہ از معبم آمدہ ہمیدال کبمر وک نامش شدہ جوحدیث منہم (جس راوی پر کذب کی تہمت ہو) ہے منقول ہو،اس کواس طرح جانو کہ(گویا)اس کانام ہی متر وک ہوگیا۔

عدالت رود بیجم از مبتدع که اصحاب بدعت نباشد ورع

یانچویں عدالت بدعت سے جاتی رہتی ہے، اس لئے کہ بدعتی پر ہیز گارنہیں ہوسکتا۔ لینی جوشخص بدعت کا مرتکب ہے وہ عادل نہیں (اس کی روایت معترنہیں) اس لئے کہ جو بدعت کا ارتکاب کر رہاہے وہ حدیث نقل کرنے میں بھی احتیاط نہیں کرسکتا۔

گیری ازو احتیاطا حدیث خسیث خسیث

اس (بدعتی) ہے احتیاطا حدیث قبول مت کر، خصوصا (وہ حدیث) جواس کے دین خبیث (بدعت) کی ترویج ہے متعلق ہو۔

> خوارت روافض وَّلر معتزل نباشد چو مخاط قولش ببل نباشد س

خوارخ ،روافض ،دوسر معتزله ،جب محاطنبیں ہو سکتے ان کے قول کو چھوڑ دے۔

یعنی خوارج روافض، معتز لہ بھی بدعیوں کی طرح حدیث بیان کرنے میں محتاط نہیں ہو سکتے اس لئے ان کی حدیث بھی قابل قبول نہیں۔

بيانطعن درضبط

(ضبط میں طعن کا بیان)

ہود طعن در ضبط از پنج چیز کیے فرط غفلت کہ شد بے تمیز

ضبط میں طعن (خلل) پانچ چیزوں سے ہوتا ہے، ایک غفلت کی زیادتی (کہ جس سے آدمی) بے تمیز ہوجائے۔

بود در ساع وخمل غفول دويم شد غلط در ادائے نقول

(حدیث کے) سننے اور اس کا تحل کرنے میں غفلت کرنے وال ہو، دوسرے احادیث نے قبل کرنے میں غلطی ہو۔

یعنی اگر راوی میں غفلت کی زیادتی ہے کہ صدیث کے سننے میں غفلت کرتا ہے یا حدیث کے سننے میں غفلت کرتا ہے یا حدیث کے سننے میں تو غفلت نہیں کرتا البتہ حدیث نقل کرنے میں غلطی کرتا ہے، ان دونوں چیزوں کی وجہ سے اس کے ضبط میں نقص بیدا ہوجاتا ہے۔

قریب اند ایں ہر دونتم اے عزیز بسمع و ادا ہر دوراکن تمیز

یددونوں شم اے عزیر قریب قریب ہیں، سننے اور اداکرنے میں ہردوکو تمیز کر۔ لینی اول (غفلت) کا تعلق حدیث کے سننے سے ہے اور دوم (غلط) کا تعلق ادائے حدیث سے ہے اسلئے دونوں قریب قریب ہیں دونوں کوالگ الگ تمیز کرنا میا ہتے۔ سویم آنکه آرد خلاف ثقات

بعن ودر اساد اے نیک ذات

تیسر سوہ کے تقدراویوں کے خلاف نقل کرے متن میں اور اساد میں اے نیک ذات

بہر چونکه باشد خلاف ثقه

شذوذ آید اندر حدیث اے سرہ

بہر صورت چونکہ یہ خلاف ثقہ ہے، (اس سے) حدیث میں شذوذ آ جاتا ہے اے سردار۔

بہر صورت پونکہ پیوٹا کی ہے ، (ال سے) حدیث یک ہدودا جاتا ہے اسے مردار۔ لینی ثقہ راویوں کی مخالفت متن حدیث میں ہویا اس کی سند میں بہر دوصورت اس ہے شذوذ آجا تا ہے لینی حدیث شاذ ہوجاتی ہے۔

چپارم بود وہم راوی کزال روایت کند ہر خلاف سرال

چوتھ راوی کا وہم ہے جس کی وجہ سے وہ، دوسر سےسر دارول (تقدراو ایول) کے خلاف روایت کرتا ہے۔

بود پنجمیں سوئے حفظ اے عزیز قریب اند ایں ہر دو راکن تمیز

یانچویں سوئے حفظ ہے اے عزیز! (بیددونوں) قریب قریب ہیں ان دونوں کو تمیز کر۔ یعنی سوئے حفظ اور وہم بید دونوں قریب قریب ہیں۔

بود وہم ونسیاں خلافے کہ کرد

شنوو آمد ازوے در اخبار مرد

وہم ونسیان ہوتا ہے (جس کی وجہ سے تقدرراو یوں کی) مخالفت کی ،اس سے شذوذ آگیامرد کی اخبار میں۔

یعنی وہم ونسیان ہی تقد حضرات کی مخالفت کا سبب بنمآ ہے جس کی وجہ ہے اس راوی

کی احادیث شا ذہوجاتی ہیں۔

معلل شود آل حدیثش بدو روایت ازال کس نباشد کو اس کی وجہ سےاس کی حدیث معلل ہو جاتی ہے،اس شخص سے روایت کرنا درست نہیں ہوتا۔

لینی سوئے حفظ اور وہم ونسیان کی وجہ سے تقدراو یول کی مخالفت کرنے کی صورت میں وہ صدیث معلل ہوجاتی ہے۔

اگر سوئے حفظش ملازم شود حدیثش کجا معتبر می شود اً براس کی سوئے حفظ الازمی ہو،اس کی حدیث کبال معتبر ہوتی ہے۔

بود شاؤ ایں ہم نام اے پسر ناشد حدیثش گیج معتبر اس کانام بھی شاؤ ہے اے بیٹا ،اس کی حدیث بھی بھی معتبر نہیں ہوتی۔ ور از عارض پیری ویا عمی ویا گھی اس کانا میں کہذا وے کتب مکذا

اوراً ریدهاب اور اندھے بن کے عارض کی وجہ سے ہے، اور یا ای طرح اس کی کتابیں گم ہو گئیں۔

پس ایں قتم را مخلط نام کن توقف بحکمش در انجام کن پس اس شم کامخلط نام کر،انجام کاراس کے تھم پرتو قف کر۔ یعنی حدیث معلل کی دوشمیں ہیں(۱) ٹاذ(۲) مخلط۔

شاد: اگرسوئے حفظ دائمی ہے تو اس کانا م بھی شاؤ ہے اس کا تھم بیہ کے کہ وہ بھی بھی معترنہیں۔

مختلط: اوراً لرسوئے حفظ کی عارض کی بنایر ہے تواسکی صدیث کانام خلط ہے اس کا تھم یہ ہے کہ اس برتو قف کیا جائے گا۔

> روایت اگر کرد قبل اختلاط ير وہم عمل كن بعيد احتياط

اً راس نے اختلاط سے بل روایت کی ہے، اس پر بھی سواحتیاط کے ساتھ ممل کر۔

گر اورا شوابد توابع بود ليل البته مقبول وواثق شور

اً ّ راس کے لئے شواہدوتو ابٹے ہوں، پھرالبنۃ وہمقبول وواثق ہوتی ہے۔

یعنی حدیث مختلط کی دوشمیں ہیں۔

(۱)ایک وہ جوانتلاط ہے بل روایت کی ہے۔

(٢) دوم و، جواختا طے بعدروایت کی ہے۔

اول کا حکم یہ ہے کہ اس برعمل درست ہے گر اسمیں بھی انتہائی احتیا طضر وری ہے۔ دوم کا تھم یہ ہے کہ اگر اس کے شواہد وتو ابع ہول تو وہ حدیث مقبول ومعتبر ہے اور اگر

شوابدوتوان نهول تو چروه حديث مخلط معترنبيل _

همیں تنکم مشہور م^{رس}ل بود مدلس قیاسا بروی شود

مرسل کابھی تکم مشہور یبی ہے، دلس کوبھی اس پر قیاس کیا جاتا ہے۔

یعنی جو تکم حدیث خلط نمبر دو کا ہے وہی تکم مرسل و مدلس کا بھی ہے کہا گران کے شواہد وتو اللہ بیں تو مقبول و معتبر اورا گرشواہدوتو الع نہیں تو غیر مقبول وغیر معتبر ۔

بيان عزيز وغريب كهاز اقسام محج اعد

(مزیز وغریب کابیان جو کھیج کی اقسام ہے ہیں)

حدیث صحیح اگر راویش کیے شد غریب اے پسر نامیش

كسي محيح حديث كاراوى أكر، ايك بوجائة اس كانا مغريب باعبيا

وًر دو بود پس عزیزش برال وگر زائد از وے تو مشہور خوال

اوراً سردوبول تواس كوعزيز جان، اوراً سردوس زائد بول قواس كوشبور كبد

وگر تاتوار رسید آل خبر تو متوارش نام کن اے پسر

اوراً رو ، خبرتو اتر تک بین جائے ، تواس کانام متواتر کرا ہے بیا۔

غریب: وه میخ صدیث جس کاراوی ایک مور

عزيز: والميح حديث جس كراوي دوبول_

مشهود: وهي حديث جس كراوي دوسے زائد بول _

متواقر: والمحيح مديث جس كراوي تواتر كى صدكو بنيج بوئ مول ـ

تواقس: کسی حدیث کے نقل کرنے والے اتن کثیر تعداد میں ہول کان سب کا

جموث پر جمع ہونا عقلامحال ہو۔

اقسام غریب یعنی فرد (غریب یعن فرد کے اتسام)

اً ر راویش ہر کیا کے بود یں آل فرد مطلق مسمی شود اً راس کاراوی برجگه ایک بورپس اس کانام فردمطلق ہے۔ ولا اضافی بور فردوے بقسمت عزیز این چنین بر تووے ورنةوه، فرداضافی ب، عزیز کی تقسیم بھی تجھ برای طرح اازم ہے۔ دو راوی بود ہر کیا در عزیز عزبز است مطلق بنزد تميز عزیز میں اً کر ہر جگہ دوراوی ہوں ،اہل تمیز کے نز دیک وہ عزیز مطلق ہے۔ بمشهور بر جا چوبسیار شد درو شهره مطلق اظهار شد اً سر برجگه (دوسے) زیادہ ہوں وہ مشہور ہے، اس میں مطلقا شہرت کا اظہار ہوگیا۔ پس راوی ک شد بیک حاد رو یواقی مثنی تو فرش بگو بس أراس مين ايك جكدايك راوي مو، باقي مرجكه دو مول واس كوفر دكيه مر شد مثنی بیک جائے دو ہمہ حاست زاید عزیزش گبو اگرایک دوجگه دوراوی بول، باقی برجگه دوسے زائداس کومزیز کید۔ دری جاست حاکم اقل بر کثیر
بعکس دگر جا تو این ش یاد گیر
اس جگهاقل کثیر برحاکم ہے، دوسری جگهاس کاعکس ہے قواس کو یاد کر ہے۔
عنو د صطلق: اگر ہر جگها یک راوی ہواس کو فرد مطلق کہتے ہیں۔
عنو د اضعافی: اگر ایک دوجگه یا چند جگها یک راوی ہو باقی جگه زیادہ اسکو فردا ضافی
کہتے ہیں۔

عزیز مطلق: اگر برجگه دوراوی بول اس کوهزیز مطلق کہتے ہیں۔ اگرا یک جگه ایک راوی بوبا تی سب جگه دواس کوچی فرد کہتے ہیں۔ مشھور: برجگه دوسے زائد راوی بول اس کو مشہور کہتے ہیں۔ عزیز: اگر کسی ایک جگه دوراوی بول باتی جگه زیادہ اس کوچی مزیز کہتے ہیں۔ قندیہ: اس جگه اقل کا عتبار کیا گیا ہے باتی برجگه اس کاعکس ہے کہ اکثر کا عتبار کیا

جاتائے۔

بیان اصطلاح دیگر در معنی غریب (غریب کے معنی میں دوسری اصطلاح کابیان)

غرابت گبے یہ شندوذ آمدہ کہ مطعون ازاں آل حدیثش شدہ شندوذ کے اوپر بھی کبھی غرابت کااطلاق ہوتا ہے، کہ جس کی وجہ ہے اس کی حدیث مطعون ہوگئی۔

شدوذ آمدہ گہہ بمعنی غریب کہ راوی اومفر داست اے حبیب شذوذ بھی غریب کے معنی میں بھی بواا جاتا ہے،اسکے کہاسکاراوی اکیا ہے اسے حبیب۔ یعنی شذوذ، کے اور غرابت اورغرابت کے اور پشذوذ کا اطلاق ہوجاتا ہے مناسبت ظاہر ہے۔

فائده

پس اے دوست معلوم باشد ترا صحیح وغریب است کیجا روا پس اے دوست جھ کومعلوم ہونا باہئے، کہ سیح وغریب (دونوں) ایک جگہ درست میں۔

کہ باشد رجال احادث ثقات زسخت وغربت بیابی صفات کہ اس کے رجال آحاد سب ثقہ ہوں ، تو صحت وغربت دونوں صفات اس میں موجود ہیں۔(اس لئے وہ حدیث سیح بھی ہے اورغریب بھی) ہیں۔(اس لئے وہ حدیث سیح بھی ہے شاف آید ہمعنی غریب گبے شاف آید ہمعنی غریب کہ راوی ثقتہ یک بود اے حبیب ہمی شافغریب کے معنی میں بھی آتا ہے ، کہ راوی ثقدایک ہوا ہے حبیب

بيان اقسام ضعيف

(ضعیف کی اقسام کابیان)

وگر سحت وحسن نبود درو ضعیفش بدال نام اے نیک نو اورا گرصحت وحسن اس میں نہ ہو،اس کانا مضعیف جان اے نیک خو۔

------ضعیف است اقسام او بیشتر صحیح ایں چنیں ست نیکو نگر ضعیف کے اقسام متعدد ہیں،ای طرح صحیح کے اقسام بھی متعدد ہیں اے نیک نظر ۔ ولے ہر دو دارد بمقسم خصوص اورلیکن ہر دو کامقسم خاص ہے،قیدونصوص کے ساتھ آپس میں جمع ہوجاتی ہیں۔ یعیٰضعیف وضیح دونوں الگ الگ قتم ہیں لیکن ان میں قیود ملانے ہے دونوں آپس میں جمع ہوجاتی ہیں کہ ایک حدیث صحیح بھی ہوتی ہے اورضعیف بھی۔ برائے ہمیں ترندی ور کتاب تعلیم وحسن کرده یک را خطاب ای وجہ سے رفدی نے کتاب کے اندر میج وحسن ایک کوی خطاب کیا ہے۔ یعنی جس طرح صحیح وغریب ایک جگه جمع ہو جاتی ہیں اس طرح صحیح وحسن بھی دو**نو**ں جمع ہوجاتی میں اس وجہ سے امام ترندی رحمتہ الله علیہ نے اپنی کتاب جامع ترندی میں ایک بی صدیث کوتیج وحسن کباہے۔ بگفته گیے او غریب حسن جمع ہر سہ را کروہ گہہ نے سخن مجھی اس نے نفریب وحسن' کہاہے، بھی مینوں کوجمع کر دیا ہے بلاشیہ۔ یعنی امام ترندی رحمة الله علیه نے جامع ترندی میں ایک ہی حدیث کوغریب حسن کہا، اور کہیں تعجیج حسن ،غریب ، متنول کوجمع کر دیا اور ایک ہی حدیث کو ' تعجیج حسن غریب'' کہاہے۔ صحیح وحسن جمع آسان بود

لذاته حسن صحت غيرے شود

سیح وسن کوجع کرنا آسان ہے، حسن لذاتہ ہی سیح انیر ہے۔

یعنی ایک بی حدیث میچے بھی ہو حسن بھی ہو دونوں کا جمع ہونا آسان ہے کہ حسن لذاتہ بی می علی ایک ہے۔

فائما غریب وحن مشکل است
تعدد طرق در حن داخل است
غریب وحن کاجمع ہونامشکل ہے،اس کئے کہ حن میں تعدد طرق داخل ہے۔

یعنی حدیث حسن کے لئے تعدد طرق شرط ہے،غریب میں ایبانہیں اگر تعدد طرق ہوتو پھرغریب میں ایبانہیں اگر تعدد طرق ہوتو پھرغریب ،غریب ،غریب ہیں دبتی بلکہ حسن بن جاتی ہے۔

اس کئے دونوں کا بیک وقت جمع ہونا مشکل ہے۔

اس کئے دونوں کا بیک وقت جمع ہونا مشکل ہے۔

غرابت چگونہ بود اندرو جوابے بتاویل او را بگو اس میںغرابت کس طرح ہو شکتی ہے،اس کا جواب تا ویل کے ساتھ د بیجئے۔

> که از اختلاف روایت شده بلفظ حسن یا غریب آمده

کیدانتلاف روایت کی وجہ ہے ہوائے، ایک لفظ سے حسن ایک سے فریب آیا ہے۔ لیعنی اختلاف روایت کی وجہ سے حسن ، غریب ، کہا ہے کہ ایک روایت کے اعتبار سے وہ حدیث حسن ، ہے اور دوسری روایت کی وجہ سے غریب۔

بيان كلم كمل برآ ل اقسام

(ان اقسام رجمل کے حکم کابیان)

تعیم وحسن چوں لذاتہ بود عمل کرنش برتو الازم شود جب سی وحسن لذاتہ ہو، اس برعمل کرنا تجھ پر الازم ہے۔

{Telegram Channel} https://t.me/pasbanehaq1

ضعیف از تعدد رسد تاحسن بدال احتجاج کن اے نیک ظن حدیث ضعیف تعدد طرق کی وجہ سے اگر حسن کے درجہ کو پہونچ جائے ،اس سے احتجات کراے نیک ظن۔

یعنی وہ بھی جحت پکڑنے کے قابل ہے۔

ولے منفرد کال ضعیف است اگر بود در فضائل عمل معتبر اورلیکناً گروه حدیث ضعیف منفرد ہے، فضائل میں اس برعمل کرنامعتبر ہے۔ یعنی حدیث ضعیف فضائل میں جمت ہے۔ دکام میں جت نہیں۔

فائده

بخاری ومسلم اصح السند چو بر دو شود متفق شد اشد

بخاری ومسلم جواصح السند ہیں، جب دونوں متفق ہوجا کیں تو وہ حدیث بہت سخت ہوجاتی ہے۔

یعنی کتب احادیث میں بخاری و مسلم سب سے زیادہ استح السند ہیں ہیددونوں حضرات اً سرکسی حدیث پر متفق ہوجا کیں یعنی دونوں نے اس کو بیان کیا ہوتو وہ حدیث سب سے زیادہ قوی اور پختہ مجمی جائے گی۔

> ہمہ دوہزار وسہ صدہشت وشش بود متفق زاں بدل نقش کش

تمام دو ہزارتین سوچھیا سٹھا حادیث ہیں،جن پر دونوں متفق ہیں دل میں نقش کر لے۔

مدیخ که زیں ہر دومتروک گشت متدرك حاكم آل نقش ست جوا حادیث ان دونوں ہےمتر وک ہو^{گئ}یں ہمتدرک حاکم میں و^{ہنتش ہ}یں۔ یعنی جو بھی احادیث امام بخاری وا مام سلم ہے متر وک ہو گئیں کہان دونوں حضرات نے اکو سیحین میں نقل نہیں فر مایا ، اکو حاکم نے اپنی کتاب متدرک میں جمع کردیا ہے۔ احادیث غیر مکرر درو ہزار است ومیار اے عزیز ککو اس میں غیر مکر راحادیث ،ایک ہزار میا رہیں اے بیار سے خزیز۔ هلائی از وبست ودو آمده یواقی رمای وغیره شده اس (بخاری) ہے ثلاثی ہائیس آتی ہیں، ہاتی رہاعی وغیرہ ہیں۔ یعنی بخاری شریف میں بائیس احادیث ثلاثی ہیں باقی رباعی ہنما سی وغیرہ۔ **فلا ثبی**: وہ احادیث کہا ہی ہیں جس کی سند میں مصنف کتاب ہے حضرت نبی ا ئرم سلى الله عليه وسلم تك صرف تين واسطيهول _ **ر جاعب:** وه جن میں بیارواسطے ہوتے ہیں علی ہزاالقیاس۔ ثلاثى: احاديث سندك اعتبارے سب سے زياد وعمر مجمى جاتى ہيں۔ به مسلم رباعی حدیث است وبس هلاتی نابیر دران خوش نفس مسلم کے اندرصر ف رہا می ہیں،اس میں ثلاثی نہیں ہیںا ہے خوش نفس۔ رماغیش بشاد و چند آمره ولے ترندی را علاقی شدہ اس (مسلم) میں رہائی اس اور چند ہیں لینی اس سے کچھزائد ہیں اور کین تر ذی

کے لئے ملاقی ہیں بینی ترندی شریف میں بھی بعض احادیث ملاقی ہیں۔

صحاح سته

بخاری ومسلم دگر ترندی ابوداؤد وابن ماجه نسانی

موطاست برقول جامع اصول

ششم اندریں ستہ اے ذی العقول

جامع اصول کے قول کے مطابق مؤطاءان چھ میں چیشی ہے اے تقلمند۔

بتاریخ مسلم بگو راس را بخاری بود نور اے خوش ادا

امام سلم رحمة الله عليه كى تاريخ و فات كے لئے راس ، امام بخارى رحمة الله عليه كے لئے نور بے اے خوش اوا۔

یعنی امام سلم رحمة الله علیه کی تا ریخ و فات دوسوا کشورے جولفظ اُراس کے نکلتی ہے، که لفظ راس کے عدد ۲۱ موت میں، اور امام بخاری رحمة الله علیه کی تا ریخ و فات دوسوچین ہے جولفظ نور کے عدد ۲۵ موت ہیں۔

بودما لک وترندی را وفات

بقطع وعطر ياد كن نيك ذات

امام ما لک رحمة الله عليه اور امام ترفدي رحمة الله عليه كى تاريخ وفات، قطع، وعطر، ي تكلق باس كويا وكرك الدينك ذات -

یعنی امام ما لک رحمة الله علیه کی تاریخ و فات ایک سوانای ہے اور لفظ وقطع ، کے عد دہمی ایو تے ہیں۔ ۹ کا ہوتے ہیں۔

اورامام ترندی رحمة الله علیه کی تاریخ و فات دوسواناس ب، جولفظ معطر سے نکلتی ہے لفظ عطر کے عدر ۹ کا ہوتے ہیں۔

> بتاریخ احمد بگو امر را بود شافعی را 'در' اے خوش لقا

امام احمد رحمة الله عليه كى تاريخ و فات كے لئے كه امر ، اور امام شافعى رحمة الله عليه كے لئے درا مے خوش لقا۔

لینی امام احمد ابن صنبل رحمة الله علیه کی تاریخ و فات دوسوا کتالیس بجری ہے جولفظ امر ' کاتی ہے۔

اورامام شافعی رحمة الله علیه کی تاریخ و فات دوسومیار ججری ہے جولفظ 'ور کے نکلتی ہے۔ بدال ابن ماجہ بتاریخ او

مميل لفظ "رعد"ست يادرع گو

امام ابن ماجباً کی تاریخ و فات کے لئے ، یہی لفظ رعد یا 'ورع' کہو۔

لیمنی امام ابن ماجه رحمته الله علیه کی تاریخ و فات ۲۲ ججری ہے، جولفظ رعد 'یا' درع'

ئے گاتی ہے کہ دونوں میں سے ہرایک کے عدد ۲۷ ماہوتے ہیں۔

اصطلاح ديكر بقول فيخ اسلام بروي

(ایک دوسری اصطارح شیخ اسلام بروی کے قول کے مطابق)

بدال اصطالح ولر ور ادا اگر حدث گفت راوی بنا

ادائے حدیث میں ایک دوسری اصطارح جان لے، اگر راوی نے حدث نا کے

ساتھ کباہے۔

لین"حدثنا"کباہے۔

شنید است شاً گرد واستاد خواند بعکسش بگو 'اخبرنی' جوال

شاً رو نے سنا ہے اور استاد نے پڑھا ہے، اگرا سکا تکس ہوتو اخبر نی کہ اسے جوان۔

یعنی اگر استاد نے پڑھا شاگر د نے سنا تو لفظ صدث اور اگر اس کا عکس ہے کہ شاگر د
نے پڑھا ستاد نے سنا تو لفظ "اخبر" استعمال کیا جاتا ہے، اگر شاگر دا کی ہے تو" حد شنی۔
اخبر نی " اور اگر ایک سے زائد ہیں تو حد ثنا اور اخبر نا۔

بنا شد عبارت ازال اولیس انا انبأ خاص بعد کیسیس

نا عبارت ہے اس میں اول ہے ، انا ، انبأ ، خاص بچیلے کے لئے۔

یعنی محدثین اختصار کی وجہ سے حدثنا کے بجائے لفظ نا 'استعال کرتے ہیں جو حدثنا، کے بھی معنی میں ہوتا ہے، اوراس کو حدثنا ہی بڑھا جاتا ہے۔ اورلفظ انا، انبأ نا اخبرنا، کے لئے

استعال كرتے ميں۔

ر استاد قاری ست شاگرد یک گو حدث رابه 'نی' غیر شک اگراستادقاری ہے اورایک شاگردہے ، تو حدث ، کو ، نی ، کے ساتھ ملاکر کہہ بلاشک۔ یعنی ، ''حدشنی'' اوراستاد کے قاری ہونے کا مطلب بیہ ہے کہ صدیث کی قرائت

خوداستاد كررمابو_

تامید بسیار باشد اً س بگو،نا، درال جاتو اے برہنر اگرشاگر دزیا دہ ہوں،تواس جگہ نا' کہ تواے ہنر مند۔ یعنی ٹیا گردایک سے زائد ہیں اور استاد نے صدیث کی قرائت خود کی ہے تو اس وقت صدیثا، کہیں گے۔

بگفت است ابن وہب اندریں
کہ شد پیش او اصطارح چنیں
ابن وہب نے اس میں بیان کیا ہے ، کہ ان کے فز دیک اصلاح ای طرح ہے۔
باستاد خواند است اگر دیگرے
چوں تو بشنوی اخبر گو بلے
اگر استاد برکسی دوسرے نے بڑھا ہے ، جب تو سے اخبر کہہ ہے شک۔
یعنی استاد کسی دوسرے کو بڑھا ہے ، جب تو سے اخبر کہہ ہے شک۔
یعنی استاد کسی دوسرے کو بڑھا رہا ہے اور حدیث کی قرائت شاگر دکر رہا ہے آ ہے

لینی استاد کسی دوسر ہے کو بڑھارہا ہے اور حدیث کی قراُت شاگر دکررہا ہے آپ بھی سن رہے ہیں تو الخبر نبی 'کہیں گے۔

مطلب یہ ہے کہ س کواستاد نے پڑھنے کی نوبت آئی نہ سننے کی البتہ استاد نے اپنی اکسی ہوئی حدیثیں دیدیں اور اجازت دیدی کے میری طرف سے ان احادیث کو بیان کر سکتے ہوتو اس کو مسنا دلمه ' کہتے ہیں اور یہ کہ گردان احادیث کو اپنے اس استاد سے لفظ 'انب اُنا' سے بیان کرے گا۔

ولیکن نه برخواندن وبر ساع
کے 'انبیا' گفتہ است الوداع
لیکن استاد سے نہ بڑھنے کی شکل میں بھی بعض نے 'ابا نا' کہا

ہے۔﴿ جیما کہ پہلے گزرا﴾

فائدہ: مطلب یہ ہے کہ یہ ابن وہب کی اصطارح کے مطابق ہے الودائ الودائ کا مطلب یہ ہے کہ یہ احادیث سے متعلق بیان ختم ہو چکا، آ گے محد ثین کے طبقات کو بیان کیا جائے گا۔

بيان طبقات روات

(راو بول کے طبقات کابیان)

بتقریب گفت است طبقات را که شد دوازده جملگی مصطفیٰ

مضمون کی قریبی مناسبت کی وجہ ہے راویوں کے طبقات کوبھی بیان کیا ہے، کہ تمام بارہ'' طبقات' ہیںا مصطفیٰ۔

> کے شد سحابہ کہ شال دیدہ اند رسول امیں را وگرویدہ اند

ا کے طبقہ صحابہ رضوان اللہ علیہم اجمعین کا ہے کہ انہوں نے رسول این صلی اللہ علیہ وسلم کود کھھا اور ان کے گرویدہ ہوئے ہیں۔

صغیر وکبیر اند بکسال ہمہ

عدول اند ایثان صدوق وسره

حچوٹے بڑے تمام کسال ہیں، (کہ تمام کے تمام)عدول وصدوق اور معتدہیں۔

رويم تابعين اند وشد قتم بنخ

سويم تبع بيان سه تسمش بنج

دوسر ستابعین ہیں اوران کی پاچھسمیں ہو گئیں ہیں، تیسر سے تع تابعین،ان کی تین

فتمیں ہیںغورکر۔

چہارم موخر زاتباع تی ۔

پود نیز سہ قسم ہر حسب سمع بود تیز سہ قسم ہر حسب سمع چو تھے وہ جوت تا بعین کے بعد ہیں،ان کی بھی تین قسمیں ہیں سننے کے مطابق ۔

صغار مؤخر شدہ تر ذری قدی ملحق بدال شیخ ستہ کی صغارموخرین میں امام تر ذری رحمۃ اللہ علیہ ہیں،تو ان کوبھی ان بی اصحاب ستہ کے ساتھ ملحق کر۔

بامندک زمان ست تاخیر شال چوبعضے شیوخ ازنسائی اے جوال تھوڑ از ماندان کاموخر ہے، جیسے امام نسائی رحمتہ اللہ علیہ کے بعض شیوخ اے جوان۔ بود طبقه اول ودوم را در اول صدی موت اے خوش لقا طبقه اول اور دوم کی ، اول صدی میں و فات ہوگئی ہےا ہے خوش لقا۔ بدال طبقه سويم تاثامنه لیں مائقہ اولی ست موت ہمہ طبقہ سوم ہے آٹھویں طبقہ تک، کی تمام کی و فات اول صدی کے بعد ہوئی ہے۔ وگر تاسعه تا آخر تمام وفات است بعد از دو صد والساام دوسر نوی طقہ سے آخرتک تمام، کی وفات دوصدی کے بعد ہے والسام۔ فاكده

دربيان معرفت مراتب رجال دوازدگانه (بارہ طبقات کے حضرات کے مراتب کی معرفت کے بیان میں) کے شد سحابہ جعدیل او سحابت كفايت بود اندرو ا یک طبقہ سحایہ کا ہے اس کی تعدیل کے لئے ،اس کا سحالی ہونا کافی ہے۔ دوم اوثق الناس گفته شود وما لفظ مدحش مكرر بود دوسر ےاوٹق الناس كما كيا ہو، اوريا اس كى مدح كالفظ مكرر ہو۔ سویم آنکه مدش مکرر نه کرد فقط ثبت با عدل گفته ست فرد تیسرے دہ کہاس کی مدح مکررنہ کی ہو، صرف ثبت ، ماعدل، تنہا کہا ہو۔ جہارم صدوق ست والا بأس به يو پنجم صدوق است الا حفظ له چوتھ، صدوق والباس به، جیسے یانچویں، صدوق الاحفظاله۔ بگویند یاآنکه وبام ست

بلویند یا آئکہ وہام ہست پس اصحاب بدعت بدیں ملحق ست یا پہ کہیں گے کہ وہ'' وہام'' ہے، پس اصحاب بدعت اس کے ساتھ کئی ہیں۔ ششم آئکہ غلقات بسیار ہست ولے علت ترک نبود بدست مجھےوہ کہ خلقات بہت ہیں، لیکن ہاتھ میں علت ترک بھی نہیں ہے۔

تو مقبول لين حديثش بخوال بلين الحديث ست اشاره بدال تواس کی حدیث کومقبول لین کہہ، لین الحدیث ہے اس کی طرف اشارہ حان۔ ز بفتم رواة كه دو مرد كنند ولے واثق او را ندانستہ اند ساتویں وہ راوی کے دوم دروایت کریں ،اورلیکن، واثق ،معتمداسکونہ جانا ہو۔ اشاره كندش بمتور حال وَّلِ حال مجبول شد در مقال اسکی طرف مستورالحال کے ساتھا شارہ کرتے ہیں ،اگرا سکا حال گفتگو میں مجبول ہو۔ بود مشتمیں غیر موثوق وہم مزيف بالإجمال سازندكم ية تهوي تتم بهى غيرموثوق إوراس كومزيف بالاجمال بهى كم كرت بير مطلب بہے کہ اس کی غیر موثوق ہونا بیان کر دیا جاتا ہے۔ اشارت بلفظ ضعيف است ازال منهم آنکه راویش جزیک مدال لفظ ضعیف سے اس سے اشارہ ہوتا ہے، نویں وہ اس کاراوی ایک کے علاوہ نہ جان۔ تعنی صرف ایک راوی ہو۔ ا

اشارت بدو لفظ مجبول دال وہم غیر موثوق واضعف چناں لفظ مجبول سے اسکی طرف اشارہ جان،اور غیر موثوق اوراضعف سے بھی اسی طرح۔

كه ضعفش بقادح بيال كرده اند تو متروک وواہی بگو بیگز ند که سکاضعیف ہونا علت کے ساتھ بیان کر دیا ہے بقو اسکومتر وک وواہی کہہ بے تکلف ده ویک شده کاذب ویر دروغ کلامش ہمیشہ بود بے فروغ گیارہویں قتم ہے کاذب اور بہت جھوٹا، اسکا کلام ہمیشہ بے فروغ ہوتا ہے۔ ده ودو که باوشع اندر حدیث شده معهم آل نحسيل وخبيث بارہو س وہ جوحدیث کے اندروضع کے ساتھ، وہ کمپیناورخبیث مجم ہو۔ برحال وكذاب وضاع دال اشاره بدیس بردوکس ایجوال د جال و کذاب اوروضاع ہے، اشارہ انہیں دو مخصوں کی طرف جان اے جوان ۔ ہمیں اصطلاحات قدرے ضرور کفایت بود مرترا بے قصور ای قدریبی ضروری اصطلاحات تیرے لئے بےقصور کافی ہوں گے۔ بضعف بقر ببر خلق خدا بیاں ایں قدر کردم اے مصطفیٰ ضعف بھر کے باو جودخلق خدا کے نفع کیلئے ،اس قدر میں نے بیان کر دیا ہے مصطفیٰ۔ بکن بادوم دیگرال را رسال مگیری نفع از دعاء کسال یا دکراورددمروں کو پہو نیجا،لوگوں کی دعا ہے نفع حاصل کر۔

خدایا رسال نفع زیس خلق را ثوابش مراده بروز بزا ا من اس معلوق كونفع بهنجا، مجه كواس كاثواب بروز جزاءعطافر ما وزبس بعد ضعف بقر مانع ست کہ جزوے زنھنیف کیم برست اس کے بعدضعف بصر مانع ہے، کہ تصنیف کا کوئی حصہ ہاتھ میں اول۔ ببال بزار ودو صدی وشش شدہ ختم ایں نسخہ اے نیکوش ین باره سوچھتیں کو، بیان ختم ہواا سے نیک مرد۔ زبس نفع ایں نظم بسیار بود بمنظوم نافع مسمى نمود ال ظم كانفع حد بزياده تقاءاس كئيمنظوم نافع اس كانام ركه ديا-البي برايمال كني خاتمه تجق نبي وبني فاطمه البی! ایمان برمیرا خاتمه فرما،حضرت نبی ا کرم صلی الله علیه وسلم کے طفیل میں اور حضرت فاطمه رضی الله عنها کی اوا ادکے فیل میں۔ بنزع وبمخشر مكن شرمسار خدایا مرا بخش وجرمم گذار نزع کے وقت اورمحشر میں مجھ کوشرمند ہ نہ کیجنو ،اے خدا مجھ کو بخش دے اورمیرے جرم كومعاف فرما_

کجا جز تو عاصی بجوید پناه
که ستار وخفار جستی اله
گنهگار شخص تیر سوا کبال پناه تااش کرے، اسلئے که لبی تو بی ستار، وخفار، ہے۔
شفیعم کنال سید باک را
کہ ایمال برو وارم از ابتداء
سید باک سلی اللہ علیہ وسلم کومیر اشفیع بناوے، اس لئے کہ میں ابتداء سید با

بجز پاک کلمہ ندارم عمل طفیلش کرم کن تو اے عز وجل باکلمہ کے سوامیں کوئی عمل بیس رکھتا، اس کے طفیل کرم فرماا ہے بزرگ و برتر۔
گنبگار خود را اللی بہ بخش خط عفو را بر جرائم بکش خط عفو را بر جرائم بکش اپنی بخش دے عفوکا قلم جرائم بر تھینج دے۔



(مدایت

صاحب مشکوۃ نے فن صدیت کے ماہرین ائمہ کا تذکرہ
اپنی کتاب کے مقدمہ میں اجمالی طور سے کیا ہے۔ بیٹن محدث
دہلوگ نے اپنی مستقل نلیحدہ کتاب الا کے حال بد کو اسحاء
السر جال میں ان ائمہ ماہرین کے تفصیلی حالات تحریر فرمائے
ہیں۔ خودصا حب مشکوۃ نے بھی الا کے حال فسی اسماء
السر جال میں ائمہ مذکورین کے منصل حالات قلمبند فرمائے ہیں
جو کتاب مشکوۃ کے آخر میں ملحق ہیں۔ ہم بھی مذکورہ ائمہ حدیث کا
مختم طریقہ سے تذکرہ حصول سعاوت کے لئے کردہے ہیں۔

﴿ ... تذكرها مُدمى ثين رحمهم الله ﴾

نسام ونسب: نام محمر، كنيت ابوعبدالله ،سلسله نسب يول ب: ابوعبدالله محمر بن اساعيل بن ابراهيم بن مغيرة بن بر دزبة الجهي اليماني البخاري _ (سير١٩١/١٣)

ولادت: امام بخاری ۱۳ رشوال ۱۹۳ هی میں جعد کی رات میں بیدا ہوئے آپ کی جائے بیدائش بخاری ہے۔

والده کی مستجاب دعاد: آپ بین میں بی نابیا ہوگئے تھے جس کی وجہ ہے ان کی والدہ کو بہت تکلیف اور رنج والق رہتا تھا۔ نہایت بی گریہ وزاری ہے بارگاہ ایز دی میں ان کی بصارت کے لئے دعاء کیا کرتی تھیں ایک رات والد محتر مدنے خواب میں دیکھا کہ حضرت اہرا ہیم خلیل اللہ علیہ الصلوٰ ق السام فر مار ہے ہیں کہ حق تعالیٰ نے تیرے فرزند کو بصارت عطاء فرمادی چنانچہ میں کو جب وہ آھیں تو اپنے گخت جگر کی آ تکھول کو روش بایا۔ (البدایہ والنہایہ الراس سیراعلام اللبلاء ۳۹۳/۱۲)

تعلیم و تربیت: ابھی آپ کم عمر ہی تھے کہ والد کا سامیس سے اٹھ گیا اور آپ بیٹیم ہو گئے، والدہ کی آغوش تربیت میں پر ورش پائے رہے، پھر ۱۸ سرسال کی عمر میں اپنی والدہ اور بیٹ کے ساتھ جج کے لئے تشریف لے گئے اور تحصیل علم کی خاطر و بیں رک گئے اس کے بعد تحصیل علم کا شوق آپ کو کشال کشال علمی درسگاہوں میں لے گیا۔ نیز اٹھارہ سال کی

عمر میں بی تصنیف و تالیف کا کام شروع کر دیا تھا۔ (سیر ۱۲ روم ۲۰۰۸)

آپ نے سولہ سال کی عمر میں حضرت عبداللہ ابن المبارک اور حضرت امام وکی گئی کہ آبوں وکھاں حفظ یا دکرلیا تھا۔ نیز طلب صدیث کے لئے بڑ ہے دور دراز کے پر مشقت اسفار کئے ۔ نہیں معلوم کہ اس سلسلہ میں بغداد، کوفہ، بھرہ، شام بمصر، نمیٹا پورکتنی مرتبہ جانا ہوا۔ کبا جاتا ہے کہ بچین بی میں آپ کوستر ہزارا حادیث سر دایا دخیں ۔ (البدایہ والنہایہ السالہ) حاتا ہے کہ بچین بی میں آپ کوستر ہزارا حادیث سر دایا دخیں نے ایک ہزاراتی (۱۰۸۰) اساتذہ ہے اکسار فیض کیا اور وہ سب محدث تھے۔ (ظفر الحصلین بھے 42 ہیں۔ ۱۳۵۸)

قلامده: آپ کے شاگر دول میں اسحاق بن محمد الرمادی، عبدالله بن محمد المسندی، محمد بن قلیب بن تعیید، نیز ابراہیم حربی، محمد بن نصر مروزی، مسلم بن الحجات، ابوعیسی ترفدی بطور خاص قابل ذکر میں _(سیر۱۲/ ۳۹۷)

حفظ وذهانت كاايك عجيب واقعه: آپك ذبات اور قوت

حافظہ کے واقعات مشہور ومعروف ہیں: علامہ ذہبی نے وراق سے نقل کرتے ہوئے لکھا ہے کہ ماشد بن اسائیل اورایک دوسر سے صاحب کا بیان ہے کہ ہم لوگ مشائخ بھرہ کے پاس جایا کرتے تھے اور امام بخاری بھی جاتے تھے، گرامام بخاری کلھے نہیں تھے، جب چند ایام گذر گئے ہم نے کہا کہ تم کیا کرتے ہو لکھتے بھی نہیں ۔ایک دن امام بخاری ہم ہے کہنے گئے کہ تم نے کہا کہ تم کیا کرتے ہو لکھتے بھی نہیں ۔ایک دن امام بخاری ہم ہے کہنے گئے احادیث نے جمحے پریشان کردیا ہے ذراالا و تو سہی تم نے کیا لکھا ہے چنا نچہ ہم نے اپنی کھی ہوئی احادیث سائیں، گرامام بخاری نے بندرہ ہزار احادیث سے بھی زائد سنائیں اور تر تیب وار ان کو پڑھا اس کے بعد سے ہم لوگ اپنے لکھے ہوئے کو ان کے حافظ کی مدد سے ملا کر تھی کر رہا کہ تھے۔ پھر امام بخاری نے کہا کہ کیا تمہارا خیال ہے کہ ہیں یوں بی وقت ضائع کر رہا ہوں ۔ تب ہم لوگوں کوان کی اہمیت کا اندازہ ہوا۔ (سیراعلام النبلاء ۲۰ /۸ میم)

وفات: ۱۵۲ه مفتی رات بوقت عشاء آپ کاوصال ہوا۔ اتفاق ہے و بعید الفطر کی رات بوقت عشاء آپ کاوصال ہوا۔ اتفاق ہے و بعید الفطر کی رات تھی۔ آپ کی تدفیر سے مقام خرتگ میں عمل میں آئی جو سمر قند سے دوفر سخ کی دوری بر بائے ۔ (مقدمہ بخاری شریف: سیر ۱۲ / ۲۸ م)

قبر سے مشک کی خوشبو آنے گی اورایک رات تک لوگ قبری مٹی ایت رہے یہاں تک کمنع قبر سے مشک کی خوشبو آنے گی اورایک رات تک لوگ قبری مٹی ایت رہے یہاں تک کمنع کرنے پر بھی یہ سلسلہ ندر کا تو مجبوراً قبر کے اردگر دلکڑی کی ایک جائی لگادی گئی تا کہ قبر محفوظ رہاں کے باوجود لوگ آتے رہے اوراردگر دکی مٹی لے جاتے رہے جب یہ فبر آپ کے خالفین تک بہنجی تو وہ لوگ بھی آپ کی قبر مبارک پر آئے اور تو بدوندا مت کا ظہار کیا۔ (مقدمہ بخاری شریف، سیراعلام النبلاء ۲۱/۲۲)

خواب بعد از وفات: عبدالوا حدبن آدم في خواب مين آنخضرت سلى الله عليه وسلم كود يكها كرة مخضرت سلى الله عليه وسلم كود يكها كرة مخضرت سلى الله عليه وسلم كرم ساتھ حضرات صحابة كرام رضى الله عنهم كى

ایک جماعت تھی اور آنخضرت صلی الله علیہ وسلم ایک جگہ کھڑ ہے ہوئے تھے۔عبد الواحد نے سلم میا اور دریا فت کیا کہ یبال کیوں تشریف فرما ہیں۔ آنخضرت سلی الله علیہ وسلم نے جواب میں ارشاد فرمایا کہ میں محمد بن اسامیل بخاری کا انظار کر رہا ہوں عبد الواحد کہتے ہیں کہ جب مجھے امام بخاری کی وفات کی خبر معلوم ہوئی اور میں نے غور کیا تو وہ وہی وفت تھا جس وقت میں نے خواب دیکھا تھا۔ (سیر ۱۳/۸۲۳)

قىادىيىخى جەلە: آپ كى تارىخ پيدائش دوفات دركل مدت عمراس جملەت نكلتى ہے۔

صدق حمید نور: "صدق" ئ تاریخ بیدائش ۱۹۱ه ن مید" کل مت عمر ۱۹۲۸ میلا کا متحد کا مت عمر ۱۹۲۸ میلا کا متحد کا مت عمر ۱۹۲۸ میلا کا متحد کا متح

قصطانیف: امام بخارگ نے متعدد تصانیف یا دگار چھوڑی ہیں جن میں کچھ حسب ذیل ہیں:

(۱) صحيح بخارى (۲) قضايا الصحابة والتابعين (۳) التاريخ الاوسط (۳) التاريخ الكبير (۵) التاريخ الصغير (۱) الادب المفرد (۵) القراء ة خلف الامام (۸) المبسوط (۹) كتاب الكلى (۱۱) الفوائد (الامام الترمذي والموازنة بين جامعه وبين الصحيحين ص: ۰۳)

صحیح بخاری: امام بخاری کی سیح کوجومقو ایت حاصل ہے وہ کی پختی نہیں ہاری کی سیح کوجومقو ایت حاصل ہے وہ کی پختی نہیں ہاری کا کمل نام اس طرح ہے ''البجامع السمسند الصحیح المختصر من امور رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم وسننه و ایامه'' اس کواصی اکتب بعد کتاب اللہ کا درجہ حاصل ہے۔

وجه قالیف: امام بخاری سے پہلے زیادہ تر روان سانیداور مصنفات کا تھااس وقت تک بہت میں مسانید ومصنفات وجود میں آ چکی تھیں۔لین ان میں برطرح کی روایات جمع کی گئی تھیں۔امام بخاری فرماتے ہیں کہ ایک دن امام اسحاق بن راہو ریزی مجلس میں حاضر تھا وہاں بمار ساصحاب میں سے کی کی زبان سے نکاا۔کاش تم رسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم کی سنن کے بارے میں کوئی مختصر تی کتاب جمع کردیتے یہ خطاب آگر چہمام حاضرین سے تھا گرامام موصوف نے دیکھا موصوف نے دیکھا کا کہ وہ بچھا لے کرآ مخضرت سلی علیہ وسلم کے اوپر سے مکھیاں اڑا رہے ہیں۔جس کی تجییر معرین سے یہ دریا فت ہوئی کہ امام بخاری آ مخضرت سلی اللہ علیہ وسلم کی اوپر سے مکھیاں اڑا رہے ہیں۔جس کی تجییر معرین سے یہ دریا فت ہوئی کہ امام بخاری آ مخضرت سلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث سے کذب کو دفع کریں گے۔ چنانچہ اس خواب نے آ پ کے شوق و بھت کو اور بلند کر دیا اور تا لیف میں کو دفع کریں گئے۔(ظفر جس ۱۱۱)

طویق قالیف: اس کی تالیف میں امام صاحب کوسولہ سال سگے اور طریق تالیف یہ امام صاحب کوسولہ سال سگے اور طریق تالیف یہ تھا کہ پورے مرصہ میں جب آپ کسی صدیث کے لکھنے کا ادادہ کرتے و کتاب میں لکھنے سے پہلے عسل کرتے استخارہ کرکے دو رکعت نفل ادا کرتے جب اس کی صحت پر خوب انشراح ہوجا تا تب اس کو کتاب میں جگہ دیتے تھے۔ (ظفر الحصلین: ص الا، سیر ۱۲/۳۰۳) و کے ان بصلی لکل ترجمة رکعتین.



(۲) ﴿ امام سلم ﴾

خام ونسب: نام-مسلم، كنيت-ابوالحن، لقب-عساكرالدين، سلسله نسب يول بي: مسلم بن الحجاج بن مسلم بن وردا بن كوشاذ القشيري (سيراعلام النبلا عمام ٥٥٨/ البداية والنباية المرمه)

ولادت باسعادت: امام مسلم خراسان کے مشہور معروف شہر خیثا پور میں بیدا ہوئے، آپ کی تاریخ بیدائش میں اختلاف ہے ایک قول آئے کا اور ایک قول کے مطابق الانے میں آپ کی بیدائش ہوئی۔ امام حاکم نے آپ کاس وفات الانے کھے کر مدت عمر بچین سال بتائی ہے اس حساب سے سندوا اوت لائے بی درست ہے نیز ابن الاثیر نے بھی جامع سال بتائی ہے اس حساب سے سندوا اوت لائے بی درست ہے نیز ابن الاثیر نے بھی جامع الاصول کے مقد مدمیں اس کورائے قرار دیا ہے۔ (ظفر الحسابین)

سماع حدیث کے لئے اسفار کی ابتداء: علامہ ذہبیؓ نے آپ کے ساع حدیث کی ابتداء کا زمانہ شروع ماع حدیث کی ابتداء کا زمانہ شروع موجاتا ہے، آپ نے مختلف مقامات کے اسفار کئے۔ عراق، حجاز، شام، مصر وغیر، تو متعدد مرتبہ تشریف لے گئے، جبکہ یہ اس زمانہ کی بات ہے جس زمانہ میں سفر کرنا انتبائی وشوار گذار بات تھی۔ آئ کل کی طرح سہل اور آسان نہیں تھا۔ (ظفر انصلین)

شیوخ: آپ کے اساتذہ میں اسحاق بن را ہویہ، امام فیلی، کی بن کی ہتیہ بن سعید، علی بن جعرہ امام احمد بن ضبل بطور خاص فرکر کئے جاتے ہیں۔ نیز امام بخاری سے ان کے نمیٹا پور میں قیام کے زمانہ میں بہت کچھا ستفادہ کیا۔ سیح مسلم میں جن بزرگول سے روایت کی ہے ان کی تعداد ۲۲۰ کاصی ہے۔ (تہذیب الکمال ۹۵/۷)

تسلامنده: امام ابوعیسی ترفدی ، احمد ابن ابی حاتم رازی ، ابو بکر جارودی ، ابو بکر بن خزیمه انتخاب مین داخل مین در تاریخ بغداد ۱۰۳/۳۰)

اخلاق، عادات، زهدو تقویی: آپ نے عربر کسی کی فیبت نہیں کی اور نہ بی کسی کو مارا اور نہ را بھلا کہا ، اس کے ساتھ ساتھ آپ کے قول وفعل میں یکسا نیت تھی ، تضاد کا وہال گذرنہ تھا، آپ دن میں روز ہرکھتے ، اور رات کوخدا کی یاد میں بسر کرتے۔

فضل و کمال کا اعتراف: پوری امت آپی امامت، جلالت ثان اور علوم تبت کوشلیم کرتی ہے۔ چنانچ اسحاق بن منصور فرماتے ہیں: لن نعدم النحیر ما ابقاک للمسلمین. بندار کہتے ہیں کدونیا میں حافظ صدیث بیار ہیں: (۱) امام بخاری (۲) امام مسلم (۳) ابوزرعدرازی (۴) امام دارمی ۔ (تہذیب الکمال ۱۵/۷)

منعف علم کا ایک عجیب واقعه: ایک دفعه کا ایک عدیث ایک دفعه کا ایک عجیب واقعه: ایک دفعه کا گئا آپ کواس کا علم بیس تھا چنانچہ گھر تشریف لے گئے۔ جرائ روش کیا اور گھر والول سے کہا کہ کوئی بھی میر بے پاس ند آئے۔ اور پھر حدیث تاش کرنے لگے پاس بی میں مجود کی ایک ٹوکری رکھی بوئی تھی اس میں سے ایک ایک کرکے مجود اٹھا کر کھاتے رہ جتی کہ حدیث کی تاش وجبتو میں اسے محود ہوئے کہ جبح بوگئی، مجود یں بھی سب ختم موسکی اور حدیث بھی مل گئے۔ یہی واقعہ آپ کی وفات کا سب بنا۔ اس سے امام صاحب کی علمی شینتگی اور انبہاک کا اندازہ لگایا جا سکتا ہے۔ (تاریخ بغد ادا ۱۰۳۰/۱۳)

وعات: امام مسلم نے 10 رر جب الا تاہے پر وزیکشنبرو فات بائی دوشنبہ کو جنازہ اٹھایا گیا اور نمیٹا پورکے با ہرنصیر آبا دمیں فن کئے گئے۔ ع

آسال تیری لحدید شبنم افشانی کرے (البداید النهایدالهم)

قصنیفات: آپ نے اپن قلیل عمر میں بہت برا کارنامہ انجام دیا اورکی کتابی تھنیف کیں بلکہ اگر میں بلکہ اگر میں کافی تھی۔ کیس بلکہ اگر میں کباجائے کہ وفی کتاب بھی آپی تھنیف نہوتی تو صرف سیح مسلم ہی کافی تھی۔

﴿ امام ما لك ﴾



نام و فصب: نام ما لک، کنیت ابوعبدالله، سلسله نسب اس طرح ب: ابوعبدالله ما لک بن انس بن عامر بن عمر و بن الحارث بن غیمان بن نخیل بن عمر و بن الحارث الحارث من مدنی _ (سیراعلام العبلاء ۸/ ۴۸)

و لادت: اصح قول کے مطابق والادت<u> ۹۳ جے</u> اور اس سال حضرت انس کی وفات ہوئی۔(سیراعلام العبلاء ۴۹/۸)

حلیمه مبادک: آپطویل القامت اور فربدن سے، داڑھی گھن تھی نیز مونچموں کوا کیدم جڑ ہے نہیں کاٹا کرتے سے ان کا خیال تھا کہ اس طرح کرنا مثلہ ہے۔ نیز آپلیاں بھی عمرہ زیب تن فر مایا کرتے سے، کہتے سے : مااحب لاحد انعم الله علیه الا ان یسری اثبو نعمت علیه. (سیر ۱۹/۸ - ۲۰) یعنی اللہ نے جس کوا پی نعمت سے نوا زاہو اس پراس کی نعمت کاار ظاہر ہونا بیا ہے۔

نيزآ پفرمايا كرتے تھاحب للقارى ان يكون ابيض الثياب.

بشر کہتے ہیں کہ ایک د فعدامام ما لگ کے پاس میر اجانا ہوا میں نے دیکھا کہ آپ ایک عمد بشم کی میا در زیب تن کئے ہوئے ہیں جس کی قیمت پانچ سو (درہم کے) ہرا ہر ہو گی جس میں بادشا ہوں جیسی جھلکتھی۔ (اوجز المسالک ا/ ۱۰۰ امتذکرۃ الحفاظ لللذہبی ا/ ۲۰۷)

طلب علم: کم عمری ہی میں علم حاصل کرنا شروع کر دیا تھا چنا نچ محمد بن شہاب زبرگ، یچی بن سعید انصاری نافع مولی عبد الله ابن عمر رضی الله عنهم ، مشام بن عروه عبد الله بن دیناروغیره سے بطورخاص علم حاصل کیا۔

فنضائل ومناقب: آپ کے مناقب تو بشارین بن کا ماطرمقصو رئیں ہے باشہ آپ حدیث رسول کے ایک ہے وارث اور بہت ہی ذبین وظین تھے۔آپ نے اس وقت تک فتو کی نہیں دیا جب تک اس وقت کے سر بڑے بڑے علاء نے اس بات کی شہادت نہ دیدی کہ امام ما لک اس بات کے الل ہو چکے ہیں۔آپ کی عادت شریف قیمتی جب حدیث بیان کرتے تھے تو پہلے عسل کرتے نیا لباس زیب تن فرماتے، عمامہ باند ھے اور بہت ہی خشوع وضوع اور وقار کے ساتھ مند پر ہیسے اور مجلس میں شروع ہی ہے ودکی دھونی دلواتے۔

دنیا ہے بے رغبتی اتنی کہ پوری زندگی کرایہ کے مکان میں گذاردی چنانچے مدینہ میں جس مکان میں رہتے تھے وہ حضر تعبداللہ بن مسعودگا گھرتھا۔ (او جز المسالک ۱۰۱/۱) آپ کی مجلس انتہائی باو قامجلس ہواکرتی تھی۔ (سیراعلام العبلاء ۸۸/۲)

علمه کااعتواف: آپکی شان میں بہت سے علاء نے بہت بھے کہائے۔
مثار حضرت فیان بن عین فرماتے ہیں کہ صدیث یوشک ان یہ صوب الناس اکباد
الابل فی طلب العلم فلا یجدون عالما اعلم من عالم المدینه (الحدیث) کا
مصداق میر سے خیال میں حضرت امام مالک ہی ہیں۔ نیز حضرت یوس کا قول ہے کہ میں نے
امام شافی کو فرماتے ہوئے سنا کہ اگر امام مالک اور ابن عینہ نہ ہوتے تو حجاز کاعلم رخصت
ہوجاتا۔ (الانتاء: ۵۰ سیر ۸/۸) ابن وہب کہتے ہیں کہ اگر امام مالک اور لیث نہوت تو
ہماری گراہی کے لئے بی کافی تھا۔ (سیر ۸/۱۱)

تصلفیف: متعددکتبورسائل آپ کی تصانیف ہیں ان سب میں سب سے ہم اور مشہور مؤطا امام مالک ہے۔

الم ثاني آس كه بار عين فرمات بين: مناظه و على الاوض كتاب بعد كتاب الله اصبح من كتاب مالك.

ومات: الريام ارزي الاول وي والم والم والكري و الكري و الله والله و الله و الله

﴿ الم مثافعي ﴾

خام ونسب یول بے جمر الله الوعبدالله اوالد كانا م اور لیس سلسله نسب یول ہے جمر بن اور لیس سلسله نسب یول ہے جمر بن اور لیس بن عباس القرابی شم عبدالمطلب بن عبر مناف بن قصی بن كلاب بن مره بن كعب بن لوى بن عالب القرابی شم المطلم الشافعی المحلی الفری - (سیراعلام النبلاء - ۱۵/۱)

ولادت: شام کاکٹ شرغزہ میں وہ اج کوایک بچہ بیدا ہواکسی کو کیامعلوم تھا کہ یہ بچہ بیدا ہواکسی کو کیامعلوم تھا کہ یہ بچہ آگے چل کر کیا کارہائے نمایاں انجام دے گااور قوم اس کو کن القاب سے یا دکرے گی یہی بچہ ہے کہ جس کوتا ریخ امام شافع کے نام سے جانتی ہے۔ (سیر ۱/۱۰)

ابھی آپ دوسال ہی کے تھے کہ والد کا سامیس سے اٹھ گیا پھر آپ کی والدہ مکہ مرمہ کے آپ کی والدہ مکہ مرمہ کے آپ کی پرورش ہوئی۔اللہ تعالی نے آپ کو غضب کی ذہانت عطا فرمائی تھی چنا نچہ کچھ ہی دنوں میں تیراندازی میں ماہر ہوگئے اور ہم عمروں ہے آگے ہڑھ گئے مربیت اور شعر کی جانب توجہ کی اور اس میں بھی جلد ہی کمال حاصل کرلیا اس کے بعد فقہ کی طرف میلان ہوا اور ایسامیلان جو ہرابر ترقی کرتا رہا حتی کہ آئی دنیا آپ کو ایک عظیم فقیہ کے طرف میلان ہوا اور ایسامیلان جو ہرابر ترقی کرتا رہا حتی کہ آئی دنیا آپ کو ایک عظیم فقیہ کے نام سے یا دکرتی ہے۔ (سیر ۱۰۷۰)

 یا دکر ای تھی۔ آپ نے طاب علم کی خاطر دوردرازعلاقوں کے اسفار کئے۔ (تاریخ بغداد ۱۹/۲)

اساقذہ: آپ نے متعدداسا تذہ سے علم حاصل کیا جن میں مسلم بن خالدزنجی مفتی مکہ، داؤد بن عبدالرحمٰن عطار مجمد بن علی بن شافع، سفیان بن عیدینہ سعید بن سالم سے مکہ مکرمہ میں بطورخاص اکتباب فیض کیا اورمد پنظیبہ میں۔ مالک بن انس، ابرا ہیم بن ابی کی اساعیل بن جعنراورا برا ہیم بن سعدوغیرہ۔ یمن میں مطرف بن مازن، ہشام بن یوسف القاضی۔ بخت مراور ابرا ہیم بن سعدوغیرہ۔ یمن میں مطرف بن مازن، ہشام بن یوسف القاضی۔ بغداد میں امام محمد بن حسن الشیبائی سے بہت کچھ حاصل کیا اور ایک مدت تک ان کی خدمت میں ان کے ساتھ د بن اس طرح اسائیل بن علیہ، عبدالوباب ثقفی وغیرہ آپ کے خدمت میں ان کے ساتھ د ب اس طرح اسائیل بن علیہ، عبدالوباب ثقفی وغیرہ آپ کے اسا تذہ میں ہیں۔

قلاصف: آ کچیشبورتانده مین حضرت امام احمد بن صبل ،ابوتور ، این بن عبدااعلی ، حرمله بن یجی ، ربیج بن سلیمان المرادی ، دبیج بن سلیمان المرادی ، دبیج

فصاحت وبلاغت اور علمه كا اعتراف: فصاحت وباغت و گویا آپی آپی آپی گئی میں بڑی ہوئی تھی۔ بیان میں شیر بی ، ذكاوت، ذہانت ، حاضر دما غی گویا آپ بی كا حصر تھی۔ حتی كه بم عصر علاء بھی اس كااعتراف كے بغیر ندرہ سكے اور برا یک نے آپ كور ي و تقوى امانت ، فقابت ، كرم و تخاوت ، فصاحت و بلاغت ، ذہانت و فطانت كوشايم كيا به ۔ چنا نچ حضرت فيان بن عين آن ان كی طرف اثر ار اگر تے ہوئے كہا: هذا افسل في به ۔ چنا نچ حضرت ما المائة عن يعلمهم السنن وينفي عن رسول الله صلى الله عليه وسلم رؤس كل مائة من يعلمهم السنن وينفي عن رسول الله صلى الله عليه وسلم الكذب قال فنظرنا فاذا في رأس المائة عمر بن عبد العزيز رحمه الله و في رأس المائة عمر بن عبد العزيز رحمه الله و في رأس المائة عمر بن عبد العزيز رحمه الله و في

ا خلاق: آیمن عالم، فاضل فضیح وبلیغ بی نہیں تھے بلکہ اس کے ساتھ ساتھ جود

و خاکے پیکراور انہائی با اخلاق بلکہ معلم اخلاق تھے۔ تاریخ میں آپ کی جودو خاکے واقعات کمٹرت ملتے ہیں۔ حمیدی کہتے ہیں کہ ایک و فعد امام شافع کیمن تشریف لے گئے اس کے بعد جب مکہ مرمہ تشریف الے گئے آپ کے پاس دس ہزار دراہم تھے۔ آپ نے مکہ مرمہ کے باہر بی ایک فیمہ لگایا لوگ آتے رہے اور آپ ان کوعطاء فرماتے رہے حتی کہ تمام دراہم تقسیم کردیئے۔ مزید واقعات دیکھئے (الانقاء: ۱۵۰، حلیة الاولیا ۱۳۲/۹)

وفات: امام شافعی اپی ذات میں ایک انجمن سے بلکہ ایک امت ہے تعبیر کیا جائے تو بے جانہ ہوگا گر برایک کواس دار فانی سے جانا ہے چنا نچر جب من منطق کا میں آئی۔ (سیر اعلام النبلاء موشی بھیر تا ہوارو پوش ہوگیا۔ آپ کی قد فین سرز مین مصر میں عمل میں آئی۔ (سیر اعلام النبلاء ص: ۱/۱۰)



﴿ ١٥ ﴾ ﴿ امام احمد بن صنبل ﴾

نام و نصب: نام احمد ، کنیت ابوعبدالله ، شجر و نسب بول بن ابوعبدالله احمد بن خنبل بن بلال بن اسد ابن اور لیس بن عبدالله بن حبال بن عبدالله بن اس بن عوف بن قاسط فر بلی شیبانی مروزی ثم بغد ادی _

و لادت باسعادت: ماه رئة الاول ١٢٠ اج كوبغداديس بيدابوع ايك قول كے مطابق آپ كى بيدائش "مرو" ميں بوئى بھر والد محتر مد بغداد لے آئيں - بجين بى ميں جب آپ تين سال كے تصوالدمحتر مكا ساريس سے اٹھ گيا۔ (البدايدوالنهايد ١٠/٤٥٠)

تعلیم و تربیت: بغداد بی میں پرورش پائی داضح رہے کہاں وقت علمی دنیا میں بغداد کا بہت اونچا مقام تھا ہوئے سے علاء وہاں موجود سے آں موصوف نے علاء بغداد کے سامنے زانو ئے تلمذ طے کیا اور جب سولہ سال کی عمر ہوئی مختلف شہروں میں جا جا کر وہاں کے علاء سے اکتساب فیض کیا ۔ کوفہ، بھر وہ، مکہ، مدینہ، یمن، شام، اور جزیر ، وغیر و کے اسفار کئے ۔ (البدایہ والنہایہ والنہ والنہایہ والنہ والنہایہ والنہ والنہ والنہ والنہ والنہایہ والنہ وا

ا صلقده: آپ کے مشہور شیوخ میں بشر بن المفصل ،اسائیل بن علیه ،سفیان بن عید ، سفیان بن عید ، سفیان بن عید ، جریر بن عبد الحمید ، کی بن سعید القطان ،ابو دا وُ دطیاسی ،عبد الله بن نمیر ،امام شأفی ،منذر وغیر ، آتے ہیں ۔

تسلامسند: امام بخاري، امام سلم، امام ابوداؤد، ابن مهدى، عبدالرزاق، ابوالوليد،

وكعي ،زيد بن بارون جيديكاندروز كارآ كي شاكردول مين بوع ـ (تهذيب العبديد الم

معصو علمه كالعقواف: آپ كن معصول مين تنيه بن سعيد، واؤد، يكي بن معين على بن المدين ، ابوحاتم رازى ، ابوزرعدرازى وغير ، جبال علم في آپ ك اختر اف علم وضل كرساته آپ سے روايت كى بے۔ (تہذيب البنديب الم 10/1)

ز مدووع: آپزہدوورع، تقوی وطہارت کی جیتی جاگی مثال تھے۔ایک دفعہ آپ کا ستاد محتر محضرت امام شافعی نے یمن کے منصب تضاء کے لئے تیار کیاتو کہنے لگے کہ بین آو آپ کے پاس اس لئے آیا تھا کہ آپ مجھے ایسے علم کی تعلیم دیں گے جس سے دنیا سے بہتی پیدا ہو گر آپ تو مجھے عہدہ تضامیر دکررہ ہیں پھر کہا بخد الرعلم کی بات نہ ہوتی تو آپ ہے بھی بھی ہمی بات نہ کرتا۔

ابو داؤد کہتے ہیں: کہامام احمر کی مجالس میں بھی بھی دنیا کا تذکر ہنہیں ہوتا تھا ان کی مجلسیں آخرت کی یا د دایا یا کرتی تھیں۔ (سیراا/199)

فقه واجتهاد: آپ نقد میں ہوئے فقیہ بہتے جاتے ہیں جی کے مستقل نقد نبلی اس وقت دنیا میں موجود ہے جس کے سرخیل آپ ہی ہیں۔ بعض حضرات نے آپ کو کبار محد ثین میں ثمار کیا ہے فقہاء میں نہیں۔ جسیا کہ علامہ ابن عبدالبر نے ''الانتقاء'' میں صرف انکہ ثلاثہ: امام ابو صنیفہ امام مالک اور امام شافعی کے تذکرہ پر اکتفاء کیا ہے۔ گراس کا یہ مطلب نہیں کہ ان حضرات نے آپ کی فقامت کا انکار کیا ہے بلکہ مطلب یہ ہے کہ فقہ کے مقابلے میں صدیث کا رنگ آپ پر زیادہ غالب تھا۔ گراس کے ساتھ آپ پر یہ بات بخو بی صادق آتی ہے کہ آپ بحد ثین میں ایک ہوئے فقیہ اور فقہاء میں ایک محد شہوئے تھے۔ صادق آتی ہے کہ آپ محد شہوں کے سے درفقہاء میں ایک محد شہوئے تھے۔ (تذکرة الحفاظ ۲ اس مام الحد ثین میں ایک ہوئے فقیہ اور فقہاء میں ایک محد شہوئے تھے۔ (تذکرة الحفاظ ۲ الم ۲ الم الحد ثین میں ایک ہوئے فقیہ اور فقہاء میں ایک محد شہوئے تھے۔ (تذکرة الحفاظ ۲ الم ۲ الم الحد ثین)

وفات: ستر (۷۷) سال يعريس ماه ريخ الاول ي باره تاريخ يروز جعد استع يوك

سفرة خرت برروانه و كئے _ (البدايه والنهايه ١٠٥٥)

ایک عجیب اقفاق: یہ بھی آپ کی ایک خصوصیت ہے کہ متعدد چیز ول میں آپ کو آگے خصوصیت ہے کہ متعدد چیز ول میں آپ کو آ آپ کو آنخضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے مشابہت ہے۔ مثلاً نام 'احمہ' ہے۔ بیدائش رئیج الاول میں ہوئی اور پھر اس تاریخ اور اس مہینہ میں میں بیٹے بھی ہوگئے۔ وفات بھی یائی ، نیز بچین ہی میں بیٹیم بھی ہوگئے۔

ابقلاء وآزمانش: اس میں کوئی شبہ نہیں کہ آپ کی پوری عمر کتاب وسنت کی تروی جو انتظاء وآزمانش: اس میں کوئی شبہ نہیں کہ آپ کی بوری عمر کتاب وسنت کی تروی وقتری کوئی مشقوں کا سامنا کرنا پڑا۔ جب قر آن کے مخلوق وغیرہ ہونیکا مسئلہ چھڑا تو آپ اپنے اس موقف پر کہ قر آن مخلوق نہیں ہے تا بت قدمی کے ساتھ جے رہے بلکہ اکھڑ ہے ہوئے قدموں کو جمادیا۔ چنا نچہ اس سلسلے میں تا بہت مظالم واحائے مگر پائے ثبات میں ورا نفزش نہ آئی۔ آپ کوئیل بھی جانا پڑا۔ مخالفین نے بہت مظالم واحائے مگر پائے ثبات میں ورا نفزش نہ آئی۔

علمي آثار: (۱) مسند احمد (۲) كتاب السنة (۳) كتاب الزهد (۳) كتاب الزهد (۳) كتاب الورع والايمان (۵) كتاب في علل الحديث (۲) كتاب الاشربة (۵) كتاب الناسخ والمنسوخ (۹) التفسير (۱۰) فضائل الصحابة.

مگران سب میں سب سے زیادہ اہم تھنیف ان کی کتاب''منداحم'' ہے خود امام ''احمر'' فرماتے ہیں کہ میں نے اس کو سات الکھ بچاس ہزار احادیث سے منتخب کیا ہے، (القول المسدد فی الذبعن منداحمہ)



﴿ امام رّنديٌ ﴾



نام مرہ بن سیا ہے ابوعیلی سلسلہ نب اس طرح ہے: ابوعیلی محمد بن میسی میں میں میں میں بن ضحاک سلمی ترفدی ۔ (سیراعلام النبلاء ۲۲۰/۱۳)

تاریخ پیدائش: اگر چسی طور برکس نے آپ کی تاریخ بیدائش نہیں کا صی مگراکش خضرات کا اس پراتفاق ہے کہ وفات وسی میں ہوئی اور علامہ ذہبی فرماتے ہیں کہ آپ کی عمر سر (۷۰) سال ہوئی اس اعتبار سے تاریخ بیدائش و تاجیم علوم ہوتی ہے۔

مولد ومسكن: آپ مقام رّ فد مين بيدا بوئ جي يون (جس كونبر بلخ بهى كتب بين) كيم ساحل پروا تع بها فظ ماوراءالنهر مين بيشتر يبى نبر مراد لي مئى بهكسى زماني مين بيشتر يبى نبر مراد لي مئى بهكسى زماني مين بيشتر يبى نبر مراد لي مين بيشتر كاره مين بيشتر يونبايت شاندار اور مشهور شهر تقاليكن اب صرف ايك قصبه كي حيثيت كاره مين بها به - (ظفر المحصلين ص ۱۲۳)

قحصیل علم: امام ترفدی جس دور میں پیدا ہوئاس زمانے میں علم حدیث اپنے شباب کو پہنچا ہوا تھا امام بخاری جیسے جلیل القدر محدث تشنگان علوم کی تشنگی کا سامان فراہم کررہے تھے آپ کو شروع ہی سے تحصیل علم کا شوق تھا۔ چنا نچہ طاب حدیث کے لئے مختلف علاقوں، ملکوں کا سفر کیا، بھر ہ، کوفہ، واسط، رے ،خرا سان اور حجاز میں برسوں زندگی گذاری۔ (ظفرص: ۱۳۵)، سیر)

اسساقده: امام بخاري، امام سلم على بن جرم وزيّ، تنيه بن سعيد مجمر بن بثار،

ابواسحاق ابراہیم بن سعید جو ہری ،بشر بن آ دم ، ہناد بن سری وغیر ہ بڑے بڑے بڑے حضرات سے آپوشن المند حاصل ہے۔

الطیفه: اگر چرام مرزی امام بخاری کے ماینا زشاگرد بیں اورا یک طویل زمانہ کان کی مصاحبت اختیا رکی ہے اور علم حدیث بی نہیں بلکہ تفقہ فی الحدیث بھی امام بخاری ہے سیکھا ہے۔ تا ہم بی شرف بھی ان کو حاصل رہا ہے کہ استاذ محر م امام بخاری نے خودان سے ساع حدیث کیا ہے اس طرح امام سلم بھی گوامام ترفدی کے استاذ بیں مگرانہوں نے بھی ایک روایت سے حسلم بیں امام ترفدی سے روایت کی ہے اوروہ یہ ہے: احسو العملال شعبان لومضان. (ترمذی باب ماجاء فی احصاء ھلال شعبان)

قسلامنده: حافظ عمر بن ملک فرماتے ہیں کیامام بخاری کے انتقال کے بعد امام تر فدی کے ہم پلیخر اسمان میں کوئی محدث ہیں تھا اس لئے ان کی فرات مرجع خلائق بن گئی ان کے تافدہ میں خراسان وتر کتان کے علاوہ دنیاء اسلام کے مختلف گوشوں کے حضرات ملتے ہیں۔ (یذکرة الحفاظ ۲۳۳/۲)

قتوت حافظه: آلموصوف كوجييرا يراع عد ثين ساستفاده كاموتى ملاويي بالمداداد وتحت حفظ بحى عطاء كالمحتمى علاء كالمحتمى على المحتمى علاء كالمحتمى علاء كالمحتمى علاء كالمحتمى علاء كالمحتمى على المحتمى المحتمى على المحتمى ا

واقعه: آپ کی قوت حفظ کا ایک مشہور واقعہ درت کیا جارہا ہے ام صاحب نے دو جزء کے بقدرا کی شیخ کے واسطہ سے حدیثیں تن تھیں ابھی ان کو پڑھ کرسنا نے کا موقع نہ ملا تھا کہ حسن اتفاق مکہ مکرمہ کے راستے میں ان سے ملا قات ہوگی امام ترفدگ نے اس موقع کو غنیمت جان کر قراءت اجزاء کی درخواست کی ۔ شیخ نے منظور کرلی اور کہا کہ اجزاء نکال لومیں پڑھتا ہوں تم مقابلہ کرتے جاؤ، امام ترفدگ نے اجزاء تاش کے وہ ساتھ نہ تھے بہت گھرائے بالآخر بیصورت سمجھ میں آئی کے دوسادہ کاغذ لے کرفرضی طور پر سننے میں مشغول ہو گئے شیخ نے بالآخر بیصورت سمجھ میں آئی کے دوسادہ کاغذ لے کرفرضی طور پر سننے میں مشغول ہو گئے شیخ نے

قراءت شروع کی اتفاق ہے شیخ کی نظران سادہ کاغذوں پر پڑگی، بہت ناراض ہوئے کہم میر انداق اڑاتے ہواس پرامام ترفدگ نے صورت واقعہ بتائی اور کہا کہا گرچوہ اجزاء میر سے ساتھ نہیں ہیں مگر جوئن رہا ہوں وہ لکھے ہوئے سے زیادہ محفوظ ہے۔ شیخ نے کہا کہ ساؤ آپ نے فرفر سنا دیا۔ شیخ کوخیال ہوا کہ شاید پہلے سے یا دہوں گی اس لئے یقین نہیں کیاا مام ترفدگ نے عرض کیا کہ آپ دوسری احادیث سناد بیجئے اورامتحان لے لیمئے شیخ نے اپنی خاص بالیس احادیث اور پڑھیں امام ترفدگ نے ان کو بھی صحت کے ساتھ دہرا دیا تب شیخ کوان کے حفظ کا معنی ہوا اور بہت تعجب کیا۔ (تہذیب العبذیب العبدیب العبد

وفات: امام ترفد گی کا نقال مشہور تول کے مطابق ۱۳ ارر جب شب دوشنبہ ایج اسے کو خاص ترفد میں ہا بینا ہو گئے تھے۔ خاص ترفد میں ہوا آپ کی عمر مبارک ستر (۵۰) سال ہوئی آخر عمر میں نابینا ہو گئے تھے۔ (ظفر جم ۱۹۲۵ البدایہ والنہائیہ)

آ پ کے من وفات اور مدت عمر کی نے اس شعر میں جمع کیا ہے۔
۲۷۹
الترمذی محمد ذو زین اللہ عطر وفاة عمره فی عین

تسسانیف: امام ترندگی پوری زندگی تصنیف و تالیف اور علوم بوید کی تشریخ و جری کی تشریخ میں بی گذری اور آپ کے قلم سے متعدد تصانیف نکلیں جن میں بطور خاص الجامع ہے جو سن ترندی کے نام سے مشہور اور صحاح ستہ میں واخل ہے۔ (۲) ای طرح المشمائل (۳) العلل الکبیر (۳) کتاب الزهد (۵) کتاب التاریخ (۲) اسماء الصحابه (۷) العلل الکبیر (۳) کتاب الزهد (۵) کتاب التاریخ (۲) اسماء الصحابه (۷) الاسماء والکنی، گرآپ کی تمام تصانیف میں جو شہرت سنن ترندی کو حاصل ہے وہ کی اور کو نہیں امام ترندی خود فرماتے ہیں کہ میں نے اس کو کمل کرنے کے بعد علاء تجاز و عراق اور علاء خراسان کے سامنے پیش کیاان سب حضرات نے اپنی پندیدگی کا اظہار کیااور امام محدوح علاء خراسان کے سامنے پیش کیاان سب حضرات نے اپنی پندیدگی کا اظہار کیااور امام محدوح

فرمایا کرتے تھے کہ جس گھر میں سنن تر فدی ہے اس گھر میں گویا آنخضرت صلی الله علیہ وسلم کلام فرمارہے ہیں۔(البدایہ والنہایہ)

اس کے ساتھ ساتھ سنن تر فدی اپنی بعض خصوصیات کی بنا پر دیگر سنن وجوا مع سے بعض چیز وں میں ممتاز ہوجاتی ہے (۱) تر تیب کی عمد گی اور تکرار کا نہ ہونا (۲) فداہب فقہاء کا بیان اور ہرا یک کا متدل (۳) احادیث پر صحت، حسن، ضعف، غرابت اور علت کا تکم لگانا (۳) راویوں کے نام مع القاب وکنیت بیان کرنا۔

سنن تر مذی کو بڑھنے والا ان خصوصیات کا احساس کئے بغیر نہیں رہ سکتا۔ ان بی وجو ہات کی بناء برعلاء نے کہا ہے کہ منن تر مذی مقلد ومجہد ہر دو کے لئے کافی وشافی ہے۔



﴿ الم م ابوداؤر ﴾

نام ونسب: نام سلیمان، کنیت ابوداؤد، سلمله نسب بول بے: ابوداؤد سلیمان بن اصعت بن اسحاق بن بشیر بن شداد بن عمر و بن عمر ان الازدی البحتانی _

سجستان: اس کے بارے میں مختلف اقوال ملتے ہیں گریا قوت محوی نے لکھا ہے کہ پیخرا سان کے اطراف میں ہوارس کو نجر بھی کہتے ہیں اور یہی صحیح بھی معلوم ہوتا ہے کیوں کے صاحب مجم علمی لکھتے ہیں: سجستان هی مدینة فی جنوب خواسان. (مجم البلدان ۱۹۰/۳)

ولادت: تیسری صدی بجری کے آغاز لینی استے میں آپ کی بیدائش ہوئی یہ بات بھی ذہن میں رہے کہ تیسری صدی بجری کا زمانہ تاریخ اسلام میں علمی حیثیت سے ایک او نچامقام رکھتا ہے۔

تحصیل علم: آپ نے جس زمانہ میں ہوش سنجاالاس وقت علم صدیث کا حلقہ بہت وسیع ہو چکا تھا آپ نے خصیل علم کی خاطر دور درا زعلاقوں کے اسفار کئے جن میں شام ، حجاز ، عراق ، خراسان اور جزیر ، بطور خاص قابل ذکر ہیں کہ ان علاقوں وملکوں میں آپ کے بکٹر ت اسفار ہوئے اور اس زمانے کے بڑے بڑے اساتذ ، وشیوخ سے علم حدیث حاصل کیا اور بغداد تو متعدد بار جانا ہوا حق کہ زندگی کا اکثر حصہ و ہیں گذر ااور و ہیں اپن سنن کی تالیف بھی کی اس کے بعدا مام احمد بن ضبل کے سامنے اس کو بیش کیا آپ نے اس کو بہت پند

کیا۔ امام ابوداؤر نے زندگی کے آخری ایام بھرہ میں گذارے جواس وقت علم وفن کے لحاظ ہے۔ مرکزی حیثیت رکھتا تھا۔ (تاریخ طبری ۴۸۱/۹)

اساقده: آپ کے اساتذه و ثیوخ کی فہرست طویل ہے البتہ آپ کے اساتذه میں (۱) امام احمد بن صبل (۲) عبد الله بن مسلمه (۳) ابوعمر والضریر (۴) مسلم بن ایر البیم (۵) سلیمان بن حرب (۲) یجی بن معین (۷) اسحاق بن راہویه (۸) مسدد بن مسر بد (۹) محمد بن ثنی جیسے ائمہ فن واضل ہیں۔ (تاریخ بغداد ۵۵/۹)

قلامن ایک جمع ہوتا تھا علامہ ذہبی نے تکھا ہے کہ ان کیلئے سب سے قابل فخر بات یہ ہے کہ امام براروں کا مجمع ہوتا تھا علامہ ذہبی نے تکھا ہے کہ ان کیلئے سب سے قابل فخر بات یہ ہے کہ امام بر فدی اور امام نسانی ان کے تافہ میں سے ہیں اور یہ بجیب اتفاق ہے کہ خود امام احمد بن ضبل تو آ کچا ساتذہ میں ہیں مگر امام احمد کے بعض اساتذہ نے امام ابوداؤ دسے روایت کی ہے خود امام احمد نے بھی حدیث عتیرہ ۔ ان سے روایت کی ہے، امام ابوداؤ دائر اس پر فخر کیا کرتے تھے ان کے علاوہ آ کچے بیارشا گر دجماعت محد ثین کے بیشوا اور سردارہوئے ہیں (۱) خودان کے صاحبز ادہ ابو کر بن ابی داؤد (۲) اولوی (۳) ابن الاعرابی (۳) ابن داسہ ۔ (ظفر انصلین صاحبز ادہ ابو کر بن ابی داؤد (۲) اولوی (۳) ابن الاعرابی (۳) ابن داسہ ۔ (ظفر انصلین صاحبز ادہ ابو کر بن ابی داؤد (۲) اولوی (۳) ابن الاعرابی (۳)

قددانس اسلاف: امام ابوداؤدائ زمانے کی بعض اصحاب روایت کی طرح بھے نظر بالکان ہیں تھے بلکہ ائمہ الل الرائے یعنی فقہاء کا بہت ادب واحر ام کرتے تھے بلکہ ان کی مسائی جمیلہ کونہایت قد رکی نگاہ ہے دیکھتے تھے۔علامہ ابن البراندلس نے بسند متصل ان سے نقل کیا ہے کہ کہ امام ابوداؤ دفر مایا کرتے تھے کہ اللہ تعالی امام شافعی پر رحمت نازل فرمائے وہ امام تھے۔اللہ تعالی امام ابوضیفہ پر رحمت نازل فرمائے کہ وہ امام تھے۔اللہ تعالی امام ابوضیفہ پر رحمت نازل فرمائے کہ وہ امام تھے۔اللہ تعالی امام مالک پر رحمت نازل فرمائے کہ وہ امام تھے۔(ظفر الحصلین ص ۱۲۵)

آپ کے فنصل و کمال کا اعتراف: آپ کے بارے میں اہر اہیم بن حرب جواس زمانے کے ہرے محدث میں فرماتے ہیں کے ابو داؤد کے لئے حق تعالی نے علم صدیث ایسازم کردیا تھا جیسا کے حضرت داؤ دعلیہ الساام کے لئے لوہازم کردیا گیا تھا۔ حافظ ابو طاہر نے اس مضمون کو لیند کر کے اس قطعہ میں اقلم کیا ہے:

لان التحديث علمه وكماله لامسام اهلسه السي داؤد مثل الذي لان الحديد وسبكه لسنبسي اهل زمسانسه داؤد

آپ کے ایک معاصر حافظ موتی بن موتی بن ہارون فرماتے ہیں کہ ابوداؤددنیا ہیں حدیث کے لئے اور آخرت ہیں جنت کے لئے بیدا کئے گئے ہیں میں نے ان سے افضال کسی کو نہیں دیکھا۔امام حاکم فرماتے ہیں کہ امام ابوداؤد بلا شک وشبہ اپنے زمانے میں محدثین کے امام سے۔(ظفر انصلین ص ۱۲۵)

وات: علم وفن كابية فابتبتر (٢٣) سال تك ابني على كرنول د نيا كومنور كرتا بوا ١٦ رشوال ١٥٥ م يروز جعه بصره كے ايك قبرستان ميں روپوش بوگيا۔ آپ كا مدفن امام نوري كے ببلوميں ہے۔ (معالم السنن ١٠/١)

تصانیف: متعدد کتابین آپ کی تصانف ہیں ، گران سب میں آپ کی سب سے زیاد ، مشہور تھنیف سنن ہے۔

سنن ابس داؤد کا مقام: اس میں تو کوئی شبہ بیں کہ محت کے لحاظ ہے سیجین کا مقام سنن اربعہ ہے بردھا ہوا ہے گر صیحین کے بعد کس کا درجہ ہے اس بارے میں مختلف اقوال ملتے ہیں، لیکن صاحب مفتاح السعادة نے لکھا ہے کہ سب سے اونچا درجہ سیجے بخاری کا ہے پھر سیجے مسلم اور تیسر سے درجہ پرسنن ابی داؤد آتی ہے۔ (ظفر الحصلین ص۱۳۲)

﴿ لَمَا اللَّهُ ﴿ لَمُ الْمُ اللَّهُ الْمُ اللَّهُ اللَّ

نام و نسب: احمرنام، كنيت ابوعبدالرحمٰن، سلسله نسب اس طرح ب: ابوعبدالرحمٰن احمد بن شعيب بن على بن بحر بن سنان بن دينارالنسائي _ (ظفر الحصلين)

مولد: آپ کی پیدائش ۱۳ میں مقام نساء میں ہوئی اس کی طرف منسوب کرتے ہوئے آپ کو نسائی کی بیدائش ۱۳ میں مقام نساء میں ہوئے آپ کونسائی کیا جاتا ہے، آپ نے عمر کی ابتدائی منازل یہیں طے میں اور یہیں بی کر جوان ہوئے ۔خراسان و ماوراء انہر کاعلاقہ علم وفن کے لحاظ سے بڑازر خیز ومردم خیز رہا ہے امام نسائی بھی اس فاک کے ایک مایہ تا زفر زند تھے۔ (سیراعلام الدبلاء ۱۲۵/۱۲)

تحصیل علم: اپشر کے بیشتر علاء سے ابتدائی تعلیم حاصل کی اور پھر عراق، جاز، شام مصر، جزیرہ، جاکروہاں کے مشاہیر علاء کرام سے اکتباب فیض کیا۔ (سیر ۱۲۷/۱۲)

مصد میں مستقل اظامت: آپ کوم کی آب وہوالیندآ گئی اور پھر وہاں کی آب وہوالیندآ گئی اور پھر وہاں کی آب وہوانے کہیں اور جانے نہ دیا چنانچہ وہیں مستقل سکونت اختیار کرلی آئی بناء بر آپ کی تصانف اس اطراف میں زیادہ تر پھیلیں۔ آپ کے چشمہ فیض سے بہت سے تشکان علوم نے اپن شکلی دور کی، آپ مصر کے جس محلہ میں رہتے تھے اس کو "زق اق القنادیل" کے عام سے جانا جاتا تھا۔ (سیر ۱۲۷/۱۲)، جم البلدان ۱۲۵/۱۲)

ا مساقدہ: آپ نے اساتذہ کی کثیر تعداد سے سائے کیا جن میں بطور خاص اسحاق بن راہو ریہ محمد بن نصر، علی بن حجر، یوس بن عبدالاعلی محمد بن بٹار، امام ابوداؤد سجتانی جیسے حفرات آپ کے اساتذہ میں داخل ہیں۔ نیز قتیبہ بن سعید کی خدمت میں آپ نے پندرہ سال کی عمر میں حاضری دی اور سلسل ایک سال دو مہینے ان کی صحبت فیض میں رہ کر استفادہ کرتے رہے۔ ای طرح بشام بن عمار ، علی بن خشرم ، سوید بن نفر ، احمد بن منبع ہے بھی آپ نے استفادہ کیا۔ (سیر۱۲۷/۱۲)

عمام حالات ذندگی: امام نسائی نے سنت نبویہ کی تروی کو اشاعت اور بدعت کی بیخ کئی میں اپنی زندگی صرف کردی ، بادشاہوں کی مجلس سے ہمیشہ گریز کیا اس کے باوجود فارغ البال سے، بہترین غذا کی استعال کرتے سے۔ مرغ پالیے اور خوب فر بہ کر کے کھاتے سے۔ (سیراعلام العبلاء ۱۲۸/۱۲۳)

زهد وتقوی: آپزہدوتقوی میں یکتائے روزگار تھے۔ صوم داؤدی بمیشدرکھا کرتے تھے، رجال کے بارے میں بہت زیادہ غور وخوش کرتے اور بہت ہی احتیاط ہے کام لیتے اس بناء پر کہاجا تا ہے کہ رجال کے بارے میں ان کی شرا نظام مسلم ہے بھی زیادہ بخت ہیں۔ اس طرح الفاظ میں غایت درجہ کا اہتمام کرتے چنانچا بیانہیں ہوسکتا تھا کہ "حدثنا" کی جگہ "اخبر نا" اور "اخبر نا" کی جگہ "حدثنا" کیددیں۔ بیان کے انتہائی ورع وتقوی کی علامت ہے۔ (سیراعلام العبلاء ۴۱/۱۲۸-۱۳۱ بظفر انصلین)

معاصد من کا اعتواف: علامہ ذہبی فرماتے ہیں کہ وہ علم کا کی سمندر تھے ہم وذکاوت، ذہانت وفطانت فن رجال میں مہارت تامہ بختلف مما لک اسلامیہ میں طاب علم کی فاطرا سفار کرنا اور پھر حفاظ صدیث کا کثرت ہے آپ کے پاس اکتباب فیض کے لئے آنا ہی افسار سیال کہ ان کے ان کے ان کا ہم پارٹہیں تھا۔ (سیراللبلا ہم اسلامات اسلامات کے ان کا ہم پارٹہیں تھا۔ (سیراللبلا ہم اسلامات کے اوال نقل نیز علامہ سیوطی، ابن کثیر اور ابن چر وغیرہ نے ان کی شان میں بہت سے علاء کے اقوال نقل کئے ہیں۔ (طبقات الحفاظ البدایہ والنہایہ تہذیب التبذیب)

قلا صفه: آب ك تاافره مين دنيا ءاسلام كمختلف علاقول كاوك يائے جاتے میں خلق کثیر نے آب سے استفادہ کیا کچھ تامذہ کے نام درن ویل ہیں: (۱) ابوبشر دوا ابی (٢) ابوجعنم طحطا وي (٣) ابوعلي نميثا يوري (٧) ممز ٥ بن محمد كناني (٥) سليمان ابن احمر طبر اني _ امام نسائی اور تشیع: الم نائی کی جانب یہ بات منسوب کی جاتی ہے کہ تشیع کی جانب آب کامیلان تھا حالانکہ بات الینہیں ہے دراصل بات بیتی کہ ملک شام میں خارجیت کا زور تھا حضرت علی کے مخالفین ہڑی تعداد میں موجود تھے تو آپ نے حضرت علی ا اورابل بیت کے فضائل پرمشمل ایک ' خصائص' 'نامی کتاب کصی تا کہ لوگ حقیقت کو پیچا نیس اور حضرت علیؓ ہے بغض رکھ کراپنی عاقبت خراب کرنے سے چی جائیں، چنانچہ اس کا سبب انبول في خود بيان كيائ ـ دخلت دمشق والمنحرف عن على بها كثير فصنفت كتاب الخصائص رجوت ان يهديهم الله. اورتشيع حرا بكاكونى واسط نہیں چنانچہ فضائل صحابہ کر آ ب نے'' فضائل الصحابہ'' نامی کتاب مکھی ہے جواس بات کا منہ بولتا ثبوت ب_ (سيراعلام النبلاء ١٢٩/١٢)

وفات: صفری تیرہ (۱۳) تاریخ سستھ پر وزبیر کوامام نسانی اس دار فانی ہے کوئی کر گئے مکان و فات میں مختلف اقوال ملتے ہیں مگر علامہ ذہبی نے سیراعلام العبلاء میں اس قول کرتے دی ہے کہ فلسطین کے شہر'' رملہ'' میں آپ کی و فات ہوئی ۔ (سیر ۱۳۳/۱۳۳)

قاليفات وتصنيفات: الم إنهانَّ نه النه يَحْفِكا فَى عَلَى وَثَيره بِحِورُ الهِ بَن من عهر كرابي حسب ويل بين: (1) السنن الكبرى (٢) خصائص على (٣) مسند على (٣) مسند مالك (۵) الكنى (٢) عمل اليوم والليلة (٤) اسماء الرواة (٨) فضائل الصحابة (٩) كتاب المدلسين (١٠) مسند منصور بن زاذان (١١) كتاب الضعفاء والمتروكين (١٢) اسماء الرواة والتمييز بينهم (١٣) النصعفاء والاخوة ما اغرب شعبة على سفيان وسفيان على شعبة (١٣) المجتبى المعروف به سنن نسائي.

گران سب میں جوشہرت الجتبیٰ (سنن نسائی) کوہوئی وہ دیر کتابوں کوہیں ہوئی۔

وجع قالیف: جب امام نسائی سنن کبری کی تالیف سے فارغ ہوئے وہ اس کوامیر رملہ کی خدمت میں چیش کیا امیر نے معلوم کیا کہ کیا اس کی تمام احادیث میں جیس آپ نے جواب دیا کنہیں بلکہ اس میں صحیح ،حسن اور ان کے قریب قریب درجہ کی روایات جیس اس پر رملہ نے کبا کہ آپ میر سے لئے ایک ایسا مجموعہ تیار کرد یجئے جس میں تمام روایات صحیح ہوں چنانچہ آپ نے سنن صغری تصنیف کی جس کوجتی ہیں ،اور 'سنن نسائی'' کے نام موں چنانچہ آپ نے سنن صغری تصنیف کی جس کوجتی ہیں ،اور 'سنن نسائی'' کے نام سے معروف ہے اور صحاح ستہ میں داخل ہے۔ (منا بھی کہتے ہیں ،اور 'سنن نسائی'' کے نام سے معروف ہے اور صحاح ستہ میں داخل ہے۔ (منا بھی المحد ثین ۱۳۰۲)

بعض حضرات نے اس کو (المجتبیٰ) کو ابن السنی کی تصنیف قرار دیا ہے جو امام نمانی کے شامر و بیں یعنی یہ کہ ابن السنی نے امام نمائی کی سنن کبریٰ کا اختصار کر کے اس کا نام المجتبیٰ رکھا ہے۔ گرامام نمائی کا خودا پنا بیان جو ان کے شاگر دابن الاحر نے نقل کیا ہے وہ یہ بتا تا ہے کہ یہ امام موصوف بی کی تصنیف ہے قول یہ ہے: کت اب السنن الکیری بعضہ معلول الا اندہ یبین کہ والمستخب المستنمی ''بالمعجتبی'' صحیح ۔ لین سنن کبری کا بیشتر حصیق صحیح ۔ بین سنن کبری کا بیشتر حصیق صحیح ہے ہاں بعض احادیث معلول ہیں ۔ البت ان کے معلول ہونے کو بیان کر دیا گیا ہے لیکن اس میں سے جوروایا ہے نتی بی گئی ہیں جو المجتبیٰ کے نام سے موسوم ہے وہ تمام ترصیح ہے اس میں سے جوروایا ہے نتی بی گئی ہیں جو المجتبیٰ کے نام سے موسوم ہوتا ہے کہ سنن کبری کا اختصار ابن السنی نے استا ذمحتر م کی نگر انی میں رہ کر کیا ہے اور اس طرح دونوں ہاتوں میں تطبیق ممکن ہے ۔ (ظفر الحصابین : ۱۵۵)

﴿٩﴾ ﴿امام ابن ماجه

نام ونسب: نام مرکنیت ابوعبدالله، عام کتابول میں دادا کانام بہل ہے، لیکن حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوگ نے اپنی کتاب بستان الحد ثین میں دادا کانام عبدالله تحریر کیا ہے۔ ابسلسله نب یول ہوگا: ابوعبدالله محد بن یزید بن عبدالله ابن ملجه الربعی ۔ (ظفر الحصلین) محاجه: اس بارے میں مختلف اقوال بین ایک قول بین کے دید آپ کی والد ، کانام ہے۔ شاہ عبدالعزیز صاحب نے بھی ' بستان المحد ثین' میں اس کو صبح قرار دیا ہے۔ مگر دوسری طرف شاہ صاحب نے عجالہ نا نعہ میں اس بات کی تصریح کی ہے کہ ماجہ آپ کے والد کا لقب ہے دادا کا نہیں اور مال کانام بھی نہیں ہے، محدث رافعی تاریخ قروین میں آپ کا تذکرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ ان کانام محمد بن یزید ہے اور ماجہ یزید کالقب ہے اور یہ ایک تاریخ قروین میں آپ کا تذکرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں کہ ان کانام محمد بن یزید ہے اور ماجہ یزید کالقب ہے۔ اور یہ اور یہ ایک کا م

حافظائن کثیر نے بھی البدایہ والنہایہ الم ۵۲/ میں نقل کیا ہے کہ ماہدیزید کاعرف تھا۔ نیز خودامام ابن ماجہ کے مشہور شاگر دحافظ ابوالحن بن القطان کا بیان موجود ہے جس میں وہ نہایت یقین کے ساتھواس بات کی صراحت کرتے ہیں کہ ماہد آپ کے والد کالقب تھا دادا کانہیں۔

ولادت: آپ کی والادت باسعادت و معنظ میں ایران کے شہر قزوین میں ہوئی۔ (سیر ۲۷۷/۱۳) اسفاد: امام ابن مائیہ جب اکیس باکیس سال کے ہوئے آپ نے مختلف ممالک اسلامیہ کے اسفاد کئے۔ جیسے خراسان ، حراق ، حجاز ، مصر ، شام اور مختلف شہروں مثلاً کوفہ بھر ، ، بغد او ، رہے ، مکہ ، ومثق وغیر ، بھی جانا ہوا۔ (ظفر الحصلین ، سیر ۲۲۹/۱۳)

اساقدہ: آپ نے بیٹاراساتذہ سے اکتساب فیض کیا جن میں سے علی بن محمد طنافسی، جبارة بن المعلس مصعب بن عبداللہ زبیری ، سوید بن سعید، ہشام بن عماروغیرہ بطور خاص قابل ذکر ہیں۔ (سیر۱۳/۲۷)

تسلامه و آپ کے شاگر دول میں محمد بن میسی ابہری ، ابوالطیب احمد بن روح بغد ادی ، ابوالحس علی بن اہر اہیم قطان ، علی بن سعید بن عبدالله عسکری ، ابراہیم بن دینار ، جرش مدانی وغیر ، بطور خاص قابل ذکر ہیں ۔ (سیر۱۳/ ۲۷۸)

علمه كاحسن اعتراف: علامه ذبين كلصة بيل باشبة پ ما فظ صديث، صدوق تصديزة پ وافر حصر ملاتها حافظ ابن كثير فرمات بيل كه ابسن مساجه صاحب السنن المشهورة وهى دالة على علمه وعمله و تبحره واطلاعه واتباعه السنن فى الاصول والفروغ. (البداية والنهاية الممال)

ا بن ظاكان لكص بين: كان اماما في الحديث عارفا بعلومه وجميع ما يتعلق به. (وفيات الاعيان٣٠٨/٣)

فقاهت: امام ابن ماجر ف محدث بی ندیتے بلکہ زیر دست فقیہ بھی تھے۔ حضرت شاہ ولی اللہ صاحب نے لکھا ہے کہ آپ کا میلان مسلک صبلی کی جانب تھا مگر علامہ انور شاء کشمیر کی فرماتے ہیں کہ آپ مسلک شافعی کی جانب میلان رکھتے سے بلکہ درجہ اجتباد پر فائز سے البتہ اتنا ہے کہ امام اسحاق بن راہویہ ابوعبیدہ ، ائمہ متبوعین میں امام احمر ، امام شافع پونکہ محد ثین میں شار ہوتے ہیں اس لئے ان کی جانب رجحان تھا اور یبی وجہ ہے کہ امام ابن ماجہ کے اقوال سے ملتے جلتے ہیں۔

وف ات: بروز بیر ۲۲ رمضان کوزندگی کی چونسٹی (۱۲) بہاری گذار کر سے ایج بین اس وارفانی ہے کوئی کر گئے۔ اورمنگل کوتہ فین عمل میں آئی (سیر ۱۳ /۱۲۵ متار ۱۳ /۱۲۵ متا کر ۱۹ /۱۲۸ میں آئی (سیر ۱۳ /۱۲۵ متار ۱۳ /۱۲۸ متا کر ۱۹ /۱۲۸ میں متعلق حافظ ابن کثیر نے البدایہ والنہایہ میں کھا ہے: ولا بن ماجة تنفسیر حافل. اس صراحت ہے بتہ چلتا ہے کہ یہا کہ شخیم تغییر ہے اس میں امام ابن ماجہ نے قرآن کی تغییر میں جس قدرا حادیث اقوال صحابہ وتا بعین مل سے بین ان سب کوبا السنادروایت کیا ہے۔

(۲)المتاریخ: اس میں دور صحابہ ہے لے کر دور مصنت تک کی تاریخ ہے۔ نیز اس میں با داسلامیداور راویان حدیث کے حالات قلمبند کئے گئے ہیں۔

(۳) السنن: امام ابن ماجہ کی ہوہ شہرہ آفاق تعنیف ہے جہ کا شار صحاح سے میں ہوتا ہے۔

مسنن اجن مساجه کا مقام: سنن ابن ماجہ کوصحاح میں شامل کرنے والے

مب سے پہلے شخص ابن طاہر مقدی اور اس کے بعد عبد الغنی مقدی ہیں پھر اکثر مصنفین نے

اس رائے سے اتفاق کیا اور صحاح ستہ میں اس کوشار کرنے لگے ورنہ تو پہلے مؤطا کو یہ مقام
حاصل تھا۔ (ظفر الحصلین) سنن ابن ماجہ میں کتب ستہ کی بنسبت ضعیف احادیث زیادہ ہیں

اس لئے اس کا درجہ صحاح ستہ میں سب سے بعد میں آتا ہے۔

مگراس کی بھی ایک وجہ ہے یہ مطلب نہیں ہے کہ امام ابن ماجہ اس پر قادر نہ تھے کہ وہ بھی دیر صحاح کے مؤلفین کی طرح کڑی شرا نظ کے ساتھ روایت الاتے۔ بلکہ وہ اس پر اچھی طرح قادر تھے گر اس کے باوجود اپنی شرا نظ کونرم رکھا مقصد یہ تھا کہ وہ روایات جو دوسری کتابوں میں چھوٹ گئی ہیں وہ روایات بھی آ جا کیں اور محفوظ ہوجا کیں۔ (ظفر الحصلین) تعداد روایات ابن ماجه: سنن ابن ماجہ کی کل روایات (۲۳۲۲) جن کا انتخاب امام موصوف نے الکھوں احادیث سے کیا ہے۔ (ظفر الحصلین ،سیر ۱۳۲۲)

﴿ الْمُ وارِي ﴾

نسام و نسب: نام عبدالله، كنيت ابوهم الله نسب يول ب: عبدالله الله عبدالرحمان بن الفضل بن بهرام الميمي الدارى السم قندى -

ولادت: الماج مطابق محاجئ كوآپ بيدا ہوئے اور اس سال ابن مبارك كا انتقال ہوا۔

اسے اسے اسے اور کے جن میں اسے میں اسے میں الکے اسفار کے جن میں حجاز ، شام مصر عراق ہزاسان بھی شامل ہیں۔

عدد منها بن مثال آپ ہے۔ فرانت ، بردباری ، وانشمندی ، عبادت وریاضت ، نبه مقصل نقد میں اپنی مثال آپ سے۔ فہانت ، بردباری ، وانشمندی ، عبادت وریاضت ، زبه وتقوی ، اجتہاد واستنباط میں آپ کی مثال دی جاتی ہے۔ یہی وہ اوصاف سے کہ جن کی بناء بر سمر قند میں آپ کے عہد و تقاء سپر دکیا گیا گرا زکار کردیا اس کے بعد سلطان وقت کے زیاد ، اصرار برآپ کو قاضی بنادیا گیا لیکن آپ کی طبیعت نے اس کو گوارہ نہ کیا اور صرف ایک فیصل دینے کے بعد استعفال دیدیا۔ (اعلام ۱۹۵/۴ میراعلام العبلاء ۲۲۸/۲۲)

علمه کا بیان ہے کہ وہ علم کی کا بیان ہے کہ وہ فرماتے ہیں کہ میں نے کی حمانی کے بارے میں امام احمد بن خبل سے دریافت کیاتو آپ نے جواب دیا جو کناہ لقول عبدالله بن عبدالوحمان لانه امام.

محمد بن عبدالله كتب بي كرعبدالله بن عبدالرحمان (امام داري)ورع وتقوى اور حفظ مين بم سب يرغالب آئے _ (سير /٢٢٦)

ای طرح محمد بن عبدالله مخر می فرماتے ہیں کہ جب تک عبدالله بن عبدالرحمال تمبارے درمیان موجود ہیں اس وقت تک تمبیں دوسرے کی طرف رجوع کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ محمد بن بٹار کہتے ہیں کہ حفاظ حدیث دنیا میں بیار ہیں جن میں سے ایک عبدالله بن عبدالرحمان سمرقندی (امام داری) ہیں۔ (سیرا / ۲۲۲)

اساقذه: (۱) یزید بن بارون (۲) یعلی بن عبید (۳) بعنم بن عون (۳) بشر بن عرائر برانی (۵) ابوعلی عبید الله بن عبداله بحید الله بن عبدالله بن عبدالله بن عبدالله بن عبدالله بن عبدالله بن عبدالله بن برا ابر به با بی در سیراعلام العبلا ۱۲۳/۲۲)

(۸) زکر یا بن عدی (۹) ابولغیم (۱۰) محمد بن یوسف الفر یا بی در سیراعلام العبلا ۱۲۲/۲۲)

قلامذه: آب سے ایک خلق کثیر نے استفاده کیا بڑے بڑ سے علما اور محمد ثین آب کے شاگر دول میں ہوئے ۔ (۱) امام مسلم (۲) امام ابوداؤد (۳) امام تر ذی (۳) محمد بن بنار (۵) عبد بن حمید (۲) حسن بن صباح جیسے یکتائے روزگار آپ کے شاگر دول کی فہرست میں آتے ہیں۔

وعات: هم التي ٢٥٨ يكو آپ كى وفات بوئى _ (الاعلام ٢٥٨) قصطانيف: آپ كى تصانيف ميں ()المسندفن حديث ميں ()الجامع التيح السمى لسنن الدارى ()الفيرعمدة تصانيف بيں _ (الاعلام ٢٥٨، سير اعلام اللبلاء ٢٢٨/١٢)



﴿ الله ﴿ امام دار قطني ﴾

نام بلى بن عمر بن الحسن، سامله نسب اس طرح بن على بن عمر بن احمد بن مهدى بن مسعود بن العمان بن وينار بن عبد الله دارقطنى شافعي _ (تاريخ بغد اداره) معدى بن مبدى بن معود بن العمان بن وينار بن عبد الله وينار وينا

علمی دحلت: آپ مرتشریف لے گئے وہاں ابن حنز ابدزیر کافور خشیری
نے آپ کی مند کی تالیف میں معاونت کی۔ اسکے بعد آپ بغدادوالی تشریف لے آئے۔
مختلف علوم وفنون میں معادت: علم حدیث کے ساتھ ساتھ دیگر
علوم وفنون میں کامل درجہ کی مہارت رکھتے تھے۔ آپ امام وقت اور یکتائے روز گارتھے۔ علل
حدیث کی معرفت۔ اساءر جال پر مہری نظر تھی۔ نیز راویوں کے احوال کی جانج پر کھا نتبائی
سیائی اور دیا نتداری کے ساتھ کرتے تھے۔ (تاریخ بغداد ۱۲/۱۲)

علمه کا حسن اعتواف: خطیب بغدادی کیتے ہیں کہ میں نے ان اوگول کو یہ کہتے ہیں کہ میں نے ان اوگول کو یہ کہتے ہوئے سا جنہیں علوم قرآن میں کوئی معرفت اور گہری دلچیق ہے۔ کہ امام ابوائحن (داقطنیؓ) سے پہلے اس راہ پرکوئی نہ چاا جس راہ کوامام داقطنیؓ نے اختیار کیا یعنی مختلف قراء تول کو باب درباب بیان کیا اوراس موضوع پر سب سے پہلے کتاب کھی۔ چنانچہ بعد کے تمام قراء آپ بی کے خوشہ چیس ہیں نیز ندا ہب فقہاء پر بھی آپ گہری نظر رکھتے تھے۔ (سیراعلام النبلاء آپ بی کے خوشہ چیس ہیں نیز ندا ہب فقہاء پر بھی آپ گہری نظر رکھتے تھے۔ (سیراعلام النبلاء

١١/٢٥٢، تاريخ بغداد ١١/٣٥٢)

رجاء بن محمد بن ميسى فرماتے بيل كه بيل في وارقطنى سے دريافت كيا كه كيا آپ في اپنے جيماكى كو پايا ہے۔ وارقطنى في مير برا منے يہ آ بت برجى: "فلا تسز كو النفسكم" الآية. (لين مقصدية تقاكه بيل اپنے بارے بيل كيے بتاؤل جبكة قرآن كافرمان به كه اپنے آپ كو پاكباز نہ مجھو)" رجاء "كہتے بيل كه بيل في كبار مير اير مقصد نبيل به كه ميل كي كبار مير اير مقصد نبيل به يك ميل كي اير اير شخص كے بارے بيل يه بيل كه واقطنى ميل كي ايك فول كه بيل كا اير فول بيل اير كه بيل كه بيل كه بيل كه بيل كه بيل وارت بيل وارت بيل وارت بيل اير ميان كه بيل كه بيل كه بيل وارد وارت بيل وارد ب

آپ کی ذهانت کا ایک عجیب واقعه: رجاء بن جمرانصاری کہتے ہیں کہا کہ دن ہم امام دارقطنی کے پاس بیٹے ہوئے تھا دروہ نفل نماز میں مشغول تھے پڑھنے والا حدیث کی قراءت کررہا تھا چنا نچہ ایک حدیث آئی جس میں نسیر بن دغلوق راوی کا ذکر تھا قاری نے کشیر بن دغلوق پڑھا۔ آپ نے بطور تعجب کہا: سبحان الله، قاری نے دوبارہ بشیر بن دغلوق پڑھا۔ آپ نے بطور تعجب کہا: سبحان الله کہا قاری نے تیسری مرتبہ سیر بن دغلوق پڑھا تب بن دغلوق پڑھا۔ آپ نے بھر سبحان الله کہا قاری نے تیسری مرتبہ سیر بن دغلوق پڑھا تب نے بھر سبحان الله کہا قاری نے تیسری مرتبہ سیر بن دغلوق پڑھا تب ہے چنا نچہ بھر قاری نے اس کو سیح کر کے نسیر بن دغلوق پڑھا۔ اس طرح کے اور بھی واقعات ہیں۔ (تاریخ بغداد تا اس کھی کر کے نسیر بن دغلوق پڑھا۔ اس طرح کے اور بھی واقعات ہیں۔ (تاریخ بغداد تا اس کھی کر کے نسیر بن دغلوق پڑھا۔ اس طرح کے اور بھی واقعات ہیں۔ (تاریخ بغداد تا اس کھی کے کا سیر اعلام النبلاء ۱۲ / ۵۵ سیر

اساقدہ: آپ کے اساتذہ کی بھی ایک طویل فہرست ہے۔مثلاً (۱) ابوالقاسم بغوی (۲) ابو بکر بن الی واؤو (۳) یکی بن صاعدی (۴) بدر بن البیثم القاضی (۵) احمد بن اسحاق بهلول (٢) يوسف بن يعقوب نيثا يورى (٤) عبدالله بن محمد بن سعيدا لجمال - قلا مبدون (٢) ابونعيم اصبها في (٢) ابو بكر الير قاني (٣) ابوالقاسم بن بشران (٣) معرده بن محمد بن طاهر (۵) عبد العزيز المازجي (٢) ابو بكر بن بشران (٤) قاضي ابو الطيب الطيري وغيره وغيره -

وعات: ١٨٥ه مطابق ٩٩٥ ع كابنداديس وفات مونى _

تصانيف: (1) السنن (٢) العلل الواردة في الاحاديث النبوية (٣) المحتبئ من السنن الماثورة (٣) المؤتلف والمختلف (۵) الضعفاء (٢) الحبار عمرو بن عبيد (العلام ١٦/٣٥/٣٠ ارتخ بغداد ١٢/٣٣٠ سيراعلام النبلاء ٢١/٣٩٨)



﴿ الْمُ الْمُ اللَّهُ اللّ

نام و نسب: نام احمر، کنیت ابو بکر، سلیله نسب بول ب: ابو بیکر احمد بن حسین بن علی بن موسی الخسر وجروی البیهقی.

مود ومسكن: ماه شعبان ٢٨٠٠ ه وخرويس بيدا بوع جونميثا بوريس بهق كنواح مين ايك كاوَل ب-

حصول تعلیم اور اصفار: آپ کی تربیت بین میں ہوئی ، یبیں رو کر مختلف علاء سے علم حاصل کیااس کے بعد حصول علم کے لئے بغداد، کوفیہ، مکہ اور دیر علاقوں کے اسفار کئے اور پھر نیٹا پور میں اقامت اختیار کرلی اور تا دم حیات و ہیں مقیم رہے ۔ بعد از و فات ان کی نعش مبارک بہت الذی گئی اور و ہیں تدفین عمل میں آئی ۔ (تذکرة الحفاظ اسلامی)

علمه کا حسن اعتراف: امام الحرمین فرمات بین که کوئی شافی ایمانین جس پرامام شافی کا حسان نه بوسوائے امام بیمی کے ۔ نیز فرمات بین که (اگریه کباجائے تو بین برامام شافی کا امام شافی پر یک گوندا حسان ہے، اس طور پر که امام بیمی نے امام شافی کے خدم ب کو بہت زیادہ کھا را ہے ۔ اور شافعیت کی تا نید بین بہت ساری کتابین تھنیف کی بین نیز فدمب شوافع کے خضر مقامات کی عمدہ شرح فرمائی اور امام شافی کی آراء کو داائل سے مبر بن کیا۔ (الاعلام ا/ ۱۱۱ ، تذکرة الحفاظ ۱۳۲/۳)

علامہ ذہبیؓ فرماتے ہیں کہا گرا مام بیہی میا ہے تومت قل ایک مسلک قائم فر ماسکتے تھے

اوروہ اس پر انجھی طرح قادر تھے کیونکہ ان کے پاس علوم کے ذخائر تھاور اختلاف علماء پر ممری نظر تھی۔ (الاعلام)

ا ساقنده: (۱) ابوانحسن محمد بن العسين العلوى (۲) ابوعبدالله ها کم (۳) ابوطا بر بن محمش (۳) ابو بر بن فورک (۵) عبدالله بن بوسف بن با نویه (۲) ابوعبدالرحمان السلمی (۷) ابوله محسین بن بشران (۸) ابن یعقوب المایا دی وغیره - (تذکرة الحفاظ ۱۱۳۲/۳۱)

تسلامند: (۱) شیخ الاسلام ابواسائیل انصاری (۲) ابوانحسن عبیدالله بن محمد (۳) اسائیل بن احمد (۳) ابوعبدالله الفراوی (۵) ابوالقاسم اشحامی (۲) عبدالجبار بن عبدالوباب (۷) عبدالحمید بن محمد (تذکرة الحفاظ ۱۱۳۲/۳۱)

و سات: ۱۹۵۸ میرمطابق ۹۹۴ کوامام بیمنی نے اس دار فانی کوالوداع کمبااور مالک حقیق ہے جاملے۔

تصانیف: آپک تصانف تقریباً ایک بزاری بی بی سے (۱) سنن کبری ارجی بی سے (۱) سنن کبری ۱۰ مارجلدی (۲) سنن صغری (۳) معارف (۴) الاسماء والصفات (۵) دلائل النبوة (۲) الآداب (۷) الترغیب و الترهیب (۸) المبسوط. آپک قاتل ذکر یا دگاری سے (۱۱۳۲/۳۱۱)



﴿الْمُ مِن يَنْ ﴾

نام رزین، کنیت ابوانحسن، سلسله نسب اس طرح ب: ابوانحسن رزین بن معاوید بن عمارالعبدری الاندلسی _ (سیراعلام النبلاء ۲۰۴/۲۰۰۰)

جانبے پیدائش: آپئر ٹُنطُ کے رہنے والے تھے جوانداس میں پڑتا ہا ت کی طرف نسبت کرتے ہوئے آپ کوئر ٹُنطِق بھی کہا جاتا ہے۔ (سیراعلام العبلاء ۲۰۵/۲۰)

مجلورت مکه مکرمه: ایک زمانه تک آپ مکه کرمه میں رہ بلکہ حرم کی میں مالکید کے امام تھے۔ صاحب اعلام نے آپ کو' امام الحربین' کھا ہے جس سے بعد چلتا ہے کہ حرم کی اور حرم مدنی دونوں میں امام رہ کے ہیں۔ (سیر اعلام العبلاء ۲۰۵/۲۰)

اساقذہ: مکدالمکر مدمیں ہی عیسی بن ابی فررسے سیم بخاری کی ساعت کی اور ابوعبد التہ طبری ہے سیم مسلم کی ساعت کی۔ (سیراعلام العبلاء ۲۰۵/۲۰)

علا صفه: تاضى حرم ابوالمنظفر محمد بن على طبرى (۱) ابن قد امه (۲) حا فظا بن عساكر (۳) ابوموى المدين _

قصعنیف: تجریدالصحاح۔اس میں آپ نے موطااور صحاح خسد کی روایات کوجمی کیا ہے اور علامہ ابن الا نیر نے بھی اپنی کتاب جامع الاصول کی تھنیف میں اس پر اعتاد کیا ہے۔(مقدمہ جامع الاصول ا/ ۲۹ میکوالہ سیر اعلام النبلاء ۲۰۵/۲۰)

و عنت: ۵۳۵ هے کو مکہ عمر مدمیں آپ کی و فات ہوئی۔ و فات کے سلسلہ میں ۵۲۲ اور ۵۲۵ کے اقوال بھی ذکر کئے جاتے ہیں۔ (حاشیہ میر:۲۰۵/۲۰) ایک ان ان ۵۲۵ کے ان ان ۵۲۵ کے ان ان میں م

﴿ ١١﴾ ﴿ الماران فريد ﴾

نام ونسب: نام مر، كنيت ابو بكر، سلسله نسب يول بن محمد بن اسحاق بن خزيمه بن المغير قابن صالح بن بكراسلمي الشافعي -

جائے بیدائش: ۳۲۲ھ مطابق ۸۳۸ کونیٹا پوریس آپ کی بیدائش ہوئی۔ وسعت علم: امام ابن خزیمہ اپنے زمانے میں نیٹا پورکی مسلم تخصیت کے حامل تھے۔محدث ہونے کے ساتھ ساتھ فقیہ اور مجہد بھی تھے۔ نیز وسعت علم اور رسوخ فی اعلم میں آپ کی مثال دی جاتی تھی۔ (سیراعلام العبلا بہ ۳۱۵/۱۳)

اسفاد: امام این خزیمہ فی طاب علم کے لئے عراق ، شام ، جزیر ، مصر وغیر ، کے استفاد ، کیا۔ علامہ کی نے آپ کوامام الائمہ کے لقب سے اور کیا ہے۔ (الاعلام ۲۹/۲)

علمه كاحسن اعتراف: محربن الموى كيتي بين كدري بن المان الم كت تصكه كياتم ابن فزيمه كوجائة الو؟ الم في كباجى بال! بحراآب في فرمايا كها بن فزيمه في المعاده كياو الوكام كيام المرام في ال ساس السي تعى زياده استفاده كيائي -

ابو على الحافظ: فرمات بين كه ابن فزيمه گوفقه معلق احاديث اس طرح يا تحيل جس طرح ايك قارى كوسورت يا دبوتى ب-

اساقذه: (۱) اسحاق بن را بويه (۲) محمد بن حميد (۳) محمود بن غيا ان (۳) عتب بن

عبدالله المروزی (۵) علی بن جمر (۲) احمد بن منبع (۷) بشر بن معاذ (۸) ابو کریب (۹) عبد البحار بن العالی و (۱۰) محمد بن بنار (۱۱) نفر بن علی (۱۲) محمد بن ابان (۱۳) یونس بن عبدالاعلی وغیر (۱۶ سیر اعلام النبلا ۱۲/۲۰ – ۳۲۵) وغیر (۱۶ سیر اعلام النبلا ۱۲/۲۰ – ۳۲۵) منارک مشارک عظام سے اکتباب فیض کیا ۔ (سیر اعلام النبلا ۱۲/۲۰ – ۳۲۵) منارک منارک منارک مناب المام بخاری (۲) امام مسلم (۳) محمد بن عبدالله (۲) احمد بن مبارک (۵) ابر البیم بن ابی طالب (۲) ابو حاتم البستی (۱بن حبان) وغیر (وغیر (سیر ۱۲/۲۳)) و هات: الاسم مطابق ۱۲۳ و کوفیت پورش آپ کی و فات بوئی ۔ و هات: الاسم مطابق ۱۳۰۹ و کوفیت بورش آپ کی و فات بوئی ۔ و مناب البی سید بیجی کافی علمی و خیر (مجبور المختلف علوم و فنون پر ایک موبیا لیس سے زیاد (۱ آب کی تصانیف بین جن میں سے "کتاب التو حید و اثبات صفته الرب" ہے ۔ سے زیاد (۱ آب کی تصانیف بین جن میں سے "کتاب التو حید و اثبات صفته الرب" ہے ۔

تعارف محجحا بن خزيمه

صحیح ابن خزیم آپ کی بلند پاید تصنیف ہاس کا دوسرانا م مختمر المختمر ہے تھے اس کا دوسرانا م مختمر المختمر ہے تھی استہار ہے اس کو سیح ابن حبان پر فوقیت حاصل ہے پھر بھی حافظ عادی فتح المغیث میں لکھتے ہیں کہ سیح ابن خزیمہ کی تمام احادیث سیح نہیں ہیں۔ سیح ابن خزیمہ کا تمین چوتھائی حصہ حافظ ابن جرکے وقت سے پہلے نایا ہو چکا تھا۔ ماضی قریب میں استبول کے ایک کتب خانہ میں اس کا ایک قلمی نے تحقیق وتعلق کے ساتھ بیار میں اس کا ایک قلمی نے تحقیق وتعلق کے ساتھ بیار جلدوں میں شائع کر دیا ہے جوب اب اباحة العمرة قبل الحج تک ہے باقی کتاب آت جمی نایا ہے۔



﴿الم ابن حبان ﴾

نام ونسب: نام محر، كنيت الوحاتم ،سلسله نسب يول ب: الوحاتم محر بن حبان بن معاذ بن معبد ابن سبيد بن مرة بن مرة بن سعد بن يزيد بن مرة بن زيد بن عبد الله بن دارم بن خطله بن ما لك بن زيد ابن هميم الميمي المستى _ (تذكرة الحفاظ ۲۲۲/۹۹)

عبد الله بن دارم بن خطله بن ما لك بن زيد ابن هميم الميمي المستى _ (تذكرة الحفاظ ۲۲۲/۹۹)

عوله: آب بحتان كا يكشر بست مي بيدا بوئ الى لئ آب والى ك طرف منسوب كرت بوئ بين كيا جات أوال خوال دخوال دخوال دخوال ادت كاذكر تذكره نويسول خيبين كيا ب منسوب كرت بوئ بين كيا جال بلند پاييمد شقة دومرى طرف ن تاريخ من بين بهي آب و كمال حاصل تقال عرب طرح فن جغرافيه مين بهي آب يدطولي ركعت تقد مين بهي آب يدطولي ركعت تقد رالاعلام ۲/۸۲)

است فار کے مثلاً خراسان، شام ہمر، مراق، جزیر ہوغیرہ۔

عمدہ قضاء بر مامورر ہے ال کے اور ہیں ایک وقت تک عہد و تضاء بر مامورر ہے ال کے بعد نیٹا پورتشریف لے گئے اور پھر اپنے شہر بست میں اوٹ آئے۔ (تذکرہ: ص ۹۲۲/۱، الاعلام: ص ۸/۷)

اعتراف علم وفضل: آپ كاشاران شخصيات مين كياجاتا ب جوكثرت تصانف مين مشهور بين، يا قوت كتي بين: اخرج من علوم الحديث ما عجز عنه

غيره. (الاعلام٢/٨٨)

اساقذه: حسين بن ادريس الهروى (۱) ابوخليطه الجي (۲) امام نسائي (۳) عمر ان بن موسى (۴) حسن بن مفيان (۵) ابو بكر بن خزيمه ـ (تذكرة الحفاظ ۲۰/۳۴)

تلامذه: (۱) حاکم (۲) منصور بن عبدالله خالدی (۳) عبدالرحمٰن بن مجمد (۳) ابو انحن محمد بن احمد بن بارون الزوزی (۵) محمد بن احمد بن منصورالتو قانی _ (تذکرة الحفاظ ۳/۹۲۱) و فنات: ماه شوال ۱۹۳۳ مطابق ۱۹۲۹ و آپ اپنشر بست میں بی ما لک حقیق سے حالمے _

تصلفیف: امام ابن حبال جیما که معلوم ہو چکائے کہ آپ کیٹر الصانف عالم ہیں جن کا میں الصحیح ہے۔ کہاجا تاہے کہ بین المسند الصحیح ہے۔ کہاجا تاہے کہ بین ماہدے بھی اسی ہے۔ تعارف صحیح ابن حیان

امام ابن حبال کثیر التصانف محدثین میں سے ہیں ان کی کتاب اا انواع والتقاہم کا دورانام سی ابن حبال کے رہان کی گرانقدرتالیف ہے جس کوانہوں نے عام محدثین کے طرزنگارش سے بہٹ کر بجیب طریقہ سے مرتب کیا ہے مثلاً کہتے ہیں المسنوع المسادس والا ربعون من القسم الثانی فی النواھی اس تر تیب جدید کی وجہ سے اس سے استفادہ وثور ہوگیا ہے محدث امیر علاء الدین ابوالحن علی فاری حنی متوفی سے سے دو اس کو ابواب فقہ پر مرتب کیا تھا اور اس کانام الاحسان فی تقریب سے ابن حجا بان رکھا تھا جس کی جلد اول محق فقہ پر مرتب کیا تھا اور اس کانام الاحسان فی تقریب سے جائن جو چک ہے۔ تھے کے معاملہ میں امام ابن حیث از کری تحقیق کے ساتھ وار المعارف قاہرہ سے شائع ہو چک ہے۔ تھے کے معاملہ میں امام ابن کی شرائط دوسر سے انتہ کے مقابلہ میں زم ہیں اس لئے حسن بلکہ ضعیف احادیث بھی ابن کی شرائط کے مطابق صحیح کی تعریف میں آ جاتی ہیں اس لئے اس کتاب کو اگر چہ حاکم کی المعدد رک برفو قیت حاصل ہے کیکن دیگر صحاح مجردہ کے ہم پاینہیں ہے۔

﴿١٦﴾ ﴿ امام حاكم صاحب متدرك ﴾

نام ونسب: نام محر، کنیت ابوعبدالله، عرف حاکم شجر، نسب یول ب: ابوعبدالله عمر بنت بالا عندالله عمر بن عبدالله بن عمد وبدا بن فیم الضی نیثا بوری - آ پ کاعر فی نام حاکم ہے اس نام سے آ پ کی شہرت ہے ۔ ابن البع سے بھی شہرت ہے ۔

ولادت: ماہ رہی الاول اسم کے خیثا پور میں آپ کی بیدائش ہوئی، ابتدائی تعلیم وہیں حاصل کی اسم میر میں عراق تشریف لے گئے اور فرید کے بھی ادا کیا۔

است السناد : حصول علم کی خاطر خراسان اور ماوراء انهر اوران کے علاوہ مختلف علاقوں کے اسفار کئے اورتقریباً دو ہزارا ساتذ ہے اکتساب فیض کیا۔

عدد قضاد: ۳۵۹ج میں نمیثا بورکے قاضی مقررہوئے ،اس کے بعد جرجان کا عبد اور کے قضاء آیے کے بعد جرجان کا عبد اور قضاء آیے کے سیر دکرنے کی کوشش کی گئی لیکن آیے نے انکار کردیا۔

حدیث دانی: علل صدیث میں آپ کومبارت تامہ حاصل تھی۔ صدیث کی تعت اور تقم کے پیچا نے میں آپ یوطولی رکھے تھے۔ (الاعلام ۲۲۷/۲)

علمه كا حسن اعتراف: ابو حازم كابيان ب كهي تقريباً تين سال ابوعبد الله العصى كے پاس رہا اور ميں نے اپنے مشائخ ميں ان سے زياده كى كوشفن (ما بر) نبيں پايا ليكن جب بھى ان كوكى بات ميں اشكال پيش آتا تو جھے فرماتے كه ابوعبد الله (حاكم صاحب متدرك) كوكھو چنا نچہ جب ان كا جواب آجاتا تب اس كا حكم فرماتے اور قطعى فيصله سناتے۔

(سيراعلام النبلاء ١١/١١)

ابن طاہر کہتے ہیں کہ میں نے سعد بن علی سے دریافت کیا ان میار ہمعصرول میں احفظ کون ہے یعنی (۱) دارقطنی (۲) عبدالغنی (۳) ابن مندہ (۳) عالم ،تو سعد بن علی نے جواب دیا کہ ' دار قطنی' علل حدیث میں مہارت رکھتے ہیں ' عبدالغنی' انساب کے ماہر ہیں۔ '' ابن مندہ'' احادیث کو اس کے مالہ وماعلیہ کے ساتھ ان سب سے زیادہ جانتے ہیں اور '' حاکم'' ازروئے تھنیف ان سب میں فائق ہیں۔

اساقدہ: آپ کے اساتذہ کی ایک طویل فہرست ہے جن میں سے پچھ حسب فیل ہیں:

(۱) امام حاکم نے اپنے والدمحتر معبداللہ بنجمدویہ ہے بھی روایت کی ہے۔ (۲) محمد بن علی (۳) ابوالعباس الاصم (۲) ابوجعنر محمد بن صالح بن بانی (۵) محمد بن عبداللہ الصفار (۲) ابوعبداللہ بن الاخرم (۷) ابوالصر محمد بن ہوسف علامہ ذہبی نے متعددا ساتذہ کا تذکرہ کر کے لکھا ہے: و ما زال یسمع حتی مسمع من اصحابه. (تذکرة الحفاظ ۲۰۳۹) مسمع من اصحابه. (تذکرة الحفاظ ۲۰۳۹) مسمع من اصحابه و تذکر الحفاظ ۲۰۳۹) ما ابوالعال الواسطی تسلامی و الله المام دارقطنی (۲) ابوالفتح بن الی الفوارس (۳) ابوالعال الواسطی (۲) ابولیعلی لیلی (۷) ابو بحمد بن یعقوب (۵) ابوذرالبروی (۲) ابولیعلی لیلی (۷) ابو بحرابیعتی ۔

ونات: امام حاکم جمام میں گئے اور خسل فرما کرجوں بی با برآئے زبان ہے' آء' کی آ وازنگی اورروح جسد عضری ہے پرواز کر گئی۔اس وقت آپازار (لنگی) پہنے ہوئے تھے قیص نہیں پہن رکھی تھی ،اس کے بعد قیص نہیں پہنائی گئی حتی کہ پروز بدھ بعد نماز عصر آپ کی قرین عمل میں آئی۔ آپ کی نماز جنازہ ابو بکر الحصیری نے پڑھائی۔ (سیر اعلام النبلاء مدن کرۃ الحفاظ ۱۰۳۵/۳)

تصانیف: ابن عساكر في كهائ كيقريباً ويره بزاركابيس آب كوبربار

قام تكلى جن مين سي كهي بين: (1) تاريخ نيشا پور (٢) المستدرك على الصحيح الصحيح الصحيح الشيوخ (٤) الصحيح الصحيح (٨) فضائل الشافعي (٨) تسمية من اخرجهم البخارى و مسلم (٩) معرفة علوم الحديث. (العلام للركل ٢٢٤/١)

تعارف محجح الحاسم المعروف بالمعدرك

امام حاکم کی شہرہ آ فاق کتاب المعدد رک ہے جس کا پورانا م المستدد ک علی المصحبحین ہے جس میں موصوف نے وہ احادیث جمع فرمائی ہیں جوامام بخاری وامام سلم اور دیر ائر کی شرا نظ کے مطابق صحیح تھیں اور انہوں نے اپنی کتب میں ان کوچھوڑ دیا ہے مگر امام حاکم تھیج حدیث کے سلسلہ میں ہوئے متسائل اور نرم واقع ہوئے ہیں انہوں نے نہ صرف صعیف ومکر بلکہ احادیث موضوعہ کو بھی صحیح قرار دینے کا کام انجام دیا ہے، جس کی بناء پر بعض محد ثین نے متدرک کی تمام احادیث کی صحت کا انکار کر دیا ہے مگریہ بات خلاف واقعہ ہے کو نکہ اس میں بہت می احادیث علی شوط الشیخین صحیح ہیں علامہ سیوطی نے تد ریب کو نکہ اس میں بہت می احادیث علی شوط الشیخین صحیح ہیں علامہ سیوطی نے تد ریب الراوی میں حافظ خس الدین ذہبی کا قول نقل کیا ہے کہ متدرک کی نصف احادیث بااشہ شیخین کی شرط کے مطابق صحیح ہیں اور ایک رائے احادیث کے دجال قائل استدال ہیں گران میں کوئی علت پائی جاتی جاتی احادیث کی تعداد دوسو سے زیادہ ہے ان پڑھل کرنا مناسب نہیں ہے۔ اور باتی ایک چوتھائی حصہ انہائی ضعیف، مکر اور موضوع احادیث پر مشتمل ہے۔ (مقدمہ درس ورندی ک

امام ذہبی متوفی (۲۸ کے استدرک کی تلخیص فرمائی ہے اور جا بجا حاکم پر سخت تعقبات کئے ہیں۔ تلخیص ذہبی کے ساتھ متدرک حاکم بیار ضخیم جلدوں میں پہلی بار دائر ق المعارف العثمانيد حيدرآ باددكن سے ٣٣٣ اله ميں شائع ہوئی تھی۔ المعارف العثمانيد حيدرآ باددكن سے ٣٣٣ اله ميں شائع ہوئی تھی۔

﴿ المصلى المقدى ﴾ ﴿ المام ضياء الدين المقدى ﴾

فام ونسب: ابوعبدالله ضاء الدين محمد بن عبدالواحد بن عبدالرحمن اسعدى المقدى ثم الدمشق الحسليلي ب-

ولادت: 219ھ مطابق سم <u>ال</u> بمقام دمثق آپ کی واادت ہوئی اس وجہ ہے دمشق کباجاتا ہے۔فقہ میں امام احمد بن منبل کے مقلد تھاس لئے منبلی کہااتے ہیں۔

است فور اند الدوم مر، فارس وغیر ، با دِاسلام کاسفر کیااور پانچ سوے زائد شیوخ سے روایت حدیث میں استفاد ، کیا، وشق میں انہوں نے دارالحدیث الضیائی کیام سے ایک مدرسہ قائم کیا تھا جس پر ساری کتابیں وقف کر دی تھیں۔ مختلف موضوعات پر آپ کی متعدد تصانیف ہیں۔

وهات: ۱۳۳۳ همطابق ۱۳۳۵ مرسال کی عربین آپ کاوصال ہوا۔ تعارف الحقاره

ضیاء الدین مقدی کی بلند پاید کتب میں سے الحقارہ ہے۔ اس کا ممل نام
"الاحدادیث الجید المحتارة ممالیس فی الصحیحین او احدهما" ہوافظ
ضیاء الدین المقدی نے اپنی اس اہم کتاب کوصحابہ کرام کی تر تیب پرحروف بہجی کے لحاظ ہے
مرتب فرمایا ہے لیکن حافظ مقدی اس کو پایئے بھیل تک نہ پہنچا سکے۔امام زرشی وغیرہ کی تحقیق
کے مطابق الحقارہ کا مقام تھجے میں امام حاکم کی المعدد رک سے بلند ہے تا ہم اس میں بھی غیر سیم
احادیث آئی ہیں اگر چاان کی تعداد انتہائی کم ہے۔

احادیث آئی ہیں اگر چاان کی تعداد انتہائی کم ہے۔

﴿ امام ابوعوانه ﴾



فام ونسب: نام يعقوب، كنيت الوعوانه، سلسله نب يول به: يعقوب بن اسحاق بن ايراميم بن يزيد، اسفرائن فيثا يورى _ (تذكرة الحفاظ ٢٥٩/٣)

است خار: تاریخ واادت معلوم نه ہوسکی۔ آپ نے طاب صدیث کے سلسلہ میں مختلف علاقوں کے اسفار کئے جن میں سے شام ،مصر، عراق ، حجاز ، جزیر ، یمن اور بلاد فارس وغیر ، قابل ذکر ہیں۔

مستقل اهامت: مختف مما لك اورشهرول كي المفاركر في كے بعد اسفر ائن ملامت القامت اختيار كرلى -اس وجد اسفر ائن كها التي بيں -

علمه كاحسن اعتراف: يا قوت فرماتين كما پكا ثارها ظاهديث من موتا به نيز علامه ذبين لكرتي بين كما پكا ورد يشوافع كافر بب اوران كى كما بين اسفرائن مين بيني ما قوت حوى في آپ كواحد حفاظ الدنيا كو قيع الفاظ يادكيا ي- (تذكره ٢٠/٣٠)

اسساقده: (۱) یونس بن عبداایاللی (۲)احمد بن اایا زبری (۳) علی بن حرب (۴) محمد بن یجی فیلی (۵) علی بن اشکاب وغیره _ (تذکره۳/۷۷۹)

تلامده: (۱)احمد بن على رازى (۲)ابوعلى نميثا بورى (۳) يجيل بن منصورالقاضى (۳)ابن عدى (۵)علامه طبرى _ (تذكرة الحفاظ ۳/۹۷۵ – ۸۷) وفات: السيم مطابق ٩٢٨ و كواسفرائن مين آپ ما لك حقيق عرالي - وفات: السيم مطابق ١٩٢٨ و كواسفرائن مين آپ ما لك حقيق عرب المصحيح المسند المخرج على صحيح مسلم" آپ كى عمر قصنيف ي - (الاعلام ١٩٢/٨)

تعارف مجح ابوعوانه

یہ کتاب دراصل میں مستخرق ہے۔ مستخرق اس کتاب کو کہتے ہیں جس میں کسی دوسری کتاب کی احادیث اپنی الی سند سے روایت کی جائے جس میں اس کتاب کے مصنف کا واسطہ نہ آتا ہو۔ چونکہ اس کتاب میں امام مسلم کی سند کے علاوہ دیر طرق واسانید سے روایات نقل کی گئی ہیں اس لئے اس کانام مستخرق ہے بلکہ اس میں قدر سے متون کا اضافہ بھی ہے۔ اس اعتبار سے گویا یہ مستقل کتاب ہے۔ میں اوعوانہ کی دوجلد یں عرصہ دراز قبل حیدر آباد دکن سے شائع ہو چکی ہیں امام ذہبی نے اس کی گئی سے فرمائی ہے جو "مستقی الذھبی" کے مشہور ہے۔ اس میں دوسوتمیں احادیث ہیں۔



﴿ المام ابن السكنَّ ﴾

نام ونسب: نام سعید، کنیت ابوعلی ،سلسله نسب بول ب: ابوعلی سعید بن عثمان بن سعید بن السکن البغد ادی _

قاريغ و لادت: آپ كى والات باسعادت ٢٩٢٠ مطابق ١٢٠٠ ي -

ميداد مغر مصنف: آپكاشارهاظ صديث ،بيدارمغزمصتفين اورعلاء

كالمين مين بوتا ب، صاحب "اعلام" في لكما ب: قبال بن نياصر الدين: كان احد الانمة الحفاظ والمصنفين الايقاظ. (اعلام ٩٨/٣، سيراعلام النبلاء ١١٤/١١)

پیشه: آپ تجارت کرتے تصاوراتی ہے اپنی زندگی کی ضروریات مہیا کرتے تھے۔
اسسف اد: آپ خصول علم کی خاطر مختلف اسفار کئے علامہ ذہبی لکھتے ہیں: نسزل مصر بعد ان اکثر التر حال ما بین النهرین نهر جیحون و نهر النیل ... جمع وصنف و جرح و عدل و صحح و علل. (سیراعلام العبلاء ۱۱/ ۱۱۷)

اعتسراف علم وضلل: آپ كالم وضل كابهى اوگول في اوبانا ب-چنانچه علامه ابن حزم آپ كى جى بهت تعريف كياكرت تصح جو" السمنت فى "كنام سے جانی جاتی ہے۔

اساقدہ: آپ نے مختلف اساتذہ سے اکتماب فیض کیا جن میں سے بچھ حسب ذیل ہیں: (۱) ابوالقاسم بغوی (۲) ابن الى داؤد (۳) ابوعروبه (۴) احمد بن عمیر (۵) سعید

بن عبدالعزیز جلبی (۲) محمد بن بوسف فر بُری۔

ملا صده: آپ کے تامدہ کی بھی ایک کیر تعداد ہے طلق کیر نے آپ سے استفادہ کیا۔ مثلاً (۱) ابوسلیمان بن زبیری (۲) ابوعبداللہ بن مندہ (۳) عبدالغنی الاز دی (۴) علی بن محمد الد قاق (۵) عبدالرحمٰن بن عمر بن النحاس (۲) عبداللہ بن محمد بن اسد القرطبی (۷) ابوجمنر بن عون اللہ (۸) قاضی ابوعبداللہ محمد بن احمد مُفرِّت ۔

و هنات: ما مجرم ١٩٥٣ هيمطابق ١٩٢٠ يؤمصر مين آپ کي و فات مونی ـ

تالیفات: اگرچآپ کی تالیفات کثیر ہیں جیبا کے صاحب ''ااعلام''کے بیان کے معلوم ہوتا ہے کان احد الائمة الحفاظ والمصنفین الایقاظ. (الاعلام ۹۸/۳)

مرآپ کی تالیفات میں ہے آپ کی تیج یعنی ''المنتقی'' کے علاوہ دیگر تالیفات کا علم نہ ورکا ۔علامہ ذہبی کھتے ہیں: جسمع وصنف ... ولم نسر تو الیف دھی عند المغاربة. (سیراعلام النبلاء ۱۱/۱۱)

تعارف مجح ابن السكن

اس کالورانام الصحیح المنتقی اور السنن الصحاح المانوره عن رسول الله صلی الله علیه وسلم ہے۔ یہ کن وف الاساد ہے۔ نودمؤلف نے کتاب کے بارے میں کھا ہے کہ میں نے اپنی کتاب میں جو کچھ مجملاً لکھا ہے وہ صحت کے اعتبار ہے مجمع علیہ ہے اوراس کے بعد جواحادیث ذکر کی ہیں وہ اتمہ کے مختارات ہیں اور جوروایت کس سے انفرادا فتل کی ہے اس کی علت اور انفر ادکوذکر کردیا ہے یہ کتاب زمانہ وراز سے نایا ہے۔



﴿ ٢٠﴾ ﴿ امام ابن الجارودِّ أوران كى كتاب "المنتقى" ﴾

نام ونسب: نام عبدالله، كنيت ابوهم اسلىلدنسب يول عدا ابوهم عبدالله بن على بن الجارود فيثا يورى _

تساریخ ولادت: تاریخواادت کے بارے میں علامہ ذہبی کھتے ہیں ولد فی حدود الشلالیسن و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ اللہ مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ آپ کی والادت و مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ اللہ مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ سے کہ اللہ مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ سے کہ اللہ مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ اللہ مائتین اس سے پتہ چلنا ہے کہ سے کہ

اعتواف علم وضعل: علامه فبن فرمات بين كم پاشار علماء واسخين في العلم من بوتاتها كان من العلماء المتقنين المجودين. ال كماتها مام مام اوردير من العلماء المتقنين المجودين. ال كماتها مام ما اوردير منزات ني بحل مرانى كى به - (سيراعلام النبلاء ٢٢٠/١٢٣)

اساقده: آپ کے اساتذہ کی ایک طویل فہرست ہے جن میں سے پچھ یہ ہیں:
(۱) ابوسعیدالا ہے (۲) حسن بن محد زعفر انی (۳) علی بن خشر م (۲) محمود بن آ دم (۵) زیاد بن ابوب (۲) ابوسعیدالا ہے (۲) عبداللہ بن باشم الطّوی (۸) احمد بن الماز بری (۹) احمد بن بوسف (۱۰) محمد بن کچی ذیلی (۱۱) ابن خزیمہ (۱۲) محمد بن الی عبدالرحمٰن المقری (تذکرة الحفاظ ۲۲۰/۱۲۸ میر۲۰/۱۲۸)

تلامذه: (۱) ابوحامد بن الشرقی (۲) محمد بن نافع الجزاعی انهی (۳) دیلج بن احمد النجری (۳) دیلج بن احمد النجری (۳) ابوالقاسم الطبر انی (۵) محمد بن جرئیل الجنی (۲) یجی بن منصورالقاضی وغیره۔

(تذكرة الحفاظ ۲۲/۹۴ ميرالنبلا ١٢٠/١٢٠)

تاريخ وفات: عوسيم طابق ٩٢٠ كومكة المكرّمة مين آپ كى و فات بونى ـ -ير١٢/ ٢٨٠ ، تذكرة الحفاظ ٢٣/ ٢٩٧ ما المام ١٠٢/ ١٠٠)

قالیف: "السمنت فی السنن" یه کتاب احکام میں ہے۔علامہ فرجی فرمات بی کیسوائے دویا راحادیث کے اس کی روایات حسن کے درجہ سے منہیں ہیں۔

المنتقى فى السنن مجلد واحد فى الاحكام لاينزل فيه عن رتبة الحسن ابدا الا فى النادر فى احاديث يختلف فيها اجتهاد النقاد. (سيراعام النبل ١٣٩/١٣٠)

اس كتاب كابورانام المستقى من السنن المسندة عن رسول الله صلى الله عليه وسلم فى الاحكام بيركاب دراصل ميح ابوعوان كي متخرق بيرسي آخوسوا حاديث كقريب بيل ابوعم واندلى في "الموتقى فى شوح المنتقى" كام ساس كى شرح بهى كسى ب



& r1

الامام الاعظم ابو حنيفة النعمان عليه الرحمة و الرضوان

المولود ١٨٠٠. المتوفى ١٥٠ع

فضائل امام ابوحنيفيه

منداحمر میں سند کے ساتھ بیالفاظ تقل ہوئے ہیں: "ولو کان العلم بالشویا لتناوله ناس من ابناء فارس" الرعلم ریا میں بھی ہوتو فارس کے لوگ اسے پالیس گے۔
حافظ ابن جمری نے فیرات الحسان میں حافظ جلال الدین سیوطی کے بعض تا المہ ہ سے نقل کیا ہے ہمارے استاذ (جلال الدین سیوطی) نے یقین کیا ہے کہ اس حدیث سے امام ابو حنیفہ ہی مراد ہیں۔ کیوں کہ یہ بات بالکل عیاں ہے کہ امام اعظم ابو حنیفہ کے زمانے میں اہل فارس میں ہے کوئی بھی امام صاحب کے علمی مقام اور فتیں قدرومز لت کوئیں بہو نچ سکا۔ اور آپ میں ہے کوئی بھی امام صاحب کے علمی مقام اور فتیں قدرومز لت کوئیس بہو نچ سکا۔ اور آپ قارس میں ہے کوئی بھی امام صاحب کے علمی مقام اور فتیں قدرومز لت کوئیس بہو نچ سکا۔ اور آپ قارت میں کہ آپ کے تا ہذہ کا مقام بھی کوئی نہ پا سکا۔ اس تذہ وطلبہ علم حدیث یہ بات جانے ہیں کہ اکثر ائر فن اور اسا تذہ وشار صین حدیث نے حضور اقد سلی اللہ علیہ وہلم کی اس جانے ہیں کہ اگر ائر فن اور اسا تذہ وشار صین حدیث نے حضور اقد سلی اللہ علیہ وہلم کی اس بیشین گوئی کا صحیح مصد اق حضر ت امام اعظم ابو حنیفہ کوقر اردیا ہے۔

تبید ض الصحیفه مین علامه جلال الدین سیوطی نے تر رفر مایا ہے کہ فھذا اصل صحیح یعتمد علیه فی البشارة. بثارت میں بدروایت اصل صحیح اور قابل اعتماد ہے۔ سیرت شامیہ کے مصنف علامه حافظ محمد ابن یوسف شامی نے بھی جلال الدین سیوطی

ہے بہی نقل کیا ہے۔

السراج المنيو مين اكار اللهم اورائمه مديث ينل كيا كيا كي حمله بعض المحققين في الله ومنية يربعض محققين في الله ومنية يرمول كيا ي -

چنانچ خیرات الحسان میں علامه این جربیٹی ہے منقول ہے کہ: فیده معجزة ظاهرة للنب صلی الله علیه وسلم اخبر بما سیقع. اس میں حضوراقد سلی الله علیه وسلم اخبر بما سیقع. اس میں حضوراقد سلی الله علیه والی بات کا پیتادیا ہے۔ کما مجز ، ہے کہ آپ نے ہونے والی بات کا پیتادیا ہے۔

محدث جليل علامه حافظ عبدالعزيز بن ميمون كى روح جمنيمور كريكار بى بمن بمن العضه فهو مبتدع. جوابوطنيف محبت ركات بهده الحسب اباحنيفة فهو سنى ومن ابغضه فهو مبتدع. جوابوطنيف محبت ركات بهده سن باورجو آب سي بغض ركات بوه برعتى بلح

لقد زان البلاد من عليها امام المسلمين ابو حنيفة بآثار وفقه في حديث كآثار الزبور على الصحيفة فما في المشرقين له نظير ولابكوفة له

قرجه: امام المسلمين امام اعظم ابوطنيفه في شهرول كوزينت بخشى اورشرول ميس زندگي گذار في والله الوگول براحسان كيا-

ل دفاع امام ابو حنيفة: ص٥٦/ تا ٢٠.

ل اخبار ابی حنیفة واصحابه لصمیری: ص ۹۰ (بحواله دفاع ابو حنیفة: ص ۳۹)

یعن آٹاری رویج ، فقد کی دلنشیں تشریح فرمائی ، جیسا کہ محیفہ میں زبور کی آیات جڑی ہوئی ہیں۔ ہوئی ہیں۔

چنانچہ ان کمالات کی وجہ سے نہ تو مشرق میں ان کی مثال ملتی ہے اور نہ مغرب و کوفہ میں ان کی نظیر یائی جاتی ہے۔

از: امير المؤمنين في الحديث امام عبدالله بن مباركً

شرف تابعیت: امام اعظم نے (رسول الله اکرم ملی الله علیه وسلم کے خادم خاص) صحابی جلیل حضرت انس بن ما لک رضی الله تعالی عنه کی متعدد بارزیا رت کی لیے

اسلقده كوام: محربن يوسف صالحى شافعی في عقود الجمان بح ١٨٢مين بيان فرمايا به كده مربن يوسف صالحی شافعی في عقود الجمان بح ١٨٢مين بيان فرمايا به كده مربن شراح الله تعالى سے علم حاصل كيا به اما ابو حنيفة كر بر ساستاذ علامة التابعين عامر بن شراحيل الكوفى الشعى رحمة الشعليه بي ، جنول في في في حواصحاب النبي صلى الله عليه وسلم كازمانه يا يا ينج

ای طرح حضرت عطاء بن ابی رہائے ہے بھی علم حاصل کیا ہے جنہوں نے دوسو سحابہ سرام رضوان الله علیم الجمعین کو پایا ہے۔

قلامذہ: ایک جم غیراور بہت ہڑی جماعت امام صاحبؒ کے شاگر دول کی ہے۔ اصالحیؓ نے عقو دالجمان میں فرمایا ہے کہ امام صاحبؒ کوا یسے شاگر دمیسر آئے جوان کے بعد کسی امام کومیسر نہیں آئے۔ (عقو دالجمان ص۱۸۳)

ا مام اعظم ابو حنیفہ کے شاگر داور فیض یا فتہ حضرات او نیچے درجہ کے محدثین بلکہ جلیل القدر محدثین کے اساتذہ میں سے ہیں، بلکہ اصحاب صحابِّ ستہ امام بخاری، امام مسلم، امام

إ تبييض الصحيفة: ص٢.

ع تذكرة الحفاظ: ص 24 تا ١/٨١.

ح تهليب التهليب: ص٠٠٠).

ترفذی،امام ابو واؤو،امامنانی،امام ابن ماجہ رحمہم اللہ تعالیٰ کے اساتذہ ومشائخ میں ہے ہیں۔
امام کی بن ابر اہیم امام ابو حنیفہ کے شاگر داورامام بخاری کے استاذہیں۔
امام بخاری نے اپنی ضیح کی ۲۲ اللہ ثیات میں سے گیارہ امام کی کی سند سے روایات کی ہیں۔ گویا امام بخاری کو اپنی ضیح میں عالی سند کے ساتھ اللہ ثیات ورت کرنے کا شرف امام ابو حنیفہ کے تامذہ کا صدقہ ہے۔امام بخاری کی اسانید میں اکٹر شیوخ حنی ہیں۔ بلکہ جن شیوخ کی وجہ سے صحاح ستہ کی محارت قائم ہے ان میں سے اکٹر حضر ات علم حدیث میں امام شیوخ کی وجہ سے صحاح ستہ کی محارت قائم ہے ان میں سے اکٹر حضر ات علم حدیث میں امام

صاحب کے بالواسط یا بلاواسط شاگرد ہیں۔ آپ کے شاگر دوں میں ۲۸ رقاضی ہونے کے الائق اور بردی تعداد میں مفتی ہونے کی اہلیت رکھتے تھے۔

امام ابو صنیفہ کے تامذہ میں مشہور محدثین اور فقہاء جوا کثر ملازم حلقہ رہا کرتے تھے۔ حافظا بوالحن شافعیؓ نے ان کی تعداد نوسواٹھارہ (۹۱۸) کلھی ہے جیسا کی طحطا وی کے حوالہ سے ردا محتار میں ہے کہ مذوین فقہ کے وقت ایک ہزار علاء امام ابو صنیفہ کے ساتھ تھے جن میں بیالیس حضرات درجۂ اجتہاد پر فائز تھے۔

ابومطیع نے امام ابوحنیفہ کا ارشاد نقل فرمایا کہ میں امیر المومنین ابوجعفر کے پاس گیا،
انہوں نے مجھ سے فرمایا، اے ابوحنیفہ! آپ نے علم کن حضرات سے حاصل کیا، میں نے کہا
حماد سے، انہوں نے اہر اہیم سے انہوں نے عمر بن الخطاب، علی ابن ابی طالب، عبداللہ بن

ل دفائ الم ابوطنيفة: ٢ عار

مسعود، عبدالله بن عباس رضوان الله عليهم الجمعين سے علم حاصل كيا۔ يدس كرابوجعنر في فرمايا، واه واه اے ابوصنيف آپ نے جوبا باس كومنبوط بكر ليا۔ يدسب باكيزه طابر ومبارك حضرات بين، ان برالله ياك كى حمتيں بول۔ (تاريخ بغد اد: ص ١٣/٣٣٣)

کی ابن ایرا ہیمؓ نے ارشادفر مایا ،ابو صنیفہ اپنے الل زمانہ میں سب سے زیاد ،علم والے تھے۔(تاریخ بغداد:۱۳/۳۴۵)

حسن بن زیاد نے فرمایا، امام (ابوحنیفه) بیار ہزار حدیثیں روایت فرمات تھ، دوہزار حماد سے اوردوہزار (دیگر) تمام مشائخ ہے۔ (مناقب ابی حنیف کلموفق المی بص ۸۵) اورامام ابوحنیفه نے کتاب الآ ٹارکو بیالیس ہزار احادیث سے منتخب فرمایا۔ (مناقب الی حنیف کلموفق بص ۸۸)

فقه میں اصام اعظم تکا مرقبه: وکیج بن الجراح (استاذامام شافی) نے فرمایا: میں نے کسی ایسے خص سے ملاقات نہیں کی جوابو صنیفہ سے زیادہ فقیہ ہواور ندا ہے شخص سے جوان سے زیادہ بہتر نماز بڑھنے والا ہو۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۲۵)

حضرت امام شافعی نے فرمایا جو محض فقہ کی معرفت حاصل کرنا میا ہے اسے بیا ہے کہ ابو حنیفہ اور ان کے شاگر دوں کو امازم پکڑ لے۔اس لئے کہ لوگ تمام کے تمام فقہ میں ان کے عیال ہیں۔(تاریخ بغداد بص ۱۳/۳۴)

ان کاریجی ارشاد ہے: جو محض امام ابوحنیفہ کی کتابوں کو نہ دیجے اس کو علم میں تجمر حاصل نبیں ہوسکتا نہوہ فقیہ بن سکتا ہے۔ (عقو دالجمان جس ۱۸۷)

الصالحیؓ نے (عقودالجمان: ص ۱۸) میں ذکر فرمایا ہے کے سب سے اول امام ابو حنیفہ ّ نے فقہ کو مدون کیا اور اس کو باب درباب مرتب کیا، پھر مؤطا کی تر تیب میں امام مالک بن انس نے آئیں کی بیروی کی، (اس میں) امام ابو حنیفہ پر کسی نے سبقت نہیں کی۔ امام ابوصنیقہ نے اللہ تعالی اور اس کے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اور مسلمانوں کی فائص خیر خواجی میں مبالغہ کی وجہ سے اپنے ندہب کی تدوین کے لئے شور کی قائم فرمائی۔ تنبا اپنے اجتباد سے کام نہیں لیا شور کی کے درمیان ایک ایک مسلم زیر بحث ایا جاتا ، اہل شور کی کے باس جو دااکل ہوت امام صاحب ان سے ان کا سوال فرمات اہل شور کی اپنے اپنے دااکل بیان فرمات ، ہر ہر مسلم میں ایک ایک مبینہ یا دااکل بیان فرمات ، ہر ہر مسلم میں ایک ایک مبینہ یا اس سے بھی زیادہ (مدت تک) مناظرہ فرمات کے اور روشن جرائے سے زیادہ روشن وواضح دااکل بیان فرمات ورعل عالم البو یوسف اس کواصول (کی دااکل بیان فرمات اور علاء کاملین کے قبول کر لینے کے بعد امام ابو یوسف اس کواصول (کی دااکل بیان فرمات فرمات ، پس جب بیا ہتمام کیا گیا ہوتو جو خد بہ انکہ کرام کی شور کی کے مدون کیا ہو وہ زیادہ بہتر اور زیادہ درست ہوگا، اور در تکی واستقامت اور صحت کے زیادہ قریب ہوگا، اس خرب کے مقابلہ میں جس کو تباکی فخص (امام) نے وضع کیا ہو، اور اس میں صرف اپنی رائے پر بی اعتاد کیا ہوزیادہ عمرہ اور باعث اطمینان ہوگا اور اس کی طرف دلوں کا میان بھی زیادہ ہوگا۔ (مناقب ابلی صنیف للکر دری: ص کے)

امام ابوطنیفہ نے الکول منظے مدون فرمائے، ان کی شیخ تعداد کے بارے میں اقلین کا اختااف ہے، کم ہے کم روایت تین الکھائی ہزار (۲۸۰۰۰) کی ہے، ان میں ارتمیں بزار عبادات میں اور باقی معاملات کے متعلق ہیں۔ (راجع منا قب ابی حنیفہ للکر دری :ص۱۲۲) عمل و ذکاوت: یزید نے فرمایا: میں نے ابو حنیفہ سے زیادہ نہ کوئی پر ہیزگارد کی صاحت کے مقابلہ کا دری کھا کے متعلق کا دریکھا کے متعلق کے دیا دہ نہ کوئی پر ہیزگارد کی سے متعلق کے دیا دہ کوئی پر ہیزگارد کی سے متعلق کے دیا دہ کوئی پر ہیزگارد کی سے متعلق کے دیا دہ کے دیا دہ کوئی پر ہیزگارد کی سے متعلق کے دیا دہ کوئی پر ہیزگارد کی سے متعلق کی بر ہیزگارد کی سے متعلق کے دیا دیا کہ کی سے متعلق کے دیا دیا کہ کوئی پر ہیزگارد کی سے متعلق کے دیا دیا کہ کی سے متعلق کے دیا دیا کہ کی سے کہ کی سے متعلق کے دیا کہ کی سے کو کہ کی سے کر سے کہ کی سے کی سے کر سے کی سے کہ کی سے کہ کی سے کی سے کہ کی سے کہ کی سے کہ کی سے کر سے کی سے کر سے کی سے کر سے کر سے کی سے کر سے کر سے کی سے کر سے کر

امام ما لک بن انس سے کہا گیا ، کیا آپ نے ابو صنیفہ کودیکھا ہے؟ فرمایا: ہاں۔ میں نے ایسے شخص کودیکھا ہے اگر وہ تجھ سے اس ستون کوسونے کا ثابت کرنے کے سلسلہ میں

ا مطب بیہ کہ عام سائل میں تین روز اور مشکل و پیچیدہ سائل میں بعض میں ایک ہفتہ اور بعض میں ایک ہفتہ ہو ایک مختہ اور بعض میں ایک ہفتہ ہے تھی زیادہ مدے تک مباحثہ کی نوبت آتی ۔

گفتگو کرے تو وہ اس پر ججت قائم کردے۔ (اور اس کوسونے کا ثابت کردے) (تاریخ بغداد بص ۱۳/۳۳۸)

عبسادت: سفیان بن عیدیدً نے فرمایا: ہمارے وقت میں مکہ میں کوئی شخص امام ابو حنیفہ سے زیادہ نماز ریڑھنے والانہیں آیا۔ (تا ریخ بغداد:ص۳۵۳ سے ۱۳/۳۵۳)

ابو مطیع نے فرمایا: میں مکہ میں مقیم تھا، میں رات کے کسی حصہ میں طواف میں واخل نہیں ہوا مگرا مام ابو حنیفہ اور سفیان کو طواف میں دیکھا۔ (تاریخ بغداد:ص ۱۳/۳۵۳)

ابو عاصم انبیل نے فر مایا: امام ابو حنیفہ کو کشرت صلوۃ کی وجہ سے وقد (میخ) کہا جاتا تھا۔(تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۵)

حفص بن عبدالرحمٰنَ نے فرمایا: امام ابوحنیفہ تمیں برس تک ایک رکعت میں قر آن یاک پڑھنے کے ساتھ شب بیداری فرماتے رہے۔

خوف وخشیت: یزید بن الکمیت فرماتی بین که مام ابوطنیفه الله تعالی بهت زیاده خوف کرنے والے تھے۔ (ایک دفعہ) علی بن الحسین الموذن نے عشاء کی نماز میں الذا زلزلت النح بڑھی امام ابوطنیفه ان کے پیچھے تھے، جب نماز بوری ہوگئ اوراوگ نکل گئے میں نے امام ابوطنیفہ کود یکھا فکرمند بیٹے بیں اور لیے لیے سانس لے رہے ہیں۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۵۷)

قاسم بن معن فض فرمایا: امام ابوطنید فی ایک بوری دان اس آیت برگذاردی "بَلِ السَّاعَةُ مَـوُعِـدُهُـمُ وَالسَّاعَةُ اَدُهیٰ وَامَوْ" اس کوباربار پڑھ دہے ہیں اور آ ، وزاری کردہے ہیں۔(تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۵۷)

وکیج نے فرمایا: خدا کی تم امام ابو حنیفہ کر سے امانت دار تصان کے دل میں اللہ تعالی کی بہت زیادہ برائی اور بررگی وعظمت تھی ،اپنے رب کی خوشنودی کو برشی برتر جی ویتے تھے،

اگر الله باک کے بارے میں تکواروں سے ان برحملہ کردیا جاتا اس کوبھی برداشت کر لیتے۔ (تاریخ بغداد:ص ۱۳/۳۵۸)

ز مد وورع اور پر میر گلری: کی بن ایر بیم نے فرمایا: میں کوفیوں کے پاس بیشا ہوں، میں نے ابوطنیقہ سے زیادہ پر بیز گار نہیں دیکھا۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۵۸)

عبداللہ بن المبارک رحمہ اللہ تعالیٰ نے بھی یمی فرمایا ہے۔ (تاریخ بغداد: ص۱۳/۳۵۹)

یکی بن القطان نے فرمایا: قتم بخدا ہم ابوحنیفہ کے باس بیٹے ہیں اور ان سے (احادیث کو) سنا ہے۔ خدا کی تم میں جب ان کود کھتا تھا تو ان کے چر ہ میں یہ بچا نتا تھا کہوہ اللہ یاک سے ڈرتے ہیں۔ (تاریخ بغداد: ص۱۳/۳۵۲)

ا مسامت و جلالت: عبدالله بن المبارك في مایا: كونی شخص امام ابو حنیفه و ایاده اقتداء كئے جانے كا حقدار نہیں ،اس لئے كه وہ امام تقی صاف سخرے بر بیز گار عالم نقیه سخے ، علم كواس طرح كھوا اكد كى في الى بصیرت ، فہم و فطانت و پر بیز گارى كے ساتھ نہيں كھوا الله و درى بصرت ، فہم و فطانت و پر بیز گارى كے ساتھ نہيں كھوا الله و درى بصرت ، فہم و فطانت و پر بیز گارى كے ساتھ نہيں كھوا الله و درى بصرت ، فہم و فطانت و پر بیز گارى كے ساتھ نہيں كھوا الله و درى بصرت ، فہم و فطانت و پر بیز گارى ہے ساتھ نہيں كھوا الله و درى بصرت ، فہم و فطانت و پر بیز گارى ہے ساتھ نہيں كھوا الله و درى بحث الله و درى بحث

معربن کدامؓ نے فرمایا: جس شخص نے امام ابوصنیفہ کواپنے اور اللہ تعالیٰ کے درمیان کرلیا مجھے امید ہے کہ اس کوکوئی اندیشہ نہیں اور اس نے اپنے نفس کے لئے احتیاط کرنے میں کوئی کوتا ہی نہیں کی۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۳۹)

یکیٰ بن معینؓ نے فرمایا: کہ میں نے یکیٰ بن سعید بن القطان کوفر ماتے ہوئے ساوہ فرماتے تھے:

مم الله تعالى كے سامنے جموث نہيں بول سكتے ، ہم نے ابوطنيف كى رائے سے زياده

ا جھی کسی کی رائے نہیں دیکھی اور ہم نے ان کے اکثر اقوال کوا ختیار کیا ہے۔ (تاریخ بغداد: ص۱۳/۳۳۵)

کی بن معین نے فرمایا: میں نے کی بن سعید کود یکھا فتوی میں کوفیوں کے قول کو اختیار فرماتے ، امام ابو حنیفہ کے قول کو اختیار فرماتے ، امام ابو حنیفہ کر اے کا انتخاصاب کی رائے کے مقابلہ میں اتباع فرماتے ۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۲)

کی بن معین نے فرمایا میں نے وکیع سے زیادہ افضل کی کونیں دیکھاوہ قبلہ رخ بیٹھ کر حدیث حفظ کرتے ، رات کوقیام کرتے ، پ در پ برابر روز سرکھتے ، امام ابو حنیفہ کے قول برفتوی وسیت العظائ بھی ان برقتوی وسیتے اور کی بن سعیدالعظائ بھی ان کے قول برفتوی دیتے اور انہوں نے امام ابو حنیفہ سے بہت کھے سنا ہے ۔ اور کی بن سعیدالعظائ بھی ان کے قول برفتوی دیتے ۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۷)

یکی بن معین کا بی قول ہے: قراءت میر سنز دیکے عزہ کی قراءت معتر ہے، اور فقد امام ابو صنیفہ کا فقد معتر ہے، اس (عقیدہ پر) میں نے لوگوں کو پایا ہے۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۲۱)

محدقین اور طلبہ علم پر انفاق وسخلوت: قیس بن الرکھ نے بیان کیا کہ ام ابو حنیفہ (لوگول کی) پونجیال (جوان کے پاس جی رہیں) بغداد ہیج اوراس سے سامان خرید کرکوفہ الت اس کوفر وخت کرتے اور سال سے سال تک جواس کا نفع ہوتا اس کوجی کرتے اور اس سے مشائخ محد ثین کی ضرورت کا سامان خلہ، کپڑے اور دیر شروریات کا سامان خرید کر اور نفع میں جو دنا نیز بچتے ان سب کو ان کے پاس جیج اور فرماد سے اپی ضروریات میں خریج کرواور اللہ کے سواکس کی تعریف نہ کرو، اس لئے کہ میں اپ مال میں سے تم کو بچھ بیں ویتا، کیکن اللہ تعالی نے میر ساو پر تمہار سے بارے میں جو فضل فر مایا ہے وہ بی ہوار یہ تمہارے لئے کے ایک اللہ تعالی نے میر سے او پر تمہار سے بارے میں جو فضل فر مایا ہے وہ بی سے اور یہ تمہارے لئے کہ تا میں تو تعمل کو تمہارے لئے کہ تعریف کو تو تعریف کو تو تا تعریف کو تعریف کو تو تو تا تا تعریف کو تو تعریف کو تعریف کے تعریف کو ت

اس کوجاری فرمایا ہے۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۲)

حفص بن جمزہ القرشیؒ نے بیان فرمایا کہ امام ابو حنیفہ بعض دفعہ ان کے باس ہے کوئی شخص گذرتا اور بلا ارادہ اور بغیر بٹھائے وہ ان کے پاس بیٹے جاتا، جب وہ مجلس سے کھڑا ہوتا حضرت اس سے دریا فت فرمائے اگر اس کو فاقہ ہوتا اس کی حاجت روائی فرمائے ۔ اگر بیار ہوتا اس کی عیادت فرمائے ۔ (تاریخ بغداد: ص ۱۳/۳۷)

وفنات وسسانحة ارتحال: خطيب اورابوممر الحارقي ني بيان كيا كما بوجعنر المنصور نے امام ابوحنیفہ کو کوفہ سے بغداد طاب فرمایا اوران سے عہدہُ قضا قبول کرنے کی درخواست کی اور یہ کہ بااد اسلام کے تمام تضا قان کے ماتحت ہوا کریں گے۔امام ابو حنیفہ نے معذرت بیان کی اوراس کوقبول نہیں فرمایا۔ابوجعنر منصور نے ان کوقید میں ڈال دیااور تکم دیا کہ ہر روز ان کو (قید ہے) باہر نکالا جایا کرے اور دس کوڑے مارے جایا کریں اور با زارول (راستوں گلی کوچوں) میں اس کا علان اورتشہیر کی جایا کرے۔ پس (تھم کے مطابق) امام صاحب کوتید سے نکاا جاتا اور ان کے کوڑے سخت کوڑے مارے جاتے جس سے ان کے جسم یر نثان پر جاتے، اور بازاروں میں ان کو گھمایا جاتا اور اعلان کیا جاتا، ان کی ایر بول برخون بہدیرٌ تا اوران کوقید خاند میں اوٹا دیا جاتا۔ اور قید خاند میں ان کے کھانے یہنے میں بھی تنگی کی جاتی ، دس روز ہر اہر ہرروز دس کوڑے مارے جاتے۔جب کوڑے مارے جانے کا سلسلہ ہر اہر ہوتا رہاوہ (اللہ تعالیٰ کے سامنے) روئے اور کشرت سے دعاما نگی، پس اس کے بعد بیندرہ یوم زنده رب پيمروفات بوگئ _ رحمه الله تعالىٰ و رضى الله تعالىٰ عنه.

اُبوجم الحارثی نے تعیم بن یحی سے نقل کیا انہوں نے فرمایا کہ امام ابو حنیفہ کی موت پر دلیس میں ہوئی اوران کوز ہردے کر ہوئی۔

ابوحسان الزيادتي نے فرمايا كه جب امام ابو صنيفه كوموت كا حساس بوا سجده ميس كر كئ

خطیبؓ نے فرمایا صحیح رہ ہے کہ امام صاحبؓ کی وفات قید میں ہوئی ہے۔ (تاریخ بغداد بص ۱۳/۳۲۸)

اسائیل بن سالم البغدادی نے فرمایا۔امام ابوصنیقہ کوقضا قبول نہ کرنے پرکوڑے مارے گئے۔گرانہوں نے قضا ،کوقبول نہیں فرمایا۔امام احمد بن عنبل جب اس کا ذکر کرتے تو روتے اورامام ابوصنیقہ پررحم کھاتے (ان کے لئے رحمت کی دعا کرتے) اور یہ امام احمد بن صنبل کے کوڑے لگائے جانے کے بعدان کی حالت ہوئی۔تارتخ بغداد بھی ۱۳/۳۲)

امير المومنين في الحديث عبد الله بن مبارك كا تذكره وتبعره

محدثین، امیر المونین فی الحدیث کے لقب ہے آپ کا تذکرہ کرتے ہیں فن حدیث کے رکن اعظم اورائمہ کبار میں ہے ہیں۔ صبحین (بخاری ومسلم) میں آپ کی روایات کی تعداد سیکڑوں تک بہو پچتی ہے۔ فن روایت کے امام مانے جاتے ہیں۔ آپ فر مایا کرتے تھے '' مجھے جو کچھ حاصل ہوا ہے وہ امام ابو حنیفہ اور امام سفیان توری کے فیض سے حاصل ہوا ہے۔ امام بخاری نے این رسالہ رفع یدین میں آپ کے متعلق تحریر فر مایا کہ:

''امام عبداللہ بن مبارک اپنے زمانہ کے سب سے بڑے عالم تھے۔ اور اوگ اً سر دوسر کے مظم اوگوں کے اتباع کے بچائے ان کا اتباع کرتے تو بہتر ہوتا۔'' خود امام عبداللہ بن مبارک فرماتے ہیں:

''اگرخداتعالی ابوحنیفه اورسفیان توری کے ذریعه میری فریا درس نه کرتا تو میں عام

آ دمیوں کی طرح ایک آ دمی ہوتا۔ ^{مل}

ابوحنیفه تمام حسنات اور تمام صفات محموده کے

مسلم امیر المومنین فی الحدیث کی شہادت اور ان کا فیصلہ خاص طور پر قابلِ لحاظ ہے۔
کاش ہماری نہیں عظیم محدث ابن مبارک کی س لی جاتی جن کانام لیا جارہا ہے، ان بی کا بتایا ہوا
کام بھی کرلیا جاتا اور ان بی کی راہ بھی اختیار کرلی جاتی تو آت ابو حنیفہ گی دشمنی ہے آخرت میں
جہنم کے شعطے مول نہ لینے بڑتے ۔ ابن مبارک اکثر فرمایا کرتے:

''ابو حنیفه گیرائے'' کالفظ مت کہو بلکہ تغییر وصدیث کہو۔' (موفق، انتھار، کردری) نیز ابن مبارک نے ان لوگوں کو بے وقوف قرار دیا ہے جنہوں نے ابو حنیفہ کی دشمنی کو زندگی کامشن بنار کھا ہے۔ فرماتے ہیں:

ابوحنیف سے محرومی علم سے محرومی هے: اگریس بعض بوقوفوں کی بات پر بہتاتو میں ابو صنیفہ ہے محروم رہتا۔ اوران کے علوم و معارف ہے محروم رہتا، یوں کہنا بیائے کہ طلب علم کی راہ میں میری ساری مشقت اور تعب اور بزاروں لے (مقدمہ انوار الباری بس ۱/۹۲) ع (حدائق الحقیہ بس ۲۹)

الكول رويه كاصرف رائيًا ل جاتا ـ

امام ابن مبارک ایک مرتبددرسِ حدیث دے رہے تھے کے امام اعظم ابوحنیفہ ہے بھی ایک روایت بیان فرمائی۔ اس پر کسی نے اعتر اض کیا تو آ ب بخت عصد ہوئے اور فرمایا "تم اوگوں کا اس سے کیا متصد ہے جس کوخد اتعالی نے بلندمر تبہ بنایا ہے وہی بلند ہوگا۔ اور جس کو خدا نے برگزیدہ کرلیا ہے وہی برگزیدہ رہے گا۔ بھ

مرقد امام ابو صنيفة برامام ابن مبارك كاز ارز اررونا

بالاتفاق سبمور فين نے لكھا ہے كہ تمام محد ثين كے محد في اعظم امام عبدالله بن مبارك نے دنیائے حدیث كے گوشہ فيس جاكر اور الكھوں رو بيا اسفار برصرف كر كے اس دور خير القرون كے ايك، ايك محدث سے علوم نبوت كى مخصيل كى ۔ گر جب امام اعظم ابوضيفة كے باس آئے تو آخر تك آپ ہے جدا نہ ہوئے ۔ اور امام ابوضيفة كے انتقال كے بعد ان كى قبر بر كھڑ ہے ہوكر ذار دار دوكر فرمات رہے كہ:

''ابرا ہیم نخعی اور حماد نے مرتے وقت اپنا خلیفہ (ابوحنیفہ) چھوڑا تھا۔خدا آپ پر رحم کرے کہ آپ نے اپنا خلیفہ ہیں چھوڑا۔ یہ کہہ کر دیر تک زارزاررو تے رہے۔''

اس مبارک تذکرہ کے آخر میں ہم ابن مبارک کے نام لیواؤں کے نام ان کی وصیت درج میں تا کہ اتمام حجت ہو۔

ابن مبارك افي تاافره عفرمايا كرت تها:

"آ ٹاراورا حادیث کو اازم مجھو مگران کے معانی کے لئے امام ابو حنیفہ کی ضرورت

ع (موفق بس١٥/٦)

ح (خیرات الحسان)

ب كيول كدوه حديث كمعانى جائة بيل-"

نواب صديق حسن خال كى حقيقت پسندى: نواب صديق حسن خال كى حقيقت پسندى: نواب صديق حسن خال آنو جي علامه ابن خلدون سي فل كرتے ہيں:

يدل على انه من المجتهدين في علم الحديث اعتماد مذهبه بينهم والتعويل عليه واعتباره رداً وقبولاً.

قوجمہ: امام اعظم ابو صنیفہ کبارمحدثین میں ثار ہوتے ہیں۔ دلیل اس پریہ ہے کہ ان کے مذہب پر اعتاد وائتبار کر کے موافق مخالف رداور قبول کی طرف متوجہ ہوں۔

حفرت مجد دالعنب ٹائی کاارشاد

فقه دنی صحیح حدیث کے موافق ہے، امت مسلمہ کے متاً خرین علاء میں مسلم اور مایۂ ناز شخصیت حضرت مجد دالف ٹا ٹی فر ماتے ہیں:

برین فقیر ظاہر ساخته اند که درخلافیات کلامی حق بجانب حنی است و درخلافیات فتہی در اکثر مسائل حق بجانب حنی و دراقل متر دو ۔

ال فقیر پر ظاہر ہوا کہ خلافیات علم کلام میں حق حنی مسلک کی جانب ہے اور خلافیات فتہی کے اکثر مسائل میں حق بجانب حنی ہے اور بہت کم میں تر دوہے۔

حضرت شاه ولى الله صاحب كاارشاد

حضرت شاه ولي الله محدث د ملويٌ فرمات مين:

عرفني رسول الله صلى الله عليه وسلم ان في المذهب الحنفي طريقة

ع (الحط بس ٩٨م ما خوذ از وفائ او حنيفة بس ١٨٥ مر ١٨٥)

س (ميداومعاد:س ٢٩)

انيقة هي اوفق الطريق بالسنة المعروفة التي جمعت ونقحت في زمان البخاري.

قوجمه: مجھےرسول اللہ سلی اللہ علیہ وسلم نے بتایا ہے کہ فرجب دنی میں عمرہ راستہ ہو اور جوسنت بخاری کے زمانہ میں جمع ہوئی ہے اس سے زیادہ موافق ہے، یعنی سے حدیث ہے۔

گوحوالہ جات فرکورہ کی حیثیت کشف ہی کی ہے۔ گر جناب نواب صدیق حسن صاحب فرماتے ہیں:

اگر کشف دوکس با ہم متوافق شود طن خالب شود و کسات کے دورز رگول کے کشف اگر موافق ہوجا کیں توظن خالب کا تکم رکھتے ہیں۔

اگویا فقہ حنفیہ اور امام ابو صنیفہ کے مسلک کے تمام مسائل جہاں ایک طرف عقل کے معیار پر پورے اہر نے ہیں وہاں قرآن وصدیث سے بھی پورے طور پر وابستہ ہیں اور یہ حقیقت تب ہی مانی جا کتی ہے جب امام صاحب کی کامل صدیث دانی اور صدیث منہی کا محتر اف اور اقرار کیا جائے۔



ر (فیض حرین) ع (ریاض المرناض:ص ۱۹)

€rr}

الامام ابويوسف الانصارى

المولود ١٨٢هـ المتوفى ١٨٢هـ

وہ قاضی ابو بوسف الامام العلامہ فقیہ العراقین لیعقوب بن ابر اہیم الانصاری الکوفی امام ابو حنیفہ کے ثنا گر درشید ہیں۔

ہشام بن عروہ ، ابواسحاق الشیبانی ، عطاء بن السائب اور ان کے طبقہ کے محد ثین سے حدیث باک کا ساع کیا۔ اور امام محمد بن الحسن الفقیہ الشیبائی اور امام احمد بن خبل اور بشر بن الولیدویی بن معین وعلی بن الجعد وعلی بن مسلم الطّوسی وعمر و بن ابی عمر و اور ان کے علاوہ ایک بڑی مخلوق نے ان سے احادیث کونقل کیا۔

طلبِ علم میں پر ورش پائی ،ان کے والدغریب شخص تصاس کئے امام ابو حنیفہ یعقوب (ابو بوسف) کی سوسودینا راور درا ہم ہے د مکھے بھال فرماتے۔

عباس فے ابن معین سے نقل کیا ہے، انہول نے فرمایا کہ امام ابو ہو۔ فٹ صاحب صدیث اورصاحب سنت سے۔ (تذکرة الحفاظ اللا مام الذہبی: ص ۱/۲۹۲)

ابن حبانً نے'' کتاب الثقات''میں فر مایا ہے کہ (امام ابو یوسف) شیخ متھن تھے۔ (تذکرة الحفاظ:ص2/۲۴۵)

اور (امام ابو یوسف) فقیہ، عالم، حافظ تھ، حدیث حفظ کرنے میں مشہور تھ، محدث کے پاس حاضر ہوتے اور اوگوں بر

ان کااملا کراتے، اور بہت صدیث بیان کرنے والے تھے۔ (الانتقاءالا بن عبدالبر بص ۱۷۲) حضرت امام احمد بن صبل کا ارشاد ہے۔ جب میں نے اولاً حدیث کوطلب کیا تو امام ابو بو-ف القاضیؒ کے باس گیا (ان سے حدیث کوطلب کیا ان سے فراغت پر) پھر دوسر سے محد ثین سے حدیث کوطلب کیا۔ (تاریخ بغداد:ص ۲۵۵/۱۵)

داؤد بن رشید کاارشاد ہے۔ اگر امام ابو حنیفہ کاامام ابو یوسف کے علاوہ کوئی اور شاگر د نہ ہوتا تو ان کوسب لوگوں پر فخر کرنے کے لئے یہی کافی ہوتا۔ (حسن التقاضی: ص ۱۵)

امام ابو یوسف نے امام ابو صنیفہ کی صحبت کوستر ، برس تک ایازم پکڑے کھا اور بجز مرض کے عید ، بقرعید میں بھی ان سے جدانہیں ہوئے حتی کہ ان کے بیٹے کا انتقال ہو گیا تو اس کے کفن وفن میں بھی شریک نہیں ہوئے بلکہ ان کو بڑوسیوں اور عزیز وا قارب پر چھوڑ کر امام ابو صنیفہ کی مجلس میں شریک ہوئے اس اندیشہ سے کہ کہیں امام ابو صنیفہ کی طرف سے کوئی (علمی بیز) ان سے فوت نہ ہو جائے جس کی حسرت ہمیشہ باقی رہے۔ (حسن القاضی: ص ۹ رو ۱۷) بلال بن یکی نے بیان فر مایا کہ امام ابو یوسف تفسیر و مغازی اور تاریخ عرب کے حافظ بھواران کے علوم میں سب سے کم فقہ ہے۔ (تاریخ بغداد: ص ۲ ۱۲/۲۲)

یجی بن خالد نے بیان فرمایا: امام ابو یوسف جمارے باس تشریف ایائے اور ان میں (ان کے دیگرعلوم کے مقابلہ میں) فقہ سب سے کم تھا اور انہوں نے اپنے فقہ ہے مشرق ومغرب کوبھر دیا تھے۔ (حسن التقاضی:ص ۱۵)

ایک شخص نے امام مزنی (تلمیذ الامام الثافیؒ) سے سوال کیا کہ آپ ابوصنیفہ کے بارے میں کیا فرماتے ہیں؟ فرمایا ان کے (فقہاء ومحد ثین کے)سر دار ہیں۔ پھرسوال کیا امام ابو یوسفؓ کے بارے میں کیا فرماتے ہیں؟ فرمایا سب سے زیادہ حدیث کے متبع تھے۔

ا الم احمد بن منبل نے امام او بیسف سے حدیث کے تین صندوق لکھے۔ (حسن القاضی: ص ۴۰) ع جب سب سے کم کے ذر مورشرق ومغرب کو بھر دیا تو تغییر وحدیث اور مغازی کے بارے میں تیراکیا خیال ہے۔ پھرامام محمد بن الحن کے بارے میں سوال کیا۔ فرمایا مسائل کی تفریع میں وہ سب سے زیادہ بیں، پھرامام زفر کے بارے میں سوال کیا، فرمایا وہ قیاس میں سب سے زیادہ تیز ہیں۔ (تاریخ بغداد:ص۱۳/۲۴۷)

طلحہ بن محر نے فرمایا: امام ابو یوسف کا کام مشہور ہوا، ان کی فضیلت ظاہر ہے، امام ابو حنیفہ کے شاگر داورا پنے الل زمانہ میں سب سے زیادہ فقیدان کے زمانہ میں کوئی ان پر پیش قدمی نہ کر سکا (ان سے آگے نہ پڑھ سکا) علم، حکمت، ریاست، قدر میں وہ انتہا پر تھے، امام ابو حنیفہ کے فر بہب کے مطابق اصول فقہ میں سب سے اول انہوں نے کتابیں تصنیف فرمائیں اور مسائل کا املاکیا اور ان کو پھیلایا۔ امام ابو حنیفہ کے علم کو اقطار ارض میں پھیلادیا۔ (تاریخ بغداد: صلح ملاکیا)

محر بن ساعدؓ نے فرمایا کہ امام ابو یوسفؓ قاضی بننے کے بعد ہردن دوسور ک^{یمت}یں بڑھا کرتے تھے۔(تاریخ بغداد بص ۱۳/۲۵۵)

محمد بن الصبائے نے فرمایا: امام ابو یوسف صالے شخص تھے، پے در پے روزے رکھا کرتے۔(کتاب الثقات ایابن حیان:ص۲۳۲)

اسلام میں سب ہے اول جس کو قاضی القصاۃ کہا گیا وہ امام ابو یوسف ہیں۔ (تاریخ بغد او بص۲۳۲/۱۲)



﴿ الامام محمد بن الحسن بن فرقد الشيبا في رحمه الله تعالى ﴾ المولود ٢٣١٤. المعوفى ١٨٩٩

واسط میں پیدا ہوئے اور کوئے میں پرورش پائی۔اور وہیں (کوفہ میں) امام ابو حنیف اور معر بن کدام اور سفیان ٹورگ سے علم (حدیث) کی ساعت کی۔اور امام مالک (صاحب الموظا) سے اور ابوعمر والا وزائل اور امام ابو بوسف القاضی سے بھی حدیثیں تصیب اور حدیث کو طلب کیا اور حدیث کی ساعت کی خاطر بغداد تشریف لے گئے، وہاں قیام فرمایا، بہت اوگوں کی ان کے پاس آمد ورفت ہوئی اور انہول نے حدیث ورائے کو ان سے سیکھا۔الا مام محمد بن کی ان کے پاس آمد ورفت ہوئی اور ابوعبید القاسم بن سلام وغیر ہم امام محمد سے احادیث دورایت کرتے ہیں۔(یعنی امام شافعی اور ابوسلیمان جوز جائی دونوں امام محمد کے شاگر دہیں)۔ روایت کرتے ہیں۔(یعنی امام شافعی اور ابوسلیمان جوز جائی دونوں امام محمد کے شاگر دہیں)۔ (تاریخ بغداد: ص۲ ایرا)

امام محمد بن الحنَّ نے فرمایا: میرے والد نے تمیں ہزار درہم چھوڑے ان میں سے پندرہ ہزار میں نے۔(تاریخ پندرہ ہزار میں نے نحواور شعر برصرف کئے اور پندرہ ہزار حدیث وفقہ برصرف کئے۔(تاریخ بغداد بھی ۲/۱۷۳)

یچیٰ بن معین کے ان سے جامع صغیر کوسیکھا۔ (تاریخ بغداد بص ۲/۱۷) امام ابو بوسف کے بعد عراق کے فقہ کی سیادت وریاست انہیں کی طرف منتہی ہوئی ، بہت سے ائمہ نے ان سے فقہ حاصل کیا۔ انہوں نے بہت ی کتابیں تصنیف فرمائیں۔ دنیا کے ذکر ین اوگوں میں سے تھے۔ (منا قب الی صنیفہ وصاحبید کما فظ الذہبی: ص ۵۰)

امام محمدؓ نے فرمایا: میں امام مالکؓ کے دروازہ پر تین پرس سے زیادہ مقیم رہا، اور یہ بھی فرمایا کرتے تھے سات سو(۲۰۰) سے زائد احادیث میں نے ان سے میں۔ (تاریخ بغد ادب ۲/۱۷۳)

امام شافی نے فرمایا: میں نے کوئی مخص امام محمد بن الحن سے زیادہ کتاب اللہ کوجائے والے نہیں و یکھا، اگر میں بیا ہوں تو کہہ سکتا ہوں کہ قرآن باک محمد بن الحن کی لغت کے مطابق ما زل ہوا ہے ان کی فصاحت کی وجہ ہے (یعنی الیم عمد ، فصاحت اور قواعد تجوید کے مطابق ایسا عمد ، قرآن یا ک بڑھتے تھے کہ محسول ہوتا تھا کہ اسی طرح قرآن یا ک بازل ہوا ہے)

امام شافعی نے فرمایا: میں نے امام محمد بن الحن سے ایک بختی اونٹ کے بوجھ کے برابر کتابوں کا علم حاصل کیا۔ اور یہ بھی فرمایا: فقد میں مجھ پر لوگوں میں سب سے زیادہ امام محمد بن الحن کا احسان ہے۔ (تاریخ بغداد: ص ۲/۱۷)

بویطیؓ نے امام شافعؓ کاارشاد نقل کیا ہے۔ انہوں نے فرمایا علم حاصل کرنے میں اللہ تعالیٰ نے دو شخصوں کے ذریعہ میری مدد فرمائی، حدیث میں ابن عیدنہ اور فقہ میں امام محمد بن الحسن رضی اللہ عنما کے ساتھ۔ (ذیل الجوابر المصیئة جس ۵۲۷)

دیلی نے روایت کیا ہے کہ امام شافع کے فرمایا میں دس برس امام محمد کی صحبت میں رہا ہوں اور ان کے کلام سے اونٹ کے دوبو جھ کے برابر کتابوں کاعلم حاصل کیا ہے۔ اگر وہ ہم سے اپنی عقل کے مطابق کلام فرماتے تو ہم ان کے کلام کو نہ بھے سکتے ، لیکن وہ ہماری عقلوں کے مطابق کلام فرماتے تھے۔ (ذیل الجوابر المصینہ اص ۵۲۸)

ا مام شافعی کا پیجی ارشاد ہے محمد بن الحن کے علاوہ جب کسی ہے میں نے مناظر ہ کیا

تواس كاچېر ،متغير بوگيا_(تاريخ بغداد :ص ١١/١٧)

الا مام احمد بن عنبل کا ارشاد ہے: جب کسی مسئلہ میں تین شخصوں کا قول (متفق) ہوتو پھران کی مخالفت کی تنجائش نہیں ۔

دریافت کیا گیا وہ تین کون حضرات ہیں؟ فرمایا: ابوطنیقہ، ابو یوسف محمد بن الحنّ، ابوطنیقہ ابو یوسف اوگوں میں آثار ابوطنیقہ کو جانے والے ہیں، ابولیسف اوگوں میں آثار (احادیث) کوسب سے زیادہ جانے والے ہیں، اور محمد بن الحنّ عربیت کولوگوں میں سب سے زیادہ جانے والے ہیں، اور محمد بن الحنّ عربیت کولوگوں میں سب سے زیادہ جانے والے ہیں۔ (الانساب للسمعانی جسم ۸/۲۰۸)

ابراہیم الحرنی فرمائے ہیں کہ میں نے امام احمد بن طنبل سے سوال کیا کہ یہ دقیق مسائل آپ کوکبال سے حاصل ہوئے؟ فرمایا محمد بن الحن کی کتابوں سے۔ (تاریخ بغداد: ص ۲/۱۷۷)

امام محر بن الحن کے بعض شاگر دول سے منقول ہے کہ امام صاحب کامعمول برروز ایک تہائی قرآن تا اوت کرنے کا تھا، اور ان سے انتہائی ذکاوت، عقل تام، ذبین کی تیزی، کشر ت تا اوت بھی منقول ہے۔ (مناقب الی حنیفہ وصاحبیہ کما فظ الذہبی: ص ۵۹)
امام کسائی اور امام محمہ بن الحن نے ہارون رشید کے ساتھ رے (شہر) کا سفر کیا اور وہاں دونوں کا ایک بی دن میں انقال ہوا، ہارون رشید نے فرمایا: آت لغت وفقہ دونوں کو دفن کردیا گیا۔ (تاریخ بغداد: ص ۲/۱۷)



&rr>

﴿الامام زفر بن البنديل رحمه الله تعالى ﴾

المولود مما اه. المتوفى ١٥٨ه

وہ زفر بن البذيل بن قيس البصر ك بيں۔ امام ابو حنيفه ان كى بہت تعظيم و تكريم كرتے سے اور فرمايا كرتے سے واقف ہيں۔ تھے اور فرمايا كرتے تھے: وہ ميرے اصحاب ميں سب سے زيادہ قياس سے واقف ہيں۔ (الفوائد البهيد في تر اجم الحفيد ص 20)

ا بن معین اور ابوقعیم نے فرمایا و ، ثقبه اور ایک اظمینان تھے۔

ابوعمر نے فرمایا: زفرعقل، دین انہم والے، پر ہیز گاراور حدیث میں اُقتہ تھے۔ (الجوا ہر المضیئة بص۱/۲۳۳،۲۳۳س)

ار اہیم بن سلیمان کاار شاد ہے ہم جب ان کے پاس بیٹے تو ان کے سامنے دنیا کے فرکر تا تو اس کوچھوڑ کر فرکر تا تو اس کوچھوڑ کر مجلس سے کوئی بھی دنیا کا ذکر کرتا تو اس کوچھوڑ کر مجلس سے کھڑ سے ہوجائے۔

ابن مبارک فرماتے ہیں کہ میں نے امام زفر کوفر ماتے ہوئے سناوہ فرمار ہے تھے:۔ ''جب تک حدیث موجود ہوہم رائے کواختیار نہیں کرتے ،اور جب حدیث آ جائے تو ہم رائے کوترک کردیتے ہیں''

امام وکی نے فرمایا: کسی کی صحبت ہے مجھ کواتنا نفع نہیں ہوا جتنا امام زفر کی صحبت

ہے ہوا _

فضیل بن دکین کاارشاد ہے۔امام ابوحنیفہ کی و فات کے بعد میں نے امام زفر کی سحبت کوامازم پکڑلیا، چونکہ وہ ان کے اصحاب میں سب سے زیادہ فقیہ اور سب سے زیادہ پر ہمیز گارتھے، پس میں نے ان ہے بھر یور حصہ حاصل کیا۔

حسن بن زیاد نے فرمایا: امام زفر اور داؤد طائی دونوں بھائی بھائی کی طرح تھے، داؤد طائی فقہ کوترک کر کے عبادت پر متوجہ ہوگئے، اور امام زفر نے (فقہ اور عبادت) دونوں کوجمع کیا۔

محمہ بن وہبؓ نے فرمایا:''وہ (امام زفرؓ)اصحابِ حدیث میں سے تصاوران دی حضرات میں سے ایک تھے جنہوں نے کتب (فقہ)کومدون کیا۔ (ذیل الجواہر: ص۵۳۳؍ ۵۳۹۲)



﴿صاحب مصاليك

کنیت ابومحمہ، لقب محی السنہ، نام حسین بن مسعود، فراء، بغوی ہےمشہور ہوئے ، ابن الفراء بھی کیے جاتے ہیں ، ۲۵ میں بیدا ہوئے ، فرو کے معنی پوشین ، آپ کے آبا ءواجداد میں کوئی پوشین سیتے اور بیچتے تھے، بغوآ پ کاوطن ہے، جو ہرات اور مروکے درمیان واقع ہے، اس لئے فر اءبغوی 'بولے جاتے ہیں، بغوی اصل بغشورے جو باغ شور کامعرب ہے، شور حذف كركے بن كى طرف نسبت كى ، يدلفظ دوحرفى ب، واؤكى زيادتى سے تين حرفى ہوگيا۔فقه میں قاضی حسین بن محمد کے، اور حدیث میں ابوالحن عبدالرحمٰن بن محمد داؤدی کے شاگر دہیں، ان کے علاوہ دیگرمحد ثین ہے بھی استفادہ کیا،تمام عمرتصنیف وتالیف اور حدیث وفقہ کے درس میں مشغول رہے، ہمیشہ باوضو درس دیتے ، قائم اللیل اور صائم النہار تھے، زیدوقناعت میں زندگی گذاردی ، بیوی نے تر کہ میں کافی مال جھوڑا ، مگراس میراث ہے کچھے نہ لیا، خشک روثی یانی میں ترکر کے روزہ افطار کرتے ، جب اصرار کیا گیا کہ خٹک روئی کھانے ہے دماغ میں منظی بیداہو گی تو بطور سالن روغن زینون کھانے لگے، اپنے زمانہ میں تفسیر ، حدیث اور فقہ کے زبردست امام تنے، اور مسلكا شافعي تنے، جبآب نے شرح السنة تصنيف كي تو آل حضور سلى الله وعليه وسلم كوخواب ميں و يكھا ارشا دفر مارہے ہيں كة في احاديث كى شرح كر كے ميرى سنت کوزندہ کردیا،اس کے بعد آپ کالقب "محی السنہ" ہوگیا،آپ کی تصانیف میں مصابح السنة حديث كي مشهور كتاب ب، جوم ٨٨٨ صحاح وحسان روايات كالمنخب مجموعه بخاري وسلم سے ۲۴۵، تر فدی ، ابو داؤدوغیر ، سے ۲۰۵۰

بعمر ا ٨رسال ٢<u>١٥ ج</u>يس بمقام مرويخا، شوال آپ كى و فات ہوئى، اور مقبر ، طالقان ميں اپنے استاذ قاضى حسين كے جوار ميں مدنون ہوئے۔

آپ کے بحرعلمی کی شہادتیں

یر سے بڑے اکا برمحد ثمین وعلماء نے آپ کے بلندمر تبدی شہادت دی ہے۔مثال

(١)..... حافظ ذہبی رحمة الله عليه فرمات ہيں:

آپ کے نیک عزم کی وجہ ہے
آپ کی تصانیف میں برکت عطاء ہوئی تھی،
اس لئے کہ آپ علاء رہانیین میں سے ہیں،
آپ عبادت گذار مج کرنے والے اور
تھوڑے برقناعت کرنے والے تھے۔

"البغوى الامام الحافظ"
"بورك له فى تصانيفه لقصده
الصالح فانه كان من العلماء الربانين
كان ذا العبد ونسك وقناعة
باليسير" (تذكرة الحفاظ عن ١٥٠٠)

(٢)..... حافظا بن كثير رحمة الله عليه فرمات بين:

آپ علوم میں اپنے زمانہ کے علامہ تھے اور دیندارمتق ، زاہد، عبادت گذار اور نیک تھے۔(البدار پروالنہا ہے: ۱۲/۱۹۵)

"كان علامة زمانه فيها راى فى العلوم وكان دينا ورعا زاهدا عابدا صالحا."

(٣)علامه يكى رحمة الله عليه فرمات بين:

آ پ جلیل القدرا مام متقی، پر جیزگار،

فقیہ محدث مفسر، علم وعمل کے جامع اور سلف
کے طریق کے چیر وکار تھے، آپ کو فقہ جس ید
طولی حاصل تھا۔ (فوائد جامعہ: ۱۹۳۸ مرکوالہ
الطبقات الکبری للسبکی: ۲۱۳)

"كان اماما جليلا ورعا زاهدا فقيها محدثا مفسرا جامعا بين العلم والعمل سالكا سبيل السلف له في الفقه اليد الباسطة"

(٣).....امام بغويٌ كوحديث ، فقيه او رَّفسير تينون فنون مين بهت كمال حاصل تعا، حضرت شاه

عبدالعزيز صاحب محدث دہلوی رحمة الله عليه فرماتے ہيں:

''دے جامع است درسہ فن، آپ تین فنون میں جامعیت رکھتے وہریک را بکمال رسانیدہ است،محدث تصاور ہرایک کو کمال تک پہنچایا تھا، آپ بے بینظیر ومفسر بے عدیل وفقیہ شافعی نظیر محدث اور بے مثال مفسر اور فقہ ثنافعی کے فقیہ تھے۔ (بستان الحدثین (فارق) ص: ١٣٤)

صاحب فقداست ـ"

تصانيف

(١) المصابيح. (٢) ارشاد الانوار في شمائل النبي المختار. (m) ترجمة الاحكام في الفروع. (m) التهذيب في الفروع. (۵)....الجمع بين الصحيحين. (۲)..... شرح السنة. (Δ)..... الفاية في الفقه. (Λ) الكفاية في القراء ة. (١٠)..... معجم الشيوخ. (٩)..... معالم التنزيل.

﴿ صاحب مشكوة ﴾

کنیت ابوعبداللہ، لقب ولی الدین، نام محمہ بن عبداللہ، نسبا عمری بیں، اور خطیب تیم برزی ہے مشہور ہیں، اپنے وقت کے محدث علام، فصاحت و بلاغت کے امام اور حدیث میں اخیازی شان رکھتے تھے، مبارک شاہ ، ساوی وغیرہ آپ کے شاگر و تھے، آپ کی تصانیف میں سب سے زیادہ مشہور مشکوۃ المصابح ہے جس میں صحاح کے علاوہ دوسری کتابوں کی حدیثیں بھی جمع ہیں، یہ دراصل علامہ فرا یعنوی کی مصابح المنہ کی بخیل ہے، مصابح میں صرف حدیثیں نہ کورتھیں، راوی کانام خرب حدیث، صحت وضعف وحن وغیرہ کا تذکرہ نہ تھا، یہ سب صاحب مشکوۃ نے کیا اور ہر باب میں فصل ٹالٹ کا بھی اضافہ کیا، مصابح کی فصل اول میں صاحب مشکوۃ نے کیا اور ہر باب میں فصل ٹالٹ کا بھی اضافہ کیا، مصابح کی فصل اول میں صحبحین کی حدیثیں الم نے ہیں جن کوصاح سے تعمیر کیا، فصل ٹالٹ میں ابودا و د، تر ذری منسانی، وغیرہ کی احادیث الم نے ہیں جن کوحیان کے نام سے یا دکیا، فصل ٹالٹ میں صاحب مشکوۃ صحاح سے علاوہ دیگر کتب کی احادیث بھی اما دیث بیں ، نیز باب کے مناسب صحابہ وتا بعین کے ستہ کے علاوہ دیگر کتب کی احادیث بیں۔

تعدادا حاديث مخكوة ومصابح

مصابیح کی کل حدیثیں ۳۳۳۳ تھیں آپ نے ۱۵۱۱ حدیثوں کا اضافہ کیا، اس طرح مشکوۃ کی کل حدیثیں ۵۹۲۵ تھیں آپ نے ۱۵۱۱ حدیثوں کا اضافہ کیا، اس قدر مقبول مشکوۃ کی کل احادیث ۵۹۲۵ ہوگئیں، (لیعنی ۵۵۸م چھ بزار) مشکوۃ المصابیح اس قدر مقبول ہوئی کہتمام مدارس میں داخل درس ہے اور ہوئے سے معلاء نے اس کی شرحیس کھیں۔

تاریخ صدیث میں ہے کہ جم میں آپ کی وفات ہوئی۔

آ پ کے ہے ہے۔ مشکوہ المصابیح" کی تالیف سے فارغ ہوئے مشکوہ کی
تالیف سے فراغت کے بعد آپ نے ایک رسالہ تصنیف فرمایا جس کانام" اکھال فی اسماء
السر جال" ہے، اس میں ان صحاب وتا بعین وائمہ کے حالات مختصر اور جامع انداز میں لکھے ہیں
جن کا تذکرہ مشکوۃ میں ہوا، آپ اس رسالہ کی تالیف سے وہ کھے میں فارغ ہوئے۔

علم فضل میں آ پوجومقام عالی حاصل تفاوہ آپ کی تالیف"مشکو ق المصابیع" کی مقبولیت اور نا فعیت ہے ہی واضح ہے، حضرت ملاعلی قاریؓ نے آپ کا تذکرہ ان الفاظ سے فرمایا ہے:

جب کہ کتاب "مشکوہ المصابیع"
جس کی تالیف کی مواانا، ہڑے عالم بھا مہاور
علم ووانش کے دریا، حقائق کے ظاہر کرنے
والے اور دقائق کی وضاحت کرنے والے شخ جوشتی ہیں، پاک صاف ہیں۔

"لما كان كتاب مشكوة المصابيح الذى الله مولانا الحبر العلامة والبحر الفهامة مظهر الحقائق الشيخ الدقائق الشيخ التقى النقى" (مرقاة: ٢/١)

آ پ کے بلند مقام کا اندازہ اس سے ہوسکتا ہے کہ آ کچیلیل القدراستاذ علامہ طِبیّ نے آ پ کا تذکرہ' بھیۃ الاولیا قطب الصلحاء' کے الفاظ سے کیا ہے۔ (فوائد جامعہ: ۵۱۵)

شروح مفكوة شريف

مشکوۃ شریف کومنجانب اللہ بے حدقبوایت نصیب ہوئی تالیف سے لے کراب تک اس سے افادہ واستفادہ مختلف انواع سے بورے عالم اسلام میں عوام وخواص، علاء وطلباء وصنفین غرضیکہ برطبقہ میں بہت عموم وشیوخ سے جاری رہا ہے۔" ذلک فسضل الله یؤتیه مسن یشاء" علاء امت نے مختلف اطوار سے اس کتاب مقدس کی خدمت کی ہے، ایک نوع

خدمت اس کی شروح وحواثی لکھنا ہے، چنانچاس برمخلف انداز سے شروح کثیر، وحواثی لکھے گئے ہیں، جن میں صرف چندایک کا تذکرہ ہم تبرکا کرتے ہیں۔

(١).....الكاشف عن حقائق السنن.

یہ صاحب مفکوۃ کے استاذ علامہ طبی رحمۃ اللہ علیہ کی کھی ہوئی شرح ہے۔ یہ مشکوۃ شریف کی سب سے پہلی شرح ہے، یہ شرح طبی کے نام سے مشہور ہے ۔ علامہ طبی کا انتقال صاحب مشکوۃ کے بعد صاحب مشکوۃ کے بعد چھ سال بعد سام کے حد میں ہوا۔ گویا شرح تالیف مشکوۃ کے بعد چھ سال کے عرصہ کے اندر اندر کھی گئی ہے، اس شرح میں حضرت علامہ طبی نے زیادہ تر فصاحت و بلاغت کے نکات بیان کرنے کی طرف توجہ فرمائی ہے۔

(٢)....لمعات التنقيح في شرح مشكوة المصابيح.

مشکوۃ شریف کی بیشرح عربی زبان میں ہے۔ ہندوستان کے مشہور محدث شیخ عبدالحق محدث دہلوی کی کھی ہوئی ہے۔ شیخ کی والدت ۱۹۵۸ھ کواوروفات ۱۹۰۱ھ کوہوئی،

اس شرح کے پہلے قلمی نسخے کہیں کہیں موجود تھے، اب مکتبہ معارف علمیہ اا ہور نے عق طباعت اداکرتے ہوئے طبع کرانی شروع کی ہے، چنرجلدیں جھپ چکی ہیں۔

(٣).....اشعة اللمعات.

یہ بھی حضرت شیخ عبدالحق محدث دہلوی کی ہی لکھی ہوئی شرح ہے۔اس میں احادیث مشکوۃ کاسلیس ونیس فاری زبان میں نہایت فصیح ترجمہ کیا ہے۔ اور ساتھ ساتھ ضروری تشریحات وفوائد کا اہتمام کیا گیا ہے۔ حل مشکوۃ کے لئے بہت کافی ہے۔

 (γ)مرقاة المفاتيح شرح مشكوة المصابيح.

ی شرح عربی زبان میں ہے۔ مشہور محدث و فقید خفی علامہ علی بن سلطان محمد جوملاعلی قاری کے نام سے معروف میں ان کی تصنیف ہے۔ ملاعلی قاری رحمۃ الله علیہ کا انتقال سمان ہے کو ہوا۔

(۵)....مبسوط.

مبسوط شرح ہے۔ روایات کے ضبط کا خصوصیت سے بہت اہتمام کیا ہے۔ برلحاظ سے مفید اور جامع ہے۔ نایا بی کے بعد کی حضرات نے اس کی طباعت کا اہتمام کیا ہے۔ مکتبہ امداد بیمان نے الرجلدوں میں کمل طبع کرائی ہے۔

(٢)....مظا برحق جديد_

حضرت شاہ محمد الخق محدث دہلوی رحمة الله تعالی کے مشہوشاً گرد حضرت علامہ قطب الله ین خان دہلوگ نے قدیم اردو زبان میں مشکوۃ شریف کی بہترین شرح لکھی ہے جس کانام مظاہر حق ہے۔ نہایت متندا ورمقبول عندالعلماء ہے اس کے مضامین زیادہ تر اضعة اللمعات سے ماخوذ ہیں۔

(2)علامه سيدشر يف رحمه الله تعالى في مشكوة شريف برحاشيدةم فرمايا ب جوعلامه طبي

کی شرح سے اختصار کیا گیا ہے۔

(٨).....التعليق الصبيح على مشكوة المصابيح.

مشہور محدث حضرت موالمنا محد ادر ایس کاند حلوی رحمہ اللہ تعالی نے اپ استاد معظم حضرت علامہ محدانور شاہ شمیری قدس سر ، کے ایماء پر عمر ابی زبان میں شرح مشکو ہ آگھی۔ جس کا م''التعلیق الصبیح علی مشکو ہ المصابیح" ہے۔ یہ تھ جلدوں میں ہے۔ پہلی یا رجلدیں دامق میں طبع ہوئیں۔ اور آخری میا رجلدیں المہور میں طبع ہوئیں۔

خطبهودياچه

جس میں حمد وصلوۃ کے بعد تدوین احادیث مبارکہ کی ضرورت، کتاب المصابح کی اجمیت و جامعیت نیز مشکوۃ المصابح کی وجہ تالیف، طریق تالیف، دونوں کتابوں میں فرق کی تنصیل کو بیان کیا گیا ہے۔

بسم الله الرحمن الرحيم

هُطَبِكُ الكِتَابِ

الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سيات اعمالنا من يهده الله قلا مضل له ومن يضلله قلا هادني له واشهد ان لااله الا الله الخـ

قسوجمه: تمام تعریفی الله تعالی کیلئے ہیں ہمائی کی حمرکرتے ہیں اور ہمائی کی مدوطلب کرتے ہیں اور اس سے مغفرت کی درخواست کرتے ہیں اور ہم اپ نفس کی برائیوں اور اپ ایمال کی خرابیوں سے خدا کی پناہ بیا ہے ہیں، جس کوالله تعالی سید هاراسته عطا کر سے اس کو بھٹکانے والا کوئی نہیں اور جس کوالله تعالی گراہ کرد ساس کو ہدایت دیے والا کوئی نہیں، اور بیس گواہی دیتا ہوں کہ الله تعالی کے سواکوئی معبو دنییں ہے، یہ ایسی گواہی دیتا ہوں کہ دخترت کا در بعد اور درجات کی بلندی کی ضامن ہے، اور بیس اس بات کی بھی گواہی دیتا ہوں کہ حضرت خرسلی الله تعالی نے حضرت کی مسلی الله تعالی نے حضرت میں رسول بنا کر بھیجا جب ایمان کی راہوں کے نشانات میں الله تعالی نے حضرت میں الله تعالی نے حضرت میں رسول بنا کر بھیجا جب ایمان کی راہوں کے نشانات مثلی الله تعالی علیہ وسلی کی روشنیاں گل ہو چکیں تھیں، اس کے آٹار ماند بڑ گئے تھے اور ان کی مثنی ہوئی منزل نظروں سے پوشیدہ ہوگئی تھی، چنا نچہ حضرت نی کریم صلی الله علیہ وسلم نے ان

مے ہوئے نشانات کو دوبارہ واضح کیا اور کلمہ تو حید کے ذریعہ لب گورمریف کوشفا بخشی، اور جو شخص ہدایت کی راہ پر گامزن ہونا بیا ہے اس کے لئے ہدایت کے راستوں کوروشن کر دیا، اور نیک بختی کے خزانے نیک بختی کے طالب کیلئے ظاہر فرمادیئے۔

حمد وصلاة كي بعد، يه بات ذبن مين رئن ماين كدهرت بي كريم سلى الله عليه وسلم كےطریقے كواسی وقت اختیار كیا جا سكتا ہے جب آنخضرت سلی اللہ علیہ وسلم كے سينهٔ مبارکہ سے ظاہر ہونے والی چیز (حدیث یاک) کی کامل اتباع کیجائے۔اور قرآن کریم کو منبوطی ہے اس وقت تھاما جاسکتاہے، جب اس کی تشریح احادیث مبارکہ کے ذرایعہ ہے ہو۔ وكان كتاب المصابيح الذي صنفه الامام محى السنة قامع البدعة ابومحمد الحسين بن مسعود الفراء البغوى رفع الله درجته اجمع كتاب صنف فی بابه: سنت کوزنده کرنے والے بدعت کونتم کرنے والے (ابومحر حسین بن مسعود فرابغوی، الله تعالیٰ ان کے درجات بلند فرمائے) نے مصابیح کی تالیف فرمائی تھی، وہ کتاب این فن کی ایک جامع کتاب تھی جس میں امام موصوف نے بہت اچھے انداز سے منتشر متون (احادیث مبارکہ) کوجمع فر مایا تھا،اورمصنف کابغیر سند کے حدیث کونٹل کرنا ایبا ہی ہے جیسے سند کے ساتھ نقل کرنا، کیوں کہو بقل حدیث میں ثقہ اور معتمد محدثین میں گئے جاتے ہیں، کیکن بھر بھی بے نشان والی چیز نشان والی چیز کے در ہے میں نہیں ہو گتی، اس و جہ ہے میں نے اللہ تعالی ہے مدد میابی اوراس کی تو فیق کاطاب گار ہوا، پھر میں نے ہر حدیث کوجس باب ہے وہ متعلق تھی اس میں رکھا ، اور علما ، ومحدثین نے جس طرح اس کوروایت کیا تھا اس طرح میں نے سنداورحوالہ کتاب کے ساتھ اس کوذکر کیا، مثلاً محمد بن اسائیل بخاری، ابوالحن مسلم بن حجات قشیری ، ابوعبدالله ما لک بن انس انسی ابوعبدالله محمد بن ادریس شافعیّ ابوعبدالله احمه بن محمه بن حنبل شیبانی،ابوعیسی محمر بن عیسی تر مذی ابودا ؤ دسلیمان بن اشعث سجستانی،ابوعبدالرحمٰن احمر بن

شعیب نسائی ،ابوعبدالله محمد بن بریداین ماجه قزوینی،ابومجمه عبدالله بن عبدالرحمٰن دارمی ،ابوالحسن علی ابن عمر دارقطنی ، ابو بکر احمد بن حسین بیهی ، ابوحسن رزین ابن معاویه عبدری ، اور ان کے علاوہ بھی کچھ محدثین ہیں۔ اور بلاشبہ جب میں نے ائمہ حدیث کی طرف حدیث یاک کی نسبت کردی تو گویا میں نے حقیقاً اس کی سندحضور اقدس صلی الله علیه وسلم یک بہنچادی ، کیول کان ائمہ محد ثین رحمہم اللہ تعالی نے سند ذکر کر کے ہم سب کواس سے بے نیا زکر دیا ہے،اور میں نے اس کتاب کی تر تیب وہی رکھی ہے جو صاحب مصابیح نے رکھی تھی ،اور اس سلسلے میں میں نے ان کی بیروی کی ہے۔اور میں نے عام طورے برباب کوتین فعلوں میں تقسیم کیاہ، یما فصل میں شیخین کی روایت کو ذکر کیا ہے یا اس روایت کو ذکر کیا ہے جوان دونوں میں سے کسی ایک کی کتاب میں ہےاگر جہ کچھا حادیث الیم بھی ہیں جن کو دوسر مے محدثین نے بھی ذکر کیا ہے، لیکن میں نے صرف سینحین کا ذکر ان کے بلندی مرتبہ کی وجہ ہے کیا ہے۔اور دوسری فصل میں شیخین کے علاوہ جوائمہ مذکورہ ہیں ان کی روایت کوذکر کیا ہے، تیسری فصل میں احادیث کے علاوہ حضرات صحابہ کرام رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین وحضرات تا بعین رحمہم اللہ تعالی کے ان آ ٹا رکوبھی جمع کیا ہے جوباب کے مطابق تھے، آ ٹارکوجمع کرنے میں شرا نظ حدیث کومدنظر رکھاہے۔

وان وجدت اخر بعضه متروكا على اختصاره او مضموما اليه تمامه فعن داعى اهتمام اتركه و الحقه و ان عثرت على اختلاف في الفصلين من ذكر غير الشيخين في الاول: الرتم كوايك مديث الي طيجس كابعض حمدا خصاراً حذف كرديا كيا بي ياس مي بي حصد ملاديا كيا بت ويه انا اور حذف كرنا ايك فاص متصد كري سي انتلاف محسوس بواوريه اس طور بربوك شيخين كي علاوه كي روايت فعل اول مين اورايت فصل على وايرية بيات ذبن مين درايا المين من درايت فصل الله عن مين بواوريه بات ذبن مين درايا بالمين من درايت فعل المين المين

یا ختلاف خفلت یا تسامل کی وجہ سے نہیں ہے، بلکہ میں نے حمیدی کی کتاب "جسم ہیں المصحب حیدی اللہ اللہ علیہ المصحب المحسب ال

اور یہ بھی ممکن ہے کہ جس روایت کوشنے نے نقل کیا ہے وہ مجھے ندل کی ہو، کیکن ایسا بہت کم ہوگا کہ روایت مجھے نہ مل ہو، یا مجھے اصول کی کتابوں میں شیخ کی نقل کر دہ روایت کے خلاف وہ روایت ملی کی وجہ ہے میری خلاف وہ روایت ملی کی وجہ ہے میری طرف کی جائے ، شیخ اس تتم کی خلطی ہے پاک ہیں اوراصل پاکی اللہ تعالیٰ کے لئے ہے، اللہ تعالیٰ اس کے درجات و نیا و آخرت میں بلند فرمائے۔ (آ مین)

رحم الله من اذا وقف علی ذلک نبهنا علیه وارشدنا طریق الصواب ولم ال جهدا فی التنقیر و التفتیش بقدر الوسع و الطاقة: الله تعالی کیاس شخص پر رحمت ہوجی کو وہ روایت طے اور ہمیں اس سے وہ مطلع کرد سے۔ اور درست راستہ کی ہم کو رہنمانی کرد سے۔ میں نے اس کی تاہ ش اور تحقیق میں کوئی کسر نہیں چھوڑی۔ اور اپنی و سعت وطاقت کے مطابق بحر پور چھان بین کی۔ اور جیسا اختلاف پایا و یبابی نقل کردیا۔ اور شیخ نے جن احادیث پرغریب یاضعیف کا تھم لگایا ہے۔ میں نے ان سب کی وجہ کو بیان کر دیا ہے ، اور جن احادیث بور اصولی امور کی شیخ نے نشاند بی نہیں کی ، میں نے بھی ان مقامات کو بغیر کی مجبوری کے نیس چھٹر ا، اور کچھا لیے بھی مقامات ملیں گے جہاں میں نے کتاب کا حوالہ نہیں دیا ہے۔ اس کی وجہ بیہ ہے کہ بسیار تاہ ش وجبود بھی کو راوی کا نام معلوم نہیں ہو سکا۔ لہذا وہ جگہ میں نے خالی چھوڑ دی ہے۔ جس کو راوی کا نام معلوم ہوتو اس جگہ اس کا حوالہ دے وہ جگہ میں نے خالی جھوڑ دی ہے۔ جس کو راوی کا نام معلوم ہوتو اس جگہ اس کا حوالہ دے دے۔ اس کے لئے الله تعالی تم کو جزائے خیر عطا فرمائے۔ اور اس کتاب کا نام میں نے دے۔ اس کے لئے الله تعالی تم کو جزائے خیر عطا فرمائے۔ اور اس کتاب کا نام میں نے دیے۔ اس کے لئے الله تعالی تم کو جزائے خیر عطا فرمائے۔ اور اس کتاب کا نام میں نے

"مشكوة المصابيح" ركما_

اس كتاب كى تعنيف كے لئے اللہ تعالى سے نيك تو فيق،اس كى مدد،اس كى مدابت اورمقصد كے حصول كے لئے خطا قصور سے حفاظت كا طالب ہوں، اور دعا كرتا ہول كاللہ تعالى مجھے اس زندگى ميں اور مرنے كے بعد نيز تمام مسلم مردول وعورتوں كواس سے نفع بہنچائے ۔اللہ تعالى مير سے لئے كافی ہے اور بہترین كارساز ہے، طاقت وقوت اللہ تعالى بى كى جانب سے ہے جوتمام امور برغالب اور حكمت والا ہے۔

تشریح: الد مد الله نحمده النع: جمله صنفین کاطریق بی ب کواپی کاب کوبسم الله اور حمد و صلوة سے شروع فرمات بیں، گرسب کا انداز جدا گانہ وت ب کوئی جمله اسمیہ کے ذراجہ تحمید کرتا ہے کوئی جملہ اختیار کرتا ہے جو اسمیہ فعلیہ دونوں ہوسکتا ہے صاحب مشکوة نے بھی بہی انداز اختیار کیا اوراپی کتاب کو جملہ اسمیہ وفعلیہ دونوں سے شروع فرمایا ہے۔ غالبًا اشارہ اس بات کی طرف ہے کہ جملہ اسمیہ تو دوام واسمر ارپردا الت کرتا ہے، تو مطلب یہ ہوا کہ برحال میں بمیشہ برسم کی تعریف حق تعالی شانہ کے واسطے ہے، اور جملہ فعلیہ تجدد وحدوث پردا الت کرتا ہے، مطلب یہ ہے کہ اے خدا جمران وائی مختلفہ کے ساتھ وقانو قانو مائیو مائیل فلیلا کبھی اس انداز سے کبھی اس طریق سے تیری جمرکرتے ہیں، کیول پی پر کبھی حمر کرتے ہیں، اور بھی عمر ، عمارتوں پر کبھی حسن و خو بی پر کبھی دولت ایمان پر کبھی دولت علم پر ، ہر حال میں ہر کیف میں ہم تیری تعریف کرتے ہیں اور چونکہ دولت ایمان پر کبھی دولت علم پر ، ہر حال میں ہر کیف میں ہم تیری تعریف کرتے ہیں اور چونکہ دولت ایمان پر کبھی دولت علم پر ، ہر حال میں ہر کیف میں ہم تیری تعریف کرتے ہیں اور چونکہ دولت ایمان پر کبھی دولت علم پر ، ہر حال میں ہر کیف میں ہم تیری تعریف کرتے ہیں اور چونکہ نصورت پائی جاتی ہوئی ہائی جو کرتے ہیں۔

حالانکہ کبال حق تعالی شانہ کی حمد اور اس کا پاک نام اور کبال جماری نا پاک زبان اس کی شان تو رہے۔ سے

> ہزار بار بشوئیم دہان زمشک وگلاب ہنوز نام تو گفتن کمال بے ادبی است

وہاں تو یہ ہے کہ ہزار مرتبہ بھی منھ کو مشک وگلاب وغیرہ سے دھویا جائے تب بھی اللہ تعالیٰ کانام لیما بہت بڑی فلطی ہے اور یہاں دعویٰ کہ ہم تیری حمد کرتے ہیں اس دعوی سے اللہ تعالیٰ کانام لیما بہت بڑی فلطی ہے اور یہاں دعویٰ کہ ہم تیری حمد کرتے ہیں اس دعوی سے سینے کے لئے مصنف نے فرمایا:

"ونست عينه" كاس حمد كرني بهى بم الله تعالى عدد طاب كرت بي الروبة فق دية بم حمرك بي ورنبي اور پر بهى الانسان مركب من الخطأ والنسيان " [انبان غلطيول عمركب ب] انبان كتنى بهى سعى كرام ابتمام عام ك غلطى بحول جوك بوبى جاتى به بهم يجى تجهد بي بحدة بهم كوتا بى اور غلطى ضرور در بيكى -اس كئ فرمايا:

"ونستغفرة" كالركون نلطى بوجائة تم الله تعالى سے غفرت با جے بين اور چر خونكه شيطان انسان كے پيچهد كا بوائن كے وقت بى دولمة بيدا بوت بين لمة من الشيط ان ولمة من الرحمن. اورلمه رحمانی الراجها يول كا القاء كرتا ہے۔ تولمه شيطانی برائيول كا القا كرتا ہے اس لئے ضروری ہوا كه كى بناه گاه كو پكر اجائے اس لئے ضروری ہوا كه كى بناه گاه كو پكر اجائے اس لئے فرمایا:

"ونعوذ بالله من شرور انفسنا." [كنتم النفول كثر اوربرائيول ي الله تعالى كى پناه بالتج بين -]

اس سے بیہ بھی ظاہر ہوا کہ جو ہرائیاں نفوں ہیں موجود ہیں بذات خود ہری نہیں، بلکہ تعلق کے اعتبار سے اس میں برائی آ جاتی ہے۔ کفر بذات خود برانہیں اور غصہ بذات خود برائی بیدا ہوجاتی ہے، کفر کاتعلق اگر شیطان نہیں بلکہ اپنے محل و متعلق کے بدل جانے سے برائی بیدا ہوجاتی ہے، کفر کا تعلق اگر شیطان کے ساتھ کیا جائے تو برا اور کفر کا تعلق خدا کے ساتھ کیا جائے تو برا اور فرموم ہے۔

اور جب شروراورا عمال کی اضافت انفس کی طرف کی ہتو اس سے بیروہم ہوسکتا تھا کہ نفوس مختار ہیں اورا عمال میں مستقل ہیں لہذا "من یہدہ اللّٰہ فلا مضل له النع" [جس کو اللّٰہ تعالیٰ جس کو گراہ کردے اس کوکوئی گراہ کرنے والاَنہیں اورالله تعالیٰ جس کو گراہ کردے اس کوکوئی ہدایت دینے والاَنہیں ۔ آلا کراس وہم کودورکر دیا کہ یہ سب منجانب خداوندی ہے بندہ کوصرف منب حاصل ہے۔ (شرح الطبی : ۱/۸۳)

آثار ہے مراد کتابیں ہیں۔انوار ہے مرادعلاء۔اور ارکان ہے مرادآیات۔ مکان ہے مراد کتاب اور علاء دونوں ہیں۔

شید تشیید ہے جس کے معنی معنبو طرکناشید میں جوشمیر ہے اس کامرجع حضرت محمسلی اللہ تعالی علیہ وسلم کا ذکر ضمنا ہوگیا اس لئے صلوت اللہ اللہ اللہ عیں صلو ات الله نہ کہا چونکہ یہ کمات آنخضرت سلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے ایسے ہی منقول ہیں۔

من معالمها: ماعفا كابيان باورمن العليل. من كان على شفا كابيان بورمن العليل. من كان على شفا كابيان بوريها المعتب مثاكله بهي بأني جاق بهال صعب مثاكله بهي بأني جاق بها ورئي بال صعب مثاكله بونكه دوالي لنظول كااكه مين جمع كردينا جولفظا ايك بول اورمغني جدا گانه صنعت مثاكله كمات بي بهال شفى شفا دونول ظاهراً ايك بين محراول فعل دوم اسم بوريها العمان: ايمان كراستول ميم ادانبياء كرام عيم الصلاة والسليم ،كتب طرق الايمان: ايمان كراستول ميم ادانبياء كرام عيم الصلاة والسليم ،كتب اوبداوران كر معين بيروكار علاء وسلحاء بين ـ (مرقاة: ١/٨)

قد عفت اثارها: [ان كنتان مث چكت عفا يعفو عفوا. منامنادينا-الإزم اورمتعدى دونول طرح استعال بوتا باورمبالغه كاوزان ميس سے بير ماخوذ ب الل عرب كول "عفت الربع الأثار سے اور قرآن ياك ميس بے - "عفا الله عنک لم اذنت لهم" ای محا الله عنک. (اسان العرب) آثار: اثر کی جمع ہے۔ (مرقاۃ: ١/٨)

و خبت انو ار ها: اوران کی روشی بھی چکتی ۔ خبا یخبو خبواً و خُبُواً.

بجمناد صیابہ نا ۔ یہ اصل میں ہمزہ کے ساتھ "خبا" تھا گرائل عرب اس کو با ہمزہ کے استعال کرتے ہیں۔ قرآن پاک میں ہے "کلما خبت زدناهم سعیرا". (اسان العرب) انوار: ہے مرادانبیاء اور علاء وغیرہ کی تعلیمات وہدایات ہیں۔ (تخت المراق) وو هنت ارکانها. وهن ضوهنا کزوری ستی ،خواہ وہ عمل میں ہویا امر ہیں یا اس کے علاوہ میں۔ قرآن پاک میں ہے "حسملته امه وهنا علی وهن" اس کی ایک تغییر ضعفا علی ضعف بھی کی گئی ہے۔ (اسان العرب)

اد کان: رکن کی جمع ہاں ہے مراداصل تو حید، بوق، بعث بعد الموت اور قیامت پرائمان ہے اور عند البعض نماز، زکوۃ وغیرہ دیرعبادات مراد ہیں۔ (مرقاۃ: ۱/۸)

جهل مکانه: جهل س جهلا و جهالهٔ نه جانا - بینام کی نقیض ہے
یعنی اللہ تبارک وتعالی نے حضرت نبی اکرم سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کواس وقت مبعوث فرمایا، جب بی نوع انسان جبالت اور ضاالت کی انتہاء کو بکٹنی گئی تھی اور ایمان ودین کی روشی بحیلا نے والی وہ تعلیمات جوانبیاء کرام علیم الصلوٰ قوالسام، کتب اور اور ان کے تبعین کے فرریعہ عالم میں بہنچائی گئی تھیں ان کو یکسر نظر انداز اور بالکل فراموش کردیا گیا تھا، اور ان تعلیمات وہدایات سے اس قدر دوری ہوگئی تھی کہ وہ ناممکن الحصول ہوگئی تھیں، اور اس قدر طلمت و جہالت عام ہو چکی تھی کہ علاء وصلیاء کا وجود نا بید ہوگیا تھا اور جومعد ودے چند تھے وہ ربانیت اختیار کئے ہوئے تھے، اور سات ومعاشرہ میں ان کی کوئی حیثیت وو تعت نہیں تھی۔ رببانیت اختیار کئے ہوئے تھے، اور سات ومعاشرہ میں ان کی کوئی حیثیت وہ تعت نہیں تھی۔ (مستفاد: مرقاق)

وشفى من العليل من كان على شفا.

پہاا"شفی" شفاءے ماخوذ ہے اور فعل ماضی ہے نیز دوسرا" شفا" ما فداور کنارہ کے معنی میں ہے اور اسم ہے۔

اس سے اشارہ ہے قرآن پاکی آیت ''و کنتم علی شفا حفرہ من النار ''کی طرف (مرقاہ)

اورمرادیہ ہے کہ بی نوع انسان کفر وٹرک میں اہلا کی وجہ سے روحانی طور پر بیار بوکر دوزخ کے گڑھے میں آلد تعالی علیہ وسلم نے بوکر دوزخ کے گڑھے میں گرنے کے قریب تھی، کہ حضرت نبی اکرم سلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے اس کوا میان وتو حید کی تعلیم کے ذریعہ جہنم سے بچا کرفلاح و نجات کے راستہ پرگامزن کردیا۔ واوضع سبیل الهدایة

لمن قصد ان يسلكها.

[اور بدایت کے راستہ کوواضح کر دیا اس مخص کے لئے جواس پر چلنے کا ارادہ کر ہے۔]

کنوز سعادہ لینی نیک بختی کے خزانے ،اوراس سے مراداسلام ،ایمان ، نیک اعمال ،

عبادات اور معارف ہیں کیونکہ ان کو حاصل کرنے والا جنت کے خزانوں کا متحق ہوتا ہے۔

نیز "لمن ار اد" اورائی طرح"لمن قصد" ہے اس بات کی طرف اشارہ ہے

کہ بندہ کیلئے معی ضروری ہے جیبا کہ بعض مشائخ سے منقول ہے کہ ان چیز وں کا حصول
موقوف تو مشیت خداوندی ہر ہے مگر بندہ کیلئے کسب و معی ضروری ہے اور بیا ایسے ہی ہے جیسے
موقوف تو مشیت خداوندی ہر ہے مگر بندہ کیلئے کسب و معی ضروری ہے اور بیا ایسے ہی ہے جیسے

الله تبارك وتعالى في قرآن بإكى صفت "هدى للمتقين" ذكر فرمائى ب- (مرقاة) معالِمُ. مَعُلَمٌ كى جمع بمعنى علامت - (مرقاة) امًا: مجمل كى تنصيل كے لئے آتا ہے۔ لطیفہ: اورامال بھی تنصیل کے لئے ہوتی ہے جوباپ کی بیٹھ میں مجمل ہوتا ہے۔
امال اس کواپنے پیٹ میں کیراس کی تنصیل کردیتی ہے اوراس کو ظاہر کردیتی ہے۔
امک کاام کا اسلوب بدلنے کے لئے بھی آتا ہے جس کو فصل خطاب کہتے ہیں۔ چونکہ یہ تنصیل کے لئے ہوتا ہے اور مجمل و مفصل میں تغایر ہوتا ہے۔

فان التسمسك ميں فاء چونكه اما اكثر وبيشترشرطك كے آتا ہا ت كئے فاء يہاں اليا گيا، جز اكم معنى موبوم كى وجہ سے يہ بجھ كراور خيال كرك كه اما شرط كيلئے ہے۔
تمسك: كى چيز كو پانچوں انگيوں سے پكڑ نامغبوط پكڑنا ۔ هدى راسته دكھلانا اس كے معنى ميں پيش قدمى ركھى ہوئى ہے هدى كے معنى بيال، سيرت چلن لا يستسب استقامت ہونا افتفاء گدى كے پیچے كا حصه، يبال مرادا تباع كرنا ہے ۔ لما ميں ماموصوله ئاور صَدَرَ اس كاصلہ ہے۔

من مشکوته الخ: شن مشکوة ت تشبیدی آنخضرت سلی الله تعالی علیه وسلم کے سیند مبارک کو، اوراس کوحذ ف کردیا اور ضمیر کواوٹا دیا، یہ استعاره بالکنایہ ہے اس کانام استعاره مکدید ہے۔

اعتصام میں تمسک کے معنی کے بنسبت اور زیادتی ہے بسحبل اللہ میں حبل اللہ اللہ اللہ میں حبل اللہ سے مراد کام اللہ شریف ہے۔

ا مابعد سے یہال تک حدیث کی ضرورت وعظمت کو بیان کیا اور فرقہ قرآنیہ کا ابطال اور اس تثبیہ کی وجہیہ کہ مشکوۃ کہاجاتا ہے طاق (وو خراب وارڈ ال جودیوار میں جرائ وغیر ورکھنے کے لئے بناتے ہیں) کو۔ اور آنحفرت میں اللہ تعالی علیہ وہم کا سینمبارک آنحفرت میں اللہ تعالی علیہ وہم کے قلب منور سے نور حاصل کر کے اس کا فیضان مخلوق پر کرتا ہے لہذا وہ طاق کے مشابہ ہے۔ (مسرح المطیبی) اور بیا خوذ ہے اللہ تعالی کے فریان "اللہ نور السموات و الارض مثل نورہ کمشکوۃ فیھا مصباح"

(5F/)_c

كردياجويه كتيم بين كه مين صرف قرآن كافي ب، حديث كي ضرورت نبين _

شوارد : شارده کی جع ہودشی جانورمراداحادیث فریبه، احادیث موصوف شوارد ، صفت ہے اورا لیے بی او ابلہ احادیث بی کی صفت ہے۔

البتہ شوارد سے مرادوہ احادیث ہیں جو کتب اصول میں روایت کی گئی ہیں، کیکن ان کک طالب کی رسائی مشکل ہوتی تھی کیونکہ یہ معلوم کرنا کہ کس کتاب میں ہے اور کس موقعہ پر ہوشوارتھا، گویا وہ احادیث طالب کی نظروں سے پوشیدہ تھیں اور بھا گی ہوئی تھیں، اور اوابد سے مرادوہ احادیث ہیں جن کے معانی طالب حدیث سے پوشیدہ ہیں گویا کے وہ اس سے بدکی ہوئی ہیں۔ اور صاحب مصابح نے ان کو اس طرح روایت کردیا کہ ان کے معانی کا سمجھنا اور ان کا تا اش کرنا آسان ہوگیا۔

ضرورت تدوین احادیث مبار که

تقطیعال کی بین کہ اما بعد ہے کیر "بیدان کشف ہ" تک وجہ بین من بیان کی کہ کنوز سعاوت فلاح دارین بغیر ارشادات نبوی صلی اللہ علیہ وسلم کے غیر ممکن ہے اور کنوز سعادت فلاح دارین کی برانان کو ضرورت ہے اس لئے احادیث وارشادات نبی سلی اللہ علیہ وسلم بیان کئے گئے۔

مصابیح کواختیار کرنے کی وجہ

کان کتاب المصابیع ہے او اسدھا تک وجہ اختیار متن بتائی کہ اس فن میں کتاب المصابع بی کو کیوں متن بنایا اس کی کیوں شرح کی بتلادیا کہ وہ سب کتابوں میں جامع ترین کتاب تھی اس لئے اس کو اختیار کیا۔

اشكال: لما سلك: عاكدا شكال كاجواب المحاج جامع ترين المحاج جامع ترين كاب المحاج جامع ترين كاب المحاج المحاج

جواب: گرچوہ جامع ترین کتاب تھی گراس میں اختصارا مقدرا ختیار کیا گیا تھا کہ اسانید وما خذکو چھوڑ دیا تھا گر چاس وجہ سے کہ ایک بڑے بزرگ معتبر نے جمع کیا تھا مسیح تھا، گر بنام ونثان ہونے کی وجہ سے جیران کن تھی اس وجہ سے شرح کی ضرورت بڑی۔
بڑی۔

سلک کی خمیر کا فاعل مصنف کتاب المصابح اور چونکہ بیباں ایک کمی کا ذکر کیا گیا ہے۔ اور کی سے ذرادل کورنج ہوتا ہے اس لئے فورا دعاد بدی رضی اللہ عنہ

اغفال: بنام ونثان راسته اس عبارت میں وجہ تصنیف شرح بیان کی۔
اُعلام اوراغفال میں دو نسخ ہیں (۱) دونوں میں ہمزہ کا فتحہ ایک علم کی جمع اور دوسری غفل کی جمع اس صورت میں اعلام کا مطلب ہوگانثان والاراستہ اوراغفال (بنام ونثان راستہ) (۲) دونوں کا کسرہ ، اس صورت میں بید دونوں مصدر ہو نگے اور معنی کے اعتبار سے ایک دوسرے کی ضد ہو نگے ۔ اوراعلام سے مراد "مشکاة" بناوراغفال سے مراد" مصابح النتہ "بے۔

فاستخرت الله: اسلے كالله تعالى في مايا ہے"وربك يخلق مايشاء ويختار ماكان لهم الخيرة" اور طرائی في حضرت أس مرفوعاً روايت كى ہے۔"ماخاب من استخار ولا ندم من استشار (مرقاة)

استخاره

فاستخرت الغرق الله تعالى كانيليفون غبر دعائے استخارہ بالراكدون كام نه

چلے تو سمجھ لو اہنن خالی نہیں پھر کرو۔ تین دن تک کچھ نہ کچھ مشورہ مل جائیگا اور اگر تین دن میں کچھ خوصل نہ ہوتو سمجھ لو کہ تمہاری اہنن خراب ہے اسے سمجھ کراؤ۔اور پھر چو تھے دن پانچویں دن استخارہ کرو پھر بھی کامیا لی نہ ہوتو چھٹے دن پھر ساتویں دن استخارہ کرو، ان شاءاللہ کامیا لی ہوگی۔

استخاره كامقصد

استخارہ کامقصد میہ ہوتا ہے کہ جس کام میں انسان کوتذبذب ہو کہ کروں یا نہ کروں تو استخارہ کامقصد میہ ہوتا ہے کہ جس کام میں انسخارہ کے ذریعہ سے اس کے کرنے یا نہ کرنے کا شرح صدر ہوجاتا ہے اور اطمینان ہوجاتا ہے اور ایم میں ان شاء اللہ خیر ہوتی ہے۔

ایک غلطهمی کاازاله

بعض اوگ سمجھے ہیں کہ استخارہ کرنے سے کوئی خواب نظر آتا ہے جس میں اس کام کے کرنے یا نہ کرنے کی ہدایت ہوتی ہے سویضر وری نہیں ،خواب نظر بھی آسکتا ہے ،نہیں بھی ، اصل چیز شرح صدر کا ہوجانا ہے ۔ نقط

فاعلمت مااغفله: پی بانثان کردیا میں نے ان تمام مقامات کوجن کو بنثان چور دیا تھا صادب مصابح نے بایں طور کہ صدیث کے شروع میں راوی اور آخر میں مخرت کا التر ای طور پر تذکرہ کردیا۔ (مرقاق)

مقر: جائے قرار، مناسب باب جومناسب تھااتی میں اس صدیث کور کھدیا۔ اتقان: مضبوط معتقنون: اپنے علم میں مضبوط علماء، ثقات: ثقة کی جمع ہے بمعنی عادل ۔ (مرقاة) مشیخین: شیخین سے مرا دامام بخاری اور امام سلم ہیں۔ اس کئے کہ یہ لفظ جب محدثین میں بوا اجا تا ہے تو امام بخاری اور امام سلم مرا دہوتے ہیں اور صحابہ کرام رضوان اللہ علیہ ملم اجمعین میں جب شیخین بو لئے ہیں تو حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ اور حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ اور حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالی عنہ مراد ہوتے ہیں ، اسی طرح فقہاء میں حضرت امام اعظم ابو حنیفہ اور حضرت امام ابو یوسف اور مناطقہ میں ابو علی سینا اور فار ابی مراد ہوتے ہیں۔

اشكال مع جواب

امشکال: انسی اذا نسبت الحدیث البهم: ان کی طرف یعنی ان بعض ائمہ کی طرف جن کومیں نے وکر کیا اور جن کی کتب اس انید کے ساتھ متد اول بیں۔ (مرقاق)
قد فرغوا منه واغنونا عنه: بیا یک اشکال کا جواب ہے اور اشکال بیہ ہے کہ نقاد حدیث نے صاحب مصابح پر اس وجہ سے اعتر اض کیا تھا کہ انہوں نے نقل صدیث کے وقت سند صدیث کے وکر کا التزام نہیں کیا تھا اور صاحب مشکوق نے بھی صرف صحابی اور کتاب کے حوالہ کو وکر کر دینا کافی سمجھا ہے۔ لہذا ان پر بھی وہی صاحب مصابح والا اعتر اض ہوا۔

جواب: توجواب دیدیا کہ آن ائمہ کی کتب سے ساحادیث لی گئی ہیں انہوں نے اپنی کتب میں مکمل سند ذکر کی ہے اوروہ اسانید کے سلسلہ میں نقد ونظر اور تااش وجتو کے مرحلہ کو سلسلہ میں نقد ونظر اور تااش وجتو کے مرحلہ کوئی طے کر چکے تھے لہذا اب ہمارے لئے صرف طرق حدیث پر اکتفا کرنے میں کوئی حربے نہیں۔

انہوں نے ہم کو تحقیق حدیث سے بے نیا زکر دیا ہے لینی اب ہمیں روایات کونقل کرتے ہوئے (کتب معتمدہ سے) وصل وقطع، وقف ورفع، ضعف وحسن، اور صحت ووضع وغیرہ کی تحقیق کی ضرورت نہیں، کیونکہ ائمہ متقد مین اس سلسلہ میں بحث وجمیص اور چھان پینک کر چکے ہیں۔

نقل حديث

ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ مصنف کی اس عبارت سے ایک مسئلہ یہ بھی نکلتا ہے کہ اگر کتب معتمد ہ مشہورہ سے کوئی روایت نقل کی جائے خواہ عمل کے لئے ہویا احکام واستدال کے لئے ،ان کتب کے مصنفین پراعتاد کرتے ہوئے بیجا بڑہ ،حالانکہ ابن الصلاح نے اس کے لئے ،ان کتب کے مصنفین براعتاد کرتے ہوئے بیجا بڑے، حالانکہ ابن الصلاح نے اس کے لئے بعض شرا نظ بھی کھی ہیں مگر علاء نے ان کو استجاب برجمول کیا ہے۔

اور ابن برہان فرماتے ہیں کہ تمام فقہاء اس رائے پر متفق ہیں کہ عمل بالحدیث کیلئے ساع شرط نبیں ہے بلکہ جب احادیث کا کوئی صحیح اور معتمد نسخ مل جائے تو اسکی روایات برعمل کرنا جائز ہوجا تا ہے۔ (مرقاة)

روایت امام بخاری اور امام مسلم کی زیادہ متحکم مجھی جاتی ہیں، اور درایہ میں اور جرایہ میں اور جرایہ میں اور بھی اور بھی ان سے بڑھ سکتا ہے جیسے امام مالک کدوہ کلیات کے مجتبد ہیں بخلاف امام بخاری کے کہ یہ فروع کے مجتبد ہیں۔

بعض احادیث جو کتاب المصابح میں مختصر بیں وہ یہاں مطول بیں اور جومصابح میں مطول بیں اور جومصابح میں مطول بیں وہ یہاں مختصر بیں اس کی وجہ بیہ ہے کہ آگر دیکھا جائے کہ جومسکلہ ہم کو بیان کرنا ہے اً رمختصر سے حاصل ہو جاتا ہے تو اس کوختصر فرکر کر دیا، اور اگر مختصر سے مسکلہ ٹابت نہیں ہوتا تو وہاں مطول کو ذکر کر دیا گیا ہے۔

وان عشرت النخ: مطلب بين كراس مين الناكياتها كفسل اول مين شيخين كى مديثين والن عشرت النخ مين غير شيخين كى الراس مين اختلاف معلوم بوتوبياس وبه

ے ہے کہ میں نے جب کتاب کصی تو بہت کی کتابیں جمع بین الصحیحین، جامع الصول، بخاری مسلم وغیرہ میر ہے ہا مختص تو اگر کوئی حدیث مصابح میں ہے اور دوسری کتابوں میں بھی مگر بخاری ومسلم میں نہیں تو میں نے بخاری ومسلم پر اعتاد کیا اور اس کو میں نے فصل اول میں جگہ نہیں دی اور مصابح میں فصل ٹائی میں کوئی حدیث ہے، اور وہ متون بخاری ومسلم میں ہے تو میں نے اس کوفصل اول ہی میں جگہ دی۔

بعض مرتبہ ایما بھی ہوگا کے تہمیں مصابح میں کی باب یا کی کتاب کے اندرکوئی روایت مطابح میں وہ روایت نہ ملے گی، کیونکہ مصابح میں وہ روایت نہ ملے گی، کیونکہ مصابح میں وہ روایت مکر رتھی لبذا میں نے بالاردہ اس کو کسی مقام سے ساقط کردیا اور دوسر سے مقام پر بعینہ وہ روایت با آغیر کے ذکر کردی ہے۔ اور یکمل سہوونسیان کی بنا پڑئیں ، بلکہ بالقصد وبالارادہ ہے تکرار سے نکنے کی غرض سے۔ (مرقاة: ۳۳)

اوربعض مرتبہ مصابح اور مشکو قدونول میں متن حدیث میں اختلاف ملے گاتو اس کی بنیا داسانید ورواق حدیث میں اختلاف ہے اور بہت ممکن ہے شاید کہ میں اروایت کونہ پاسکا مول جس کے الفاظ شیخ نے ذکر کئے ہیں۔ (مرقاق)

فسی کتب الاصول: اس سےوہ کتب سبعہ مرادیں جن کی روایات صاحب مصابع نے ذکر کی ہیں۔ (مرقاق)

ومالم بشر السه معانی الاصول: لین جن روایات کے انظاع، وقف اور ارسال وغیرہ کا تذکرہ جامع ترفدی بنن الی واؤداور بیتی وغیرہ میں ہے اور مصنت نے اس کی طرف اشارہ نہیں کیا تو میں نے بھی ان کی اتباع میں اس مقام کی تشریح کورک کردیا ہے۔ (طبی ومرقاة)

بسغسرض: كيونكه بعض نقاد نے بعض احاديث مصابح كوموضوع قر ارديا ہے كيكن

صاحب مشکوة کور فدی یا اس کے علاوہ میں اس کے صحت یا حسن پرصراحت مل گئی۔ تو انہوں نے اس صراحت کو آئی ہوں نے اس صراحت کو تو انہوں نے اس صراحت کو تو انہوں خلید ہوں ہوں اس کے موضوع قرار دیا ہے، گرامام ترفدیؓ نے اس کوا پی جامع میں حسل اورامام نووی نے "ریاض الصالحین" میں صحیح الاسنا قرار دیا ہے لہذان کے زعم باطل کے قلع تع کے لئے اس صراحت کو تل کر دیا۔ (شرح الطیمی مع زیادة)

مهملة: مخرن مديث كيتذكره كيغير

فان عثوت: اس کئے بعض علاء نے ان مقامات کے حاشیہ میں مخارج حدیث کوؤ کر کر دیا ہے۔اوراصل کتاب میں بیاض چھوڑ دی ہے۔(مرقاق)

ولا حول ولا قوة الا بالله العزيز الحكيم اى لاحول عن معصية الله ولا طاقة على الطاعة الا بالله العزيز الحكيم: يعنى ندمعاصى حركا جاسكان، اور نكى طاعت وعبادت برقد رت بوسكتى ب، مرالله تعالى كى مدد حرب الله تعالى كى مدد من طاعت وعبادت بى بنده گناه حن كاسكتا ب، اورالله تعالى كى مدد شامل حال بوتب بى بنده كوئى عبادت بجالاسكتا ب-



فوائدخطبه

صاحب اشرف التوضيح نے فوائد خطبہ اور فوائد دیا چہ کوسہاں انداز میں بیان فرمایا ہے، جوطلباء صدیث کے لئے بہت مفید ہے اس لئے اس کوفل کیاجا تا ہے۔

آغاز كماب مقدس

حضرت مصنف قدى سرة فى قرآن باك كى ترتيب كابى، آنخضرت سلى الله تعالى عليه وسلم كى مديث باك اورطر ايقد سلف صالحين كى اتباع كرت بوئ اپنى كتاب مقدى كو تسميداور حمد من شروع فرمايا ب، صديث "كىل المو ذى بال" مختلف الفاظ سے وارد بوئى بىن روايات ميں بيالفاظ بيں -

كل امر ذى بال لم يبدأ فيه ببسم الله الرحمن الرحيم فهو ابتر. (رواه الخطيب بهذا اللفظ في كتاب الجامع) كذا في المرقاة.

بعض روایات کالفاظ بینی -کل امر ذی بال لا یبداً فیه بالحمد الله فهو اجذم. (رواه ابوداؤد والنسائی فی عمل الیوم و الیلة) کذا فی المرقاة.

برقابل ابتمام کام جو"بسم الله الرحمن الرحيم" عشروعنه كيا گيا بوده ب بركت ب-

برذی شان کام جو"المحمد ملله" سے شروع نه کیا گیا ہو وہ بے برکت

الفاظ ذیل ہے بھی پیرصدیث کمتی ہے۔
کل امسر ذی بسال لا یبدأ فید

بالحمد لله فهو اقطع. (رواه ابن ماجة) كذا في المرقاة.

برمہتم بالشان کام جو''المحمداللہ'' سے شروع نہ کیا جائے وہ بیٹر ہے۔

ان تمام روایات کا حاصل برمہتم بالثان کام یا کلام کوبسم الله اور الجمدلله سے شروع کرنے کی ترغیب دیتا ہے۔ سیصدیث مندرجہ ذیل الفاظ سے بھی وارد ہوئی ہے۔

براچها کام جس کاآ غاز "ذکر الله" نه بوه و درکت سے خالی ہوگا۔ كل امر ذى بال لا يبدأ فيه بذكر الله فهو اقطع. (رواه الرهاوى في اربعينه وحسنه ابن الصلاح) كذا في المرقاة.

راوی نے اس صدیث کے الفاظ ذیل بھی نقل فر مائے ہیں۔

كل امر ذى بال لم يبدأ فيه بذكر الله ثم بالصلوة فهو اقطع ممحق من كل بركة. (اخرجه الرهاوى عن ابى هريرة مرفوعا) كذا في المرقاة: ٣/١.

برذی احترام کام جو" ذکسر الله" سے اور پھر مجھ پر درود پر صفے ہے شروع ندکیا گیاوہ ہر برکت سے خالی ہے۔

علامہ رہاوی کی حدیث نے شمیہ اور حدیث تحمید کی مرادواضح کردی ہے کہ حضرت شارع علیہ الصلاق والسلام کا اصلی مقصد یہ ہے کہ ہرذی بال کام کے آغاز میں ہرکت بیدا کرنے کے لئے اللہ تعالیٰ کا ذکر ہونا بیا ہے، وہ ''بسسم اللہ'' کہنے کی صورت میں ہو خواہ ''المحمد للہ'' کہنے کی شکل میں ہو۔ا گرمقصو دسے قبل دونوں کوئی ذکر کرلیا جائے تو نورعلی نور ہے۔حصول ہرکت کے لئے ان دونوں میں سے کوئی ایک یا ذکر باری کے قبیل سے کوئی ایک یا ذکر باری کے قبیل سے کوئی ایک یا ذکر باری کے قبیل سے کوئی ایک بیا ذکر باری کے قبیل سے کوئی اور کا ہم کہ لینا بھی کافی ہے۔

تقریر بالا سے صدیم سمیداور تمید میں تعارض کاشبہ جاتا رہا کیونکہ دونوں صدیثوں کا مقصود ''ذکر الله " سے کام شروع کرنے کی تغیب دینا ہے۔ اگر علمی سبیل التنزل تعارض سایم کرلیا جائے تو سہل اورصاف جواب یہ ہے کہ ابتدائے حقیق اگر چر بسیط غیر معتد ہوا ۔ بہی چیز سے ہو کئی ہے کیا تا اللہ تعالی علیہ و کم کا کلام محاورات عامداور عرف ایک بی چیز سے ہو گئی ہے مطابق ہوتا ہے۔ عرف میں مقصود سے پہلے ہر مناسب مقام کئے جانے والے کام کو ابتدائی کام سمجھا جاتا ہے۔ ابتدائی کام مصدد اور مدوسع ہے اس میں متعدداموروا تی ہو کئے ہیں۔ اس لئے شروع فی المقصود سے قبل تسمید، تحمید اور صلواۃ علی النبی صلی الله تعالیٰ علیہ و سلم وغیر ہا امور سبعرف کے اعتبار سے ابتدائی امور ہیں۔ صلی الله تعالیٰ علیہ و سلم وغیر ہا امور سبعرف کے اعتبار سے ابتدائی امور ہیں۔

شميه اورحم ميس ترتيب

"الحمدالة" شكر بارى تعالى كوضمن ب-"تكلم بالحمد" كل بعنى تعين حق تعالى في عطافر ما في بين سب براجمالا شكر كرنامة صود ب، كتاب كا فتتاح" بسم الله" كرف كي توفي مل جانا بحى بهت بردى نعمت ب- اس لئے حمد كوشميد كے بعد المئة تاكداس نعمت عظيم برجمي شكر ادابو جائے - نيز "بسم الله" برخ صنى ترغيب براجھے كام سے بہلے دى گئى ہے، خواج بس كلام سے بوخواج بس طعام واكل وشرب وغير باسے بو، اور حمد كو (عادة) خطب اور جنس كلام كے ساتھ خاص سمجھا جاتا ہے، لہذا شميد عام بوا اور حمد خاص اور عام خاص خطب اور جنس كلام كے ساتھ خاص سمجھا جاتا ہے، لہذا شميد عام بوا اور حمد خاص اور عام خاص حمقدم بوتا ہے اس لئے شميد كو حمد برمقدم كيا گيا۔ (من رقم الشخ قدس سرة)

قوله الحمدلله نحمد: حضرت مصنت في حمر ك لئي دوجملي ذكر فرمائ بين الك المدللة ومرافعليه مضارع لين "نحمده". في عبد الحق محدث وبلوي دهمة الله عليه من المعمد الله عن الماس بات كى دال حمد الله ساس بات كى

خردینامقصود ہے کہ تمام محامد ذات پاک کے ساتھ مخصوص بیں اور "نعصدہ" ہے انتائے حمدہ محتی انتائیہ ہے محتی انتائیہ ہے محتی انتائیہ ہے محتی انتائیہ ہے محتی انتائیہ ہوں۔ دوسرا صورۃ خبریہ ہے محتی انتائیہ ہوں۔ دوسرا جملہ گو اس صورت بیں تکرار نہ رہے گا، یہ بھی اختال ہے کہ دونوں معنی انتائیہ ہوں۔ دوسرا جملہ گو ظاہرا تکرار ہے لیکن اس کے بعد "نست عین ہ" کہنے سے تجدید فائد ، ہوگی کہ ہم انتائے حمد می جل وعلا کی اعانت کے بغیر کہال کر سکتے ہیں۔ (لمعات: 1/۲۵)

دونوں جملوں میں فرق

"الحمدالة" جمله اسميت جمله استميت جمله استرارودوام برداالت كرتى ب-اسميه جمله استرارودوام برداالت كرتى ب-اسميه جمله كامتنى ب-"عدول المجملة عن الفعلية الى الاسمية" "نحمده" جمله فعليه مضارعيه به وتجديد بردال ب اورمضارعيت استرار برداالت كرتى ب-اس طرح سے جمله فعليه مضارعيه استرار تجددي بردال بوگا۔

دو جملےذکرکرنے میں حکمتیں

(۱)جنس نعم باری تعالی متمر و دائم ہے۔ کوئی آن ایی نہیں جس میں ہم پر ان کی جنس نعم باری تعالی متمر و دائم ہے۔ کوئی آن ایی نہیں جس میں ہائے کی نعمت کی ندی نہ کسی نوع یا فرد کے ضمن میں فائض نہ ہورہی ہو، البتہ منعم پاک کی نعمت کے انواع و جزئیات آنا فا فائع و مانو بنوتا زہ بتازہ وار د ہوت رہتے ہیں۔ جنس نعم کے دوام و استمر ارکے چیش نظر جملہ اسمیدال نے اور انواع و جزئیات نعم کے تجد د کے چیش نظر جملہ مضارعید الائے۔ مطلب یہ ہے کہ جیسے ان کی نعمیں جدید فجد ید نوبہ نوجم کی انسان میں ہوتی رہتی ہیں انہیں کے مطابق ہماری طرف سے نو بہ نوجم کا ساسلہ جاری رہتا ہے۔

(٢)..... ذات محمود سجانه تعالى واحد دائم لم يزل والايزال باوران كي نعم متجد د بين، امر اول

کے پیش نظر جملہ اسمیہ اور ٹانی کے پیش نظر جملہ مضارعیہ اائے۔

(٣)جرکی دو تسمیں ہیں: (الف) حمر ہاری تعالی اپنی ذات پر ۔ بیدائم وستمر ہے، اصل حمر یہی ہے حامد جتنا بلند ہوگا اور محمود کو جس قد ریہ پنچا نے والا ہوگا اسی قد راس کی حمر ارفع ہوگی ظاہر ہے کہ یہ بات حمر ہاری تعالی علی ذاتہ کے برابر کسی میں نہیں ۔

(ب) حمر مخلوق خالق کے لئے ۔ قتم اول دائم ہے، دوام حامد کی وجہ ہے اس کی مناسبت سے پہلا جملہ اسمیہ الائے قتم ثانی حادث و متجد د ہے ۔ حدوث حامد کی وجہ ہے اس کی مناسبت سے دوسر اجملہ فعلیہ مضارعیہ الائے۔ (من رقوم الشیخ قدس سرہ)

صيغة تع لانے من حكمت

بظاہر حمد کرنے والے تصنیف کرنے کے وقت تنہا مصنف ہیں، مقتضی ظاہر "احمده" بصیغة الافراد تھا، مصنف رحمة الله تعالی علیہ نے "نحمده" کبائے، عدول عن مقتضى الظاهر کے کی وجو محمل ہیں۔

(۱) صیغهٔ جمع متکلم ال کوظمت شان جمد کی طرف اشارہ ہے کہ اس جسامیع الکمالات

پاک ذات کی جمد اتنا بردا کام ہے کہ اس سے عہدہ برآ ہونا افراد بی آ دم میں سے کی

ایک کے بس کی بات نہیں اس لئے صیغهٔ جمع الکر برحامد کوشر یک کرلیا ہے، خواہ اس کی
حمد حالی ہویا قالی ، بایں ہمہ "نست عینه" کہہ کر بتادیا کہ سب مخلوق مل کر بھی اس امر
عظیم کوادانہیں کر عمتی جب تک انہی کی اعانت شر یک حال نہ ہو۔

(۲)حضرت مصنف رحمہ الله تعالی نے تو اضعاً صیغہ جمع اختیار فر مایا ہے کہ تنہا میری حمراس قابل نہیں کہ اسے بارگاہ ایز دی میں شرف قبولیت حاصل ہو۔ اپنی حمد کو انبیاء کرام علیم الساام اولیائے عظام اور صالحین مخلصین رحم ہم اللہ کی حمد کے ساتھ ملا کرچیش کیا تا کہ ان نفوی قدسیدی مخلصانہ کا مدکے ضمن میں بیر عیناک سودا بھی نکل جائے۔ مسلدیہ ہے کہ اگر صفقہ واحدہ میں کئی چیز وں کا سودا ہوا ہو چران میں ہے بعض میں عیب نکل آئے تو اس صورت میں شریعت کا حکم یہ ہے کہ رد کر ہے تو سب کو کرے، رکھے تو سب کور کھے۔ عیناک کورد کرد ینا اور سیح سالم چیز کور کھ لیما جائز نہیں جب حق تعالی نے کمزور بندوں کو یہ تعلیم فر مائی ہے تو وہ کریم ذات خود بدرجہ اولی مخلوط چیز وں میں ہے ہے جمعے سالم رکھ کرعیب ناک کورد نہ فرمائیں گے۔ بلکہ سیح سالم کی برکت سے عیب ناک کورد نہ فرمائیں گے۔ بلکہ سیح سالم کی برکت سے عیب ناک کورد نہ فرمائیں گے۔ بلکہ سیح سالم کی برکت سے عیب ناک کورد نہ فرمائیں گے۔ بلکہ سیح سالم کی برکت ہے کہ اوئی برکت اعلیٰ مقبول فرمائیں گے۔ جماعت کی نماز میں ایک حکمت یہ بھی ہے کہ اوئی برکت اعلیٰ مقبول ہو جائے۔

(۳)ا ہے اخوان واصحاب پرشفقت اور بمدردی کی وجہ سے صیغہ جمع المئے ہیں تا کہ اس اہم عبارت میں ان کو بھی شریک کرلیا جائے ۔ کمال ایمان کا مقتضی ہے ہے کہ جو چیز اپنے لئے پسند کی جائے وہی دوسرول کے لئے بھی پسند کی جائے ۔ (کمافی الحدیث)

قدول و فست عین ہے: یعنی حق تعالی شانہ کی حمد کے امر عظیم میں اور تمام دیرا مور میں اپ کے وقصور کا اعتراف کرتے ہوئے ہرامر میں اس پاک وقادر مطلق ذات سے مدد کے طالب ہیں۔

یبال حضرت مصنف رحمه الله تعالی نے "ایساہ نست عیان" [جم ای سے مدو پا ہے ہیں] بعنوان حصر ذکر نہیں فر مایا اس لئے کہ مقام اختصاص کا ادراک وظیفہ خواص ہے۔ ہرکس وناکس کا یہ مقام نہیں کہ دل کی سچائی سے یہ کہہ سکے کہ مشاہدہ قد رت جم پر اتنا عالب آچکا ہے کہ ہما راکسی غیر کی طرف اب التفات ہی نہیں رہا، مطلب یہ کہ اعتقاداس امر کا تو ہرمومن کو حاصل ہے۔ لیکن اس کا استحضار صادق وظیفہ خواص ہے اس لئے ابن و ینار رحمہ الله تعالی فرماتے ہیں کہ "لولا و جوب قر أة الفاتحة لما قر اء تھا لعدم و ینار رحمہ الله تعالی فرماتے ہیں کہ "لولا و جوب قر أة الفاتحة لما قر اء تھا لعدم

صدقی فیها" (مرتاة: ١/٤)

قوله ونستغفوه: لین هم میں جو غفلات وتقمیرات ہم ہے واقع ہوئی ہیں نیز اس کے علاہ جن جن اسرافات وسیئات کا ہم شکارر ہے ہیں سب سے معافی کے طالب ہیں۔

ونعوذ بالله من شرور انفسنا ومن سنیات اعمالنا: شرورانفس اورا عمال سینہ میں تمام محر مات و مکروہات ظاہرہ وباطنہ بالعموم اور حمد وتھنیف کے موقع کی ب اعتدالیاں بالحضوص واض ہیں۔ مثلاً حمد سے غفلت، اس میں رہا ءو سمعہ ودیر شوائب نفس کا اختاا ما قلت یا عدم اخلاص ، اپنی استعداد و قابلیت پرنظر، تو فیق الہی سے صرف نظر اور تنصیل مسائل کے وقت قلت تر ہا ور شجاوز عن حدا الاعتدال وغیر ما امور۔

قول من يهده الله النج: بيكلام صورةٌ تواس بات كى خبر ب كه بدايت واضابال كوصف ميس بارى تعالى متفرد جي كى خيروشر كا خالق ان كيسواكونى نبيس اليكن معنى بيه جمله انثا نيه (وعائيه) به مطلب بيه ب كه بدايت واضابال انهى كے قبضه قدرت ميس به اس لئے ہم ان سے سوال و درخواست كرتے جيں كه جميس برسم كے ضابال سے محفوظ ر كھے۔ مدايت سے نواز سر كھے۔

فائده

اس سے پہلے جملہ "نعوذ باللہ النے" میں شروروا عمال کواپے نفوس کی طرف منسوب کیا تھااس جملہ "مین یہدہ النے" میں یہ بتادیا کیا چھاور پر سےا عمال کی نسبت بندہ کی طرف کسب کے درجہ تک ہے۔ نیکی اور بدی کے برکام کا خاتی صرف ذات پاک کی بندہ کی طرف کسب کے درجہ تک ہے۔ نیکی اور بدی کے برکام کا خاتی ہیں قدریہ بی صفت ہے بندہ اپنے کسی فعل کا خالی نہیں، پہلے جملہ میں جبر یہ کارد تھا، اس میں قدریہ اور معتز لہ کارد ہے۔ خاتی افعال عباد کے مسئلہ کی توضیح ان شاء اللہ باب الا یمان بالقدر میں کی جائے گی۔

شهادة تكون للنجاة وسيلة ولرفع الدرجات كفيلة: شهادةً

اشهد کامفعول مطلق ہے،اور جملہ 'ت کون للنجاۃ وسیلۃ النے''شہادت کی صفت ہے، یعنی میں تو حید باری تعالیٰ کی الی شہادت دیتا ہوں جونجات کے لئے وسیلہ ہو۔اور جنت میں درجات عالیہ کے حصول کی ضامن ہو۔

شہادت تو حید کے دومرتے ہیں۔ اول یہ کہ اعتقاد ویقین تو درست ہو چکا ہے کین ابھی اس زور قوت کا نہیں جو اعمال صالحہ کے ارتکاب اور اعمال طالحہ ہے اجتناب کاموجب ہے ۔ ثانی یہ کہ یقین قلبی بھوٹ بھوٹ کر اعضاء وجوارح پر اعمال حسنہ وطاعات واجبہ تک بی منتج ہوتو دخول اولی فی الجنة کا سبب ہوگا۔ اور اگر طاعات نافلہ تک پہنچانے والا ہوتو اس کی برکت ہے جنت میں دخول اولی بھی ہوگا اور درجات عالیہ بھی حاصل ہوں گے۔

غرضيكه وسيله نجات بونا شهادت كوردبه اولى كااورضام ن رفع درجات بوناس كوردبة نانيه وسيله نجات بوناس كوردبة نانيه وسليا كاثمره بنه اعمال حنه وطاعات واخلاق جميده الله مرتبة نانيه كثمرات ونتائج بي - "وبسما قررنا اندفع ماير د على المصنف من ان دخول الجنة بالايمان ورفع الدرجات الى الشهادة" (كذا في المرقاة: ١/٨)

واشهد ان محمدا عبده ورسوله: "عبد" كا ضافت حق تعالى كى طرف تشريفي هم كه حمدا عبده ورسوله: "عبد" كى اضافت حق تعالى كى طرف تشريفي من كه حيث تعالى كرسب الحص مقرب وشرف بنده بين -

قرب ومجت کی منازل میں سے گورسالت سب سے اعلی مرتبہ ہے۔ لیکن چوتکہ عبد کااصل موضوع عبدیت ہی ہاس لئے اس کومقدم فرمایا۔ عبدیت آپ کے اوصاف میں سے سب سے گرال قدر اور اشرف وصف ہے اس لئے آپ کے بہت سے اہم اور

اثرف مقامات ومناصب کے تذکرہ کے مواضع میں قرآن پاک نے آنخضرت سلی اللہ تعالیٰ علیہ وکلم کاؤکر خیر عنوان عبد سے کیا مثلاً معراق کے واقعہ عظیمہ کوؤکر کرتے وقت فرمایا ہے: "سبحان الذی اسری بعبدہ" اور تنزیل فرقان کی نعمت کے اظہار کے موقعہ پر فرمایا: "تبارک الذی نزل الفرقان علی عبدہ" ایک دوسرے موقعہ پر فرمایا: "فاوحی الی عبدہ ما اوحیٰ"

فد ب عشق مجازی میں بھی عبد کاوصف جب محبوب کی طرف منسوب ہوجائے تواس کو خاصی شرافت وصا وت حاصل ہوجاتی ہے۔ اس مزاق کاایک شاعر کہتا ہے۔ سه لا تسدعنسی الا بیا عبدها فسانسه السرف اسمانیا

[جھے جب بھی پکارنا ہوتو صرف اس (محبوبہ) کا عبد کبد کر پکارا کرو کیونکہ اس کے برایر شرافت میں میراکوئی دوسرانا منہیں ہے۔]

قاض عیاض شارح مسلم اور صاحب الشفاء رحمت الله فرمات بیل سسه و مسمسا از دادنسی عجب اوتیها و کدت به اخسمه صبی اطبأ النویا دخولی تحت قولک یا عبادی

وان صيرت احتمدني نبيا

(كذافي المرقاة: ١/٨)

یعن آپ کے ارشاد پاک یا عبادی میں داخلہ اور احر مجتمی سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا جارے گئے ہیں اور جمارا ان کی امت میں ہے ہونا ایسے انعام ہیں جس کے سرور کی وجہ سے باؤں کے ملوے ذمین بڑمیں گئے۔]

وصف عبدیت کے ذکر میں بیاتہ بھی ہے کہ ختم رسالت ومعرات جیسے مناصب جلیلہ پر فائز ہوجانے سے رسول عبدیت سے نکل نہیں جاتے۔ بلکہ مقامات عالیہ ان کی عبدیت میں اور بھی عروت و میاشنی بیدا کر دیتے ہیں۔

نیز اس میں تعدیل اعتقاد بھی ہے کہ آنخضرت سلی اللہ تعالی علیہ وسلم کے بارے میں نہ نصاری جیسی افراط کی جائے کہ عبدیت سے نکال کر الوہیت تک پہنچا دیا جائے نہ یہود جیسی تفریط کی جائے کہ تریت سلی اللہ تعالی علیہ وسلم کوفن تعالی کارسول اور بندہ مقبول بھی نہ سمجھا جائے۔

اس سے مقصود یہ بتانا ہے کہ آنخضرت سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی دنیا میں تشریف آوری شدید ترین ضرورت کے موقعہ پر ہوئی اس لئے کہ آنخضرت سلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی بعثت کے وقت اوگ جہالت و ضاالت کی انتہاء تک پنچ ہوئے تھے۔ کہیں کوئی الی صحیح قیادت موجود نہ تھی جو گم کردہ راہ افراد کوعقائد، اعمال واخلاق کی صحیح منزل تک پہنچا سکے۔ جیسا کہ قرآن یاک بیس ارشاد ہے:

"لم یکن الندین کفروا من اهل الکتاب والمشرکین منفکین حتی تاتیهم البینة رسول من الله یتلو صحفا مطهرة" (سورة البینة) [جواوگ الل کتاب اور شرکین میں سے کافر تھے وہ (اپنے کفر سے برگز) بازند آنے والے تھے، جب تک کدان کے پاس واضح ویل ند آتی۔ (یعنی) ایک الله کا رسول جوان کو پاک صحیفے پڑھ کر

ساوے_](بیان القرآن)

وطرق الاسمان قدعفت آثارها الغ: اسكي في قدس مره في اشعة اللمعات مين دومطلب لكه مين -

(۱)طرق الایمان سے مراد حضرات انبیائے کرام علیم السام اوران کے تائین علائے عظام جمہم اللہ ہیں اور نشانات مث جانے اور انوار بھھ جانے اور ارکان کمزور پڑ جانے سے مرادیہ ہے کہ ان شخصیات مقدسہ کی تعلیمات اور ہدایات کا سلسلہ تعلیم و تعلم ختم ہو چکا تھا۔ اور ان کے مقتصی کے مطابق عمل کا روائی باقی ندر ہا تھا۔ جھل مسکسانھ سے مرادیہ کہ ان کے علوم ومعارف کی قدرومنزلت سے ناواقنیت ونا شناسائی عام تھی۔

مطلب یہ ہے کہ ہمارے آ قاحضرت محمصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی بعثت اس وقت ہوئی جب کہ انبیائے سابقین علیم الساام کی تعلیمات بالکل نا پید ہو چکی تھیں، جبح رہبری بالکل معدوم تھی۔ کہیں کہیں اکا دکا حضرت عیسیٰ علیہ الساام کی تعلیم پر عمل کرنے والاکوئی کوئی ہوگا لیکن وہ بے بیارے حالات زمانہ سے مجبور ہوکراپی جان وایمان کوکسی گوشہ کمنامی میں لئے بیٹنے تھے۔ علمة الناس کی قیادت نہ کر سکتے تھے۔

(۲)طرق الایمان ہے مرادوہ عقائد، اعمال ، اخلاق، آداب وریاضات ہیں جو تھیل انسانیت کا ذریعہ ہیں۔ آثار کے مث جانے روشنیوں کے بچھ جانے ہے مرادعلمی وعملی طور پران امور کا جربیاندر ہنائے۔ واللہ اعلم بالصواب.



فوائدديباچه

خلاصدد يباجه

صاحب مشکوۃ نے حمد وصلوۃ کے بعد دیباچ مشکوۃ میں جو کچھار ٹادفر مایا ہے۔ اس کا خلاصہ یہ ہے کہ پہلے تو آپ نے علم حدیث کی ضرورت اور اہمیت مختصر گر جاند ارلفظوں میں بیان فرمانی ہے کہ کہا حدیث ایساضروری علم ہے جس کے بغیر حضرت نبی کریم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی سیرت کو اپنایا نہیں جا سکتا۔ اور ایساعلم ہے جس کے بغیر قرآن باک حل نہیں ہوسکتا۔ اس لئے میں نے اس اجمعلم میں تصنیف کے لئے قلم اٹھایا۔

کسی علم میں تھنیف کے دوطریقے ہوتے ہیں۔ایک یہ کاس میں مستقل کتاب کھی جائے۔دوسرایہ کہ کسی اور کتاب کو لے کراس میں پچھاضا فات کر کے ایک نی کتاب کی شکل دیدی جائے۔صاحب مشکوۃ فرماتے ہیں کہ میں نے دوسری راہ اختیار کی ہے۔ میں نے اپنی محنت کامیدان بنا نے کیلئے امام بغوگ کی تھنیف اطیف"المصابیع" کا انتخاب کیا۔اس کی جامعیت کے پیش نظراس میں پچھنی اے الحاقات اوراضا فات کر کے ایک نیا مجموعہ تیار کیا۔ مصابیح میں نہ کورہ بالا اضا فات والحاقات وتغیرات کے بعد جو کتاب تیار ہوئی۔ میں مصابیح میں نہ کورہ بالا اضا فات والحاقات اوراضا کے بعد جو کتاب تیار ہوئی۔ میں خاس کا نام "مشکوۃ المصابیح" رکھا ہے اسم اور سمی میں مراعات تامہ رکھتے ہوئے

بجبنا متجویز فرمایا حشکوة دیوار کاس طاقی کو کہتے ہیں جس میں جراغ وغیرہ رکھاجاتا ہے۔ اور مصابیح! مصباح کی جمع ہے ہمتی جراغ مصابیح سے مراد '' کتاب مصابح'' بھی ہو عتی ہے اور وہ احادیث بھی ہو عتی ہیں جو مصابح میں مندرت ہیں۔ گویا ہر حدیث سیر المی اللہ اور سیر فی اللہ میں یقین و معرفت میں ترقی دینے کے لئے جراغ کا کام دیت ہیں ترقی دینے کے لئے جراغ کا کام دیت ہے۔ نام کار جمہ ہوا: [کتاب مصابح کا طاقیہ]یا [احادیث مصابح کا طاقیہ] مصباح کی روثن کھی جگہ رکھنے کی صورت میں تجیلی ہے۔ اس لئے اس میں تیزی اور قوت کم ہوتی ہے۔ جب اس کو طاقیہ میں رکھا جاتا ہے تو روثنی منضبط ہونے سے تیز اور قوی ہوجاتی ہے۔ اس طرح مصابح کی احادیث پہلے بھی بہت نافع تھیں، لیکن مشکوۃ میں آنے کے بعد ان اغفال میں جو اعلام کے ہیں ان سے ان کی ضوء اور افادیت میں بہت زیادہ اضا فیہ و گیا ہے۔ نیز طاقیہ میں مصباح رکھ کر اور بھی چیز ہیں رکھنے کی گنجائش ہوتی ہے۔ یہی حال مشکوۃ شریف کا ہے کہ اس مصباح رکھ کر اور بھی چیز ہیں رکھنے کی گنجائش ہوتی ہے۔ یہی حال مشکوۃ شریف کا ہے کہ اس مصباح رکھ کر اور بھی چیز ہیں رکھنے کی گنجائش ہوتی ہے۔ یہی حال مشکوۃ شریف کا ہے کہ اس میں پوری احادیث رکھی گئی ہیں۔

غرضيكه مصابح بروضع اعلام اورالحا قات واصلاحات وتغيرات كے بعد جومجموعه تيار بوا اس نافع ترين ذخير وكانام "مشكوة المصابيع" بـ كى في خوب كبائه سه

> لئن كان في المشكاة يوضع مصباح فذالك مشكاة وفيها مصابيح وفيها من الانوار ماشاع نفعها لهذا على كتب الانام تراجيح ففيه اصول الدين والفقه والهدى حوائج اهل الصدق منه مناجيح

(مرقاة:١/٢)

[یعنی اگر عام طاقجوں میں صرف ایک ایک مصباح ہوتا ہے سویہ طاقیہ تیار ہوا جس میں کئی مصباح ہیں۔ اور اس میں ایسے انوار ہیں جن کی افادیت عام بھیل چکی ہے، اس کو دوسر ے حضرات کی تصنیفات پر گونا گول وجوہ ترجیح حاصل ہیں۔ سواس میں اصول دین، فقہ ہبایت بھی کچھ ہے۔ تمام اہل صدق وصفا کی دین حاجات اس سے بخوبی پوری ہوتی ہیں۔ ہبایت بھی کچھ ہے۔ تمام اہل صدق وصفا کی دین حاجات اس سے بخوبی پوری ہوتی ہیں۔ «مصابیع» میں صاحب مشکوة نے جواضا فات، الحاقات ونفع افز ااصلاحات اور تغیرات کئے ہیں وہ اور کتابوں میں اخیاز اور فرق کے وجوہ الگ بیان کر دینا مناسب ہان کویا دکر لیا جائے۔

وجوه الفرق بين المشكوة والمصابيح

- (۱) "مصابیع" میں متن حدیث سے پہلے صحابی کا ذکر نہیں تھا۔ صاحب مشکوۃ نے یہ التر ام فرمایا ہے کہ برحدیث سے پہلے اس صحابی کا اسم گرامی ذکر فرما دیا ہے۔ جنہوں نے یہ حدیث آنحضرت سلی اللہ تعالی علیہ وسلم سے روایت کی ہے۔
- (٢)..... "مصابيع" مين احاديث كآخر مين مخرجين كاحواله بالعين نبين ديا صاحب مشكوة في برحديث كآخر مين متعين مخرق كاحواله دي اب-
- (٣) مصابیع" اور مشکوة دونول اس امر مین قد مساوی بین که حدیثول کی پوری سندین ان مین مذکور نبیس ور فتی اور مشکوة مین تعیین مخرت بهی نبیس اور مشکوة مین تعیین مخرت بے جو بمزله پوری سند ذکر کرنے کے ہے۔
- (س) "مصابیع" میں ہرباب کودوخصوں میں تقلیم کرکے پہلے حصد کی احادیث کو کن الصحاح کے عنوان سے اور دوسر ہے کو کن الحسان کے عنوان سے شروع کیا گیا ہے۔ مشکوۃ میں بیتبدیلی کی گئی ہے کہ پہلے حصہ کو الفصل الاول سے تعبیر کرتے ہیں۔

دوسر کوالفصل الثانی ہے۔ حدیثیں وہی ہیں جومصابیح میں تھیں۔ فصل اول میں شیخین کی اور ثانی میں غیرشخین کی احادیث کوحسان کہنایا تو تغلیباً ہے یا ان کی این اصطلاح ہے۔ سکما مر .

- (۵)..... "مصابیع" کے ہر ہا ب کے صرف دو تھے تھے۔صاحب مشکوۃ نے اکثر ابواب میں ایک تیسر سے حصہ کاا ضافہ فرمادیا ہے جس کوالفصل الثالث ہے تعبیر کرتے ہیں اس فصل میں جواحا دیث التے ہیں وہ مصابع میں نتھیں ،ان کااضافہ ہے۔
- (۲) "مصابیع" میں اصالةُ صرف مرفوع حدیثیں ذکر کی گئی ہیں، صاحب مشکوة نے افسال الثالث میں موقوف اور مقطوع حدیثوں کو بھی ذکر فرمایا ہے۔
- (۷).....'مصابیع" میں بعض احادیث مختصرتھیں ،صاحب مشکوۃ نے کہیں تو ان کو مختصر بی رہنے دیا ہے۔ کہیں بعض اسہاب ودواعی کی بنا پر ان مختصر حدیثوں کی تحمیل کر دگ ہے۔
 - (٨) "مصابيح" مين بعض حديثين مرتصي مشكوة مين كرارحذف كرديا كيا بـ-
- (٩)صاحب "مصابيع" ني بعض حديثين الصحاح كعنوان كم ما تحت ذكركين جسم بين جسم معلوم بواكرية ين كي حديثين بين ليكن شيح بخارى متيح مسلم، جسمع بين الصحيح بخارى مي بين معلوم بواكرية في المصول مين سي مين بين نقل سكنى وجه المصحيحين للحميدى اورجام الماصول مين سي كسى مين بين في نقل سكنى وجه سي من في شيخين كاحوالدديا بين سي مشكوة في بعض احاديث مين في شيخين كاحوالدديا بين سي منافعة في بين في شيخين كاحوالدديا بين مشكوة في بعض احاديث مين في شيخين كاحوالدديا بين المحديدة كي مين في في في مين في مي
- (۱۰)بعض حدیثیں "مصابیع" کے دوسرے حصہ میں تھیں جس سے بیمعلوم ہوا کہ بیہ حدیثیں صحیحین میں نہ ہول گی لیکن ان میں سے بعض حدیثیں صاحب مشکو ق کو صحیحین میں مار گئیں اس لئے شیخی ن کا حوالہ دے دیا۔
- (۱۱) بسااوقات "مصابیح" میں صدیث کے اور لفظ ہوتے ہیں، مشکوة میں اور اس کی

وجه به كه مصابح ميں پيش كر دولفظوں كا حواله صاحب مشكوة كونه ل سكا۔ اس لئے اس حديث كوده الفاظ بيش كئے جن كى سندوحواله ان كورستياب ہوسكا۔

عدی روبه می و بین می میروسی می میروسی می و روسی می و روسی به روسی بیل است. "مصابیع" کی بعض حدیثو ل کونتل کر کے بھی صاحب مشکوة یول کبردیت بیل که ماوجدت بغرہ الروایة فی کتب الاصول یا یول فرمادیت بین وجدت خلافها فیبا ۔ یہ اس وقت فرمات بیل جب که مصابح کی روایت بعینها تفیش تام کے بعد بھی ان کونه مل کی ۔ اس صورت میں جواختیا ف روایت پاتے بین اس کونتل فرمادیت بین ۔ مل کی ۔ اس صورت میں جواختیا ف روایت پاتے بین اس کونتل فرمادیت بین ۔ (۱۳) "مصابیع" کی بعض احادیث کے متعلق شیخ بغوی رحمہ اللہ تعالی نے یہ بتادیا که یہ مصابیع نے میا کوئی اوروصف بیان کیا ۔ صاحب مشکوة نے ایسے موقعہ پر یہ طرز اختیار فرمایا ہے کہ عام طور پرضعف یا غرابت وغیرہ کی وجہ بیان کردی ، بعض جگہ وجہ بیان کردی ، بعض جگہ وجہ بیان نبیس کی ، معلوم نہ ہو سکنے کی وجہ سے یا اس لئے کہ اس میں اختیا فر میں نہ جانا ہیا ہے تھے ۔ طول میں نہ جانا ہیا ہے تھے ۔

(۱۳)کتب اصول میں بھی کسی حدیث کے متعلق صیح یا حسن یا غریب یا ضعیف یا منکر وغیرہ کوئی صفت بیان کی گئی ہوتی ہے کیئن صاحب"مصابیع" نے اس کونٹل نبیں کی اتباع کرتے ہیں، لیکن کبیں کسی غرض کیا، صاحب مشکوۃ بھی عدم نقل میں انہی کی اتباع کرتے ہیں، لیکن کبیں کسی غرض ہے۔ اس کونٹل بھی فرمادیتے ہیں۔

(۱۵).....صاحب مشکوۃ نے بعض احادیث کے آخر میں مخر ن کا حوالہ معلوم نہ ہو سکتے کی وجہ سے جگہ خالی حچھوڑ دی ہے۔

ذكرصحابي كيفوائد

صاحب مشکوة ہرروایت کے شروع میں صحابی رضی اللہ عنہ کا ذکر کرتے ہیں جن سے

وہ حدیث مروی ہے۔ صحابی رضی اللہ عنہ کا نام ذکر کرنے سے بہت سے فائدے حاصل ہو سکتے ہیں۔ مثلًا

(الف) ناسخ اورمنسوخ کے بیچا نے میں مدوماتی ہے۔ مثلاً ایک مسئلہ میں وومتعارض حدیث مسئلہ میں مدیث متقدم حدیث متقدم حدیث بھارے مارے میں اب غور کرنا پڑے گا ان میں سے کون تی حدیث متقدم ہے کون تی متاخر ہے۔ متاخر ناسخ ہوتی ہے۔ اس تقدم دیا خرکا بیتہ جا نے میں ذکر صحابی صحابی رضی اللہ عنہ سے مدول سکتی ہے مثلاً ایک حدیث کوروایت کرنے والے صحابی رضی اللہ عنہ قدیم المام میں اور دومری حدیث کونٹل کرنے والے بعد میں اسلام الے بین اس سے بچھا ندازہ ہوسکے گا کہونی حدیث کونٹل کرنے والے بعد میں اسلام اللے بین اس سے بچھا ندازہ ہوسکے گا کہونی حدیث پہلے کی ہے۔

(ب) ۔۔۔۔۔۔ بھی دو صدیثوں میں تعارض ہوتا ہے ذکر صحافی رضی اللہ عنہ ہے ایک کور جی دیے میں مدواتی ہے وہ اس طرح ہے کہ مثلاً ایک صدیث کوروایت کرنے والا اصحافی فقیہ ہوتا ہے اور دوسری صدیث کوروایت کرنے والے صحافی فقیہ نہیں ہیں۔ تمام کے تمام صحابہ عادل تو ہیں۔ لیکن ہر صحافی کا فقیہ ہونا ضروری نہیں۔ فقیہ کی روایت کو غیر فقیہ کی روایت پر ترجیح دی جاتی ہے۔ ذکر صحافی سے اس کام میں مدد ملے گی۔

(ق) بھی ذکر صحابی ہے صدیث کی قوت یاضعف کا بھی اندازہ لگ جاتا ہے وہ اس طرح ہے کہ ایک صحابی کی حدیث جو آگے چلی ہے وہ تو اچھی سند ہے پنچی ہے۔ طالب علموں میں مشہور ہے کہ بیا چھی سندوالی ہے۔ اور دوسر سے صحابی کی حدیث جس سند ہے آگے چلی ہے وہ سند کمزور ہے اور طالب علموں کو اس بات کا بھی پتہ ہے کہ یہ حدیث جس سند سے پنچی ہے وہ کمزور ہے۔ صاحب مشکو ق کے صحابی ذکر کرد ہے ہے۔ اس کی پیچان میں مدد ملے گی۔

تعيين مخرج كے فوائد

صاحب مشکوة نے بیالتز ام کیا ہے کی میں مخرت فرمات ہیں اس میں بہت سے فوائد میں۔ مثلاً:

(۱)اجمالی طور پر سند کی حالت معلوم ہوجاتی ہے۔ اس لئے کہ بن مخرجین و مصنفین کے حوالے دیتے ہیں ان کی شرا نظم عروف ہیں، مثلاً علاء اور طلباء جائے ہیں کہ امام بخاری کس شرط اور معیار پر تول کر حدیث التے ہیں، جب کہیں گے ''رواہ ابنخاری'' تواس ہے ہم اندازہ کر سکیں گے بیاس معیار کی حدیث ہے۔ علیٰ ھذا القیاس . کر جبین کی قلت اور کشرت معلوم ہوجاتی ہے کبھی جھی صاحب مشکوۃ ایک حدیث تال کر کے متعد دمخر جبین کا حوالہ وے جاتے ہیں، اس سے اس حدیث کے بارے میں اطمینان پڑھے گا کہ اس کی تخریج کر نے والے استے حضرات ہیں۔ اس مدیث کے بارے میں اطمینان پڑھے گا کہ اس کی تخریج کر نے والے استے حضرات ہیں۔

قو اعد دنوا ئد' بهمز هابن''

دیباچ میں لفظ ابن کافی استعال ہوا ہے اور ویسے بھی کتب حدیث میں لفظ ابن کمٹر ت استعال ہوتا ہے۔عموماً اس کے قواعد سے طلبۂ نیز ناوا قف ہوتے ہیں اس لئے اس لفظ کے بارہ میں اہم فوائد پیش کر دینا مناسب ہے۔

- (۱)افظ ابن کاہمز ، وسلی ہے اور ہمز ، وسلی کاعام قاعد ، یہ ہے کہ جب وسط کلام میں واقع ہوتو لکھنے میں رہتا ہے، ریا ھنے میں گرجاتا ہے۔
- (۲)قاعد ، فدکور ، کی بنا پر درت کلام میں آنے کی صورت میں ابن کا ہمز ، کتابت میں آنا استعمال کی ایک خاص صورت میں آنا

"ایی ہے جس میں اس کا ہمز ہ تھیفا کتابت میں بھی گرادیا جاتا ہے۔ وہ صورت استعال یہ ہے کہ ابن علم بینا ہواور استعال یہ ہے کہ ابن علم بینا ہواور ابن کے درمیان میں واقع ہو، (یعنی پہلا علم بینا ہواور ابن کے بعد والاعلم باپ یا ماں ہو) اور یہ (ابن) پہلے علم کی صفت بن رہا ہواور دور کی طرف مضاف ہو۔

- (۲)ایی صورت میں ابن کاہمزہ لکھنے میں بھی گرادیا جاتا ہے۔ جیسے محد بن اسائیل کے طرف بیٹا ہے اسائیل کا بیٹلمین مناسلین ہوئے۔ ابن محمد کی صفت اور اسائیل کی طرف مضاف ہے اس لئے یہاں اس کاہمزہ نہ پڑھاجائے گاندلکھا جائے گاہ مشکوۃ شریف مضاف ہے اس لئے یہاں اس کاہمزہ نہ پڑھاجائے گاندلکھا جائے گاہ مشکوۃ شریف میں جینے محد ثین کے اساء مبارکہ ذکر کئے گئے ہیں سب میں بیر قاعدہ چلا ہے۔ اس صورت میں ہمزہ خطا گرانے کی وجہ یہ ہے کہ بیر کیب عرب میں کشرت سے استعال ہوتی ہوتی ہوتی ہے اور کشرت استعال خفت کا تقاضا کرتی ہے۔ بڑھنے میں آویہ ہمزہ گرادیا۔ مزید خفیف بیہ ہوئی کہ لکھنے میں بھی گرادیا۔
- (۳)ا گرلفظ ابن علمین متناسلین کے درمیان میں ہواور فدکورہ شرطیں بھی بوری ہوں، لیکن لفظ ابن طرکے شروع میں آرما ہوتو پھراس کا ہمز ہلکھا جاتا ہے۔
- (س)صورت مذکورہ میں ایک تخفیف میر بھی ہوتی ہے کہ ابن سے پہلاعلم اگر قابل تنوین ہو نو اس کی تنوین بھی گرادی جاتی ہے۔ جیسے:محمد بن المعیل میں محمد منصرف اور قابل تنوین ہے اس پرتنوین تخفیفاً گرادی گئی ہے۔
- (۵)اگرا بن علمین متناسلین کے درمیان تو آئے لیکن پہلے کی صفت نہ ہو بلکہ اس سے خبر ہوتو ابن کا ہمز ، لکھنے میں نہ گر سے گالکھنا ضروری ہے۔ جیسے ذید اب ن عمرو جبکہ ابن عمروم کب بنا کر زید کی خبر بنانا مقصود ہو [زید عمرو کا بیٹا ہے] اب ابن کا ہمز ، صرف تلفظ میں گر سے گا گرابت میں آئے گا۔

(۲) محمد بن بزید ابن ماجه مفکوة شریف کاس عبارت میں دوابن ہیں۔
پیلے بن کاالف لکھے ہیں گرانا بیا ہے اس لئے کہ یہ کمین متاسلین کے درمیان ہے۔
محمد بیٹا ہے بزید کا لیکن دوسر سے ابن کاالف لکھنا بیا ہے اس لئے کہ یہ معلمین متاسلین
کے درمیان نہیں۔ بزید ماجہ کا بیٹا نہیں بلکہ اس کا عین ہے۔ ایک قول کے مطابق ،اور
زوت ہے دوسر قول کے مطابق ،اس لئے بیابن ماجہ بزید کی صفت نہیں بن سکتا ،بنا
کہ یں اس بر تخفیف کا قاعد ، فذکور ، چہیال نہیں ہوتا ،اس کاالف لکھنا بیا ہے جسے کہ ملا
علی قاری مرقا قیمی فرماتے ہیں: باثبات الف ابن خطا فانه بدل من ابن بزید
ففی القاموس ماجہ لقب و الد محمد بن بزید صاحب السنن لاجده وفی شوح الاربعین ان ماجة اسم امه.

حاصل یہ کہ دوسرا ابن بزید کی صفت نہیں بن سکتا بلکہ ابن بزید سے بدل ہے۔محمد بیٹا بزید کا بعنی بیٹا ماجہ کا سی کوخوب ذبن نشین کرلیا جائے محمد بن بزیدا بن ماجہ جیسی تر اکیب کتب حدیث میں اور بھی بہت ہی ماتی ہیں۔مثلاً:

- (۱)....عبد الله بن عسم و ابن ام مکتوم: عمروام کمتوم کابیانہیں بلکہ زوت ہے۔ عمرو عبداللہ کے والد کانام ہے اورام کمتوم والدہ کا دوسر سے ابن کا الف لکھنا بیا ہے۔ (۲)....عبد الله بن ابسی ابن مسلول: سلول عبداللہ کی والدہ اورانی کی بیوی ہے۔
 - - (٣)....محمد بن على ابن الحنفية: حفي محرك مال اور حضرت على كي زوجه بير _
 - (۵)اسمعیل بن ابر اهیم ابن علیة: علیه ایراجیم کی زوجه اوراتمعیل کی مال بیر ـ
 - (٢)....اسحق بن ابر اهيم ابن راهويه: رابويه ايرائيم بي كالقب ٢-

لفظ ماجيري تحقيق

لفظ ماجہ جیم کی تخفیف کے ساتھ ہے اس پر تشدید پڑھنا غلط ہے۔ محمہ بن پزیدا بن ماجہ کے متعلق عام طور پر ناوا قفیت کی بنایر یہ مجھ لیا جاتا ہے کہ ماجہ محمد کے دا دااور پر بد کے باپ ہیں حاا انکہ بی غلط ہے۔ بنید تو محمر کے باپ ہیں ماجہ بنید کے باپ اور محمر کے دادانہیں چر ماجہ کا یز بداوران کے بیٹے محمد سے کیارشتہ ہے اس میں دورائیں ہیں، ایک بیرکہ ماجہ یزید کی بیوی اور محمر (صاحب سنن ابن ماجه) کی والده مین ، اس صورت میں بزید اور ماجه میں علاقہ زوجیت کا اے۔دوسری رائے سے کے ماج محمد کے والد بن بد کالقب ہے،اس صورت میں بن بد اور ماجہ ایک بی شخص کے دونام ہیں۔ یزیدمحمر کے والد کاعلم ہے اور ماجہ انہی کالقب اور عرف ہے۔ اب بزیداور ماجه میں علاقه عینیت کا ہے۔

تاریخی دیثیت سے ان میں سے کونی رائے سیج اوروزنی ہاس کی مما تنصیل کا تو یہ مو تعهٰ بیں البیہ مختصراً اتن بات یا در کھیں کہ اس میں بھی اختلاف ہے دونوں طرف تعیج ماتی ہے۔ علامہ سیدمرتضٰی زبیدیؓ نے بعض علاء ہے قول اول (ماجہ صاحب سنن محمر کی ماں ہیں) کی تھیج نقل کی ہے، چنانچہ تات العروس شرح قاموس میں فرماتے ہیں:

اوراس ہارے میں ایک اور قول ماجدة كي والده كانام تقاروالله اعلم.

وهنالك قول أخرو صححوه وهو ان ماجة اسم لامه والله اعلم. (امام مجهى بِاوراسكي بهي علماء في حجي ك بك ابن ماجه اور علم حديث: ١)

شاہ عبدالعزیز محمد وہلوی رحمہ اللہ تعالی نے بستان المحد ثین میں اس کو سیح قرار دیا ب- (بستان المحد ثين:۲۹۸)

نواب صديق حسن خان نے بھی اپی كتاب "الحطة يـذكر الصحاح الستة

اور اتحاف النبلاء المتقین میں بعید یمی فرمادیا ہے۔ (کمادیم کی مال ہیں)
گرشاہ عبدالعزیز صاحب محدث وہلوگ رحمہ اللہ تعالی نے عجالہ نا نعہ میں صاف لفظوں میں تصریح کی ہے کہ ماجہ آپ کے والدیزید کا لقب ہے، محمد کی مال کا نام نہیں۔ (عالمنا نعہ: ۲۳)

اورحافظا بن کثیرنے البدایہ والنہایہ میں حافظ کیا کے حوالہ سے جوقزوین کے مشہور مؤرخ ہیں نقل کیا ہے کہ ماجہ یزید کاعرف اور لقب تھا۔ (البدایہ والنہایہ:۱۱/۵۲)

سب سے ہڑھ کریے کہ اس بارے میں خودامام ماجہ کے مشہور ترین ٹاگر دھا فظ ابوائحن

بن القطان کا بیان موجود ہے جس میں وہ نہایت جزم کے ساتھ تصریح کرتے ہیں کہ ماجہ آپ

کے والد کا لقب تھا، ظاہر ہے کہ ان تصریحات کے ہوتے ہوئے اب اس بارے میں کوئی شبہ
نہیں رہتا تھا کہ ماجہ در حقیقت آپ کے والد ماجد ہی کا لقب تھا، اس لئے امام نووی نے
تہذیب الاساء واللغات میں اور علامہ مجد الدین فیروز آبادی نے القاموس الحیط میں اور علامہ
ابوائحن سندھی نے شرح ابن ماجہ میں صاف تصریح کی ہے کہ ماجہ آپ کے والد کا لقب تھا،
دادا کا نہیں ۔ ایسی صورت میں قواعد املاء کے مطابق ابن ماجہ میں ابن کو الف کے ساتھ لکھنا

با بنتاكاس كومرى صفت مجماجائيريديا عبدالله كي صفت نه مجمدايا جائد

الجمع بين الصحيحين للحميدى" كاتذكره

دیاچمشکوة یس "الب معید ایس الصحیحین للحمیدی" کاؤکرکیا گیائے۔

میدی ہے مرادابوعبداللہ بن ابی نفر حمیدی اندلی ہیں، ندہب ظاہریہی طرف نبیت کرتے

ہوئے ان کو "ظاہری" بی کہدیتے ہیں۔ انہوں نے اندلس بھر، شام براق اور حرم شریف

میں رہ کر حدیث کی ساعت کی۔ ابن حزم ظاہری کے بھی شاگر د ہیں۔ ابوعبداللہ قراعی، ابن
عبدالبر، ابو بکر الخطیب اور دوسر ہے کہ ثین ہے بھی استفادہ کیائے۔ (بتان المحد ثین :۲۱۲)

آب بہت بی پر بیز گاراور عفیف الطبع سے۔ ان کی عنت کا اندازہ اس واقعہ سے لگایا جا سکتا ہے کہ ایک بار ابو بکر بن میمون آپ کے جرم پر آئے اور دروازہ کھنگھٹایا۔ آپ کوکسی مشغولی کی بنا پہلم نہ ہوا۔ اور کوئی جواب ندد سے سکے۔ ابو بکر بن میمون یہ بھے کر کہ جب ممانعت نہیں فرمائی تو اجازت بی بوگ ۔ اندر شریف لے گئے۔ حمیدی کی ران کھلی بوئی تھی۔ آپ پر بیبات نہایت گر ال گذری اور دریر تک یہ کہتے ہوئے روتے رہے کہ جب سے جھ کو تمیز وشعور میا سے اس بواج اب تک میری راان کسی نے بر بنہیں دیکھی۔ (ایضاً: ۱۳۳)

ولادت

آپ کی وادت کے سلسلہ میں بستان المحد ثمین میں ہے: ''**تولدا**و در عشر قاولی از قرن خامس است' [ان کی بیدائش قرن خامس *سے عشر* ہ اولی میں ہوئی۔]

اورحاشیدبتان المحدثین میں ابن خلکان کے حوالہ نقل کیا گیا ہے کہ والہ ہے ہے قبل بیدا ہوئے۔ قبل بیدا ہوئے۔

وفات

آپ کی و فات کار ذوانیجه ۸۸ میر کو بونی _ یم تاریخ و فات بستان الحد ثین عمدة القاری مین نقل کی گئی ہے۔ اور مرقاۃ میں اور لسمعات التنقیع کے حاشیہ میں بحوالہ علق الالبانی آپ کاسن و فات مرم ہے لکھا گیا ہے۔ (بستان المحد ثین: ۲۱۴،عمدۃ القاری: ۱/۱۸، مرقاۃ: ۱/۳۲، کمدہ التنقیع: ۱/۳۸)

آپ کی کرامت

آپ نے وفات ہے بل کی بارشہر کے ہڑے افسر '' نظفر'' کو وصیت کی تھی کہ جھے بشرحافی کے پاس دن کیا جائے لیکن اس نے کسی وقتی عذر کی بنا پر آپ کو وہاں دنن نہ کیا ، بلکہ کسی اور جگہ دفن کر دیا ۔ ایک دن اس نے خواب میں حضر تجمیدی کو دیکھا کہ وہ اس بات کی شکایت فر مار ہے ہیں ۔ چنا نچہ اس نے مجبور آما ، صفر اوس ہے آپ کو وہاں سے نتقل کر کے بشر حافی کے پاس وفن کیا ۔ اس وقت آپ کی بیکر امت ظاہر ہوئی کہ آپ کا گفن بالکل تا ز ، تھا اور بدن بالکل صحیح وسالم تھا اور آپ کے جسم مبارک سے ہوئی دور تک خوشبو مہک رہی تھی ۔ اس الکل تعربی نے در تک خوشبو مہک رہی تھی ۔ (بستان الحجد شین : ۲۱۴)

آپ کے مفیدا شعار

بتان المحدثين ميں آپ كے بہت ہے مفيد اشعار لقل كئے ہيں۔ ان ميں ہے دو شعر يبال نقل كئے ہيں۔ ان ميں ہے دو شعر يبال نقل كئے جائے ہيں۔ جو حقيقت ميں بہت بى نا فع اور مفيد جيں:
لقاء الناس ليس يفيد شيئا سوى الهذيان من قيل وقال فاقل المن لقاء الناس الا فاقل من لقاء الناس الا

[یعن اوگوں کی ملاقات کچھٹے نہیں پہنچاتی۔سوائے گفت وشنیداور لغوگوئی کے لیں اوگوں
کی ملاقات کو کم کر گروہ ملاقات جو علم حاصل کرنے کے لے ہویا اصلاح حال کی خاطر ہو۔]
منانا قات کو کم کر گروہ ملاقات ہو تا گذاہر ہی گیا جنہوں نے "المجسمع بین الصحیحین"
فرمانی ہے۔یہ امام بخاری کے کافی بعد ہوئے ہیں ،ایک اور حمیدی ہیں جوامام بخاری کے استاذ

فرمان ہے۔بیامام بخاری کے کائی بعد ہوئے ہیں،ایک اور حمیدی ہیں جوامام بخاری کے استاذ ہیں۔امام بخاریؓ اپنی صحیح میں سب سے پہلے انہی کی حدیث الائے ہیں۔ان کانام عبداللہ بن زمیر ہے۔ان کاانتقال <mark>19میر</mark>کوہواہے۔ان دونوں میں عام طور پراشتباہ ہوجاتا ہے۔

جامع الاصول كاتذكره

دیباچہ مشکوۃ میں "المجامع الاصول" کاذکر بھی آیا ہے۔ یہ ابن الاثیر الجزری کی تصنیف ہے۔ جس میں انہوں نے صحاح سنہ کی احادیث کوجع فر مایا ہے۔ اور ابواب کی تر تیب حروف بھی کے لحاظ سے رکھی ہے۔ یہ نہایت ہی جامع اور مفید کتاب ہے۔ اور اس سے استفادہ بھی بہاں ہے۔ علامہ یا قوت رومی اس کتاب کا تعارف کرانے کے بعد لکھتے ہیں:

"اقطع قطعاً انه لم يصنف مثله قط ولا يصنف" (فوائد جامعه: 20، معجم الاباء: ٢/٢٣١)

[جھے پکایفین ہے کہ اس جیسی کتاب نہ پہلی تھنیف کی گئی ہے اور نہ ہو سکے گی۔]

آپ کا اسم گرامی اس طرح ہے: ''مجد الدین ابوالسعا دات مبارک بن محمد الجزری''
زیادہ مشہورا بن الا شیر الجزری کے نام سے ہیں۔آپ کا انتقال ۲۰۲ ہے کو ہوا۔ (مرقا ق:۳۳/۱، حاشیہ لمعات: ۱۸)

آپ نے اخات الحدیث برایک مفید کتاب کھی ہے،جس کانام"النھایه" ہے۔

審審審

انما الاعمال بالنيات

اس مدیث کو "فیلت الاسلام" [اسلام کاتبانی حصه] کبا گیائے۔اوربعض نے "نصف العلم" کبائے۔چونکہ اعمال کی دو قشمیں ہیں۔

(۱)....قالب متعلق۔

(۲)....قلب ہے متعلق۔

یہ حدیث انمال قلب ہے تعلق رکھتی ہے۔ اس حدیث کو حدیث انمااور حدیث المنبر بھی کہتے ہیں۔

نتخه کیمیا

حسن نیت کی وجہ سے انسان اپنے ہر جائز عمل کوعبادت بنا سکتا ہے۔ یہاں تک کہ کھانا پبنیا، سونا جاگنا، چلنا پھر نا، اٹھنا بیٹھنا، بیوی بچوں سے ہلی تفریح، دوستوں سے ملنا جانا، کھیتی باڑی ، محنت مزدوری ، تجارت وزراعت ، حرفت وصنعت ، نفسانی خواہشات کوشر کی حدود کے اندر پورا کرنا۔

بیسب اعمال حسن نیت سے عبادت بن سکتے ہیں، اور اسطرح انسان کی زندگی کا ایک ایک ایک لیے عبادت بن سکتا ہے۔

ا مام ابو داؤرٌ فرماتے ہیں:'' میں نے پانچ الکھا حادیث سے اپنی کتاب کو منتخب کیاہے، پھران میں سے بیارا حادیث کا انتخاب کیاہے۔وہ بیا را حادیث ریہ ہیں:

- (۱)"انما الاعمال بالنيات" [اعمال كامرارنيول يري__]
- (۲) الحلال بين والحرام بين وبينهما مشتبها والبحى كهلا بوا بين وبينهما مشتبها والبحى كهلا بوا بين والحرام بحى كهلا بوا بين والحرام بحى كهلا بوا بيا وران دونول كه درميان مشتبه يزيري بين الله مومن كومشتبه يزول سي بحى بينا الازم ب-)
- (٣)....." لا يومن احد كم حتى يحب لاخيه ما يحب لنفسه" [تم يس كونى مومن بيس بوسكما يهال تك كه جوائ لئے پند ہے وہى اپنے بھائى كيلئے پند كر __] (٣)....." من حسن الاسلام الموا توكه مالا يعنيه" [اسلام كاحسن "العنى چيز ول كاترك كردينا ئے"]

امام اعظم ابوصنیفہ نے ان میں پانچویں صدیث کا ابتخاب فرمایا ہے، وہ یہ ہے: "السمسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده" [مسلمان و، ہے کے مسلمان اس کی زبان اور اس کے ہاتھ سے محفوظ رہیں۔

بعمر الله الرحدن الرحيم

حدیث انما ﴿اعمال کادارومدارنیت پرہے﴾

﴿ ا ﴾ عَنُ عُمَرٌ بُنِ الْعَطَّابِ رَضِىَ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَنَهُ قَالَ قَالَ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ، إِنَّمَا الْاَعُمَالُ بِالنِيَّاتِ، وَإِنَّمَا لِامْرِقَ رَسُولُ اللهِ صَلَى الله تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، إِنَّمَا الْاَعُمَالُ بِالنِيَّاتِ، وَإِنَّمَا لِامْرِقَ مَا اللهِ صَلَى اللهِ وَرَسُولِهِ، وَمَنُ مَا اللهِ وَرَسُولِهِ، وَمَنُ كَانَتُ هِحُرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ، وَمَنُ كَانَتُ هِحُرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ فَهِحُرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ، وَمَنُ كَانَتُ هِحُرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ اللهِ، وَمَن كَانَتُ هِحُرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ اللهِ، وَاللهِ اللهِ وَرَسُولِهِ وَاللهِ عَهِجُرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ اللهِ اللهُ اللهِ المُلْمُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ المُلْمُ اللهِ ال

حواله: بخاری شریف: ج ا /ص ۲، باب کیف کان بدء الوحی، کتاب بدء الوحی، حدیث نمبرا، مسلم شریف: ج ۲ /ص ۴ ، ۱ ، ۱ ، ۱ ، باب قوله صلی الله علیه و سلم "انما الاعمال بالنیة"، کتاب الامارة، حدیث نمبر ۱۹۰۵

حضوت عمر رضی اللّه عنه کے مختصر احوال: نام مر، والد کانام خطاب، کنیت او حفس، سب سے پہلے ایر المونین کے نام سے آپی کو پکارا گیا، آپ کالقب فاروق ہے، جس کے مخت بین حق وباطل کے درمیان فرق کرنے والا، اس لقب کی وجہ یا تو یہ ہے کہ آپ کے ایمان سے قبل اسلام اور اہل اسلام غلیت خفاء میں تھے آپ کے بعد اسلام کا بہت ظہور ہوا اور مسلما نوں کی ہمت بڑھی، دومر اقول قاضی بیناوی نے این نمید یک ایک بیودی این نمید یک ایک بیودی این نمید کے ایمان نزائ ہوا، حضور اقد س فی الله تعالی علیہ وہم نے بیودی کے حق میں فیصل دیا تھا کر پھر بھی وہ اور منافق کے درمیان نزائ ہوا، حضور اقد س فیصل کے لئے آیا۔ ساری تنصیل من کر سے (ق الله الحاضفیر)

حل لغات: امرئ، الرجل كمعنى مين ب،اس كى جمع نبيس آتى (عدة القارى: قاص ۵) يصيب، صوب كمتن به اصاب الشي بإليا، امرأة كى جمع نساء، خلاف قياس بـ

قوجهه: حضرت عمر بن الخطاب رضی الله تعالی عند سے روایت ہے کہ انہوں نے بیان فرمایا کہ حضرت رسول الله سلی الله تعالی علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ 'اعمال کا دارو مدار نیت پر ہے، آ دمی کے لئے وہی چیز ہے جس کی اس نے نیت کی ہے، چنا نچہ جس شخص نے الله تعالی اور اس کے رسول (سلی الله تعالی علیہ وسلم) کے لئے ہجرت کی ، تو اس کی ہجرت الله تعالی الله تعالی علیہ وسلم) کے لئے ہی ہوگی ، اور جس شخص نے حصول دیا ، یا کسی عورت سے شادی کی غرض ہے ہجرت کی ، تو اس کی ہجرت اس چیز کے لئے ہے ، دنیا ، یا کسی عورت سے شادی کی غرض ہے ہجرت کی ، تو اس کی ہجرت اس چیز کے لئے ہے ، دنیا ، یا کسی عورت سے شادی کی غرض ہے ہجرت کی ، تو اس کی ہجرت اس چیز کے لئے ہے ،

(حاشیہ صغیر گذشتہ) حضر ت عمر رضی اللہ تعالی عند نے اس منافق کی گرون اڑا کرفر مایا: کہ جوحضور اقد س ملی اللہ تعالی عند کے یبال بیہے۔ تعالیٰ علیہ وسلم کا فیصلہ ندما نے اس کا فیصل عمر رضی اللہ تعالیٰ عند کے یبال بیہے۔

معدود بند افر او کے بعد حضرت عمر رضی اللہ تعالی عند کا اسلام ثابت ہے، کعب بن لوئی پر جاکر ان کا نسب حضور اقد سلی اللہ علیہ و باتا ہے یہ بھی تبیلہ قریش کے ایک بطن کی طرف منسوب ہوکر علوی کہلا۔ تے بیں، جبرت کے تیر ہویں سال حضرت ابو بکر کی وفات کے بعد آپ کے دست مبارک پر بیعت خلافت کی تی ۔

منافق عمو: ان کے مناقب بیشار بیں خود حضور اقد س سلی اللہ علیہ وہما ہے کتب حدیث میں ان کے مناقب میں بہت میں روایات منقول ہیں، خافاءِ راشدین میں ہے دوسرے ہیں رسام ہیں اخیر ذی المجبیں اواؤلو کے میں بہت میں روایات منقول ہیں، خافاءِ راشدین میں ہے دوسرے ہیں رسام ہیں اخیر دی المجبیں اور والو کے انتخار مار نا ہے کہ شہادت کا وقت کیا ہے گر اس پر علاء نے انقاق نقل کیا ہے کہ شہادت کا وقت کیا ہے گر اس پر علاء نے انقاق نقل کیا ہے کہ تہ فین اس وقت عمل میں آئی جب خرم شروع ہو چکا تھا۔ (مر تا ہ ۱۹۳۹)، الکاشف: ۱۹۸۳ شدرات: ۱۳۳۳)

لوکان نبیبا بعدی لکان عمر ؓ، الحدیث (اگرمیرے بعدکوئی نجی ہوتا تو ممرٌ ہو۔تے)البحق ینطق علی کسیان عمر ؓ، المحلیث (مفرے ممرٌکی زبان پرفِّ ہواتا ہے)اورجس راستہوممرٌ جا۔تے ہیں شیطان اس راستہو نبیم جاتا۔ بیاحاد پھٹ توبہے مشہور ہیں۔ قشریع: مطلب بی ہے کہ جیسی نیت ہوتی ہے دیبا ہی ثمر ، ہوتا ہے ، اگر رضا ،خدا کے لئے نماز پڑھی تو ثمر ، میں کے لئے نماز پڑھی تو ثمر ، میں رضا وخلق کے لئے نماز پڑھی تو ثمر ، میں رضا وخلق حاصل ہوجائے گی۔اللہ تعالیٰ کی رضا حاصل نہ ہوگی۔

ایک صدیث شریف میں ہے کہ بروز قیامت اللہ تعالی کے سامنے ایک عالم کو اہا یا جائے گا اور اللہ تعالی اس کے سامنے اپنی نعتیں گنوا کیں گے ، اور پھر ارشا دہوگا کہ تو نے ان نعتوں کا کیا حق اوا کیا؟ عالم کہے گا کہ اے پروردگار! تیری رضاء کے لئے میں نے علم پر حا، اور دوسروں کو بڑھایا، اور پوری زندگی اس میں گذار دی، اللہ تعالی فرما کیں گے جموث ہے، تو نے علم اس لئے حاصل کیا تھا کہ لوگ تجھ کوعلاً مہ کہیں سوتجھ کوعلاً مہ کہیا جا چکا، اب تیرے لئے یہاں کھے نیس اور فرشتوں کو ارشا دہوگا کہ اے جہنم میں داخل کردو۔ پس اس کوجہنم میں داخل کردو۔ پس اس کوجہنم میں داخل کردو۔ پس اس کوجہنم میں داخل کردیا جائے گا۔

ایسے بی ایک تنی اور ایک مجاہد کا حال ہوگا، اور بد نمتی کی وجہ سے دونوں کوجنم میں داخل کر دیا جائے گا۔

سخی اللہ تعالیٰ کے سامنے پیش کیا جائے گا، اللہ تعالیٰ اس کواپی نعتیں یا دوا کیں گے،
اور پھر فرما کیں گے تو نے ال نعتوں کا کیاحق اوا کیا؟ وہ کیے گا کوئی خیر کا کام ایسانہیں جہاں
میں نے خرجی نہ کیا ہو، ارشا وہوگا یہ سب اس لئے کیا کہ جھے کوئی کہا جائے کہ بہت ہڑائی ہے۔
سوکہا جاچکا، اب یہال کیا ہا ہے ہو؟ اور اس کوبھی جہنم میں ڈالدیا جائے گا۔

ای طرح مجاہد کو پیش کیا جائے گا، اللہ تعالیٰ اس کو بھی اپنی نعمتیں یا و دا کیں گے، اور فرما کیں گے، اور فرما کیں گے، کرتا خرما کیں گے، کرتا ہے، کرتا ہے، کرتا ہے، کرتا ہے، کرتا ہے، کرتا ہے، کرتا ہے کیا تھا کہ جھے کو بہا در کہا جائے، سو کہا جا چکا، میں اس لئے کیا تھا کہ جھے کو بہا در کہا جائے، سو کہا جا چکا، میں اور اس کو بھی جہنم میں ڈالدیا جائے گا۔اعاذنا اللہ منه.

صدیت بداکو «حدیث المنبر » بھی کباجاتا ہے اس لئے کے حضر تعرفی اللہ تعالی عند نے اس کو تمام صحابہ کرام رضوان اللہ تعالی علیہ ما جعین کے سامتے نبر پر بیان کیا تھا۔ کہ ما فی البخاری ، اور مہلب نے کبا کہ بحض روایت میں آتا ہے کہ حضوراقد س سلی اللہ علیہ وسلم نے بجرت کے بعد سب سے پہلے منبر پر یہ حدیث بیان فرمائی تھی، اس لئے «حسدیت السمنبر» کباجاتا ہے۔ اوراس حدیث السمنبر » کباجاتا ہے۔ اوراس حدیث میں نیت کا ذکر ہے۔ بنا ہریں "حدیث النیة" بھی کباجاتا ہے۔

صدیث بذای عظمت وجالت شان کے بارے میں تمام محد ثین کرام متفق ہیں، چنا نچہ سفیان بن عیدند، امام شافعی، عبدالرحمٰن بن مهدی فرماتے ہیں: کہ یہ صدیث وین کے سر بابول کے ساتھ محلق رکھتی ہے۔ اور عبدالرحمٰن بن مهدی فرماتے ہیں: کہ جوکی کتاب لکھنے کا ادادہ کر ب تو سب سے پہلے اس صدیث سے ابتداء کر سے اورامام شافعی سے مروی ہے کہ یہ صدیث تو سب سے پہلے اس صدیث سے ابتداء کر سے اورامام شافعی سے مروی ہے کہ یہ صدیث اور سنسف العلم، ہے، اس کی وجہ یہ ہے کہ نیت عمل قلب ہے، اورا عمال عبادت بدن ہیں اور امام شافعی کا قول ہے کہ یہ "شلث الاسلام" یا" شلث دین ہے۔ کیونکہ بندہ کا سب یابذ رید قلب ہوگا وہ نیت ہے یابذ رید زبان ہوگایا بذرید جوارح ہوگا، بنایری سی "شلث الاسلام" کیا۔

یبی وجہ ہے کہ تمام سلف وظف اپنی مصنفات کا اس حدیث سے افتتاح کرتے تھے

تا کہ قار مین اپنی نیت ابتداء ہی سے فالص کرلیں۔ اورعلامہ خطابی قو صرف تصنیف کے ساتھ فاص نہیں کرتے بھی اپنی کہ متقد بین اپنے ہرکام کی ابتداء اس حدیث سے کرتے تھے

تا کہ برکت ہوجائے۔ بنا بریں قد وہ المحد ثین امام بخاری نے بھی اپنی کتاب صحیح بخاری کی ابتداء اس حدیث سے کی۔ اس لئے صاحب مشکوہ نے بھی سلف صالحین کی افتداء کرت ہوئے اپنی کتاب کو صدیث النیہ سے شروع کیا تا کہ طالب علم اپنی نیت کی اصلاح کرے، ہوئے اپنی کتاب کو صدیث النیہ سے شروع کیا تا کہ طالب علم اپنی نیت کی اصلاح کرے،

نیز سامنے کتاب الایمان و کتاب الطهارت آربی ہاوران کامدارنیت بر ہاس لئے بھی اس سے شروع کیا۔

دوسری رائے ملاعلی قاریؒ نے حافظ ابن جُرؒ سے یہ ذکری ہے کہ اس روایت کو تروئ میں ایا نیکی وجہ امام بغویؒ کی اقتدا کرتا ہے کیونکہ انہوں نے بھی اس روایت کو کتاب الایمان سے قبل اور مقد مہ کے بعدا ک طرح ذکر کیا ہے، بخاریؒ کی ا تباع مقصود نہیں۔ (مرقاۃ ۱/۳۹) شروع میں اس روایت کو الکراشارہ کر دیا کہ معلم اور متعلم دونوں کو نیت درست کرنی بیا ہے اور اس میں اخلاص بیدا کرنا بیا ہے، کیوں کہ یہی الیمی بنیاد ہے جس پرعقائد وا ممال کا مدار ہے نیز طالب حدیث ایبا ہے گویا کہ وہ حضور اقدس سلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی طرف جرت کر رہا ہے لہذا اس کو مقام اختصاص کے حصول کے لئے اخلاص کی ضرور ت ہیں حتی کہ اس کا نام ہے، اس لئے اس روایت کو عام مصنفین شروع میں ذکر کرتے ہیں حتی کہ اس کا نام ہے، اس لئے اس روایت کو عام مصنفین شروع میں ذکر کرتے ہیں حتی کہ اس کا نام شلیعة کتب الحدیث " ہے۔ (مرقاۃ: ۳۸ – ۱/۳۹)

امام نوویؓ نے شرح مسلم میں ذکر کیا ہے کہ مسلمان اس حدیث کی اہمیت فوائد کی کشر ت اور سخت روایت پر مجتمع ہیں۔ امام عبدالرحمٰن بن مہدی فرماتے ہیں کہ جوتھنیف کرے اس کے لئے مناسب ہے کہاں حدیث سے ابتدا کر سے بھے نیت پر تنبید کرنے کیلئے۔

لیکن اس بات کا خیال رہے کہ یہ روایت غریب ہے (غریب کی تعریف آپ اوگ یا دکر چکے ہو کہ اگر سند میں کہیں ایک ہی راوی رہ جائے تو اس کی روایت غریب ہو جاتی ہے اور غرابت سحت کے منافی نہیں ہے)

الطبیفه: نیز اس میں ایک لطیفہ باعتبارا ساد کے بیہ ہے کہ اس کی سند میں تین تا بھی ایک دوسر سے سے روایت کرتے ہیں (۱) یکی بن سعید: بیصغارتا بعین میں سے ہیں، (۲) محمد بن ایر ہیم الیمی: بیا وساط تا بعین میں سے ہیں، (۳) علقمہ بن وقاص اللیمی: بید کبارتا بعین میں

ہے ہیں۔ نیز سب ایک دوسر سے لینے میں مفرد ہیں اور یکیٰ بن سعید کے بعد اس روایت کے متعدد طرق ہوئے گئے ہیں۔ کے متعدد طرق ہوئے ہیں۔ کے متعدد طرق ہوئے گئے ہیں۔ (شرح مسلم لعووی، کتاب المارة: 2/24، فتح الباری: ١٦/١)

شان ورود

لیمش علماء نے اس مقام پراس روایت کاشان ورود ذکر کیا ہے ابن مسعود گی روایت ہے: من هاجر یبت غی شیئاً فہو له، قال: هاجو رجل لیتزوج امرأة یقال لها ام قیس، و کان یسمی مهاجر ام قیس. (طبرانی: ۳/۹ ا ، رقم الحدیث: ۰ ۸۵۴)

حافظ ابن جمر نے ایک روایت اور ذکر کی ہے جس کا خلاصہ یہ ہے کہ ایک شخص نے ایک عورت کو پیغام دیا ، اس نے نکاح کے لئے شرط لگانی کہ اگر و چمخص ہجرت کر یگا تب نکاح کرونگی ورنہ ہیں، لبند اس شخص نے ہجرت کی، اور انہوں نے نکاح کرلیا، پھر ان کومہاجر ام قیس کہاجانے لگا۔ (فتح الباری: ا/ ۱۷)

یدوبی ام قیس بیں جن کے بھائی عکاشۃ بن مصن کاوا تعظیمین کی روایت میں وارد
ہے: کدو ان سر ہزارلوگوں میں سے ایک ہو گئے جو بلاحساب و کتاب جنت میں جا کیں گے۔
لیکن اس روایت میں بنہیں ہے کہ صدیث "انسما الاعسمال """ کوائی وجہ سے
بیان کیا گیا ہے نیز حافظ ابن ججر کی رائے ہے کہ یہ واقعہ اپنی جگہ الیکن کسی سند میں مجھے یہ بیس ملا
کہ اس حدیث کااس واقعہ سے صراحنا کوئی تعلق ذکر کیا گیا ہو۔ (افتح الباری: الم الم

اوراً لر مان لیاجائے کہ اس واقعہ ہے اس روایت کا تعلق وجوڑ ہے تو جواب یہ ہوگا کہ ان کی نیت مخلوط تھی ، جو محض خلاف اولی ہے گر حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے اس پر بھی تکیر فرمانی ہے۔

بہر حال بیصدیث شریف شروع میں ایسی ہی ہے جیسے کلام اللہ کے شروع میں ہم اللہ علم کو بھی اپنی اللہ اللہ علم کو بھی اپنی اللہ اللہ علم کو بھی اپنی نیت صحیح نروزی ہے، پس طالب علم کو بھی اپنی نیت صحیح کرنا ضروری ہے اگر نیت صحیح نہوتو علم الٹاوبال ہوگا۔

حقيقت اخلاص

اس صدیث کا اصل موضوع ہے اخلاص کی تعلیم اور ترغیب دینا۔ اخلاص کی حقیقت لغت کے اخترار سے بیہ ہے کہ جس چیز میں کھوٹ مل سکتا ہو، ملاوٹ کی جا سکتی ہوتو اس کو کھوٹ اور ملاوٹ سے پاک صاف رکھنا، مثلاً دودھ میں پانی کی ملاوٹ کی جا سکتی ہے، دودھ کو اس ملاوٹ اور شائبہ سے بچالیٹا بیا خلاص اللبن کہاائے گا، اور ملاوٹ سے بچنے والے دودھ کو اللبن الخالص کہ بیں گے، شریعت کی اصطلاح میں اخلاص کا معنی ہے اپنے عمل کوغیر اللہ کے شوائب سے بچا کر رکھنا۔ مطلب بیہ ہے کی مل صرف اللہ کے گئے ہوتا بیا ہے ،اس میں کوئی اور شائبہ نہ آتا بیا ہے ۔ ممل میں شائبہ یہ ہوسکتا ہے کہ دنیوی اغراض میں سے کی غرض کے لئے کیا جائے۔ مرتم کے شائبہ سے بچانا اخلاص العمل کہاائے گا۔

عمل مشوب كاتقكم

عمل کی تین قشمیں ہیں۔ ہر کام کرنے کا کوئی نہ کوئی باعث اور محرک ضرور ہوتا ہے، اس باعث اور محرک کے اعتبار سے عمل کی تین قشمیں ہیں۔

- (۱).....عمل کا با عث اورمحرک صرف اخر وی غرض ہو۔اللّٰدعز وجل کی رضاحاصل کرنا تُوا ب اور جنت لیما ۔
- (۲)....عمل کابا عث صرف دنیوی غرض ہو، مثلاً اوگوں کی نظر میں عزت وجاہت حاصل کرنا۔ کرنا، یا کوئی اور دنیوی غرض حاصل کرنا۔

(۳)کی عمل میں باعثین کی شرکت ہو، لینی غرض اخروی اورغرض دنیوی دونوں کے لئے کیا جارہا ہو۔

اس تیسری قتم کومل مشوب کہتے ہیں۔ یعنی ملاوٹ والاعمل۔ اور پہلی دونوں قسموں کومل خالص کہتے ہیں۔ یعنی ملاوٹ والاعمل۔ اور پہلی دونوں قسموں کومل خالص کہتے ہیں۔ پہلی قتم خالص للآخرة اور دوسری قتم خالص للد نیا ہے۔ لغت کے اعتبارے ان دونوں قسموں کواخلاص کہا جا سکتا ہے۔ اس لئے کہ ہرا یک میں غرض ایک ہی ہے۔ دوسری جانب کی ملاوٹ نہیں ہے۔ لیکن جب شریعت میں اخلاص کالفظ ہوا ا جا تا ہے تو مرادا خلاص جانب کی ملاوٹ نہیں ہے۔ لیکن جب شریعت میں اخلاص کالفظ ہوا جا تا ہے تو مرادا خلاص المحمل للآخرة ہی ہوتا ہے۔ ایے عمل کود نہوی اغراض کے شوائب سے یاک کر لینا۔

تتنول قسمول كاحكم

کیافتم بالاتفاق مقبول ہے،اس پر تواب ملے گا۔دوسری قتم بالاتفاق مردود ہے،اس پر عقاب ہوگا۔ تیسری قتم کے تکم میں تنصیل ہے۔ عمل مشوب و،عمل ہے جس میں دونوں غرضیں ملی ہوئی ہوں اس کی تین حالتیں ہو کتی ہیں۔

- (۱)..... باعظین مساوی ہوں، لیعنی بچاس فی صدد نیوی غرض ہے، اور بچاس فیصد اخروی غرض ہے۔
- (۲)..... باعث دنیوی غالب ہواور باعث اخروی مغلوب ہو۔مثلاً: اس فیصد دنیوی غرض ہیں فیصد اخروی غرض ہے۔
 - (٣) باعث اخروی غالب ہے اور باعث دنیوی مغلوب ہے۔

یبال پہلی حالت میں نہ تواب ہے نہ عقاب، اکثر علائے کرام کی بہی رائے ہے۔ دونوں غرضیں ایک دوسر سے کی مزاحم بن گئ ہیں۔ باقی قسموں کا کیا تکم ہے اس میں تین تسم کے اقوال ہیں، جوسید مرتضٰی زبیدی نے اتحاف شرح احیاء میں نقل کئے ہیں۔ ایک قول اشد ہے۔

اورایک اخفاء ہے اور ایک اعرل ہے۔

(۱)علامه عز الدین بن عبدالسام اورعلامه محاسی اورعلامه صلاح الدین علائی کا فدہب یہ بے کہ جس قول میں تھوڑی تی دنیوی غرض بھی مل جائے وہ مردود ہے۔ یہ قول اشد ہے۔ (۲) بعض علاء کا قول نقل کیا ہے کہ جس عمل میں تھوڑی تی اخروی غرض بھی مل جائے وہ مقبول ہے۔ یہ قول سب سے زم ہے۔

(٣)امام غزالی اورعلامه قرطبی اورجمبورعلاء کی رائے یہ ہے کہ دوسری تیسری سم نہ مطلقا مقبول ہیں، نہ مطلقا مر دود۔ بلکہ اس میں تنصیل ہے، وہ یہ ہے کہ جب باعث اخروی عالب ہواس پر تواب مل جائے گا، لیکن اتنا تواب نہیں عالب ہواور باعث دنیوی مغلوب ہواس پر تواب مل جائے گا، لیکن اتنا تواب نہیں طع گا جتنا کہ خالص لا آخر ہ میں ملناتھا، بلکہ جس قد رد نیوی غرض کی ملاوٹ ہوگی اتنا بی کم تواب ملے گا، جب غرض دنیوی عالب ہواس پر عقاب ہوگا، لیکن اتنا عقاب بی کم تواب ملے گا، جب غرض دنیوی عالب ہواس پر عقاب ہوگا، لیکن اتنا عقاب نہیں ہوگا جتنی اخروی غرض مل خیاب کے کے صورت میں ملناتھا، بلکہ جتنی اخروی غرض مل گئی اتنا بی ثواب ملے گا اور اتنا ہی عقاب کم ہوجائے گا، یہ قول معتدل ہے، اسے عقل وقتل قبول کرتے ہیں ۔ قرآن پاک میں ہے: "مین یعمل منقال ذرہ خیر اللہ عیں ہوا ہے گا، یہ قول میں اس قانون کی پوری رعایت یہ وہ ومن یعمل منقال ذرہ شر ایرہ" اس قول میں اس قانون کی پوری رعایت ہے۔ نتو ذرہ خیر کوظر انداز کیا گیا ہے۔ اور نہ بی ذرہ شرکو۔

ایک نکطی کاازالہ

اس میں شک نہیں کہ اخلاص میں کافی کھوٹ ملتے رہتے ہیں، بعض اوگ ان شوائب سے ڈر کر نیک کام کرنا ہی جھوڑ دیتے ہیں کہ جب ہم سے شوائب وریا دور نہیں ہوئے اور اخلاص کامل نہیں آیا تو پھر نیکی کرنے کا فائدہ کیا، یہ بہت بڑی شیطانی بیال ہے۔

امام غزالی اور دومر مصشائخ نے اس پرخصوصی تنبیبهات فرمائی ہیں: ریاء کے ڈرسے عمل کا جھوڑ بیٹھنایہ شیطان کو کامل درجہ کا خوش کرنا ہے، جب نیکی کرتا تھا بغیر اخلاص کامل کے شیطان کوا کی خوشی میں بعنی ترک اخلاص کی خوشی جب اس نے کام ہی جھوڑ دیا تو اب شیطان کو دوخوشیاں نصیب ہو گئیں، ایک ترک عمل کی اور ایک ترک اخلاص کی ، تو دشمن کو زیاد ہ خوش کرنا حقا نہ ترکت ہے۔

فائده

مشائے نے تصریح کی ہے کہ رہا ہ کے خوف سے عمل چھوڑ دینا یہ خود رہا ہے۔ اس لئے کہ اخلاص کا مقصود تو صرف یہ تھا کہ نظر اللہ تعالی پر ہے، جب اوگوں کے دکھاوے کے خوف سے عمل چھوڑ اتو معلوم ہوا کہ اس کی نظر غیر ول پر ہے، یہ بری فہیج حرکت ہے، توعمل چھوڑ کے کونیا کمال حاصل کیا ہے کہ دیمن کواور زیادہ خوش کر دیا ہے۔ اور خالق کا وظیفہ چھوڑ کر دوسروں کا وظیفہ شروع کر دیا۔ شان عبدیت یہ ہے کہ نہ غیر اللہ کے لئے کام کرنا ہے نہ ان کے لئے کام کرنا ہے نہ ان کے لئے جھوڑ نا ہے۔ صرف اللہ تبارک و تعالی پرنظر رہنی میا ہے۔

اس بات بربھی نظر رونی بیا ہے کہ اخلاص برعمل کرنا کوئی مشکل بات نہیں، اخلاص مامور بہ ہے، اور شریعت اسی چیز کا امر کرتی ہے، جواختیا راور بس میں ہو ہرکام کے شروع میں اتناد صیان کر لیما کہ میں اللہ تعالی کوراضی کرنا جا ہتا ہوں، یہا ختیا ری بھی ہے، آسان بھی ہے، صرف تھوڑی ہی توجہ کی ضرورت ہے۔ (اشرف التوضیم)

اِنَّهُ مَا الْاعُمَالُ: لَفَظَ 'إِنَّهَا" حَمر كَ لِنَّ بَعبدالقابر جرجانی دا اَلله الجاز القرآن مِن لَكُصة مِن كه جب متكلم كوا بني بات بر يورايقين بوك ميرى بات صدفى صدفيح به اس مِن كي قتم ك شبه و شكى گنجائش بيس - اس جگه برانما استعال كياجا تا ب - جيهانما هو اله واحد.

النِّبَات: نیت کی جمع ہے،اس کے اغوی معنی قصد اور ارادہ ہے۔ اور شرنااس کے معنی تصد اور ارادہ ہے۔ اور شرنااس کے معنی توجه القلب نحو الفعل ابتغاء لوجه الله تعالیٰ. اور فقهاء کرام کے زور کے نیت ہے مراد لیتے ہیں التسمییز بین العملین یا تمییز بین العبادة و العادة، حدیث بنرایس نیت نعوی مراد ہے، شرعی مراد ہیں تا کہ مابعد کے ساتھ تطبیق ہوجائے کیونکہ سامنے نیت کی تقدیم کی جاری ہے، فیروش کی طرف، اور نیت شرعی میں فیر ہی ہے شرنیس ہے۔

وضومين نيت كأحكم

اصل میں یہاں ایک اجتہادی مسلامی فیبا چا آ رہاہے، کدوضو کی سحت کے لئے نیت شرط ہے یا نہیں؟ تو پہلے بھے لیما ہا ہے کہ عبادات کی مختلف قسمیں ہیں، ایک 'عبادت مصد' ہے جیسے نماز، روزہ وغیرہ اس میں سب کا اتفاق ہے کہ اس کی صحت اور اس پر ثواب مرتب ہونے کے لئے نیت ضروری ہے، دوسری صرف ''عبادت آلیہ'' کددوسری عبادت مصدہ کے لئے آلہ ہے، جیسے طہادت بدن ومکان وثوب، اس میں بھی سب کا تفاق ہے کہ اس کی صحت کے لئے نیت شرط نہیں اور ثواب کے لئے نیت شرط ہے۔

تبسری قتم جس میں طبارت وعبادت کی شان موجود ہے اس میں بھی تو اب کیلئے نیت شرط ہونے میں سب کا اتفاق ہالبتہ اسکی صحت کیلئے نیت شرط ہے یانہیں؟ اسمیں شوافع اور احناف کے درمیان اختلاف ہے، شوافع عبادت کی شان کوراج قرار دیکر دوسری عبابول کی طرح نیت ضروری قرار دیتے ہیں اور احناف جہت طہارت کو راجح قرار دے کر دوسری طبارت بدن، کپڑے کی طرح نیت کو ضروری نہیں کہتے، وہ ہے وضو ۔ تو شوافع کے نز دیک بلانيت وضودرست نبيل ہوگا،اوراحناف كہتے ہيں كه بلانيت وضوفيح ہوجائيًا،اورنماز كيلنے آله بن جائيگا،طبارت ثوب وبدن کے مانند، ہال بددوسری بات ہے کہ اس برثوا بنبیں ملے گا۔ تواس اختلاف كى بناءير "بالنيات" كمتعلق نكالني مين ختلاف كيا كيا بتوشوافع تسحت متعلق مانتے ہیں کیونکہ ظروف کے متعلق افعال عامہ ہی ہوتے ہیں۔اورصحت افعال عامہ میں سے ہےتو مطلب میہوا کہ تمام اعمال کی صحت نبیت پر ہے۔اور وضو ، بھی ایک عمل ہے، لہٰذااس کی صحت بھی نیت پر ہوگی ، اوراحناف نے تُفُسابُ متعلق مقدر مانا کیونکہ سامنے ف من كانت هجوته النع مين ثواب كاذكر ب_ جس كامطلب بيهوا كوضو باانيت ك بھی میں ہوجائے گا، لینی مفتاح صلوۃ بن جائے گا، البتداس بر ثواب بیس ملے گا۔

الاعدال المتعلقة بالنبة: امام غزائى فرمات بي كه جوا ممال نبت كم متعلق ہوت بيں وہ تين قتم كے بيں، (۱) طاعات، (۲) معاصيات، (۳) مباحات معاصيات ميں اچھى نبيت نبيں ہو كئى ۔ كيونكه نبيت صالحہ كے لئے شرط يہ ہے كه الحمال كے اندر اس كى صلاحیت بھى ہو حالانكه معصیت كے اندر يه صلاحیت نبيں، مثلاً كى كى غيبت كرنا، دوسر كوراضى كرنے كے لئے يا مال حرام سے ثواب كى نبیت سے صدقہ كرے ۔ يا مثلاً: چورى كرے اس نبیت سے كه اس كے ذراجه ميں غريبول كى، يواؤل كى مددكرول كا يہ جائز نبيس، اوراس نبیت سے گناه كا كام جائز نه ہوگا، بلكہ گناه كے كام ميں اس ميں نيك نبيت كرنا

ووسراجرم عظیم ہوگا، بلکہ بعض اوقات ایمان چلے جانے کاخطرہ ہے، طاعات کی صحت کے لئے نیت کرنا ضروری ہے۔ اورا اً سر نیت کرنا ضروری ہے، ای طرح زیادت تو اب کے لئے بھی نیت کرنا ضروری ہے۔ اورا اً سر نیت فاسد ہومثلاً ریا، سے عبادت کر ساتھ تو ابنیں ملے گا گوچیج ہوجائے گی۔

مباحات ایسے اعمال ہیں جونی نفسہ نہ موجب تواب ہیں اور نہ موجب گناہ ہیں ، نیت کے ذریعہ تواب وگناہ سلے گا، اچھی نیت ہوتو تواب ملے گا ہری نیت ہوتو گناہ ہوگا۔ مثلاً عطر استعال کرنا ، اگر اس میں اتباع سنت کی نیت ہویا اوگوں کے دل کوخوش کرنا اور اپنی ہد ہو ہے لوگوں کو دول کوخوش کرنا اور اپنی ہد ہو ہے لوگوں کو دول کو تو تواب ہوگا۔ اگر فخر ومباہات یا عودتوں کے داول کو اپنی طرف ماکل کرنے کی نیت ہوتو گناہ ہوگا۔

وَ إِنَّهُمَا لِإِهُر وَهُانُو ي: اس جمله كم بار ميس بحث مونَّى كم آيايه پيلے جملے کی تاکید ہے یا تاسیس ہے تو علامہ قرطبی کی رائے ہے کہ نیت کا معاملہ نہایت اہم ہاس لئے دوس سے جملہ سے بطور تا کیدائی مضمون کواعادہ کیا گیالبندایہ جملہ پہلے کی تا کید ہے، مگر اکثر علاء کی رائے بینے کہ التاسیس اولیٰ من التاکید کے پیش نظر تاسیس ما نازیا دہ بہتر ہے کہاس سے نیا ایک فائدہ بیان کرنامقصود ہے۔ پھر نے فائدہ کی تعیین میں مختلف اقوال ذکر کئے گئے ہیں۔(۱)بعض کہتے ہیں کہ پہلا جملہ قاعدہُ عرفیہ یا کلیہ ہے،اور دوسرا جملہ قاعدہُ جزنیا قاعدۂ شرعیہ ہے۔(۲) بعض کہتے ہیں کہ پہلے جملہ میں عمل نیت کے تانی ہوکر حکم مرتب ہونے کا بیان ہے اور دوسرے جیلے میں عامل اور نیت کے تعلق کا ذکر ہے۔ (۳)علامہ ابن وقیق العید کی رائے بہ ہے کہ پہلے میں عمل اور نیت میں ربط کا بیان ہے۔ اور دوسرے میں عمل کواس کی شرا نظ کے ساتھ اوا کرنے کے بعد جونیت ہوگی وہی حاصل ہوگا۔اس کا بیان ہے۔(۲)علامہ نووی فرماتے ہیں کہ دوسرے جملے میں منوی کی تعیین کا شرط ہونا بیان کیا گیا ہے۔(۵)بعض کہتے ہیں کہ جواعمال خارج ازعبادت ہیں ان کو داخل کرنے کے لئے دوسرا

جملہ الما گیا۔ (۲) بعض کہتے ہیں دومرے جملے میں نیت کے اندرعدم نیابت کا بیان ہے۔
(۷) بعض کی رائے بیہ کے دومرے جملہ میں یہ بیان ہے کہ وحدت وتعد دا چر وحدت وتعد د نیت کی وجہ ہے ہوتا ہے۔ (۸) پبلا جملہ علت فاعلیہ ہے اور دومر اجملہ علت فائی وثمر ہ ہے۔
قو له فحم ن کانت هجر ته الخ: اس جملہ ہے پہلے قاعدہ کی مثال
بیان فر مارہے ہیں۔ جملہ میں تین چیزیں تھیں جمل ہنیت ہم ہ ہوف من کانت هجو ته ہے ممل کی طرف اشارہ ہے اور الی اللہ الخ سے نیت کی طرف اشارہ ہے۔ اور فیجر ته الخ سے ثمر ہ ونتیجہ کی طرف اشارہ ہے۔ ای طرح بعد کے جملے میں بھی یہی تین چیزیں ہیں۔

اشكال مع جواب

یبال ظاہرائشر طوح زامیں اتحادہ وگیا۔ حاا انکہ دونوں میں تغایر ضروری ہے۔ لیکن معنی تغایر ہے۔ معنی کے اعتبارے عبارت یوں ہوگی: فسمن کے اعتبارے عبارت یوں ہوگی: فسمن کے اعتبارے عبارت یوں ہوگی: فسم سے سنہ اجراً و ثو اباً. یا مبالغہ بھی اتحاد ہوجا تا ہے، پس شر طوح زامیں تغایر ہونے کا اشکال ختم ہوگیا۔

اشكال دوم مع جواب

یبال دورااشکال بیہوتا ہے کہ پہلی مثال میں اللہ ورسول کا ذکر کر راائے اور دور کی مثال میں دنیا وعورت کے ذکر کا اعادہ نہیں کیا گیا۔ کیونکہ اللہ اور رسول کے نام میں لطف والتذ افہ ہے۔ بناء ہریں کرراایا گیا۔ بخلاف دنیا وامراُ ہ کے کہ اس میں قباحت وعدم مبالات کی طرف اشارہ کرنے کے لئے کر نہیں ایا گیا۔ پھرامراُ ہ کوخصوصی طور پر ذکر کرنے کی وجہ یہ بے کہ بیاعظم فتنہ ہے۔ اس لئے اس میں خطرہ زیادہ ہے اس سے پر بیز کرنے کے لئے خصوصی طور پر ذکر کیا گیا۔

فسن كانت الغ: مين ايكتمثيل ذكر فرمائى بنيت فخم موتاب، اوراس كاوبر للفي والأثر ، موتاب، جيراتخم موتاب ويها بي ثمر ، موتاب -

ہجرت کومثال میں ذکر کرنے کی وجہ

یباں ایک اشکال ہوتا ہے ، اشکال رہے ہے کہ اعمال تو بہت ہیں مگر مثال میں ہجرت بی کو کیوں خاص طور پر ذکر کیا گیا۔

جواب: اس کا جواب مین به که ابتداء اسلام مین بهجرت کی بردی اہمیت تھی ، یبال تک که بهجرت الی المد ینه کوا بیان و کفر میں فرق قرار دیا گیا تھا، اور قرآن واحادیث مبارکه میں بهجرت کی خاص فضیلت واہمیت بھی بیان کی گئی ہے، اورا یک خاص واقعہ بھی بیش آگیا تھا، جس کی وجہ ہے ججرت کو خاص طور پر ذکر کیا گیا۔

رسول الندسلى الله عليه وسلم في اول انسما الاعمال النع بيان فرمايا م كي المين نيت موكار

پس به جمله قاعده کلیه ب، یعنی اس جمله میں قاعده کلیه کا بیان ب، اور دوسرا جمله "انسما الاموی مانوی الخ" جزئی یاثم ه ب- اورتیسرا جمله "فسمن کانت هجوته الخ" اس کی مثال ب-

اس حدیث سے جومسائل متعبط ہوت ہیں وہتم شرح و قابدوغیرہ میں بڑھ چکے ہو، وہاں دیکھ لی جیو۔

خلاصمہ: یہ ہے کہ جواعمال از قبیل عبادات محضہ میں وہ بغیر نیت کے هیچ نہیں ہوتے تمام ائمہ کے نز دیک نیت شرط ہے۔موقوف علیہ ہے۔اوروہ اعمال جن میں عبادت کی کوئی صورت ہی نہیں وہ افعال حسیہ جن میں تعبد کا کوئی شائبہ نہیں ہوتا وہ بغیر نیت کے بھی صحیح میں جیے مکان بنانا ، کھانا ، وغیرہ ، لیکن وہ اعمال جن میں پچھ حصہ تعبدی ہے پچھ غیر تعبدی ہے کھے غیر تعبدی ہے ج ہے جیے وضواس میں اختلاف ہے امام اعظم کے نز دیک معل حسی پورا ہونے کے لئے نیت ضروری ہے۔ ضروری ہے۔

ا مام شافعی واحمد کے زویک وضو کے لئے نیت ضروری ہے جس طرح نماز میں۔ولیل "انسمیا الاعمال بالنیات" کو پیش کرتے ہیں کہ وضوا یک عمل ہے اور برعمل کے لئے نیت ضروری ہے لہٰذا وضو کے لئے نیت ضروری ہے۔

امام اعظم فرمات ہیں کہ وضو کے دو پہلو ہیں ایک فعل حی اور ثان مقاحی دوسرا ثان قعبدی۔ ثان تعبدی کے لئے ضروری نہیں۔ آگر بغیر تعبدی۔ ثان مقاحی کے لئے ضروری نہیں۔ آگر بغیر نیت کے وضو کرلیا وہ وضو مقاح صلوۃ تو بن جائے گا۔ گر تواب نہ ہوگا۔ اعمال کا معل حی ہوجاتا ہے تعبدی نہیں ہوتا، ہیں امام اعظم کے نزد یک عبارت یہ ہوگی ''انسسا الاعسال بالنیات، ای ثواب الاعسال معتبر بالنیات."

اقسام بجرة

بجرت كافوى معنى جهور نا ـ اور شرعاً ترك مانهى الله كوبهى بجرت كباجاتا باور قرآن وصديث مين اكثر بجرت كااطلاق تسوك الموطن المذى بدار الكفو الى دار الاسلام بربوتا بـ ـ بهر بجرت كربهت اقسام بين: (۱) هجوت من دار الخوف الى دار الامن كما في هجرة الحبشه (۲) هجوت من مكة الى مدينة، يردونول بجر تين منوخ بو نئي جيما كرمديث مين بي "لاهجرة بعد الفتح" (۳) هجوت من دار الكفر الى دار الايمان (۳) هجوت من دار البدعة الى دار السنة (۵) الهجرة لطلب العلم وغيره ـ بي بهيشه باقى ربيل كي ـ الهجرة لطلب العلم وغيره ـ بي بهيشه باقى ربيل كي ـ

فوائدومساكل

اس حدیث سے فقہاء نے بہت سے احکام اور فو ائد اشنباط کئے ہیں، ہم یہاں چند احکام اور چند فو ائد ذکر کرتے ہیں۔

- (۱)ائمه ثلاثہ نے اس حدیث سے استدال کرتے ہوئے وضواور عسل میں نبیت کوواجب قرار دیا ہے۔ جبکہ امام ابو حنیفہ ، سفیان توری ، امام اوزاعی کے نز دیک وضویا عسل میں نبیت کی ضرورت نہیں۔
- (۲)وسرامسکداس صدیت سے یہ مستد کی گیا ہے کہ امام مالک کن ویک اور امام احمد کی ایک روایت کے مطابق رمضان کے مہینے میں ابتداء میں ایک نیب تمام روزوں کے لئے کافی ہے۔ وہ فرماتے ہیں کہ رمضان کے تمام روز نے ل کر عبادت واحد، ہیں۔ لبندا ایک ہی نیب کافی ہے۔ جبکہ امام ابوضیفہ امام شافی اور ایک روایت کے مطابق امام احمد کے نزویک ہر ہر روزہ کے لئے مستقل الگ الگ نیت ضروری ہے۔ کیول کہ ہر روزہ مستقل عبادت ہے۔ لبندا ایک نیب سب کے لئے کافی نہیں۔ کیول کہ ہر روزہ مستقل عبادت ہے۔ لبندا ایک نیب سب کے لئے کافی نہیں۔ کیول کہ ہر مردوزہ مستقل عبادت ہے۔ لبندا ایک نیب سب کے لئے کافی نہیں۔ سب کے لئے کافی نہیں۔ کیول کہ ہر مردوزہ مستقل عبادت ہے۔ کہ خطبہ کے دوران احادیث بیان کرنا جائز ہے۔
- (۳)ایک مشکه بید مشتبط کیا کیا ہے کہ خطبہ کے دوران احادیث بیان کرنا جائز ہے۔ حبیبا کہ حضرت عمر ابن الخطاب رضی الله تعالی عنه نے خطبہ کے دوران بید حدیث ارشاد فرمائی۔
- (س).....ا یک مسئلہ رہ بھی متدبط کیا گیا ہے کہ عبادات کے لئے نیت امازم اور واجب ہے۔ البتہ عبادات مقصودہ میں وجوب نیت بالا تفاق ہے اور وسائل میں اختلاف ہے۔

فوائد

(۱)اس روایت سے ایک فائدہ سیجھ میں آیا کے علوم دیدیہ کی تحصیل کے لئے بجرت ظاہرہ

درکارہے۔

- (۲) دوسرا فائدہ اس سے بیر حاصل ہوا کہ علوم رینیہ میں حصول کمال ججرت باطنہ بر موقوف ہے۔
- (۳)تیسرافائدہ سیمچھ میں آیا کہ 'خرم فی الحدیث' جائز ہے۔واللہ اعلم بالصواب. لینی حدیث کے بعض جملول پراکتفاء کیا جائے اور بعض جملول کوحذف کر دیا جائے۔ (کشف الباری)
 - (س)ا عمال كاثمر وطنے كادارو مدارنيات بر بــ
- (۵)..... برآ دمی کوعمل کا تواب بقد رنیت ملے گا۔مثلاً اگر کسی عمل میں دس نیتیں کر لی ہیں تو دس کا تواب مل جائے گا۔
- (2) ۔۔۔۔کی ضابطہ کلیہ کو بیان کرنے کے بعد بہتر یہ ہے کہ اس کی تمثیل بھی چیش کردی جائے تا کہ خاطبین کے لئے سمجھنا آسان ہوجائے ،جیسا کہ اس مدیث میں جرت کی مثال چیش کی گئے ہے۔
- (۸)کسی خاص شخص میں کوئی خاص کوتا ہی ہو بہتریہ ہے کہ شدید ضرورت کے بغیر خطاب خاص نہ کیا جائے ، خطاب عام میں اصلاح کی کوشش کی جائے۔ جیسے مہاجرام قیس کی خطاب عام میں اصلاح فرمائی ہے۔
- (٩)ا الركس عام چيزكوذكركياجائ بهراس كے فاص فردك الگذكركر في ميس كوئى كاته بوتو اس كى تخصيص الجھى چيز ہے، مطلب بيہ ہے كہ تخصيص بعد العميم ميس الركوئى حكمت بوتو بيمفيد چيز ہے۔

- (۱۰)حدیث سے ثابت ہوا کہ مجوب چیز کا تکرار کرنامحمود ہے۔
- (۱۱) بنیج چیز کا تحرار کرنا فتیج ہے، یہ دونوں با تیں یوں ثابت ہو کیں کہ جرت کے دوجملوں میں سے پہلے جملے میں اللہ اور اس کے رسول کا نام صراحة ذکر کیا گیا ہے، اور دوسر بے جملہ میں دنیا اور عورت کا نام دوبارہ نہیں لیا، بلکہ اس کی جگہ ''ماھاجر البہ'' کہدیا ہے، معلوم ہوا کہ تیج چیز کو بغیر ضرورت کے ذکر نہ کرنا ہیا ہے۔
- (۱۲)....مصنت نے اس حدیث کو یہاں الکراشارہ کردیا، دیباچ میں احادیث ذکر کرنا متحن چیز ہے۔
- (١٣)اس حديث سے بيات بھي مجھ مين آئي كردين كؤسب دنيا كاذر ايد بنانا فرموم ہے۔
- (۱۲)مصنت نے آغاز کتاب سے پہلے اس صدیث کوا کراس بات کی طرف اشار ، فرمادیا کے دروت مربات میں ہے۔ کے ساتھ مخصوص نہیں اس کی ضرورت مربات میں ہے۔
- (۱۵) شروع میں صدیث لانے ہے اس طرف اشارہ کردیا ہے کہ طالب علم کے لئے بجرت ظاہرہ یعنی ترک وطن کرنا ہوگا۔
- (۱۲) شروع میں بیصدیث الکراس طرف بھی اشارہ کردیا ہے کہ طالب علم کوعلم کے لئے جمرت باطنہ بھی کرنی پڑے گی ، صورت وسیرت ٹھیک کرنی پڑے گی ، ترک معاصی کے بغیر نورعلم حاصل نہیں ہوسکتا ، امام شافعی فرماتے ہیں: سب شکوٹ الی و کیئع سُوءَ حِفُظی فَاوُ صَانِی الی و کیئع سُوءَ حِفُظی فَاوُ صَانِی الی تَرُکِ الْمَعَاصِی فَاوُ صَانِی الله تَرُکِ الْمَعَاصِی فَاوُ صَانِی الله تَرُکِ الْمَعَاصِی فَاوَ اللهِ کَا اللهِ مَنْ اللهِ کَی وَنُورُ اللهِ کَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ الله و کَانُورُ اللهِ کَانُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ الل

